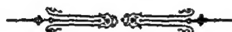
ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाका तेरहवाँ ग्रन्थ

रोम-साम्राज्य



छाया—लेखक

श्रीशंकर राव जोशी

सम्पादक

श्री रामदास गौड़

श्रीकाशी

ज्ञानमण्डल कार्यालय

१९७८

प्रकाशक—
बाबू मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, विशारद
व्यवस्थापक, ज्ञानमण्डल कार्यालय काशी
[प्रथम सं० १०००–१९७८]
[मूल्य सजिल्द २॥)]

मुद्रक–
गं० कृ० गुर्जर
श्रीलक्ष्मी नारायण प्रेस,
बनारस १०५–२१ ।

रोम-साम्राज्य

भूमिका

यह पुस्तक मराठीमें प्रकाशित 'रोम साम्राज्य'की अविकल छाया है। हमें यह श्रीसुखसम्पत्ति राय भण्डारी इन्दौरसे प्राप्त हुई है। इसके अनुवादक श्रीशंकर राव जोशी हैं। यह पुस्तक छाया होते हुए भी भाषाकी नवीन वेष भूषामें प्रकाशित होनेसे सर्वथा नवीन ही रस उत्पन्न करती है। पुस्तक आदिसे अन्तनक किसी भी साम्राज्यके उत्थान और पतनका लाक्षणिक चित्रण है। लेखन प्रकार सर्वथा औपन्यासिक है।

सभी साम्राज्य अपने बल और अधिकार मद में प्रथम चढते हैं और फिर अपने अत्याचार और पापोंके बोझसे दब कर पिस जाते हैं। साम्राज्य-लक्ष्मीके क्षणिक लाभमें मदयुक्त होकर बड़े २ राज नीतिज्ञोंकी बुद्धि किस प्रकार मलिन हो जाती है, धनवान्, लक्ष्मीवान् जागीरदार लोग किस प्रकार निर्धन प्रजाको दबाते और उनपर अत्याचार करते हैं, दबी हुई कष्टपीड़ित प्रजाके प्रमुख नेताओंको किस प्रकार अन्यायके सामने खड़ा होना पड़ता है, साम्राज्य लक्ष्मीके सामने कितने अमूल्य बुद्धि मस्तिष्कोंकी भेंट विना प्रयोजन ही किस प्रकार चढ़ा करती है, अत्याचारिक राजशासनोंका अन्त करनेके लिये किस प्रकार शहीद पैदा होते हैं और पापी हत्यारोंको किस बुरी मौतसे मरना पड़ता है—यह सब बातें रोम-साम्राज्यके चरित्र-पठनसे भली प्रकार विदित हो जाती हैं। ऐसे इतिहासोंके

पाठसे स्पष्ट हो जाता है कि अत्याचारी शासक, पदाधिकारियों और नौकरशाहियोंका पाप-बल चिरस्थायी नहीं होता, प्रत्युत विधिवश प्रजाके हृदय में सुलगी हुई पीड़ितोंकी आहभरी निःश्वास वायुसे भड़कती व्यथाग्निमें सहजहीमें भस्म हो जाता है।

रोम साम्राज्यके जीवनका अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है कि इसी साम्राज्य के सगठनकी पद्धति वर्तमान यूरोपकी उन्नतिका मूल आदर्श बन चुकी है।

अधिक लिखनेसे क्या, मर्म यही है कि—

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति
शिखर पुनरारुह्य समूलस्तु विनश्यति। मनु

अधर्मसे पहले वृद्धि होती है, फिर लोक लाभ और यशो लाभ होता है और फिर शिखरपर चढकर समूल नाश हो जाता है। इस प्रकारकी साम्राज्य-पद्धतिपर चलने वाली सभी सरकारोंका यही हाल होगा।

श्रीकाशी,
दीपमालोत्सव १९७८

जयदेव शर्मा विद्यालङ्कार

विषय सूची

पहला परिच्छेद

द्वितीय परिच्छेद

तीसरा परिच्छेद

चौथा परिच्छेद

रोमन लोगोंकी प्रजासत्तात्मक राज्यपद्धति ३६–७१

पाचवा परिच्छेद

गाल और साम्नाइट लोगोंसे युद्ध ७२-६५

छठा परिच्छेद

कार्थेज, प्यूनिक युद्ध ९६-१२६

सातवां परिच्छेद

रोमकी सामाजिक अवनति, उसके सुधारके यत्न, और जुगर्था आदिसे युद्ध १२६-१८३

कौंसल बनना १५८—जुगर्थासे युद्ध १५८—जुगर्थाकी कुत्तेकी मौत १५९—इटलीपर केल्ट, जर्मनोंका आतङ्क १५९—मारियससे मुठभेड़ १६१—गुलामोंका बलवा १६२—मारियसका फजीता १६४—पारस्परिक कलह १६५ ड्रससका उद्योग और उसका विरोध १६७ उसकी हत्या १६७ क्रान्तिकारी प्रान्तोंका संगठन १६८—रोमकी उदार नीति १७०—मारियस और सुल्लामें स्पर्द्धा १७०—मारियसकी मृत्यु १७२—सुल्लाकी अथेन्स-पर चढ़ाई १७४—सिन्नाका खून १७५—साम्नाइटोंका वध १७५—सुल्लाके अत्याचार १७२—सुल्लाका डिक्टेटर चुना जाना १७८—ट्रिब्यूनोंका अधिकार लोप १८०—सुल्लाका राज्य त्याग १८२—उसकी मृत्यु १८३।

आठवां परिच्छेद

सरटोरियस आदिसे युद्ध, पाम्पे आदिका उदय १८४–२२४

सिसरो और पाम्पेका उदय १८५—नीच केयस वेरिस १८६—केयस की दुष्टता १८७—केयस के विषय में सिसरो की सम्मति १८८—नीच सर्जियस क्याटेलन १९०—सीजर का उदय १९०—सिसिलियनोंके हाथमें सीजर १९१—उसका सिसिलियनोंसे बदला—लैपिडस और क्याटुलसमें विरोध १९२—लैपिडसकी मृत्यु, पाम्पेके हाथमें राज्यसूत्र, उससे सरटोरिसकी अनबन १९४—सरटोरियसकी हत्या और परपर्नाकी मृत्यु १९५—ट्रिब्यूनों को अधिकार प्राप्ति, गुलामोंपर

नवाँ परिच्छेद

पाम्पेका मृत्यु, सीजरका प्रभाव २२५—२८४ ।

दसवाँ परिच्छेद

रोमनिवासियोंके धर्म रीति नीति और विद्या—२८४–३०७

सूचना

८ पृष्ठसे १६० पृष्ठतक ईस्वी सनको विक्रम सम्वत बनाने में भूल रह गयी है । पाठक ११४ अंक घटाकर शुद्ध संवत् बना लें ।

रामदास गौड़ ।

रोम-साम्राज्य



पहला परिच्छेद

उपोद्घात

प्रसिद्ध तत्ववेत्ता लॉर्ड बेकन लिखते हैं कि इतिहासके अध्ययनसे मनुष्य बुद्धिमान, और कर्मयोगी बनता है। आजकल जो राष्ट्र अपने कर्त्तव्यपालनमें दक्ष हैं—जिन राष्ट्रोंमें ऋद्धि सिद्धिका अटल साम्राज्य है—उन्हीं राष्ट्रोंकी बराबरी हमारे राष्ट्रको भी करनी है। अत हमारे राष्ट्रको भी वही आदर्श अपने सामने रखना चाहिए जिसका अनुकरण करके ससारके वर्तमान राष्ट्रोंने अपनी आश्चर्यजनक उन्नति की है। प्राचीन राष्ट्र ही वह उच्च आदर्श है। आजकल अमरीका और यूरोपकी अत्युत्तम राष्ट्रव्यवस्था रोमन आदर्शहीका फल है। इसलिए हम भारतवासियोंको रोम राष्ट्रका इतिहास सावधान होकर अध्ययन और मनन करना चाहिए।

यूरोप खण्डके दक्षिणमें इटली नामक देश है। इसी देशमें टाइबर नदीके तटपर रोमनगर बसा हुआ है। इसी अकेले नगरका आतङ्क कई बड़े बड़े राष्ट्रोंपर जमा हुआ था। आज-

कलके अधिकसे अधिक पराक्रमी राष्ट्रसे भी इसकी योग्यता कहीं अधिक थी। प्राचीन कालमें इस नगरने जो कुछ कर दिखाया था उसका आधा भी आजतक किसी बडे राष्ट्रसे न बन सका। इससे ही स्पष्ट है कि इस नगरकी कथा बडी रोचक होगी।

यूरोपके आधुनिक राष्ट्रोंकी आधुनिक स्थितिकी तुलना करनेसे स्पष्ट मालूम होता है कि उनकी भाषा, उनके नियम और रीति भाँतिमें बहुत कुछ साम्य है। किन्तु यदि यूरोपके राष्ट्रोंकी एशिया और अफ्रीकाके राष्ट्रोंसे तुलना की जाय तो जमीन और आकाशका अन्तर दिखाई देता है। इसका कारण यह है कि इन राष्ट्रोंको रोमका अनुकरण करनेका अवसर नहीं मिला है। निदान, यूरोपके राष्ट्रोंकी इतनी उन्नति कैसे हुई, इस बातका पता लगानेके लिए रोम राष्ट्रके इतिहासका अध्ययन करना आवश्यक है।

इसके सिवा रोम नगरके लोगोंने इटली देशके अन्य लोगोंको और भूमध्यसागरके पास रहनेवाले लोगोंको कैसे जीता, इन जीते हुए राष्ट्रोंको किस प्रकार अपने अधीन रखा, उनपर किस नीति (Policy) से राज्य किया और उन्हें अपने समान बनानेके लिए किन किन उपायोंकी योजना की, इस बातका पता भी इस इतिहासके अवलोकनसे लग जायगा।

रोम राष्ट्रका इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन इतिहासको जोडनेवाला पुल है। कारण कि यूरोपके आधुनिक बडे बडे राष्ट्र रोम राष्ट्रके भिन्न भिन्न टुकडोंसे बने हुए हैं। इसीसे इन राष्ट्रोंमें रोमन राष्ट्रकी बहुत कुछ छाया पाई जाती है। यही कारण है कि रोम राष्ट्रके इतिहाससे प्राचीन और अर्वाचीन बडे बडे राष्ट्रोंका वृत्तान्त मालूम हो जाता है।

इस इतिहासमें नीचे लिखी सात बातें ध्यानमें रखने और विचार करने योग्य हैं—

१ रोम राष्ट्रकी उत्पत्ति कैसे हुई।

२ दुर्बल रोम राष्ट्र प्रबल कैसे हुआ।

३ अन्य राष्ट्रोंको जीतनेमें इतनी शक्ति रोमने कैसे प्राप्त की।

४ जीते हुए राष्ट्रोंको रोम लोगोंने अपने अधीन कैसे रखा।

५ रोममें लोक-पक्षका उत्कर्ष और अपकर्ष कैसे और क्यों हुआ, और उसका परिणाम क्या हुआ।

६ रोम लोगोंकी राजाकी सत्तासे घृणा क्यों होने लगी और प्रजासत्तात्मक राज्यकी नींव कैसे पड़ी।

७ रोममें प्रजासत्तात्मक राज्य अत्युच्च शिखरपर कैसे आरूढ हुआ और पुन लोगोंको उससे नफ़रत हो जानेके कारण राजगद्दी कैसे स्थापित हुई।



दूसरा परिच्छेद

— * —

रोम नगरके विषयमें दन्तकथा

कई बडी बडी नदियाँ दुर्गम पर्वतोंसे निकलती हैं, उनके उद्गम स्थानका पता लगानेके लिए कभी कभी लोगोंको बहुत बडा उद्योग करना पडता है। यही दशा ससारके बलवान राष्ट्रोंकी है। लिखे इतिहासके अभावके कारण उन राष्ट्रोंकी मूल उत्पत्तिका सच्चा सच्चा हाल नही मिलता। अत उन राष्ट्रोंके उद्गमका पता लगानेवालेको दन्तकथाओंकी शरण लेनी पडती है। इन दन्तकथाओंके असल मतलबको समझना बहुत कठिन है। और यदि कोई प्रयत्न कर कुछ मतलब निकालता भी है तो उससे लोगोंका समाधान नहीं होता। रोम राष्ट्रके प्राचीन इतिहासकी भी यही दशा है। इस विषयमें भिन्न भिन्न ग्रन्थोंमें भिन्न भिन्न वृत्तान्त पाये जाते हैं।

एक ग्रन्थमें लिखा है कि "प्राचीन कालमें पेलासगी नामके लोग बडे पराक्रमी थे। जब सारी पृथ्वी जीत चुके तो इस स्थान पर इन लोगोंने बहुत समयतक विश्राम किया था। उनकी भाषामें 'रोमो' शब्दका अर्थ 'पराक्रम' होता है। वे अपनेको बडा पराक्रमी समझते थे। उन्होंने इस स्थान को, जहाँ कि उन्होंने विश्रान्ति ली थी, रोम नाम दिया।" ऐसा होना असम्भव नहीं है। हमारे भारतवर्षमें भी जलालाबाद, शाह-

जहाँबाद, औरङ्गाबाद आदि नगरोंके नाम राजाओंके नाम पर ही रक्खे गये हैं।

कई एक इतिहास लेखक लिखते हैं कि—"अति प्राचीन कालमें ग्रीस देशमें आगामामनान नामक राजा राज्य करता था। उसने एक वार अपनी हेलेनको छुड़ानेके लिए ट्राय नगरपर चढ़ाई की। यह नगर एशियामाइनरके पश्चिमी किनारेपर बसा हुआ था। ट्राय नगरके कुछ लोग अपने स्त्री बच्चों सहित नौकाओंमें बैठकर अपना प्राण बचानेके लिए भागे। ये नौकाएँ हवाके झोंकेसे बहती बहती टाइबर नदीमें जा पहुँची। हवासे लोगोंको बहुत कष्ट हुआ। अत विश्राम करनेके लिए वे लोग कुछ दिनतक टाइबर नदीके किनारे ठहर गये। स्त्रियों-को यह स्थान बहुत अच्छा लगा। उस स्थानकी सुन्दरताने स्त्रियोंको इतना लुभाया कि यहाँसे अन्यत्र जानेके लिए वे राजी न हुईं। पर पुरुषोंको यह बात न जँची और वे दूसरी जगह जानेकी तैयारी करने लगे। यह देखकर एक बुद्धिमती वृद्धा स्त्रीने नौकाओंमें आग लगा दी। सब नौकाएँ जल गईं। इससे पुरुषगण बहुत नाराज हुए, पर कर क्या सकते थे? लाचार उन्हें दूसरी जगह जानेका विचार छोड़ना पड़ा। उस स्थानके आसपास रहनेवाले लोग समाजशील, सीधे और मिहनती थे। जमीन उपजाऊ थी और आबहवा भी अनुकूल थी। इससे इन लोगोंके दिन सुखसे कटने लगे। अब वे उस स्त्रीको जिसने नौकाओंमें आग लगा दी थी, देवीके समान मानने लगे। इस स्त्रीका नाम रोमा था। अत उसके स्मरणार्थ उस नये नगरका नाम रोम रखा गया।"

निम्नलिखित एक दन्तकथा और है। अर्वाचीन इति-हास लेखकोंका मत है कि इसमें, बहुत कुछ सत्यांश है।

"टाइबर और ओनिओ नदीके सङ्गमपर आलबालोंगा नामक एक शहर था। वहाँ आम्युलियस राजा राज्य करता था। वह बहुत दुष्ट स्वभावका था। वह अपने बडे भाईको मारकर आलबालोंगाके सिंहासनपर बैठा था उसने अपने भाईके लडकोंको भी मार डाला था। एक कन्या मात्र बच रही थी। उसकी सन्ततिसे अपने वंशजोंका राजसुखमें व्याघात उपस्थित न होने पाए, इस इरादेसे वह उसकी शादी करना नहीं चाहता था। इसीसे उसने उसे, उस समय की परिपाटीके अनुसार ईश्वरभजनमें लगाया। परन्तु ईश्वर-की लीला अगाध है। आम्युलियसने चाहा था कि लडकी आजन्म कुँवारी रहे, ताकि उसके सन्तति न हो। पर ईश्वरकी इच्छा निराली थी। ईश्वरी साक्षात्कारसे उसे गर्भ रह गया, और यथासमय उसके दो लडके पैदा हुए। वे बहुत ही सुन्दर और तेजस्वी थे। आम्युलियसको खाना पीना हराम हो गया। वह उन लडकोंको मार डालनेका उपाय सोचने लगा। क्योंकि उसे शका थी कि ये लडके बडे होनेपर मेरा राज्य छीन लेंगे। अत. उसने उन लडकोंको उनकी माता सहित टाइबर नदीमें डुबा देना ही अच्छा समझा। उस पाषाण-हृदय राजाकी आज्ञासे उसके सेवकोंने उन तीनोंको टाइबर नदीमें डाल दिया। इस समय नदीपर बडी बाढ़ थी। माता पानीमें ढकेलते ही डूबकर मर गई, पर बच्चे पलनेमें रखकर पानीमें छोडे गये थे। वह पलना पानीके प्रवाहके साथ बहता बहता नदीके तटस्थ एक बड वृक्षकी जडमें जा अटका। उस भयानक जङ्गलमें उन अनाथ बालकोंका पालन पोषण करनेवाला कोई न था। पर उस अनाथोंके नाथ विश्वम्भरको तो सबकी चिन्ता रहती है। उन अनाथ बच्चोंको

देखकर एक मादा भेडियेके अन्तःकरणमें दया उत्पन्न हो आई। वह उन्हें रोज दूध पिलाने लगी। उसी प्रकार एक पक्षी भी उन्हें फलमूल ला लाकर खिलाने लगा। इस तरह कुछ दिन उन बालकोंका लालन पालन होता रहा। एक दिन राजाके कुछ ग्वाले उधर आ निकले। उन्होंने बालकोंको देख लिया। उनमेंसे फास्टुलस नामक ग्वाला उन्हें अपने घर उठा ले गया। उसकी स्त्री लारेन्सिया उनका लालनपालन करने लगी। वे लडके ईश्वरांश थे, और फिर उन्हें बचपनमें कुछ दिनतक भेडियेका दूध पीनेको मिला था। ज्यों ज्यों वे बडे होने लगे त्यों त्यों ग्वालोंमें उनका मान सम्मान बढने लगा। भय तो उनके पासतक न फटकने पाया था। व्याघ्रादि हिंसक पशुओंसे ढोरोंकी रक्षा करना उनके लिए बायें हाथका खेल था। उनके पराक्रमकी बातें घर घरमें होने लगीं। धीरे धीरे उनके शौर्यकी बातें राजाके कानतक पहुँच गईं। राजाने उन्हें बुला भेजा। बहुत खोज करनेपर राजा को मालूम हुआ कि ये दोनों लडके (राम्युलस व रीमस) उसके नाती थे। एक बार किसी कारणसे आम्युलियस और उन लडकों-के दादाका आपसमें युद्ध ठन गया। इन दोनों भाइयोंने ग्वालोंका अगुआ बन उस युद्धमें विलक्षण शौर्य दिखलाया। आम्युलियस युद्धमें मारा गया और उसका राज्य इन लडकों-के दादाके हाथ लगा। इतना होने पर भी वे अपने दादाके साथ रहनेको राजी न हुए, कारण कि वे उस पहाडी प्रदेशको, जहाँ कि वे पलनेमें पाले गये थे, छोडना नहीं चाहते थे उनका मन वहाँ रम गया था। वे वहाँके लोगोंको भी बहुत चाहते थे, अत. उन्होंने वहाँ एक नगर बसानेका निश्चय किया। शहरके लिए उत्तम स्थान चुननेके लिए दोनों भाइयोंमें वाद-

विवाद होने लगा। पर वे सहमत न हुए। अन्तमें कुछ पक्षियों-के शकुनपर उन्होंने निपटेरा करना चाहा। इसमें राम्युलस-की बात सच पाई गई। राम्युलसके दिखाये हुए स्थानपर ही शहर बनाना निश्चित हुआ। सबसे पहले, नगरके चारों ओर कोट बाँधा गया। नींव खोदनेके लिए हलसे चिह्न बनाया गया। इस हलमें एक गाय और एक बैल जोता गया था। इनका रङ्ग बिलकुल सफेद था। जिस जगह पायेपर कोट बनाया गया था उस पर पूरा कोट बननेके पहले रीमस पाँव रख-कर दूसरी ओर जाकर बोला—"क्या यही तुम्हारे गाँवका कोट है?" यह बात राम्युलसके शिल्पकार सेलरको बहुत बुरी लगी। उसने उसे वहीं मार डाला। यह बात विक्रमके पूर्व ८?० वें वर्ष हुई। राम्युलसने ही अपने नामपर इस नगरका नाम 'रोम' रखा।

रोम नगर बँधकर तैयार हो गया, पर उसमें बहुत कम आदमी रहते थे। इसलिए राम्युलसने उन सब बदमाश लोगोंको, जो कि आस पासके प्रदेशोंमेंसे अपराध करनेके कारण निकाल दिये गये थे, आश्रय दिया। ऐसा करने से अनेक प्रकारके पुरुषोंसे रोम नगर भर गया। पर नगरमें स्त्रियाँ कम थीं, कारण ऐसे लोगोंको कोई अपनी लड़की देना नहीं चाहता था और बिना स्त्रीके गृह-शकट हाँकना पुरुषके लिए सम्भव नहीं। बिना स्त्रीके गृह स्मशानवत् भासमान होने लगा। सच है "गृहिणी बिना घर सूना"। अतः वे स्त्रियोंको प्राप्त करनेका प्रयत्न करने लगे। उस समय रोम नगरके आस पास अनेक प्रकारके लोग रहते थे, उनमेंसे सबैन नामक लोगों-की स्त्रियाँ अधिक सुन्दरी थीं। उन स्त्रियोंको पानेके लिए रोमन लोग अधीर हो उठे। उन्होंने अनेक यत्न किये, पर सबैन लोग

राजी न हुए। लाचार रोमन लोगोंको चाल चलनी पड़ी। किसी कामको हाथमें लेनेपर उसे अधूरा छोड़ना रोमन लोग नहीं जानते थे, वे कमर कसकर स्त्रियाँ प्राप्त करनेके लिए यत्न करने लगे।

सबैन लोगोंको और उनकी स्त्रियोंको तमाशा देखनेका बहुत शौक था। उन लोगोंके इस शौकसे फायदा उठानेका राम्युलसने निश्चय कर लिया। राम्युलसने उन लोगोंके एक तेवहारके दिन कुश्ती, घुड़दौड़ आदि खेल शुरू किये। सबैन लोगोंके झुण्डके झुण्ड अपनी अपनी स्त्री और लड़के लड़कियोंको लिये तमाशा देखनेके लिए आ जमे। वे चित्रके मानिन्द बैठे हुए तमाशा देख रहे थे, इतनेमें राम्युलसका इशारा पाते ही रोमन लोग सबैन लोगों पर टूट पड़े और सब अविवाहिता लड़कियोंको जबर्दस्ती लेकर चल दिये। सबैन लोग रोमन लोगोंका कुछ न कर सके कारण कि उनके पास शस्त्रास्त्र न थे, और उधर लोगोंके पास नगी तलवारें थीं, लाचार बेचारोंको अपना जी ले भागना पड़ा। इधर रोमन लोग उन लड़कियोंको लेकर अपने अपने घर चल दिये। इस प्रकार रोमन लोगोंको उनकी इच्छित वस्तु—सुन्दर स्त्रियाँ—मिल गईं। इन स्त्रियोंकी संख्या ६८३ थी।

ऊपरकी घटना घटनेके बाद रोमन लोग और सबैन लोग एक दूसरेको शत्रु समझने लगे। सबैन लोग रोमन लोगोंसे कुछ कम शूर न थे। वे अपने नगरके चारों ओर कोट नहीं बाँधते थे। वे कहा करते थे कि शत्रुसे अपने निजकी रक्षा करनेके लिए गाँवके चारों ओर कोट बाँधना नामर्द और क्लीवोंका काम है। सबैन लोगोंके राजाने राम्युलसके पास दूत भेजे थे। उन दूतोंने अपने राजाका सन्देश निवेदन

किया। सबैन राजा का कहना था कि रोमन लोग पकडकर रखी हुई लडकियोंको छोड दें और तब उभय राष्ट्रोंकी सम्मतिसे मिलने पर वे रोमन लोगोंको व्याह दी जायँ। परन्तु रोमन लोग इस बातपर राजी न हुए। दूत वापस लौट गये। लडाईकी तैयारियाँ होने लगीं। दोनों सेनाएँ मैदानमें जा डटीं। युद्ध छिडने ही वाला था कि इतनेमें सबैन लोगोंकी लडकियाँ जोकि अब रोमन लोगोंकी स्त्रियाँ हो गई थीं, अपने अपने बच्चोंको लेकर युद्ध क्षेत्रमें, दोनों सेनाओंके बीचमें आ खडी हुईं। आँखोंमें आँसू भरकर दीनभावसे हाथ जोडकर प्रार्थनापूर्वक सब कहने लगीं—"मेरे पूजनीय दादा और भाइयो, आजतक हमने अनेक आपत्तियाँ झेली हैं और अब भी झेल रही हैं। आजतक हम जिन लोगोंके अधीन रहीं, वे हमें जबर्दस्ती और अन्यायसे छीन लाये थे। किन्तु आजतक आपने हमारी कुछ भी खबर न ली। लाचार हमें अपने शत्रुओंका प्रेम सम्पादनकर उनसे एकजीव हो रहना पडा। इसमें सन्देह नहीं कि रोमन लोगोंने पहले हमें बहुत दुःख दिया, किन्तु आज हमपर उन्हें दुःखकी ज्वालासे बचानेके लिए आपसे प्रार्थना करनेका प्रसग आ पडा है। क्योंकि जबतक हम अविवाहिता थीं, आप हमें छुडानेके लिए—हमारा बलात्कार हरण करनेवाले शत्रुसे बदला लेनेके लिए—न आए। और अब, आप पति पत्नीका वियोग करानेके लिए और माँ बच्चोंको अलग अलग करानेके लिए आए हैं। प्रारम्भमें आपकी ढिलाईके कारण हमें बहुत ही दुःख सहना पडा। किन्तु छुडानेके लिए अब आपके आनेके कारण हम पर और भी असह्य दुःखका बोझ आ गिरेगा। यदि इस युद्धके छिडनेका कोई दूसरा ही कारण होता, तो हमें पूर्ण

विश्वास है कि आप अपने इन दामादोंसे कभी युद्ध न करते। परन्तु यह लड़ाई हमारे लिए छिड़ी है, अत हमारी यही प्रार्थना है कि आप अपने दामादोंको हम लोगोंके सहित अपने यहाँ ले चलिए। हम लोगोंको अपने यहाँ कुछ रोज आनन्दसे रहने दीजिए। यदि लड़ाई करेंगे तो हमारे पति मारे जायँगे। हमारे घर मिट्टीमें मिल जायँगे और तुम्हारे ये नाती अनाथ हो जायँगे। यह सब अनर्थ तुम अपने हाथोंसे करोगे। इसलिए हम हाथ जोड़कर आपसे यही माँगती हैं कि हमें पति भिक्षा दें।" अपनी पुत्रियोंके ऐसे दीन वचन सुनकर सबैन लोगोंके हृदय पिघल गए। उनके हाथोंके शस्त्रास्त्र गिर पड़े। उनका क्रोध शान्त हो गया और हृदयमें प्रेम उमड़ उठा। उन्होंने रोमन लोगोंसे सुलह कर ली। लोगोंका अनुभव है कि स्त्रियाँ ही कलहका मूल हैं किन्तु ऊपरके विवेचनसे यह बात बिलकुल झूँठ मालूम होती है। स्त्रियोंकी मध्यस्थताके कारण ही रक्तपातका प्रसग टल गया।

रोमन और सबैन लोगोंकी मित्रता घनिष्ट हो गई। दोनों राष्ट्रोंको सलाहसे यह निश्चत हुआ कि रोमन लोगोंका राजा राम्युलस और सबैन लोगोंका राजा ट्याशियस मिलकर राज्य करें। तदनन्तर रोमन लोग और सबैन लोग बारी बारीसे राजा चुनें। इस नियमके अनुसार राम्युलस अपने साथियोंके साथ पालेटाइन पहाड़ीपर और ट्याशियस अपने साथियों सहित क्विरिनल पहाड़ीपर रहने लगा। तथापि सलाह करनेके लिए वे दोनों क्युरीशियन नामक तालाबके किनारे मिला करते थे।

इस प्रकार रोमन और सबैन लोग मिल गए। इससे कुछ दिन पहले इट्रस्कन नामक लोग रोमन लोगोंसे मिल ही गये

थे। इस प्रकार रोममें कई कुटुम्ब हो गए। इन लोगोंमें कुछ व्यापारी भी थे जो आसपासके प्रदेशोंसे व्यापार किया करते थे। बहुतसे लोग खेती करते थे। उन्हें आसपासके लोगोंका विशेष भय था और इसलिए वे सब मिल जुलकर रहा करते थे। यहाँकी राज्यव्यवस्था बिलकुल सादी थी। तीनों जातिके लोग बहुमतसे राजा चुनते थे और राजाको सलाह देनेके लिए वृद्ध और अनुभवी लोगोंकी एक सभा बनाई जाती थी। इस सभाको सिनेट कहा करते थे। सिनेटमें राजा ही मुख्य होता था। वह रोम राष्ट्रका पिता माना जाता था। सभा में हर एक बात बहुमतसे निश्चित की जाती थी। राम्युलसने ही यह व्यवस्था कर दी थी।

ऊपर लिखी तीन जातियोंके सिवा और भी कई लोग रोम नगरके पास रहने लगे थे इससे उसका विस्तार बहुत बढ़ गया। इन बाहरके लोगोंके आनेसे रोम राष्ट्रमें दो प्रकारके लोग हो गये। एक पुराने, जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, और दूसरे नये। पुराने लोगोंको राज्यकार्यमें सलाह देनेका अधिकार था। किन्तु नये आये हुए लोग इस अधिकारसे वंचित रखे गये थे। इसी कारणसे रोम राष्ट्रके लोगोंमें दो पक्ष हो गये। पुराने लोगोंको पात्रिशियन जनक—और नये आये हुए लोगोंको प्लेबियन—जनसाधारण—नाम दिया गया। पात्रिशियन लोग अपनेको श्रेष्ठ और राष्ट्रके स्वामी समझते थे और यही कारण है कि वे प्लेबियन लोगोंको आगन्तुककी तरह तिरस्कारकी दृष्टिसे देखते थे। प्लेबियन लोगोंको यह बात सहन नहीं होती थी। इसीसे उनमें आपसमें कलह होने लगा, जिससे रोम राष्ट्र बहुत शक्तिहीन हो गया। भारतवर्ष भी इसी आपसकी फूटके कारण परतन्त्रताकी

सुदृढ़ शृङ्खलामें जकड़ दिया गया। इसी फूटमहारानीकी कृपा है जो भारत दाने दानेके लिए आज मुहताज हो रहा है और उसे पद पदपर अपमानित होना पड़ रहा है।

यह दोहरा राज्य चार वर्षतक अच्छी तरह चलता रहा। इसके बाद एक बार कुछ लोगोंने अपने दूत लारेंटमसे रोम नगरको भेजे। ट्याशियस और उसके मित्रोंने इन दूतोंको रास्तेमें ही मार डाला। राम्युलसने खूनीको दण्ड देनेके लिए ट्याशियसको लिखा। परन्तु उसे यह बात न रुची और इस ओर उसने कुछ भी ध्यान न दिया। अपने दूतोंका खून करनेवाले व्यक्तिको ट्याशियस सजा नहीं देता, यह देखकर वे लोग आग बबूला हो गये। वे एकदम वहाँ जा पहुँचे जहाँ ट्याशियस और राम्युलस पूजा कर रहे थे। उन्होंने ट्याशियसको वहीं मार डाला और जयजयकार करते हुए राम्युलसको उसके राजभवनमें पहुँचा दिया। यह बात राम्युलसके भी मनके अनुकूल हुई। कारण ट्याशियसके मारे जानेसे उसे सम्पूर्ण राज्याधिकार मिल गया।

अबतक राम्युलस सीधी तरहसे पेश आता था, वह निजको प्रजाजनोंमेंसे ही एक समझता था। किन्तु अब धीरे धीरे उसपर अधिकारका मद चढ़ने लगा। वह समझने लगा कि मैं साधारण प्रजाजनोंसे श्रेष्ठ हूँ। मुझमें उनसे अधिक श्रेष्ठ गुण हैं। लोगोंका कहा हुआ करना मेरे लिए अपमानकारक है। लोगोंको चाहिए कि मेरी आज्ञा पालन करें। धीरे धीरे वह अपने इच्छानुसार कार्य करने लगा। सिनेट सभाकी सलाह लेना उसने बिलकुल छोड़ दिया। वह, सब लोगोंको तुच्छ समझने लगा। एक बार हिंटीस नामक लोगोंने उसपर चढ़ाई की। पहले पहल तो उसकी एक न चली, परन्तु

वादमें उसने उनको हरा दिया। एक युद्धमें हिटीस लोगोंके १४००० लोग खेत रहे। कहा जाता है कि अकेले राम्युलसने ७००० सिपाही मारे। पर ऐसा होना सम्भव नहीं, कि कारण एक मिनटमें एक आदमी मारा जाय तो ७००० आदमियोंको मारनेके लिए चार दिन २० घण्टे और चार मिनट लगेंगे और इतने समयतक विना ठहरे तलवार चलाते रहना अशक्य है। जो हो, जय उसीको मिली।

राम्युलसने अपने राष्ट्रके लोगोंको युद्धविद्यामें निपुण बना दिया था। परन्तु इसमें कुछ विशेषता नहीं, क्योंकि नवीन राष्ट्रकी स्थापना करनेवालेको ऐसा करना ही पडता है। छत्रपति शिवाजी महाराजको भी तो ऐसा करना पडा था। राम्युलसने राज्यको सुव्यवस्थित रखनेके लिए कई कायदे बनाये। सैन्यको सुव्यवस्थित रीतिसे सङ्गठित किया। उसने एक यह नियम बनाया कि रोमन, सबैन और इट्रस्कन लोग अलग अलग एक हजार पैदल और सौ घुडसवार पूरा कर दिया करें। इसके अलावा उसने शान्तिके और युद्धके समयमें लोगोंको किस प्रकार रहना चाहिए, इसके लिए भी नियम बनाये। इससे सब काम अच्छी तरह चलता था।

परन्तु खरावी यह थी कि राम्युलस सिनेट सभाकी परवाह न कर शासनकार्य अपने इच्छानुसार करने लगा था। सिनेटके सभासदोंको यह बात अच्छी न लगी। कुछ दिन तक तो सिनेट सभाके सभासद दरबारमें आकर चुपचाप बैठ जाते और जो कुछ राम्युलस कहता, वह सुनकर घर चले जाते। राज्य कार्यमें उनसे सलाह न ली जाती थी। साधारण प्रजाजन और उनमें केवल इतना ही अन्तर रह गया था कि आगे होनेवाली बातका पता उन्हें कुछ दिन पहले लग

जाता था, दूसरे लोगोंपर यह बात देरसे प्रकट होती थी। सिनेटके सभासदोंको यह अपमान सहन नहीं हुआ। इसी प्रकार कई रोज बीत गये। एक दिन सिनेट सभा बैठी हुई थी और राम्युलस बीचमें सिंहासनपर बैठा था कि एकाएक आकाशमें भयङ्कर शब्द होने लगा। दोपहर होनेपर भी चारों ओर अँधेरा छा गया। लोग सब भयभीत हो गये। इसी समय राम्युलस एकाएक गायब हो गया। कुछ लोग समझने लगे कि ईश्वरके दूत उसे सदेह स्वर्ग ले गये। परन्तु भीतरीभेदके जाननेवाले लोगोंकी कल्पना है कि राम्युलस सिनेटके सभासदोंको अप्रिय हो गया था। "नाकसे नथ भारी" की कहावत चरितार्थ होती थी। अत इस गडबडके समय सिनेटके सभासदोंने सिंहासनसे नीचे खींचकर उसकी देहके टुकडे टुकडे कर डाले। इस बातको गुप्त रखनेके लिए उन्होंने राम्युलसके शरीरके टुकडे अपने अपने लबादेमें छिपाकर कहीं दूर फेंक दिये थे। यह कल्पना सच मालूम होती है और इतिहास लेखक भी इसे ग्राह्य मानते हैं। तो भी उस जमानेके लोगोंने उसके सदेह स्वर्ग जानेकी बातपर विश्वास कर लिया। इसके अलावा सिनेटके सभासद ज्युलिस प्रोक्युलसने, जोकि राम्युलसका परम मित्र था सब लोगोंसे भरी सभामें कहा कि—"राम्युलस मुझे रास्तेमें मिला था। वह बहुमूल्य सुन्दर वस्त्र पहने हुए था। उसका शरीर कान्तिमान था। मैंने उससे एकाएकी चले जानेका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि मेरा अवतारकृत्य पूरा हो गया। ईश्वरकी इच्छा है कि अब मैं मृत्युलोकमें न रहूँ। उसने मुझे यहाँसे चले जानेके लिए सन्देशा भेजा है। इसलिए अब तुम लौट जाओ और रोमन लोगोंको मेरा यह सन्देशा

कह देना कि मेरा बसाया हुआ शहर एक दिन सारे संसार की राजधानी होगा। तुम अपना काम नियमपूर्वक करते रहो। मैं क्विरिनस देवता बनकर तुम्हें महत्पदको चढाऊँगा।" यह सुनकर लोगोंको पूर्ण विश्वास हो गया कि राम्युलस अवश्य ही सदेह स्वर्ग गया है। बडे लोगोंकी बातें ऐसी ही विलक्षण होती हैं और इन्हींके कारण उनका महत्त्व बढ़ जाता है। लोगोंको राम्युलसके सदेह स्वर्ग जानेकी बात इतनी सत्य मालूम हुई कि उन्होंने उसके नामपर एक मन्दिर बनवाया और एक उत्सवकी स्थापना की। राम्युलस ५ कुम्भ (फाल्गुन) को स्वर्गधाम सिधारा था। अतः यह उत्सव उसी रोज मनाया जाने लगा। और, वह क्विरिनस देवता बनकर उनका सहायक होनेवाला था, इसलिए उस उत्सवको क्विरिनेलिया नाम दिया गया।

राम्युलस विक्रम के पूर्व ७७४ वें वर्ष परलोक सिधारा। उसके बाद राज्यव्यवस्थाके लिए सिनेट सभामें वादविवाद होने लगा। अन्तमें यह ठहरा कि सिनेटका प्रत्येक सभासद बारी बारीसे पाँच पाँच दिनतक राजकार्य करें। पर इससे लोगोंको तकलीफ होने लगी, अतः सब लोगोंमेंसे नवीन राजा चुननेका निश्चय किया गया। किन्तु राजा चुननेका अधिकार सबैन लोगोंको नहीं दिया गया। रोमन लोगोंने ही राजाका चुनाव किया।

इस समयके बाद रोमका इतिहास दन्तकथाओंके आधार पर न रहकर अन्य साधनोंसे मिलता है।

तीसरा परिच्छेद

— * —

रोमन राजाओंकी राज्यव्यवस्था

रोममें राज्य करनेके लिए सबैन लोगोंमेंसे राजा चुनने का निश्चय किया गया था। तदनुसार न्यूमा पांपियसका निर्वाचन हुआ। यह पुरुष साधु था। यह पैथागोरस तत्त्ववेत्ताका शिष्य था। वह संयम करना ही सच्चा सुख और कर्तव्य समझता था। वह जङ्गलमें रहकर ईश्वरभजन किया करता था। लोभ तो उसे छूतक न गया था। एक जनश्रुति है कि जिस दिन राम्युलसने रोम नगरकी नींव डाली थी, उसी दिन—अर्थात् ८ मेष (अप्रैल मासकी २१ वी तारीख) को—उसका जन्म हुआ था। जिस समय राजा होनेके लिए उससे प्रार्थना करनेको रोमन लोगोंके राजदूत गये उस समय उसकी उम्र ४० वर्षकी थी। राजदूत समझते थे कि वह उनकी प्रार्थना अवश्य स्वीकार कर लेगा। कारण, राजा होना कौन नहीं चाहता? परन्तु न्यूमा साधु था। उसकी दृष्टिमें राजा और रङ्क एकसे थे। राजमहल और जङ्गलमें रहना उसके लिए बराबर था। वह राजा होना बड़ी भारी जिम्मेवारी सिरपर लेना समझता था। इसलिए उसने अपने पिता और एक सम्बन्धीके सामने, प्रार्थियोंको शान्तिपूर्वक उत्तर देते हुए कहा,—"प्रत्येक स्थितिमें मनुष्यके पीछे भय और चिन्ता लगी ही रहती है। इस हालतमें, सब जरूरी चीजें मौजूद होने

पर—या किसी चीजकी जरूरत न होनेपर भी—एक स्थिति छोड़कर दूसरी स्थितिको ग्रहण करना निरी मूर्खता है। इस प्रकार अदल बदल करनेसे लाभ तो कुछ होता नहीं, उलटे नवीन स्थितिसे पूर्णतया परिचित न होनेके कारण बहुधा मनुष्य असावधानीसे काम कर बैठता है और तब उसे नाना प्रकारके कष्ट भोगने पड़ते हैं। और राज्य शकट हाँकनेवालेको तो पद पदपर भय और सकटोंका सामना करना पड़ता है। राम्युलस चतुर और समझदार था तो भी उसे किसी अप्रकट कारणसे अपने प्राण खोने पड़े। इसके सिवा रोमन लोगोंको युद्ध बहुत प्यारा है। राम्युलस युद्धविद्यामें निपुण था, उसने सब लोगोंको युद्धविद्या अच्छी तरह सिखाई है, परन्तु मेरा काम इससे बिलकुल उलटा है। मेरा मन धर्म और ईश्वर-भक्तिकी ओर झुका हुआ है। मेरा सारा समय ईश्वरभजनमें ही व्यतीत होता है। इसलिए, रोमन लोग मुझे पसन्द न करेंगे। मेरी हँसी होगी। अत मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे इस धर्म सकटमें न डालो।" यह बात सुनकर उसके सम्बन्धीने कहा कि—"तुम्हारा कहना बिलकुल सच है पर राजा भी तो ईश्वरका प्रतिनिधि होता है। लोग राजाका ही अनुकरण करते हैं। तुम्हें कुछ नहीं चाहिए यह बात सच है तथापि क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि लोग युद्धादि भयङ्कर कर्मोंका त्यागकर शान्ति और प्रेमको अपनावें ? रोमन लोगोंको अब व्यर्थके बखेड़े और युद्धसे नफरत हो चली है। अब वे शान्ति और ईश्वर-भक्ति चाहते हैं। लोगोंकी यह इच्छा तुम्हारे बिना दूसरे किसीसे पूरी न होगी। सो तुम्हें इन्कार न करना चाहिए। लक्ष्मी चलकर घर आई है उसे दुतकारिये नहीं कृपया स्वीकार कीजिए।" यह युक्तिवाद न्यूमाको जँच

गया। इसलिए उसने प्रार्थियोंकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। और रोमकी ओर प्रस्थान किया। रोमन लोग अगवानीकर, उसे बड़ी आवभगत और जलूसके साथ नगरमें लिवा ले गये। तदनन्तर न्यूमाको विधिपूर्वक राज्याधिकार दिया गया। यह घटना विक्रम के पूर्व ७७२ वें वर्षमें घटी।

इस प्रकार न्यूमा रोमन लोगोंका राजा हो गया। न्यूमाके पहले यह नियम था कि जब कभी राजा बाहर जाता था तो उसके साथ उसकी रक्षाके लिए शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित तीन सौ सिपाही रहा करते थे। उसने यह नियम तोड़ डाला। ऐसा कर उसने यह दिखाया कि सब प्रजाजन मेरे भक्त हैं। उनसे डरनेका कोई कारण नहीं। इसके अतिरिक्त राम्युलस द्वारा जीती हुई जमीन उसने लोगोंमें बाँट दी। उन लोगोंके देवता जुपिटर और मार्सके नामपर दो धर्माध्यक्ष नियत थे, उसने राम्युलसके नामसे एक और धर्माचार्य नियत किया। इससे वे लोग जो राम्युलसके भक्त थे सन्तुष्ट हो गये और सब लोग न्यूमाको दिलसे चाहने लगे। उसने टर्मिनस नामक सीमाके अधिकारीकी नियुक्ति की और लोगोंको आज्ञा दिया कि वे अपनी अपनी जमीनकी हदपर पत्थर गाड़ दें। इससे लोगोंके जमीनपरके हक सुरक्षित हो गये।

न्यूमा रोमन लोगोंका केवल राजा ही न था, पर उनका धर्माचार्य भी था। उसने रोमन लोगोंको धर्मकी दीक्षा दी। स्थान स्थानपर धर्मोपदेशक नियत कर उसने लोगोंको सच्ची ईश्वर भक्तिके तत्त्व सिखाए। उसने लोगोंके हृदयोंपर यह बात अङ्कित कर दी कि ईश्वर बलिदान देनेसे अप्रसन्न होता है। उसे फलमूल मद्यादिका नैवेद्य ही पसन्द है। इससे धर्माचरणकी क्रूरता बहुत कुछ कम हो गई उसमें सौम्य आ गया।

उसी तरह किसी प्राणीको या दृग्गोचर वस्तुको ईश्वर मानकर उसकी भक्ति करना बिलकुल मूर्खता है। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरके स्वरूपका प्रदर्शन पृथ्वीपरके किसी पदार्थसे नहीं हो सकता। इसलिए उसे निर्गुण और निराकार मानकर भजना चाहिए। इस उपदेशका फल यह हुआ कि मूर्तिपूजा बन्द हो गई। उन लोगोंके लगातार शासनकालके १५० वर्षोंमें कई मन्दिर बने, पर उनमें मूर्तियाँ न थीं। फिर भी बहुतसे मन्दिरोंमें अग्नि निरन्तर जला करती थी।

उसने धर्माध्यक्ष पुरुषोंकी तरह स्त्रियोंको तपस्विनी बनानेकी योजना की। केवल कुमारिकाएँ ही तपस्विनी बनाई जाती थीं, उन्हें उसी दशामें ३० वर्षतक रहना पड़ता था। राजाकी आज्ञा थी, कि उन ३० वर्षोंमेंसे पहले दस वर्षतक उन्हें अपने व्रतके कामोंकी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। दूसरे दस वर्षतक उन्हें वे काम स्वयं करने चाहिए। और आख़िरी दस वर्ष दूसरी नई कुमारियोंको सिखलानेमें बिताना चाहिए। इस अवधिके बाद इच्छा हो तो वे विवाहकर गृहस्थाश्रममें प्रवेश कर सकती थीं। किन्तु अनुभवसे यह बात सिद्ध हो गई थी कि ३० वर्षके बाद विवाह करनेसे नाना प्रकारके दुःख भोगने पड़ते थे, इसलिए बहुत ही कम कुमारियाँ गृहस्थाश्रमको अङ्गीकार करती थीं।

इन तपस्विनियोंका मान बहुत था। उनके साथ चोपदार, और सिपाही रहा करते थे। वे कहीं बाहर जा रही हों और यदि रास्तेमें फासीका दण्ड पाया हुआ कैदी मिल गया तो, उसे जीवनदान दे दिया जाता था। उन कुमारियोंके लिए बहुत कड़े नियम बनाये गए थे। व्रत भङ्ग करनेपर वे जीती जला दी जातीं, या जमीनमें गाड़ दी जाती थीं।

न्यूमाने रोमन पचांगमें भी सुधार किया। यह स्वय ज्योतिष शास्त्रमें पारगत था। राम्युलसके समयसे १० मासका वर्ष माना जाता था। उसने जनवरी और फरवरी इन दो महीनोंकी सृष्टिकी और १२ मासका वर्ष बनाया। पुराने जंगली राष्ट्रोंमें एक वर्षमें बराबर महीने न होते थे। कुछ लोग तीन मासका वर्ष मानते थे। आर्केडियन लोगोंका वर्ष चार मासका होता था। आकार्नेनियन लोगोंके वर्षमें छ मास ही होते थे। ईजिप्तमें पहले तो एक मासका वर्ष माना जाता था किन्तु बाद में ४ मासका वर्ष माना जाने लगा।

यह राजा दयालु था। इसके राज्यमें नर बलि देना बन्द था। इसीने जानसका प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया था। इनके शासनकालमें नगरके फाटक युद्धके समय खुले और शान्तिके समय बन्द रखनेका नियम था। इसके शासनकालमें एक भी युद्ध न हुआ।

न्यूमाने धन्धोंपरसे लोगोंके भिन्न भिन्न वर्ग बनाए। यथा लुहार, सुनार, रंगरेज, चमार, कुम्हार आदि। इस प्रकार वर्ग बनानेसे कुल और गाँवके बडप्पनका अभिमान धीरे धीरे आपही आप लुप्त हो गया, और सब लोग अपने अपने धन्धेमें श्रेष्ठत्व पानेकी प्रतियोगिता करने लगे।

इस प्रकार न्यूमाने बहुतसे धार्मिक और व्यावहारिक सुधार किये। उसने लोगोंको शान्तिप्रिय बना दिया, जिससे लोग भाँति भाँतिके उद्योग कर अपना निर्वाह करने लगे। उसके शासनकालमें कहीं भी युद्धकी अग्नि प्रज्वलित न हुई। इसके राज्यकालमें लोगोंमें नीतिका प्रसार अधिक हुआ। राजा ही राष्ट्रका प्राण होता है उसके शासनकालमें 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत चरितार्थ होती थी।

न्यूमा ४३ वर्ष राज्यकर विक्रमके पूर्व ७३०वें वर्ष मर गया। उस समय उसकी अवस्था ८३ वर्षके लगभग थी। उसकी मृत्युसे लोगोंको बहुत दुःख हुआ। हजारों लोग शवके साथ स्मशानतक गए थे। सब धर्माध्यक्ष भी शवके साथ थे। उसने मरनेके पहले कह दिया था कि उसका शव जलाया न जाय गाडा जाय। अपनी लिखी हुई सब धर्म पुस्तकें भी उसने अपने शवके साथ गाडनेकी आज्ञा दी थी। कारण, वह कहा करता था कि बिना गुरुके ज्ञान प्राप्त नहीं होता। केवल पुस्तकें पढनेसे धर्मका गूढार्थ मालूम नहीं होता। उसकी आज्ञानुसार उसका शव एक पत्थरकी पेटीमें रखकर गाडा गया और उसकी पुस्तकें भी एक दूसरे पत्थरकी पेटीमें रखकर उसके शवके पास ही गाड दी गईं।

न्यूमाकी मृत्युके बाद कुछ कालतक सिनेट सभा राज्यशासन-कार्य करती रही। तदनन्तर सबेन लोगोंने रोमन लोगोंमें से एक मनुष्यको राजा चुना। उसका नाम टुलियस हॉस्टिलियस था। यह शूर था। चुपचाप बैठे रहना उसे पसन्द न था। उसने सोचा कि न्यूमाके समयमें स्वस्थ बैठे रहनेसे रोमन लोगोंका शौर्य घटता जा रहा है और रोमका प्रभाव अब लोगों पर उतना नहीं पडता। अत शौर्य और प्रभाव को बनाये रखनेके लिए युद्ध करना अत्यावश्यक है, इसलिए वह मामूली से मामूली कारण पा जाते ही आसपासके लोगोंसे युद्ध करनेका अवसर हाथसे न जाने देता था। एक बार एक किसानकी जमीनके कारण उसकी आलबन लोगोंसे ठन गई। दोनों ओर युद्धकी तैयारियाँ होने लगी। शीघ्र ही दोनों ओरकी सेनाएँ मैदानमें आ डटीं। युद्ध शुरू होने ही वाला था कि इतनेमें आलबन लोगोंके सेनापति मेट्टुलियसने हॉस्टिलियससे

कहलाय। कि आलबन और रोमन लोग असलमें एक हैं यदि हम लड़ेंगे तो दोनों ही पक्ष निर्बल हो जायँगे और तब दूसरे लोग हमें नष्ट कर देंगे। इससे भला इसीमें है कि दोनों ओरसे तीन तीन आदमी चुने जायँ और उन्हींकी हार जीतपर हमारे युद्धका फैसला ठहराया जाय। ऐसा करनेसे न तो दोनों पक्ष अशक्त ही होंगे और न उनके श्रेष्ठत्वको ही धक्का पहुँचेगा। लोग इस बातपर राजी हो गए। रोमन सेनामेंसे तीन मनुष्य चुने गए। ये तीनों सगे भाई थे। उनका नाम होरेशी रखा गया। आलबन लोगोंने अपने योद्धाओंका नाम कुरिआशी रखा। छओं आदमी अपने अपने पक्षके अनुमोदनसे युद्ध करनेके लिए प्रस्तुत हुए। पहले ही सपाटेमें रोमन पक्षके दो मनुष्य मारे गए। तब तो सबको निश्चय हो गया कि रोमकी अवश्य ही हार होगी। इतनेमें तीनों कुरिआशी, जो कि अबतक एक साथ लड़ रहे थे, अलग अलग हो गए। होरेशियसकी बन आई। उसने तीनोंको मार डाला। आखिरी मनुष्यको मारते समय उसने जोरसे चिल्लाकर कहा कि पहले दो मनुष्योंको तो मैंने भाइयोंका बदला लेनेके लिए मारा और तीसरेको इसलिए मारता हूँ कि रोमन लोग आलबन लोगोंपर राज्य करें। इस प्रकार रोमकी जीत हुई। होरेशियसके स्वागतार्थ रोमन स्त्रियाँ नगरके बाहर गईं, उनमें एक युवती भी थी। होरेशियसको अपने गांधर्व विवाहसे परिणित पति कुरिआशी-के वस्त्राभूषण पहने देखकर उसे बहुत दुःख हुआ और वह ढाढ़ मारकर रोने लगी। यह देखकर होरेशियसने उसे वहीं मार डाला। तदनन्तर उसकी ओर अँगुली दिखाकर वह बोला "अपने देशके शत्रुकी मृत्युसे दुखी होनेवाली रोमन स्त्रियाँ इसी मौत मरें" यह युवती होरेशियसकी सगी बहन थी।

लोगोंको उसका यह कृत्य बुरा मालूम हुआ और न्यायाधीशने उसे फाँसी पर लटकानेका दण्ड दिया। किन्तु उसने राज्यका बड़ा भारी काम किया था इसलिए सिनेट सभाने उसकी सजा कुछ कम कर दी।

आलवन लोगोंको जीतनेपर इट्रस्कन लोगोंने रोमपर चढ़ाई की। आलवन लोग रोमन लोगोंकी सहायताको तैयार थे ही। युद्ध छिड़ गया। किन्तु ऐन वक्तपर आलवन लोगोंने रोमन लोगोंका साथ छोड़ दिया। इससे रोमन सेनामें खलबली पड़ गई। रोमकी हार होनेही वाली थी कि रोमन प्राणोंकी परवाह न कर युद्ध करने लगे। अन्तमें उन्हींकी जीत हुई। विश्वासघात करनेके कारण टुलियस हॉस्टिलियसने आलवन लोगोंके सेनापति मेटियस सफेटियसको गाड़ीके पहिएके नीचे दबाकर मार डाला। उसने सब आलवन लोगोंको आलवा नगरसे निकाल दिया और रोम नगरकी एक पहाड़ी पर ला बसाया। सब बड़े बड़े आलवन लोग पाट्रिशयन लोगोंमें शामिल कर लिये गये और बाकीके लोगोंको प्लेबियन लोगोंमें मिला दिया। इसके बाद उसने सबैनपर चढ़ाई कर उन्हें भी जीत लिया।

इसके बाद उस राजाको अपनी क्रूरतापर पश्चात्ताप होने लगा। वह सोचने लगा कि मुझे अपनी क्रूरताके कारण दुःख उठाना पड़ेगा। इसलिए न्यूमाका अनुकरण करनेमें ही भला है, ऐसा विचारकर वह वैरागी हो गया और गरीब आलवन लोगोंमें जाकर रहने लगा। अब उसका समय परोपकार और ईश्वर भजनमें व्यतीत होने लगा। तो भी उसके मनको शान्ति न मिली। उसे अपनी करनी पर पश्चात्ताप होने लगा। इसी तरह कुछ काल व्यतीत होनेपर एक दिन उसके

मन्दिरपर बिजली गिरी, यह सकुटुम्ब मर गया। इसने ३२ वर्ष राज्य किया था।

टुलियसकी मृत्युके बाद कुछ दिनतक तो कोई राजा न था। बाद आकस मार्शियस राजा बन बैठा। यह न्यूमाका नाती था। यह अपने दादाके समान ईश्वर भक्त था। उसे ईश्वर भजनमें रत देखकर लैटिन लोगोंने उसके प्रान्तमें लूटपाट मचा दी। यह देखकर आकस मार्शियसने चढाई की और मेड्यूलियाकी लडाईमें उन्हें हरा दिया। उसने उनके बहुतसे गाँव छीन लिये और उन गाँवोंके निवासियोंको रोम नगरकी आवेन्टाइन पहाडीपर ला बसाया। लैटिन लोगोंसे जीती हुई जमीन उसने रोमन लोगोंको बाँट दी। इस राजाको इमारतें बनवानेका बडा शौक था। इसने कई इमारतें बनवाई। रोम नगरके एक पहाडकी तलहटीमें इस राजाने एक बहुत बडा जेलखाना बनवाया। यही रोम राज्यका सबसे पहला जेलखाना था। अबतक अलग जेलखाना बनवानेकी जरूरत नहीं पडी थी।

प्रजाजनोंमें धर्म जागृत रखनेके लिए न्यूमाने कुछ धर्माज्ञाएँ निकाली थीं। इस राजाने वे धर्माज्ञाएँ काले तख्तोंपर सफेद अक्षरमें लिखवाकर बाजारोंके मुख्य मुख्य स्थानोंपर लगवा दी थीं।

इस राजाने टाइबर नदीके मुखके पास ओस्टिया स्थानपर एक नया नगर बसाया और नदीके उस पार जानिक्युलम पहाडपर मजबूत किला बनवाया। इस किलेको नदीके इस तटके प्रदेशसे जोडनेके लिए उसने टाइबर नदीपर एक लकडीका पुल बाँधा। यही पहला रोमन पुल था। यह राजा २४ वर्ष राज्यकर विक्रमके पूर्व ६७४ वें वर्ष मर गया।

इसके बाद जो राजा गद्दीपर बैठा वह ग्रीस देशका

निवासी था। प्राचीन समयमें जिस समय रोम बाल्यावस्था में था, उस समय ग्रीस देश उन्नतिके शिखरपर था। उस देशके बहुतसे नगर धन सम्पत्तिसे परिपूर्ण थे। इन्हीं नगरों-मेंसे एक नगरका नाम कारिंथ था। उस नगरमें एक बार राज्यक्रान्ति हुई। लोकपक्षकी विजय होनेके कारण बहुतसे बड़े बड़े लोगोंको नगर छोड़कर भागना पड़ा। इन्हीं भागे हुए लोगोंमेंसे एकका नाम डेमेराइट्स था। वह धनवान और कलाकौशलका भोक्ता था। वह कारिंथ नगरसे भागकर इट्रस्कन लोगोंके टार्किनी नगरमें जा बसा। वहाँ कुछ रोज रहनेपर उसने वहाँकी एक औरतसे शादी कर ली। उस स्त्रीसे उसे एक लड़का हुआ, जिसका नाम ल्यूकोमो रखा गया। धन-वान् होनेपर भी लोग ल्यूकोमोको आगन्तुक समझते थे। इससे उसे वहाँ कुछ भी अधिकार नहीं मिला। किन्तु उसका स्वभाव अधिकार-प्रिय था, सो उसे बड़ा दुःख हुआ। अन्तमें वह उस शहरको छोड़कर रोम नगरमें जा बसा। रास्तेमें एकाएक एक गरुड़ पक्षी झपटकर उसकी टोपी ले उड़ा और पुनः उसके सिरपर लागिराया। यह देख उसकी स्त्री जो कि उसके साथ ही थी, बोली—"यह राज्य मिलनेका शकुन है।" इससे उसे बहुत आनन्द हुआ। रोममें आनेपर उसने ल्यूशियस टार्किनियस नाम धारण कर लिया। इस समय यहाँ आकस मार्शियस राज्य करता था। ल्यूशियस था बड़ा धूर्त। वह उस समयकी लोकस्थितिसे अच्छी तरह परिचित था, सो पानीकी तरह धन खर्चकर उसने लोगोंको अपने वशमें कर लिया। वह लोगोंका ईश्वर बन बैठा। यहाँ-तक कि राजा आकस मार्शियस भी उससे सलाह पूछा करता था। उसकी सम्मति बिना राज्यमें एक तिनका भी इधर

उधर न होता था। मरते समय राजाने अपने दोनों पुत्र ल्युशियलके सुपुर्द कर दिये। राजाका चुनाव करना सिनेट सभा और लोगोंके हाथमें था। ऐसी दशामें ल्युशियस टार्कि नियमका राजा चुना जाना कोई बडी बात न थी।

सिंहासनारूढ़ होनेपर इस राजाने सबसे पहले, ल्यूससं लोगोंके १०० सभासदोंको सिनेटमें बैठनेका अधिकार दिया। इस बातसे ये लोग बहुत सन्तुष्ट हुए और सिनेटका प्रभाव भी बढ गया। इसके बाद उसने लैटिन, सबैन और इट्रस्कन लोगोंको जीतकर उनके प्रान्त अपने राज्यमें मिला लिये। यह राजा भली भाँति जानता था कि उसे लोगोंकी कृपासे ही राज्याधिकार मिला है। और उस अधिकारको अपने अधीन रखनेके लिए लोगोंकी कृपा ही काम आयगी। इसलिए वह सदैव लोगोंको सन्तुष्ट रखनेका प्रयत्न किया करता था। नाटकघरोंमें खेल करवाना, उन्हें भोज देना, उनकी माँग पूरी करना, इत्यादि काम करनेमें ही वह हमेशा लगा रहता था। उसीने रोम नगरमें स्वच्छ पानीके नल बनवाये। खराब पानीके नगरके बाहर ले जानेके लिए नालियाँ बनवाईं। कहा जाता है कि वे नल और नालियाँ अबतक मौजूद हैं। उसने रोम नगरके चारों ओर दृढ दीवाल बनवाई। शहरमें सुन्दर सुन्दर इमारतें बनवाईं। यदि उसकी जगह कोई रोमन या सबैन राजा होता तो रोमनगरका इतना सुधार न होता किन्तु वह ग्रीक था। इसी राजाके कारण ग्रीसके कलाकौशलका लाभ रोमको मिला। सार्वजनिक खेलोंके लिए जितने अखाडे थे उन सबको उसने बहुत बढा दिया। उसने ग्रीससे घोडे और पहलवान बुलवाये। इस प्रकार राज्य करते हुए कई वर्ष बीत गये। एक बार एक लडका जो कि राजाका

नौकर था, राजमहलकी चौसारमें सोया हुआ था। उसके सिरके चारों ओर अग्निकी ज्वाला जलती हुई देख पड़ी। दूसरे नौकर उसे बुलानेके लिए उस लडकेके सिरपर पानी डालने ही वाले थे कि इतनेमें रानी वहाँ आ पहुँची और उसने अपनी शकुनविद्याके आधारसे उस तेजका निराला ही अर्थ निकाला। दूसरे नौकरोंको वहाँसे हट जानेकी आज्ञा देनेपर रानीने राजासे कहा कि यह लडका भविष्यत्में राजा होगा, इसलिए इसका पालन उत्तम रीतिसे किया जाना चाहिए। राजाने रानीकी बात मान ली, उसे उत्तम उत्तम विद्या सिखाई गई। वह लडका सर्वगुण सम्पन्न हो गया। उस लडकेका नाम सर्वियस टुलियस था। उसे सर्वगुणयुत पाकर राजाने अपनी कन्या उसे ब्याह दी।

ल्युशियस टार्कियसने ४० वर्ष राज्य किया। प्रजा उसे बहुत चाहती थी, परन्तु आंकसके पुत्र उससे शत्रुता रखते थे। अन्तमें उन्होंने ल्युशियसको मारनेके लिए दो ग्वालोंको वादी प्रतिवादीके रूपमें राजाके पास भेजा। राजा इस समय राजमहलमें था। ये भी वहीं गये। उनमेंसे एक आदमी राजाको अपना हाल सुनाने लगा। राजाको उस ग्वालेका हाल सुननेमें लगा हुआ पाते ही दूसरेने उसके सिरपर कुल्हाडीसे आघात किया। राजा वहीं मर गया। रानी भी इस समय वहीं थी। वह बडी चतुरा थी। उसने सोचा कि यदि यह बात लोगोंको मालूम हो जायगी तो बडा अनर्थ होगा, सब हेतु विफल हो जायँगे। इसलिए उसने अपराधियोंका सिपाहियोंके सुपुर्द कर लोगोंसे कहा कि राजासाहब आहत अवश्य हुए हैं पर सुरक्षित हैं। इसके बाद उसने सर्वियस टुलियसको गद्दीपर बिठाकर राजाकी ओरसे राजकाज करना शुरू किया।

राजाका शव छिपाकर रख दिया गया। और राजा जीता है यह दिखलानेके लिए सर्वियस सलाह करनेके लिए उस शवके पास जाया करता था। रानी और सर्वियसने कुछ दिनोंतक उत्तम रीतिसे राज्यकी व्यवस्था की। बादमें सच्चा हाल लोगोंपर प्रकट कर दिया गया। और राज्यका कामकाज उसी प्रकार होने लगा। यहाँ एक बात और ध्यानमें रखने योग्य है। सर्वियसको राजा बनानेके लिए सिनेट सभाने अपनी सम्मति दे दी थी। परन्तु लोगोंकी अनुमति विना सिंहासनपर बैठनेवाला यही एक रोमन राजा था।

इस प्रकार सर्वियस राजा हो गया। उसके देश, गाँव कुल और माँ बापका कुछ भी पता न था। उसने सिंहासनपर बैठनेके पहले प्रजाजनोंसे सम्मति भी न ली थी, उसका यह काम उस समयकी स्थितिके अनुकूल ही था, कारण राजा चुननेका अधिकार केवल पात्रिशियन लोगोंको ही था। प्लेबियन लोगोंको यह अधिकार प्राप्त न था। अच्छा ही हुआ कि उसने इन लोगोंकी सम्मति न ली, कारण कि पात्रिशियन लोगोंने इस बातका अनुमोदन कभी न किया होता। स वयस टुलियस, अपना पक्ष—रोमम रहनेवाले प्लेबियन लोगोंका पक्ष—मजबूत करनेके लिए कोशिश करने लगा। इस कारण से साधारण प्लेबियन लोगोंको राजकाजमें मत देनेका थोड़ा बहुत अधिकार मिल गया। इससे राजाका पक्ष भी कुछ मजबूत हो गया।

इस राजाने बहुतसे लोगोंको जीतकर जमीन अपने राज्यमें मिलाली। यह राजा चाहता था कि रोमन, सबैन और रोम नगरके आसपास रहनेवाले लैटिन लोग मिलकर रहें और एक दूसरेसे द्वेषभाव न रखें। इस इरादेसे उसने आवेंटाइन

पहाडीपर डायना देवीका मन्दिर बनवाया। इस मन्दिरमें तीनों प्रकारके लोग एकत्र पूजा करते थे। धीरे धीरे इन लोगोंमें प्रेम बढने लगा।

इस राजाने मर्दुमशुमारी करनेकी पद्धति शुरू की। इस कामके लिए उसने दो नवीन तेवहारोंकी योजना की। शहरके बाहर रहनेवाले लोगों की मर्दुमशुमारी करनेके लिए पेगानालिया तेवहारकी सृष्टि की गई। पेगानालिया पेगस शब्दसे बना है। पेगस शब्दका अर्थ पहाडोंपरकी तटबन्दी है। कारण उस समय रोमके आसपास बहुतसे लोग रहते थे। प्रत्येक जातिके पास एक एक पेगस था। पेगानालिया तेवहारके दिन ये लोग अपने अपने पेगसमें इकट्टे होते थे और वहीं उनकी गिनती की जाती थी। नगरमें रहनेवाले लोगोंको गिननेके लिए कॉपिटालिया तेवहारकी योजना की गई। कॉपिटालिया कॉपिटा शब्दसे बना है। रोमन भाषामें कॉपिटा उस स्थानको कहते हैं जहाँ दो या उससे अधिक रस्ते मिलते हैं। कॉपिटालिया तेवहारको लोग ऐसे स्थानोंपर इकट्ठे हुआ करते थे और वहीं उनकी मर्दुमशुमारी की जाती थी। मर्दुमशुमारी केवल प्रत्येक कुटुम्बके मुखियाको, अपने कुटुम्बके लोगोंकी, और गुलामोंकी सख्या बतानी पडती थी। द्रव्य, जमीन, घर पशु आदिकी गिनती भी इसी समय होती थी। इस पद्धतिसे जनसख्या मालूम हो जाती थी। इस लोगोंके मालियतपर नवीन कर लगानेका साधन भी रोमन सरकारके हाथ आ गया। इस समय रोम नगरकी मनुष्यसख्या ८३००० थी।

अबतक प्लेबियन लोगके व्यवस्थित विभाग न किये गये थे। इस राजाने उनका वर्गीकरण कर दिया। नगरमें और

नगरके बाहर रहनेवाले प्लेबियन लोगोंको उसने तीस भागोंमें विभक्त कर दिया। प्रत्येक भागके लिए एक एक ट्रिब्यून यानी मुखिया नियत किया गया। कर वसूल करनेका काम ट्रिब्यूनके सुपुर्द किया गया। प्रत्येक भागको सरकारके लिए नियत संख्यामें सेना तैयार कर देनी पड़ती थी। इस सेनाकी व्यवस्था भी ट्रिब्यूनको ही रखनी पड़ती थी। इन सब झुण्डोंकी कोमिटा ट्रिब्यूटा नामक सभा जब बैठती थी तो उसी समय ट्रिब्यून चुने जाते थे, और उसी समय प्रत्येक झुण्ड अपने अपने खानगी दावोंका निपटेरा करनेके लिए तीन तीन न्यायाधीश भी चुनता था।

इस प्रकार इस राजाने प्लेबियन लोगोंकी व्यवस्था करदी, किन्तु राज्यकार्यमें उनका प्रभाव पड़नेके लिए इतना ही बस न था। बड़े बड़े राजकीय कामोंमें मत देनेका अधिकार उन्हें मिलना चाहिए था। इसके लिए उस राजाने सम्पत्तिके मानसे पाश्रिशियन लोगोंको छः वर्गोंमें बाँट दिया। प्रत्येक वर्गके लिए अलग अलग पोषाक नियत कर दिये और फौजमें उन्हें क्या काम करना चाहिए यह निश्चित कर दिया, इन छः वर्गोंको उसने १९३ उपवर्गोंमें बाँट दिया। इन सब उपवर्गोंको सेंचरीज नाम दिया गया और सब सेंचरीजका कोमिटा सेंचूरिआटा याने राष्ट्रीय सभा नाम रखा गया। यह राष्ट्रीयसभा समय समय पर काम्पस मार्शियस नामक मैदानमें हुआ करती थी। राजकर्मचारियोंका चुनाव करना, सिनेटके बनाए हुए नियमोंको स्वीकार करना और युद्ध करने तथा सुलह करनेके समय उचित विचार करना आदि अधिकार इस सभाको प्राप्त थे। रोमन लोगोंके नियममें यह सभा सर्वोच्च न्यायालय माना गया था। इस प्रकार राष्ट्रीय सभामें

बैठनेका अधिकार मिल जानेसे प्लेबियन लोग कुछ सन्तुष्ट हो गये।

सर्वियसने नवीन राष्ट्रीय सभा स्थापितकर प्लेबियन लोगोंको अधिकार देनेका प्रयत्न तो किया, पर उसे अधिक सफलता न हुई। कारण अधिकतर पात्रिशियन लोग ही धनवान थे। अत उन्हींके मत ज्यादा होते थे और कई बार उनकी इच्छानुसार ही कार्य होता था। इसके अलावा सर्वियसको पात्रिशियन लोगोंकी कोमिटा क्यूरिआटा, जोकि राम्युलसने स्थापित की थी, तोडनेकी हिम्मत न पडी। लाचार उसे यह नियम बनाना पडा कि नवीन राष्ट्रीय सभा द्वारा स्वीकार किया हुआ प्रस्ताव, पात्रिशियन लोगोंकी सभामें स्वीकार हुए बिना प्रचारमें न लाया जाय। यह व्यवस्था इंग्लिस्तानके हौस आफ कामन्स और हौस आफ लार्ड्सकी व्यवस्थासे बहुत कुछ मिलती जुलती है।

गद्दीपर बैठते समय राजाने कोमिटा क्यूरिआटा सभाकी सम्मति न ली थी। इससे विशेषत पात्रिशियन लोग कुछ नाराज थे और जब राजाने प्लेबियन लोगोंको अधिकार देनेका यत्न करना शुरू किया तो उनकी नाराजी और बढ गई। इस-लिए उसने एक बार नवीन स्थापित की हुई राष्ट्रीय सभामें अपने लिए मत लिये। इस सभामें उसे अत्यधिक मत मिले। इससे उसका राज्यासन दृढ हो गया, परन्तु इसके बाद शीघ्र ही उसके घरमेंसे ही उसपर वज्रपात हुआ।

इस राजाको दो लडकियाँ थीं। इनमेंसे एक सुशीला और दूसरी दुष्टा। ये दोनों टार्किनियस राजाके पुत्रोंको ब्याही गई थीं। परन्तु दुर्भाग्यसे सुशीला लडकीको दुष्ट पति मिला और दुष्टा स्वभावाको सुशील पति मिला। दुष्ट स्वभावा

लड़कीका नाम टुलिया था। उसने षड्यन्त्र रचकर अपने पति और बहिनको मरवा डाला और अपनी बहिनके पति ल्युशियस टार्किनियससे शादी कर ली। उसने अपने पतिको समझा बुझाकर राजगद्दीपर अपना अधिकार साबित करनेके लिए प्रस्तुत कर लिया। ल्युशियसने कुछ पाट्रिशियन लोगोंको अपनी ओर मिला लिया। सब तैयारी हो जानेपर एक दिन वह सशस्त्र कुछ सिपाहियोंको अपने साथ लेकर सिनेटके सभागृहमें गया, और सिंहासनासीन हो सभा की। उसने अपना नाम टार्किनियस रखा। सिनेटके कुछ सभासद् इस षड्यन्त्रमें पहलेहीसे सम्मिलित थे। निदान सभासदोंके आते ही वह सर्वियसको गालियाँ देने लगा। इतनेमें सर्वियस भी वहाँ आ पहुँचा, उसने ल्युशियससे इस उद्दण्डताका कारण पूछा। ल्युशियस गालियाँ देता हुआ सिंहासनसे उठा और बेचारे वृद्ध सर्वियसको दोनों हाथोंसे उठाकर निर्दयतासे उसे सीढियोंपर फेंक दिया। वह बेचारा उठकर धीरे धीरे घरकी ओर चला, पर रास्तेमें ही ल्युशियसके सिपाहियोंने उसे मार डाला और उसका शव एक गलीमें फेंक दिया। यह सब हाल हुआ जब टुलियाको मालूम हुआ वह आनन्द प्रदर्शित करनेके लिए अपने पतिके पास चली। लौटती बार उसका रथ जिस रास्तेसे आ रहा था वह कुछ तङ्ग था और उसके बापका शव भी उसी गलीमें पड़ा था। आगे रथ हाँकनेसे उसके पहिये अपने मृत राजाके शवपरसे जायँगे, ऐसा सोचकर रथ हाँकनेवालेने रथको दूसरे रास्तेसे ले जाना चाहा। परन्तु नवीन राजपत्नीने कहा—"अरे, कुछ हर्ज नहीं, रथ इसी रास्तेसे चलने दे।" लाचार गाड़ीवानको रथ उस शवपरसे ही ले जाना पड़ा और रथके पहिये रक्तसे भर गये।

किन्तु उस पाषाणहृदया स्त्रीको कुछ भी दया न आई। सर्वियस राजाका खून विक्रमके पूर्व ५६१ वें वर्ष हुआ।

इस प्रकार रक्तसे हाथ रङ्गकर ल्युशियस टार्किनियसने राज्य प्राप्त किया। वह लोगोंपर अत्याचार करने लगा। उसने सब नियम एक ओर रख दिये। वह अपने साथ सदा सशस्त्र सिपाहियोंको रखता था। क्योंकि वह डरता था कि कहीं कोई मुझे मार न डाले। राजसिंहासनपर बैठते ही उसने प्लेबियन लोगोंके सब अधिकार जो कि सर्वियसने दिये थे छीन लिये और नवीन शुरु किये हुए सार्वजनिक तिवहार भी बन्द कर दिये। वह सिनेट सभाकी परवाह न करता था। सिनेटके मृत सभासदोंके स्थानपर नवीन सभासद लेना भी उसने बन्द कर दिया। उसने आसपासके लोगोंको जीतकर रोमकी सत्ता बढा दी। धनवानोंसे ज़बरदस्ती द्रव्य लेकर और गरीबोंसे बिना मजदूरी दिये मिहनत कराकर उसने रोममें कई बडी बडी इमारतें बनवाईं।

इस राजाके सम्बन्धमें एक चमत्कारिक बात लिखी है। एक दिन एक तेज पुञ्ज स्त्री हाथमें नौ पुस्तकें लेकर राजाके दीवानखानेमें आयी। उसने राजासे कहा कि इन पुस्तकोंमें रोम की भावी स्थिति और उसे प्राप्त करनेकी रीति लिखी हुई है। वह, राजाको ये पुस्तकें खरीदनेके लिए आग्रह करने लगी परन्तु कीमत अधिक होनेके कारण राजाने खरीदना न चाहा। यह देख वह स्त्री वहाँसे चल दी और तीन पुस्तकें जला डालीं। इस [illegible] आकर वह शेष पुस्तकोंकी भी वही कीमत माँगने लगी। फिर [illegible] अस्वीकार करने पर तीन पुस्तकें उसने और जला डालीं। [illegible] और शेष तीन पुस्तकें लेकर वह फिर राजाके पास आई, और इन [illegible] का भी उतनाही दाम माँगने लगी। यह देख

लड़कीका नाम टुलिया था। उसने षड्यन्त्र रचकर अपने पति और बहिनको मरवा डाला और अपनी बहिनके पति ल्युशियस टार्किनियससे शादी कर ली। उसने अपने पतिको समझा बुझाकर राजगद्दीपर अपना अधिकार साबित करनेके लिए प्रस्तुत कर लिया। ल्युशियसने कुछ पात्रिशियन लोगोंको अपनी ओर मिला लिया। सब तैयारी हो जानेपर एक दिन वह सशस्त्र कुछ सिपाहियोंको अपने साथ लेकर सिनेटके सभागृहमें गया, और सिंहासनासीन हो सभा की। उसने अपना नाम टार्किनियस रखा। सिनेटके कुछ सभासद् इस षड्यन्त्रमें पहलेहीसे सम्मिलित थे। निदान सभासदोंके आते ही वह सर्वियसको गालियाँ देने लगा। इतनेमें सर्वियस भी वहाँ आ पहुँचा, उसने ल्युशियससे इस उद्दण्डताका कारण पूछा। ल्युशियस गालियाँ देता हुआ सिंहासनसे उठा और बेचारे वृद्ध सर्वियसको दोनों हाथोंसे उठाकर निर्दयतासे उसे सीढ़ियोंपर फेंक दिया। वह बेचारा उठकर धीरे धीरे घरकी ओर चला, पर रास्तेमें ही ल्युशियसके सिपाहियोंने उसे मार डाला और उसका शव एक गलीमें फेंक दिया। यह सब हाल हुआ जब टुलियाको मालूम हुआ वह आनन्द प्रदर्शित करनेके लिए अपने पतिके पास चली। लौटती बार उसका रथ जिस रास्तेसे आ रहा था वह कुछ तङ्ग था और उसके बापका शव भी उसी गलीमें पड़ा था। आगे रथ हाँकनेसे उसके पहिये अपने मृत राजाके शवपरसे जायँगे, ऐसा सो- कर रथ हाँकनेवालेने रथको दूसरे रास्तेसे ले जाना च सब परन्तु नवीन राजपत्नीने कहा—"अरे, कुछ हर्ज न ए उसने इसी रास्तेसे चलने दे।" लाचार गाड़ीवानको र्नियसका शवपरसे ही ले जाना पड़ा और रथके पहिये रव ारिनसे पूछा

कि उसके बाद राजा कौन होगा ? जवाब मिला, 'जो सबसे पहले अपनी माताका चुम्बन कर लेगा, वही राजा होगा।' डेल्फीके देवताके उत्तर दोअर्थी होते थे। उनके ऊपरके अर्थ और गूढार्थमें बडा अन्तर होता था। ल्युशियसने पुजारिनको गुप्त रीतिसे बहुतसी भेंट दी और उसे खुशकर उसका गूढार्थ पूछ लिया। रोममें पहुँचनेपर एक दिन ठोकर लगकर गिरनेका बहाना कर ल्युशियसने पृथ्वी माताका चुम्बन कर लिया।

रोमके दक्षिणमें रटिलियन लोगोंका आर्डिया नामक एक नगर था। टार्किनियस राजा उस नगरके पास छावनी डाले पडा था। वहाँ एक रोज राजाके पुत्र और भानजे कोल्याटिनसमें इस बातपर वादविवाद होने लगा कि किसकी स्त्री सबसे अधिक सुशीला है। भानजेने अपनी स्त्रीकी बडाई की। यह सुन इस बातका पता लगानेके लिए वे तत्काल रोम चल दिये। जाकर देखा तो राजपुत्रोंकी स्त्रियाँ ऐश आराममें निमग्न पायी गयीं। इस प्रकार राजपुत्रोंको नीचा देखना पडा। इन सबका परिणाम बहुत ही बुरा हुआ। राजपुत्र सेक्सटस बहुत ही दुराचारी था। वह वहाँसे कोल्याटिनसकी स्त्री ल्युक्रीशियाको देखने गया। वहाँ उसके रूपको देखकर वह मोहित हो गया। और अपनी दुर्वासनाको पूर्ण करनेके लिए उसके घर जा रहने लगा। ल्युक्रीशियाने उसका अच्छा सत्कार किया। वह उस दुष्टके दुरभिप्रायसे बिलकुल अनभिज्ञ थी। उस कामान्धने एक रातको ल्युक्रीशियापर जुल्म कर उसका पातिव्रत भङ्ग किया, तब उसने अपने बाप ल्युक्रीशियस और पति कोल्याटिनसको बुला भेजा। वे अपने साथ अपने एक मित्रको लाये थे। कोल्याटिनसके साथ ल्युशियस ब्रूटस भी था। इनके आनेपर ल्युक्रीशियाने सब

कुछ कह सुनाया और अब जीना अपमानास्पद समझकर उसने आत्महत्या कर ली।

इन सब घटनाओंका देखकर वहाँ एकत्र हुए लोगोंकी आँखें मारे क्रोधके लाल हो गईं। ब्रूटसने तत्काल अपने पागलपनका स्वाँग बदल डाला। ल्युक्रीशियाकी छातीसे छुरा निकालकर उसे हाथमें ले ल्युशियस ब्रूटसने प्रण किया कि मैं राजा टार्किनियस और उसकी दुष्ट स्त्रीको उनकी सन्तति सहित रोमसे निकाल दूँगा। अब मैं रोममें किसी राजाको राज्य न करने दूँगा। तदनन्तर शेष सब लोगोंने एक रक्तसे भरे हुए छुरे हाथमें लेकर ल्युक्रीशियाका बदला लेनेकी प्रतिज्ञा की।

इस प्रतिज्ञाको पूरी करनेके लिए साधारण लोगोंकी सहायताकी बहुत जरूरत थी। इसलिए ल्युक्रीशियाका शव रोमके एक प्रसिद्ध स्थानपर रख दिया गया। उस पतिव्रता सुन्दरीकी यह भयानक अवस्था देखकर और सेक्सटस्के दुराचारका वृत्तान्त सुनकर लोगोंको क्रोध हो आया। वे टार्किनियसके विरुद्ध बलवा करनेको तैयार हो गये। वहाँ ब्रूटसने आवेशपूर्ण भाषण किया, उसने अपने भाषणमें ल्युक्रीशियापर किये गये अत्याचार, सर्वियस टुलियसके खून और टुलियाकी निर्दयताका खूब दिग्दर्शन कराया। उसका हृदय-भेदक भाषण सुनकर लोग साक्षात् क्रोधकी मूर्ति बन गये। ब्रूटसने, लोगोंको राजाका अधिकार निकाल डालनेके लिए उपदेश किया। रोमन लोगोंके मनमें यह बात जम गई। क्याम्पस मारशियसके मैदानमें सभा हुई। सबकी सलाहसे राजाका अधिकार निकाल दिया गया और टार्किनियसको सकुटुम्ब देश निकाला दिया गया।

कि उसके बाद राजा कौन होगा ? जवाब मिला, 'जो सबसे पहले अपनी माताका चुम्बन कर लेगा, वही राजा होगा।" डेल्फीके देवताके उत्तर दोअर्थी होते थे। उनके ऊपरके अर्थ और गूढार्थमें बड़ा अन्तर होता था। ल्युशियसने पुजारिनको गुप्त रीतिसे बहुतसी भेंट दी और उसे खुशकर उसका गूढार्थ पूछ लिया। रोममें पहुँचनेपर एक दिन ठोकर लगकर गिरनेका बहाना कर ल्युशियसने पृथ्वी माताका चुम्बन कर लिया।

रोमके दक्षिणमें रटिलियन लोगोंका आर्डिया नामक एक नगर था। टार्किनियस राजा उस नगरके पास छावनी डाले पड़ा था। वहाँ एक रोज राजाके पुत्र और भानजे कोल्याटिनसमें इस बातपर वादविवाद होने लगा कि किसकी स्त्री सबसे अधिक सुशीला है। भानजेने अपनी स्त्रीकी बड़ाई की। यह सुन इस बातका पता लगानेके लिए वे तत्काल रोम चल दिये। जाकर देखा तो राजपुत्रोंकी स्त्रियाँ ऐश आराममें निमग्न पायी गयीं। इस प्रकार राजपुत्रोंको नीचा देखना पड़ा। इन सबका परिणाम बहुत ही बुरा हुआ। राजपुत्र सेक्सटस बहुत ही दुराचारी था। वह वहाँसे कोल्याटिनसकी स्त्री ल्युक्रीशियाको देखने गया। वहाँ उसके रूपको देखकर वह मोहित हो गया। और अपनी दुर्वासनाको पूर्ण करनेके लिए उसके घर जा रहने लगा। ल्युक्रीशियाने उसका अच्छा सत्कार किया। वह उस दुष्टके दुरभिप्रायसे बिलकुल अनभिज्ञ थी। उस कामान्धने एक रातको ल्युक्रीशियापर जुल्म कर उसका पातिव्रत भङ्ग किया, तब उसने अपने बाप ल्युक्रीशियस और पति कोल्याटिनसको बुला भेजा। वे अपने साथ अपने एक मित्रको लाये थे। कोल्याटिनसके साथ ल्युशियस ब्रूटस भी था। इनके आनेपर ल्युक्रीशियाने सब

इसके बाद शीघ्र ही राजा परिवारसहित रोम नगरसे निकाल दिया गया। और, लोगोंमेंसे दो सद्गृहस्थोंको चुनकर उन्हें राष्ट्रका राज्य-शकट हाँकनेका अधिकार दिया गया। यह घटना विक्रमके पूर्व ५६७ वें वर्ष हुई। इस प्रकार २४४ वर्षतक लगातार अस्तित्वमें रहनेवाली राजसत्तात्मक राज्य-व्यवस्थाका अन्त हो गया और उसके स्थानपर प्रजासत्तात्मक राज्यकी नींव पड़ी।

इसका तात्पर्य यह है कि दुराचारी राजाका अत्याचार प्रजा अधिक समयतक सहन नहीं कर सकती। एक बार प्रजा राजासे घृणा करने लगी कि फिर राजाको अपना प्राण बचानेके लिए भागना ही पड़ता है।

चौथा परिच्छेद

रोमन लोगोंकी प्रजासत्तात्मक राज्यपद्धति

टार्किनियसको निकाल देनेके बाद ल्युशियस ब्रूटस और ल्युशियस कोल्याटिनस राज्य चलानेके लिए नियत किये गये। वे कोन्सल कहे जाते थे। ब्रूटसका प्रभाव लोगोंपर बहुत पडता था। टार्किनियस रोमसे निकाल दिया गया था, तो भी नगरमें उसके कई मित्र थे, वे उसे पुन गद्दीपर बिठानेके लिए षडयन्त्र रचने लगे। वे लोग रातको इकट्ठा हुआ करते थे। इस षड्यन्त्रका पता लग गया और लोगोंपर मुकद्दमा चलाया गया। ब्रूटसके दो लडके भी इस षड्यन्त्रमें शामिल थे। ब्रूटसने अपराध साबित हो जानेपर उन्हें मार डालनेकी आज्ञा दे दी और उसने उन्हें अपने सामने वध करवाया। इस घटनाके कारण लोगोंपर उसका खूब प्रभाव पडा। वे उसे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे। इस प्रकार रोममें बलवा खडा करा अपना कार्य सिद्ध करनेका प्रयत्न निष्फल हो, जानेपर टार्किनियस बाहरी लोगोंको रोम पर चढ़ाई करनेके लिए उभाडने लगा। इसका फल यह हुआ कि कौन्सल ल्युशियस कोल्याटिनसको रोम छोडना पड़ा। कारण वह टार्किनियसका सम्बन्धी था। उसका स्थान पब्लिस वालेरिसको दिया गया। यह कौन्सल शीघ्र ही प्रख्यात

हो गया और उसे "पाप्लिकोला" अर्थात् 'लोकमित्र' नाम दिया गया।

टार्किनियस उधर अपने प्रयत्न में लगा रहा। वी और टार्किनी नगरके लोग उसकी सहायता करनेको राजी हो गये। टार्किनियसने उन लोगोंकी एक बडी सेना लेकर रोमपर चढ़ाई की। आर्सिया स्थानपर तुमुल युद्ध हुआ। इस युद्धमें ल्युशियस ब्रूटस मारा गया और रोमन सेना हतवीर्य हो गई। रोमन लोगोंके हारनेका समय आ चुका था किन्तु युद्धकी रातको सिल्वानस देवताकी आकाशवाणी हुई कि रोमन लोगोंके शत्रुओंका एक मनुष्य अधिक मारा गया है। यह आकाशवाणी सुनकर टार्किनियसकी सेना हताश हो भाग गयी।

इस बार प्रयत्न निष्फल होनेपर टार्किनियसने इट्रूरियाके राजा क्लुसियम लार्स पोर्सेनाकी शरण ली और उसकी सेनासहित रोमके पास वाली जानिकुलम पहाडी पर जा ठहरा। इस सेना और रोमके मध्यमें आंकस मार्शियसका बनवाया हुआ लकडीका पुल था। इस पुलको पारकर सेना रोमके पास पहुँच सकती थी। इस सङ्कटसे रोमकी रक्षा करनेके लिए पुल तोडना आवश्यक था। परन्तु पुलके आधार स्तम्भ काटे जाने तक पोर्सेनाकी सेनाकी गतिको रोकना बडा कठिन काम था। होरेशस कॉकलसने अन्य दो लोगोंकी सहायतासे सेनाकी गति रोकनेका बीडा उठाया। उस शत्रुकी सेनाको एक कदम भी आगे न रखने दिया। इधर लोगोंने पुलके खम्भे तोड डाले, जिससे पुल नदीमें गिर पडा। पुलके गिरते ही होरेशस भी टाइबर नदीमें कूद पडा और उस पार जा लगा। पोर्सेना रोम नगरमें घुसकर उसे जीतना चाहता था। परन्तु होरेशसके कारण उसकी इच्छा पूर्ण

हुई। तब पोर्सनाने रोमको घेर लिया। रसद न मिलनेके कारण लोग भूखे मरने लगे। अन्तमें केयस मूशियस सिवोलाने पोर्सनाको मारनेकी प्रतिज्ञा की। वह पोर्सनाकी छावनीमें घुस गया। उसने पोर्सनाके प्रधानको राजा समझ कर मार डाला। वह कैद कर लिया गया। उसको आगमें जलाकर मार डालनेकी धमकी दी गई। तब उसने लोगोंको अपनी निडरता दिखानेके लिए अपना हाथ पासके ही जलते हुए होमकुण्डकी धधकती हुई आगमें रख दिया। हाथ घण्टों तक आगमें चट्चट् कर जलता रहा, किन्तु उसकी आँखोंमें आँसुतक न आए। यह देख सब लोग अवाक् रह गए और उसका मुँह ताकने लगे। तब उसने उनसे कहा कि मेरे सरीखे ३०० लोगोंने तुम्हारे राजाको मारनेकी प्रतिज्ञा की है। यह हाल सुनकर पोर्सना डर गया। उसने कुछ लोगोंको अपने पास जमानतकी तौरपर रखकर रोमन लोगोंसे सुलह कर ली। इस सन्धिमें रोमन लोगोंको खेतीके सिवा अन्य कामोंमें लोहेका उपयोग न करनेकी प्रतिज्ञा करनी पड़ी और टाइबर नदीके पश्चिमी तटका प्रान्त पोर्सनाके हवाले करना पड़ा। यह सन्धि रोमन लोगोंको बहुत ही अपमानकारक मालूम हुई, किन्तु भयानक विघ्नसे बचनेके लिए उन्हें लाचार सब कुछ स्वीकार करना पड़ा।

इस युद्धसे टार्किनियसका कुछ भी लाभ न हुआ, इसलिए उसने अपने दामाद टुस्कुलमके राजा मामिलसकी सहायतासे राज्यपद प्राप्त करनेका यत्न किया। इस समय रोम बड़े सङ्कटमें था। पोर्सनाके साथ युद्ध छिड़नेके कारण उसकी शक्ति घट गई थी, इसके अतिरिक्त सन्धिग्ध रोमका साथ देनेवाले ३० लैटिन नगर शत्रुके पक्षमें मिल गये थे। ऐसे बुरे समयमें

राज्यका सूत्र किसी भी एक अनुभविक व्यक्तिके हाथमें होना जरूरी है। राज्य करनेवाले व्यक्तियोंमें मतभेद होनेसे हानि होती है। यह बात रोमन लोगोंके ध्यानमें आ तो गयी किन्तु प्रतिज्ञाबद्ध होनेके कारण वे राजा नहीं चुन सकते थे। अन्तमें उन्होंने नियमित समयके लिए "डिक्टेटर" चुना। "डिक्टेटर" को अनियन्त्रित अधिकार दिया गया। उसने शत्रुका सामना करनेकी पूरी तैयारी की। रेजिलस सरोवरके तटपर युद्ध हुआ। इस युद्धमें रोमकी जीत हुई। इस युद्धमें कास्टार और पोलक्स नामक दो अश्वारोही जिनके घोड़े खूब सफेद थे रोमन सेनाके अग्रभागमें बड़ी वीरतासे लड़े थे। रोमन ग्रन्थकार लिखते हैं कि इन्हीं पुरुषोंके कारण रोमन सेनाकी जीत हुई। इन्हींकी सहायतासे रोमकी रक्षा हुई। अतः इनके नाम पर रणक्षेत्रमें एक मन्दिर बनाया गया। रोमन सैनिक प्रतिवर्ष १७ मिथुन (आषाढ़) को उस मन्दिरमें जाकर पूजा अर्चा किया करते थे।

इस प्रकार सब प्रयत्न निष्फल होनेके कारण टार्किनियसका दिल टूट गया और थोड़े ही दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई।

कई एक इतिहास लेखकोंका मत है कि इन लड़ाइयोंमें टार्किनियसका बिलकुल हाथ न था। जो हो, इट्रस्कन लोगोंने रोमन लोगोंको जीतकर अपने अधीन कर लिया था। उन्होंने रोमन लोगोंके हथियार छीन लिये थे जिसमें कि वे फिर ऊँचा सिर न कर सकें, परन्तु विजयमदसे मतवाले हो उन्होंने रोमके दक्षिणके प्रान्तोंमें लूटपाट मचा दी। अतएव उस प्रदेशके सब लोगोंने मिलकर उनका सामना किया। आरिसियाके मैदानमें दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ हुई। इट्रस्कन लोग हार गए। इस युद्धके कारण रोमन लोगोंके

हौसले बढ गये और वे सबैन लोगोंसे लडनेकी तैयारी करने लगे। परन्तु इस समय रोमकी दशा अच्छी न थी। उसकी शक्ति घट जानेके कारण बहुतसे लोग जोकि अबतक उसके अधीन थे, स्वतन्त्र बन बैठे। परन्तु रोमकी कर्तव्य तत्परताके कारण क्रमश सब तरहके विघ्न दूर हो गये। सबैन लोगोंने रोमपर चढाई की। उन्हें हराकर रोमन लोग अपने पिछले वैभवको प्राप्त करनेमें पुन दत्तचित्त हुए।

ऊपर लिखा जा चुका है कि सबैन लोगोंने रोमपर चढाई की थी। उस समय सबैन लोगोंके अट्टक्लासस नामके एक राजाने उन्हें चढाई न करनेकी सलाह दी थी। परन्तु सबैन लोगोंने उसकी बात न मानी। लाचार उसे सबैन लोगोंका प्रदेश छोड देना पडा। वह अपने लोगों सहित रोममें जा बसा। रोमन लोगोंने उसे बहुत सी जमीन दे पात्रिशियन लोगोंमें मिला लिया।

प्रजासत्तात्मक राज्य स्थापित करनेपर भी रोमन लोगोंको शान्ति न मिली। उनके पडोसके लोग उनपर बार बार चढाई करते रहते थे, इससे उन्हें बडा कष्ट होता था। इसके सिवा रोम राज्यके लोगोंमें भी ऐक्य न था। एक न एक झगडा बना ही रहता था। रोम राष्ट्रके लोग दो भागोंमें विभक्त थे। प्लेबियन और पात्रिशियन। परन्तु उनमें भी ऐक्य न था। प्रजा सत्तात्मक राज्य स्थापित होनेपर भी उनके ऐक्य न होनेका कारण यह था कि पात्रिशियन लोगोंको राजकीय स्वत्व प्राप्त थे। वे प्रतिवर्ष दो कौन्सल (राज्य चलानेवाले अधिकारी) चुना करते थे। ये कौन्सल भी पात्रिशियन ही होते थे। प्लेबियनको ये अधिकार नहीं मिलते थे। इसीसे इन दोनों वर्गोंमें शत्रुता बढने लगी। प्लेबियन लोग खेती करते

पर राजी कर लिया। तो भी प्लेबियन लोगोंने पात्रिशियन लोगोंसे स्वीकार करा लिया कि ऋणदातागण अपने सब प्लेबियन कैदियोंको मुक्त कर दें और वे प्लेबियन लोगोंको भरपाई लिख दें। इससे साफ जाहिर होता है कि प्लेबियन लोग वालेरियसकी की हुई प्रतिज्ञाका ही भलीभाँति पालन कराना चाहते थे, उसमें थोड़ा भी रदबदल नहीं चाहते थे। यह झगड़ा, नियमोंकी मर्यादाका उल्लङ्घन न करने पाए इसी लिए उन्होंने अपनेमेंसे एक ट्रिब्यून (न्यायके कामोंकी देख रेख करनेवाला व्यक्ति) चुननेका अधिकार प्राप्त कर लिया। ट्रिब्यून चुननेका अधिकार देना पात्रिशियन लोगोंको अच्छा न लगा, किन्तु लाचार उन्हें प्लेबियन लोगोंकी बात माननी पड़ी। ट्रिब्यूनको, प्लेबियन लोगोंपर अत्याचार न होने देने और पात्रिशियन न्यायाधीशसे उन्हें छुड़ा लानेका अधिकार दिया गया। उनके घर दरवाजे सदैव खुला रहा करते थे। ट्रिब्यून पर हथियार चलानेवाले और उनको पीड़ा पहुँचानेवाले व्यक्ति राजविद्रोही माने जाते थे। ऐसोंकी रक्षा रोमन-नियम न करता था और उसकी जायदाद जब्त कर ली जाती थी। प्लेबियन लोगोंने उसी स्थानपर जहाँपर वे इकट्ठे हुए थे, दो ट्रिब्यून चुन लिए, और बादमें उन्हें तीन ट्रिब्यून और चुननेका अधिकार मिला। इन पाँच ट्रिब्यूनको प्लेबियन लोगोंके किसी विभागके मनुष्यकी रक्षा करनेका अधिकार था। सिनेट सभामें प्लेबियन लोगोंका अहित करनेवाला नियम पास न होने पाए, इसलिए इन ट्रिब्यूनको यह भी अधिकार दिया गया कि वे सिनेट सभागृहके द्वारके पास बैठकर सभाकी कार्यवाही सुनते रहें। प्लेबियन लोगोंका अहित करनेवाला नियम सभामें उपस्थित होनेपर वे अपनी

अस्वीकृति प्रकट करते। निदान, वह नियम स्वीकार न किया जाता। धीरे धीरे उनके ट्रिब्यूनको अति उच्च न्यायाधिकार मिल गये। पाट्रिशियन लोगोंके बहुतसे स्वत्व नष्ट हो गये और रोमकी राज्यपद्धतिका स्वरूप बदल गया।

इस प्रकार प्लेबियन लोगोंका महत्त्व बढते देखकर पाट्रिशियन लोग उनसे और भी द्वेष रखने लगे। वे प्लेबियन लोगोंका महत्त्व कम करनेका यत्न करने लगे। 'कोरियोलेनस नामक मनुष्य प्लेबियन लोगोंसे बहुत द्वेष रखता था। एक बार कौन्सलके चुनावके समय प्लेबियन लोगोंने उसे मत नहीं दिये थे और इसीलिए वह उनसे द्वेष रखता था। विक्रमके पूर्व ५०८ वें वर्ष रोममें अकाल पडा। लोगोंके लिए साराक्यूजसे अन्न मँगाया गया। उस समय कोरिओलेनसने हठ किया कि ट्रिब्यून चुननेका अधिकार छोडे विना प्लेबियन लोगोंको अन्न न दिया जाय। इससे प्लेबियन लोग बहुत चिढ गये और उन्होंने अपने ट्रिब्यून द्वारा उसपर मुकदमा चलाया। अपराध साबित होनेपर उसे देश निकालेका दण्ड दिया गया। वह रोमन लोगोंके शत्रु वोलशियन लोगोंसे जा मिला और बहुतसी सेना ले रोमन लोगोंसे बदला लेनेके लिए रोमकी ओर बढ़ा। उस प्रचण्ड सेनाको देखकर रोमके लोग डर गये, उन्होंने सन्धि करनेके लिए सिनेटके कुछ सभासद कोरिओलेनसके पास भेजे। परन्तु वहाँ उनकी दाल न गली। उन्हें वापस लौट आना पडा, तब कुछ धर्माधिकारी भेजे गये। उन्होंने भी उसे खूब समझाया, परन्तु कुछ भी फल न हुआ। कोरिओलेनसको रोमके बिलकुल पास आया देखकर रोमन लोगोंके जी उड गये। रोमकी रक्षाका कुछ भी उपाय न सूझ पडा। अन्तमें एक चतुर पुरुषने प्रेमबन्धन-

से उसका मन फिरानेकी कोशिश करनेकी सलाह दी। नगरकी बहुतसी कुलीन स्त्रियाँ बुलवाई गईं। उनका आधिपत्य कोरिओलेनसकी माता और उसकी पत्नीको दिया गया। वे सब स्त्रियाँ अपने अपने बच्चों सहित कोरिओलेनसके पास प्रार्थना करनेके लिए भेजी गयीं। अपनी माता और पत्नीको दीनमुद्रासे हाथ जोडे आते देखकर उसका हृदय भर आया। उसकी माता उसके पास जाकर बोली,—"बेटा, मैं यही भिक्षा माँगती हूँ कि तू अपनी जन्मभूमिका नाश करनेका विचार छोड दे।" अपनी माताके ये दीन वचन सुन उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। उसने अपनी माताकी बात मान ली, किन्तु वह अपनी मातासे बोला कि—"माँ, तूने अपने इस उद्योगसे रोमको तो बचा लिया, पर अपने पुत्रका घात किया।" कोरिओलेनसकी यह बात सच ही साबित हुई। कारण कि विजय पाकर भी विजय न होने देख वोलशियन लोगोंने गुस्सेमें आ उसे मार डाला।

इस प्रकार आपसकी फूटके कारण रोमन लोग अच्छी तरह उन्नति वृद्धि न कर सके, क्योंकि इस आपसके झगडेसे उनकी शक्ति घटती चली थी और वे रात दिन इसी झंझटमें लगे रहते थे। परन्तु इस झगडेसे उन्हें बहुत अच्छी शिक्षा भी मिली, उन्हें मालूम हो गया कि कडे नियमोंका पालन करनेके समान दूसरोंका हिताहितका विचारकर न्यायपूर्वक आचरण करना भी आवश्यक है। अपने राज्यके प्रति हमारा क्या कर्तव्य है यह बात भी उन्हें मालूम हो गयी। उन्हें यह भी अनुभव हो गया कि कर्तव्य पालन न करनेसे हानि होती है। प्लेबियन लोगोंकी यह धारणा हो गयी कि पात्रिशियन लोगोंका मान रखना हमारा कर्तव्य है। यदि हमें उनसे आगे

बढ़ना है या उनकी बराबरी करना है तो निरन्तर उद्योग करना ही हमारा मुख्य काम है। हम जो स्वत्व माँग रहे हैं उन स्वत्वोंको प्राप्त करनेकी योग्यता हममें है—हम उन अधिकारोंका अच्छा उपयोग कर सकते हैं—यह पात्रिशियन लोगोंको दिखा देना चाहिए। उसी तरह पात्रिशियन लोगोंको भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि दूसरोंको उनके स्वत्वोंसे वंचित रखना दुराग्रह है। जो लोग अपने उद्योगके बलसे जिन अधिकारोंके प्राप्त करनेकी योग्यता रखते हैं उन्हें उन अधिकारोंसे वंचित रखना निरी मूर्खता है। इस प्रकार रोमन लोगोंको इस भीतरी कलहका बहुत ही अच्छा फल मिला। वे आत्मसंयम उद्योगप्रियता, कर्तव्यतत्परता आदि गुणोंसे सम्पन्न हो गये। अर्थात् राज्य व्यवहारके ज्ञानसे वे दक्ष हो गये। इससे उनके मनमें यह बात समा गयी कि देश काल और परिस्थितिके अनुसार राष्ट्रकी पुरानी संस्थाओंमें रदबदल करना आवश्यक है। ये गुण भविष्यत्में उनके बहुत काम आये। सारी पुरानी दुनियाको जीत लेनेपर रोमन लोगोंने इन्हीं गुणोंके कारण उसकी उत्तम व्यवस्था रक्खी। इससे यह साफ जाहिर होता है कि दुःख और सङ्कट हमें केवल हानि ही नहीं पहुँचाते, वरन् लाभ भी पहुँचाते हैं। अन्तर इतना ही है कि हानि तो तत्काल हमें दिखाई पड़ जाती है किन्तु लाभ कालान्तरमें दिखाई पड़ता है। सच है, "ईश्वर जो कुछ करता है, हमारे भलेके लिए ही करता है।"

इस झगड़ेमें प्लेबियन लोगोंका सुधार करनेके लिए एक उपयोगी नियम बनाया गया। यह नियम जमीनके सम्बन्धका था। यह नियम स्पुरियस कौन्सलने विक्रमके पूर्व ५४३ वें वर्षमें बनाया था। वह पात्रिशियन था, तथापि वह निष्पक्षपाती

और दयालु था। सेवियन लोगोंके दुःख देखकर उसका हृदय दो टूक हो जाता था। उसने एक नियम बनाया था, जिसके अनुसार जीते हुए प्रदेशका आधा भाग रोमन लोगोंके देवालयों-को और शेष दीन सेवियन लोगोंको बाँट देनेका नियम था। इसके अतिरिक्त यह भी नियम बनाया गया कि सार्वजनिक जमीनपर पशु चरानेके बदले पात्रिशियन लोगोंसे कर लिया जाया करे और इस प्रकार करके रूपमें जमा की हुई रकमसे युद्धपर जानेवाले दीन सेवियन लोगोंको वेतन देनेमें खर्च किया जाया करे। यह नियम स्वीकार तो हो गया, पर व्यवहारमें न आ सका। क्योंकि, इस नियमके कारण पात्रिशियन लोग जमीन दबा नहीं सकते थे। इसीलिए वे कौन्सल स्पुरियस कासियससे शत्रुता रखने लगे, और उसके बादके कौन्सलने उसपर लोक-प्रीति सम्पादनकर राजा होनेका यत्न करनेका दोष लगाकर मुकद्दमा चलाया। इस मुकद्दमेमें दोषी ठहराकर उसे प्राणदण्डकी आज्ञा दी गई। उसका घर गिरा दिया गया। यह कौन्सल विक्रमके पूर्व ५४२ वें वर्ष मारा गया।

ऊपरका विवरण पढनेसे यह प्रश्न उठता है कि ऐसी स्थिति होनेपर सेवियन लोगोंका पक्ष बलवान् कैसे हुआ? पहले एक बार लिखा जा चुका है कि सेवियन लोगोंने ट्रिब्यून चुननेका अधिकार प्राप्त कर लिया था। ये ट्रिब्यून, लोगोंकी देखभाल—पक्ष समर्थन उत्तम प्रकारसे करते थे। कौन्सल ऐसे नियम बनाते थे जिनसे सेवियन लोगोंकी हानिकी सम्भावना रहती थी, तो भी वे उन नियमोंकी कुछ भी परवाह न करते थे। वे इकट्ठे हो वैसे विधानोंपर खूब वाद विवाद करते उनके दोषोंका पता लगाते और पात्रिशियन लोगोंको

बढ़ना है या उनकी बराबरी करना है तो निरन्तर उद्योग करना ही हमारा मुख्य काम है। हम जो स्वत्व माँग रहे हैं उन स्वत्वोंको प्राप्त करनेकी योग्यता हममें है—हम उन अधिकारोंका अच्छा उपयोग कर सकते हैं—यह पात्रिशियन लोगोंको दिखा देना चाहिए। उसी तरह पात्रिशियन लोगोंको भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि दूसरोंको उनके स्वत्वोंसे वंचित रखना दुराग्रह है। जो लोग अपने उद्योगके बलसे जिन अधिकारोंके प्राप्त करनेकी योग्यता रखते हैं उन्हें उन अधिकारोंसे वंचित रखना निरी मूर्खता है। इस प्रकार रोमन लोगोंको इस भीतरी कलहका बहुत ही अच्छा फल मिला। वे आत्मसंयम उद्योगप्रियता, कर्तव्यतत्परता आदि गुणोंसे सम्पन्न हो गये। अर्थात् राज्य व्यवहारके ज्ञानसे वे दक्ष हो गये। इससे उनके मनमें यह बात समा गयी कि देश काल और परिस्थितिके अनुसार राष्ट्रकी पुरानी संस्थाओंमें रदबदल करना आवश्यक है। ये गुण भविष्यत्में उनके बहुत काम आये। सारी पुरानी दुनियाको जीत लेनेपर रोमन लोगोंने इन्हीं गुणोंके कारण उसकी उत्तम व्यवस्था रक्खी। इससे यह साफ जाहिर होता है कि दुःख और सङ्कट हमें केवल हानि ही नहीं पहुँचाते, वरन् लाभ भी पहुँचाते हैं। अन्तर इतना ही है कि हानि तो तत्काल हमें दिखाई पड़ जाती है किन्तु लाभ कालान्तरमें दिखाई पड़ता है। सच है, "ईश्वर जो कुछ करता है, हमारे भलेके लिए ही करता है।"

इस झगड़ेमें सेबियन लोगोंका सुधार करनेके लिए एक उपयोगी नियम बनाया गया। यह नियम जमीनके सम्बन्धका था। यह नियम स्पुरियस कौन्सलने विक्रमके पूर्व ५४३ वें वर्षमें बनाया था। वह पात्रिशियन था, तथापि वह निष्पक्षपाती

और दयालु था। प्लेबियन लोगोंके दुःख देखकर उसका हृदय दो टूक हो जाता था। उसने एक नियम बनाया था, जिसके अनुसार जीते हुए प्रदेशका आधा भाग रोमन लोगोंके देवालयोंको और शेष दीन प्लेबियन लोगोंको बाँट देनेका नियम था। इसके अतिरिक्त यह भी नियम बनाया गया कि सार्वजनिक जमीनपर पशु चरानेके बदले पात्रिशियन लोगोंसे कर लिया जाया करे और इस प्रकार करके रुपमें जमा की हुई रकमसे युद्धपर जानेवाले दीन प्लेबियन लोगोंको वेतन देनेमें खर्च किया जाया करे। यह नियम स्वीकार तो हो गया, पर व्यवहारमें न आ सका। क्योंकि, इस नियमके कारण पात्रिशियन लोग जमीन दबा नहीं सकते थे। इसीलिए वे कौन्सल स्पुरियस कासियससे शत्रुता रखने लगे, और उसके बादके कौन्सलने उसपर लोक-प्रीति सम्पादनकर राजा होनेका यत्न करनेका दोष लगाकर मुकद्दमा चलाया। इस मुकदमेमें दोषी ठहराकर उसे प्राणदण्डकी आज्ञा दी गई। उसका घर गिरा दिया गया। यह कौन्सल विक्रमके पूर्व ५४२ वें वर्ष मारा गया।

ऊपरका विवरण पढ़नेसे यह प्रश्न उठता है कि ऐसी स्थिति होनेपर प्लेबियन लोगोंका पक्ष बलवान् कैसे हुआ? पहले एक बार लिखा जा चुका है कि प्लेबियन लोगोंने ट्रिब्यून चुननेका अधिकार प्राप्त कर लिया था। ये ट्रिब्यून, लोगोंकी देखभाल—पक्ष समर्थन उत्तम प्रकारसे करते थे। कौन्सल ऐसे नियम बनाते थे जिनसे प्लेबियन लोगोंकी हानिकी सम्भावना रहती थी, तो भी वे उन नियमोंकी कुछ भी परवाह न करते थे। वे इकट्ठे हो वैसे विधानोंपर खूब वाद विवाद करते उनके दोषोंका पता लगाते और पात्रिशियन लोगोंको

सूचित कर दिया करते थे कि वे सेवियन लोगोंके लिए हानिकारक हैं। वे उन विधानोंको स्वीकार न करनेके लिए भरसक कोशिश करते थे और यदि वह विधान वन जाता और उससे लोगोंको दुःख होने लगता तो वे हमेशा लोगोंको वचानेके लिए तैयार रहते थे। उपर्युक्त अधिकार ट्रिब्यूनको पहले ही दिये जा चुके थे। इस प्रकार पात्रिशियन और सेवियन लोगोंका झगड़ा कई वर्षतक चलता रहा। अन्तमें इस झगडेका परिणाम सेवियन लोगोंके लिए अच्छा ही हुआ।

पात्रिशियन लोगोंके स्वार्थकी आगमें कौन्सल स्पुरियस कासियस जल गया। तथापि उसका वनाया हुआ जमीन सम्बन्धी वटवारेका विधान स्वीकार हो ही चुका था, अतः उस विधानको अमलमें लानेके लिए सेवियन लोग प्रयत्न करने लगे। सेवियन लोगोंकी माँग पूरी करनेके लिए पात्रिशियन लोग टालमटूल करने लगे। इसीसे रोममें विरोधकी पुनः आग धधकने लगी। इस कलहमें आपियस क्लाडियस पात्रिशियन लोगोंका अगुआ था। स्पुरियस कासियसको सजा दिलानेके काममें फेवी घरानेने सहायता दी थी। वादमें छः सात वर्षोंतक रोमके कौन्सलोंमें फेवी घरानेका एक न एक कौन्सल अवश्य रहा करता था। इस कारणसे आपियसको वहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई, तव सेवियन लोगोंको फिर वही पुरानी युक्ति लड़ानी पड़ी। सेवियन लोगोंका लक्ष्य दूसरी ओर आकर्षित करनेके लिए पात्रिशियन लोगोंने इट्रस्कन लोगोंसे घर वैठे लडाई मोल ली। परन्तु सेवियन लोगोंने उस युद्धमें शामिल होनेसे साफ इन्कार कर दिया। तव तो कई समझदार पात्रिशियन लोगोंको विश्वास हो गया कि इस कलहसे रोमकी अवश्य हानि होगी। ऐसा सोचनेवाले

लोगोंमें कई फेबी घरानेके मनुष्य भी थे। उनमें मार्कस फेबियस नामका जो एक मनुष्य था उसने उन लोगोंको समझा बुझाकर राजी कर लिया। युद्ध हुआ और रोमकी जीत हुई। परन्तु मार्कस फेबियस इस युद्धमें मारा गया। यह घटना विक्रमके पूर्व ५३८वें वर्ष हुई। मार्कसके मर जानेपर भी प्लेबियन लोगोंको सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न जारी रहा। उसीके वंशके दूसरे लोगोंने यह काम अपने हाथमें लिया। गत युद्धमें आहत हुए लोगोंकी उन्होंने उत्तम प्रकारसे सेवाशुश्रूषा की। इससे प्लेबियन लोग उन्हें बहुत चाहने लगे। विक्रम के पूर्व फेबी घरानेका एक मनुष्य कौन्सल बनाया गया उसने स्पुरियस कासियसके बनाये विधानोंको जोकि खासकर प्लेबियन लोगोंके लिए बनाये गये थे, अमलमें लानेका निश्चय किया। परन्तु पात्रिशियन लोग उसके काममें बाधा डालने लगे। वे उसका तिरस्कार करने लगे। वह उनसे इतना पीडित हुआ कि रोम छोड देनेतकका विचार करने लगा। इसी समय वी नगरके लोगोंसे युद्ध छिड गया। वह अपनी सेना सहित उनका सामना करनेके लिए केमेरा नदीके तटपर जा ठहरा। वह अकेला दो वर्षतक उनसे लडता रहा, किन्तु दूसरे कौन्सल टायटस मेनिन्यसने उसकी सहायता न की। अन्तमें विक्रमके पूर्व ५३४ वें वर्ष वी नगरके लोगोंने उन्हें मार डाला। इस प्रकार फेबी घरानेके अधिकांश मनुष्योंने लोकसेवार्थ अपने प्राण अर्पण कर दिये। पात्रिशियन लोगोंसे मिलकर रहनेके कारण फेबी वंशका केवल एक मनुष्य रोममें रह गया था। इसके वंशजोंने आगे चलकर रोमके इतिहासमें बडी प्रसिद्धि पायी।

जब प्लेबियन लोगोंको मालूम हो गया कि दूसरे कौन्सल-

की बेपरवाहीके कारण स्पुरियस अपने लोगों सहित मारा गया, तो उन्हें बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने स्पुरियस कासियस-का बदला लेनेके लिए उसपर फेबियसका घात करनेके लिए विद्रोहका अपराध लगाया। आखिर दोषी सिद्ध होनेपर कड़ा दण्ड दिया गया।

टायटस मेनिन्यससे बदला लेनेसे प्लेबियन लोगोंको कुछ भी लाभ न हुआ। उन्हें स्पुरियस कासियसके जमीनवाले विधान पर अमल करानेके लिए दूसरे ही मार्गका अनुसरण करना पड़ा। विक्रमके ५३६वें वर्ष पूर्व ट्रिब्यून जेन्यूशियनने विक्रमके ५३८ वर्ष पूर्वके कौन्सलपर स्पुरियस कासियसका विधान अमलमें लानेका अपराध लगाया। नियमानुसार लोकसभामें न्यायार्थ विचार करनेका दिन ठहराया गया। किन्तु, सभा बैठनेके एक रोज पहली रातको ट्रिब्यून जेन्यूशियन मार डाला गया। पात्रिशियन लोगोंने समझा था कि जेन्यूशियन-का खून हो जानेसे प्लेबियन लोग डरकर यह काम छोड़ देंगे। पर यह उनकी भूल थी। इस समय पब्लिलियस वोलेरा नामक व्यक्ति उनका नेता बन गया। उसने युद्धके समय पात्रिशियन लोगोंको छकानेका निश्चय किया। ईश्वरकी दया-से उन्हें शीघ्र ही मौका भी मिल गया। एक बार सिनेटको सेनाकी आवश्यकता हुई। लोगोंको सेनामें भरती होनेके लिए हुक्म दिया गया। परन्तु वोलेराने साफ इन्कार कर दिया। सिनेट सभाने हुक्म न माननेके अपराधमें उसे कैद करनेका हुक्म दिया। वोलेरा अपने प्राण बचानेके लिए प्लेबियन लोगों-की शरण गया। प्लेबियन लोग तो पहलेसे ही तयार थे, उसकी सहायता की। यह देख सिनेट सभा डर गई। उसने वोलेरा-को दण्ड देनेका विचार छोड़ दिया। क्योंकि उसे विश्वास

हो गया था कि वोलेराको दण्ड देते ही प्लेबियन लोग बिगड़ जायँगे और बलवा कर देंगे। इससे साफ जाहिर होता है कि इस समय प्लेबियन लोगोंका पक्ष बहुत शक्तिशाली हो गया था। पाट्रिशियन लोग उनसे बहुत डरते थे परन्तु अपना अधिकार प्राप्त करनेके लिए प्लेबियन लोगोंने नियमोंका उल्लङ्घन कभी नहीं किया। उन्होंने बलवा कर शस्त्रके बलसे स्वत्व प्राप्त करनेका उद्योग कभी नहीं किया, बल्कि महात्मा गांधीके समान उन्होंने सच्चे सत्याग्रह व्रतका पालन किया था।

वोलेरा प्लेबियन लोगोंके लिए पाट्रिशियन लोगोंसे लड़ने लगा। फल यह हुआ कि शीघ्रही वह ट्रिब्यून बना दिया गया। ट्रिब्यून होतेही उसने एक नियम स्वीकार करवाया। इस नियमसे रोमराज्यमें प्लेबियन लोगोंका भाग कुछ बढ़ गया। इसे पब्लिलियन विधान कहते थे। यह विधान बनानेका कारण यह था कि उस समय प्लेबियन और पाट्रिशियन लोग मिलकर ट्रिब्यून चुनते थे। कभी कभी पाट्रिशियन लोग अपने प्लेबियन आसामी और नौकरोंको दबाकर अपने पक्षमें मिला लेते थे। उनके मतोंके बल पर वे प्लेबियन लोगोंका पक्ष कम लेनेवाले मनुष्यको ट्रिब्यून चुनवा लेते थे, इससे प्लेबियन लोगोंके हितका दुर्लक्ष होता था। पाट्रिशियन लोग ट्रिब्यून चुननेमें हस्तक्षेप न करें, इस आशयका उसने एक नियम स्वीकार कराना चाहा, और मसौदा बनाकर प्लेबियन लोगोंकी सभामें पेश किया। यदि यह नियम स्वीकार हो गया होता तो सिनेटको भी अपनी स्वीकृति देनीही पड़ती, इसलिए उस नियमकी स्वीकृति न होने देनेके लिए पाट्रिशियन लोग उस सभामें विघ्न उपस्थित करनेका यत्न करने लगे। उनका यत्न

सफल हुआ और अपने अधिकारके पहले वर्ष वोलेरा इस सम्बन्धमें कुछ भी न कर पाया।

दूसरे वर्ष पुनः वोलेरा ट्रिब्यून चुना गया। इसके साथ एक और ट्रिब्यून था। उसका नाम केयस लेटोरियस था। यह भी वोलेराके समान दृढ निश्चयी था। इन दोनोंने मिल कर ट्रिब्यून सम्बन्धी नियमोंमें सुधार करनेका उद्योग करना शुरू किया। इस वर्ष एक और विशेषता थी। पाट्रिशियन लोगोंसे तंग आ इस वर्ष प्लेबियन लोगोंने अपनी माँग बढ़ा दी थी। ट्रिब्यून लोगोंके कामोंमें सहायता देनेके लिए एडा-इल्स नामके अधिकारी रहा करते थे। इन इडाइल्स अधि-कारियोंको चुननेका अधिकार भी वे माँगने लगे, अबतक प्लेबियन लोगोंकी सभाको केवल उन्हींके हिताहित सम्बन्धमें विचार करनेका अधिकार था, अब वे उसे भी माँगने लगे। पाट्रिशियन लोगोंको यह बात बहुत बुरी लगी और वे नाना प्रकारके उपाय रच विरोध करनेका यत्न करने लगे। परन्तु लेटोरियसके आगे उनकी एक न चली। प्लेबियन लोगोंकी सभा बैठनेका दिन निश्चय किया गया। यह देख, कौन्सल आपियस कुछ पाट्रिशियन लोगोंको साथ लेकर सभाके काम-में जोर शोरसे बाधा डालनेके लिए आ पहुँचा। किन्तु उन लोगोंके लाख कोशिश करनेपर भी प्लेबियन लोगोंकी सभाका दिन निश्चय हो ही गया। नियत समयपर सभा भी हुई। और प्लेबियन लोगोंने उस विधानको वहीं स्वीकार भी कर लिया। पाट्रिशियन लोगोंके इस कृत्यसे चिढ़कर प्लेबियन लोग रोमके क्यापिटोल दुर्गपर अधिकार कर युद्धका आयोजन करने लगे, तब तो सिनेट सभाके छक्के छूट गये और उसने प्लेबियन लोगोंके बनाये हुए नियमको जैसाका

तैसा स्वीकार कर लिया। यह घटना विक्रमसे ५२८ वें वर्ष की है।

इसके बाद विक्रमसे ५१५ वर्ष पहले एकियन लोगोंने रोमपर चढ़ाई की। रोमन सेना उनका सामना करनेके लिए भेजी गयी। किन्तु एकियन लोगोंने उसे हराकर घेर लिया। यह सवाद रोममें पहुँचनेपर हाहाकार मच गया। उस घिरी हुई सेनाको बचानेके लिए उपाय सोचे जाने लगे। इस कठिन समयपर लोगोंने डिक्टेटर नियत करनेका निश्चय किया। किंटीटस सिन्सीनेटस ही एक ऐसा मनुष्य था जो ऐसे सङ्कटके समय डिक्टेटर चुना जानेके योग्य था। वह किसान था उसे डिक्टेटर बनानेका निश्चयकर उसके पास प्रतिनिधि भेजे गये। प्रतिनिधि लोग जब उसके झोपडेपर पहुँचे, उस समय वह खेतमें काम कर रहा था। उसके सारे शरीरमें मट्टी लग रही थी। प्रतिनिधि लोगोंने उससे मुलाकात कर देशकी माँग कह सुनाई। ध्यानसे सब बातें सुनकर उसने डिक्टेटर होना स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन रोममें गया। उसने सब रोमन लोगोंको पाँच दिनके लिए भोजन सामग्री और शस्त्रास्त्र ले तैयार रहनेकी आज्ञा दी। सेना तैयार होते ही सिन्सीनेटसने एकियन लोगोंपर धावा किया और आधी रात होनेके पहले वह उन लोगोंकी सेनाके पास जा पहुँचा। एकियन लोगोंने स्वप्नमें भी न सोचा था कि इतनी जल्दी सहायताके लिए सेना आ पहुँचेगी। वे असावधान रहे, सिन्सीनेटसकी सेनाके पहुँचते ही एकियन लोगोंकी सेनामें खलबली मच गई। बेचारे बुरी तरह फँसे। युद्ध छिड गया। दो रोमन सेनाओंके बीचमें घिर जानेके कारण एकियन सेना निरुत्साह हो गई। सिन्सीनेटसकी जीत हुई।

इस प्रकार २४ घण्टेके भीतर नवीन सेना इकट्ठीकर शत्रुको हराना सिन्सीनेटसके समान स्वार्थत्यागी, अल्पसन्तोषी और कर्तव्यतत्पर व्यक्तिके लिए ही संभव था। काम समाप्त होते ही सिन्सीनेटस अवकाशकी आज्ञा ले पूर्ववत् पुन अपने झोपडे में जा रहने लगा।

विक्रम से ५३८ वर्ष पहले प्लेबियन लोगोंको बहुतसे नवीन अधिकार मिल गये थे, परन्तु वे सन्तुष्ट न हुए। रोमन विधानोंसे उन्हें बहुत दु ख होता था, क्योंकि ये विधान लिखे हुए न थे। उनका उपयोग व्यवहारपर निर्भर था। कौन्सल उन विधानोंसे मनमाना मतलब निकालते थे। और प्लेबियन लोगोंको वह मतलब सच्चा मानना पडता था। इससे प्लेबियन लोगोंको बडी हानि उठानी पडती थी, कारण कि पाट्रिशियन और प्लेबियन लोगोंके झगडेके समय इन विधानोंका मतलब पाट्रिशियन लोगोंके अनुकूल निकाला जाता था। इसलिए प्लेबियन लोग चाहते थे कि ये विधान कुछ शब्द बदलकर लिख लिये जायँ और उनको निश्चित स्वरूप दे दिया जाय। प्लेबियन लोगोंकी सभामें इस बातपर विचार करनेका निश्चय किया गया। किन्तु यह बात जानते ही पाट्रिशियन लोग दगाकर सभाके काममें बाधा उपस्थित करने लगे। एक बार केसो नामके एक मनुष्यने कुछ पाट्रिशियन लोगों सहित सभागृहमें घुसकर ट्रिब्यून से हाथापाई की। प्लेबियन लोगोंने उसपर मामला चलाया। रोमन विधानके अनुसार ट्रिब्यूनसे दगाफसाद करनेवालेको प्राणदण्ड दिया जाता था। यह बात केसोसे छिपी न थी, अत न्यायालयमें विचार होनेके पहले ही वह रोमनगरसे भाग गया।

प्लेबियन लोग लगातार आठ वर्षतक उद्योग करते रहे।

अन्तमें नये वर्ष सिनेट सभाने उनकी बात स्वीकार की। सिनेट के तीन सभासद एक वर्षतक अथेंसमें रहे। उन्होंने वहाँकी राज्य-व्यवस्थाका अच्छी तरह निरीक्षण किया और तब वे वापस लौट गये। उनके रोम लौट आनेपर विधान बनानेके लिए एक समिति बनायी गयी। उस समितिमें दस सभासद थे। ये सब सभासद पात्रिशियन ही थे।

प्राचीनकालमें विधान बनानेवाले मनुष्यको ही राज्याधिकार सौंपनेका नियम था। विधान बनानेवालेको प्रचलित विधानोंका जानकार होना जरूरी है, और कदाचित इसीलिए विधान बनानेवाली समितिको रोमका राज्याधिकार भी दिया गया था। रोमका राज्य समितिके सुपुर्द होते ही सबके अधिकार कम कर दिये गये। परन्तु ट्रिब्यूनके अधिकार कम न किये गये। इस समितिमें उस समयके दो कौन्सल और आठ अन्य मनुष्य थे। ये लोग बारी बारीसे एक एक दिन राज्यका काम देखते थे। इससे लोगोंपर जुल्म होना सम्भव था। किन्तु समितिने अपना काम बहुत अच्छी तरह किया। यह समिति एक वर्षके लिए बनायी गयी थी। उस वर्षके अन्तमें दस धाराका एक विधान लोक सभामें पेश किया गया। स्वीकार होनेपर ये नियम काँसेके पत्रपर खुदवाए गये और तब वे पत्र बाजारोंमें मुख्य मुख्य स्थानोंपर लगा दिये गये।

इस विधान की दसों धाराएँ किसी ग्रन्थमें नहीं पायी गयीं। किन्तु कुछ लेखकोंका मत है कि इस विधानमें पात्रिशियन और प्लेबियन लोगोंमें भेद न माना गया था। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय प्लेबियन लोगोंका पक्ष बहुत प्रबल होगया था। कारण, विधान बनानेवाली समितिके

सभी सभासद पात्रिशियन थे। और यदि प्लेबियन लोगोंका भय न होता तो वे ऐसा विधान कभी न बनाते। इस विधान, की दस धाराओंमेंसे एक धारा यह थी कि यह विधान सब के लिए बनाया गया है। किसी व्यक्ति विशेषके अनुकूल दूसरा विधान न रहे। यह नियम इसलिए भी बनाया गया था कि कोई विधानमें रद्द बदल न करने पाये और पात्रिशियन लोगोंके साथ पक्षपात न किया जाय।

इस समितिने राज्यकी व्यवस्था बहुत अच्छी रखी। इसलिए लोगोंने दूसरे वर्ष भी राज्यपद्धतिको प्रचलित रखनेका निश्चय किया। गत वर्ष दसों सभासद पात्रिशियन थे, परन्तु इस वर्ष पाँच सभासद प्लेबियन थे। इस सभामें अपने पाँच प्रतिनिधियोंको स्थानापन्न करनेके लिए प्लेबियन लोगोंने उस वर्षके लिए अपना पाँच ट्रिब्यून चुननेका अधिकार छोड़ दिया। इस प्रकार पाँच पात्रिशियन और पाँच प्लेबियन मिल कर रोमका राज्य शकट हाँकने लगे।

इस वर्ष आपियस क्लाडियस नामका एक महत्त्वाकांक्षी पात्रिशियन भी इस समितिका सभासद था। यह प्लेबियन लोगोंका शत्रु, दुराग्रही और बड़ा चालबाज था। विधान बनानेवाली समितिमें यह पहले वर्ष भी था। परन्तु उस समय उसने अपना सच्चा स्वरूप प्रकट नहीं किया था। दूसरे वर्ष उसने अनेक यत्नकर अपने अनुकूल सभासद चुनवा लिए थे और उनकी सहायतासे यह रोमका राज्य प्राप्त करनेका उद्योग करने लगा। यहाँ यह शंका होती है कि समितिके प्लेबियन सभासदोंने उसे ऐसा क्यों करने दिया? बात यह है कि अधिकार और सम्पत्तिकी लालचसे कौन बुरा काम नहीं करता? बड़े बड़े बुद्धिमान् मनुष्य भी स्वार्थवश हो बुरा काम

करनेके लिए तैयार हो जाते हैं। तब बेचारे प्लेबियन सभासदोंको दोष देना व्यर्थ है। अस्तु।

दूसरी समितिके अधिकारारूढ़ होनेके बाद रोमके विधानोंमें दो नवीन धाराएँ और बढ़ायी गयी, इससे रोम नगरमें खलबली पड गयी। पहली धाराके अनुसार नगरमें रातको सभा करनेवालेको प्राणदण्डकी आज्ञाका विधान था और दूसरी धारा यह थी कि पात्रिशियन और प्लेबियन लोगोंमें बेटी व्यवहार कभी न होने पाए। ये धाराएँ प्लेबियन लोगोंको मुँहके बल गिराकर राज्य सूत्र पात्रिशियन लोगोंके हाथमें रखनेके लिए बनायी गयीं थीं। समितिका यह दाँव लोग समझ गये और बलवा करनेको तैयार हो गये। इधर समितिके सभासद भी चिढकर लोगोंपर अत्याचार करने लगे। इससे लोग बहुत ही चिढ गये और बलवा करनेके लिए योग्य अवसरकी राह देखने लगे।

इसी समय सबैन और एकियन लोगोंसे युद्ध शुरू हो गया उनका सामना करनेके लिए दो रोमन सेनाएँ भेजी गयीं। इनमेंसे एक सेनाका सेनापति ल्यूशियस डेंटेरस था। वह सदैव प्लेबियन लोगोंका पक्ष लिया करता था और इसीसे वे उसे दिलसे चाहते थे, परन्तु इसी कारणसे समितिके सभासद उसे अपना शत्रु मानते थे। अत उन्होंने उसका खून करनेका निश्चय कर लिया था। लडाईमें जाते समय रास्तेमें ही ल्यूशियस डेंटेरस मार डाला गया। उधर तो दूसरा सेनापति ल्यूशियस वर्जीनियस एकियन लोगोंसे लडनेमें लगा हुआ था और इधर रोममें आपियस उसकी लडकी वर्जीनियाको प्राप्त करनेका यत्न करने लगा। वह बहुत ही सुन्दरी थी। ल्यूशियस इसिलियस नामक व्यक्तिसे उसका

विवाह होनेवाला था। यह ल्यूशियस सेबियन लोगोंका ट्रिब्यून था और आवेंटाइन पहाड़ी दिलानेके कारण सेबियन लोग उसे आदरकी दृष्टिसे देखते थे। आपियसने वर्जीनियाको भाँति भाँतिके प्रलोभन दिखा वशमें करना चाहा था, पर उसका मनोरथ पूर्ण न हुआ। इसलिए उसने अपने एक सेवक द्वारा यह मामला चलवाया कि वर्जीनियस उस सेवककी दासी है। और, न्यायालयमें उसे अपने सामने बुलाकर आपियसने न्याय किया कि वह उस नौकरकी दासी है। इस प्रकार उसके बापकी अनुपस्थितिमें आपियसने वर्जीनियाको प्राप्त करनेका निश्चय किया। परन्तु वर्जीनियसके मित्रोंने उसे सब हाल पहले ही लिख भेजा था। आपियस वर्जीनियाको अपने सेवकके सुपुर्द करने ही वाला था कि इतनेमें वर्जीनियस न्यायसभामें आ पहुँचा। अपनी पुत्रीके पातिव्रत्यकी रक्षा होना असम्भव जान वह उसे कुछ बात कहनेके बहानेसे एक ओर ले गया और,—"बेटी, अब तेरे सतीत्वकी रक्षा करनेका यही एक उत्तम उपाय है" यह कह उसने उसकी छातीमें छुरी भोंक दी। इसके बाद खूनसे भरी हुई छुरी आपियसको दिखाकर उसने कहा,—'महाशय, इस हत्याका सब पाप आपके सिर है।" खूनसे भरी हुई छुरी देखकर ही आपियस चकित हो गया। एक क्षणके बाद उसने लोगोंको वर्जीनियसको पकड़नेके लिए आज्ञा दी। परन्तु किसीने उसकी आज्ञा न मानी। प्रत्युत उन्होंने वर्जीनियसको जानेके लिए रास्ता दे दिया। वर्जीनियस वहाँसे निकलकर अपनी सेनामें चला गया। उसके वापस लौट आनेकी खबर पाते ही डेंटेटसके सैनिक उससे जा मिले। इधर इसिलियसने न्यायसभामें ही लोगोंको वर्जीनियाका शव

दिखाया। उस सुन्दरीकी लाश देखकर लोगोंको बड़ा क्रोध हो आया। अत आपियमको वहाँसे भाग जाना पडा। इस प्रकार लोगोंको क्रुद्ध देख सिनेट सभामें उनको शान्त करनेका उपाय सोचा जाने लगा, परन्तु उससे कुछ भी न हो सका। वर्जीनियस दोनों सेना लेकर आवेंटाइन पहाडीपर जा ठहरा। रोमनगरके शेष प्लेबियन भी उससे जा मिले, तदनन्तर उस पहाडीके रक्षणार्थ सिपाही रखकर सब लोग अपने अपने स्त्री बच्चोंको लेकर पवित्र पहाडीपर जा बसे। इससे पाट्रिशियन लोगोंको बडा कष्ट होने लगा, कारण उनके घरका काम ही बन्द सा हो गया। तब तो उन्हें अपने किये कर्मपर पुन पश्चात्ताप होने लगा। और कुछ लोगोंने मध्यस्थ होकर झगडा निपटा डाला। पाट्रिशियन लोगोंने पुनः पहलेकी तरह दो कौन्सल द्वारा राज्य चलानेकी पद्धति स्वीकार कर ली। आपियस कैद कर लिया गया और उसने जेलखानेमें ही आत्महत्या कर ली। दूसरे एक और सभासदने भी आत्महत्या कर ली थी और शेष आठ सभासदोंको देश निकालाका दण्ड दियागया।

इसके बाद राज्यकी व्यवस्था रखनेके लिए वालेरियस और होरेशस कौन्सल चुने गये। ये दोनों पाट्रिशियन होने पर भी न्यायी और निष्पक्षपाती थे। वर्जीनियस और इसीलियस ट्रिब्यून चुने गये। इनके अतिरिक्त तीन और ट्रिब्यून भी चुने गये थे। यह चुनाव अति उत्तम हुआ।

इस प्रकार लोकहितकारी लोगोंके हाथमें राज्यसूत्र आनेसे राज्यव्यवस्थामें सुधार होने लगा। ट्रिब्यूनके चुनावकी पद्धति बन्द करनेका कोई प्रयत्न न कर सके, इस इरादेसे ड्यूलियस नामक ट्रिब्यूनने, उस विधानमें एक धारा और बढ़ा दी।

उस धाराके अनुसार उस पद्धतिको बन्द करनेके लिए यत्न करनेवालेको प्राणदण्ड दिये जानेका नियम बनाया गया था। सिनेट सभा विधानोंमें रद्द बदल न करने पाये, इसलिए सब विधानोंकी एक एक प्रति देवताके देवालयमें रखी गयी थी और वहाँ प्लेबियन लोगोंका पहरा रखा जाता था।

इसप्रकार प्लेबियन लोगोंका बहुतसा दुःख कम हो जानेसे पात्रिशियन लोगोंके साथ उनका मेल बढने लगा। इसी समय सबैन और एकियन लोगोंने रोमपर चढाई की। दोनों कौन्सल सेना ले उनका सामना करनेके लिए रोमसे रवाना हुए। रोमकी जीत हुई। इस युद्धमें सबैन लोगोंकी बहुत बड़ी हानि हुई। युद्धमें विजयी होकर सेनापति अपनी सेना सहित बडे समारोहके साथ नगरमें प्रवेश करते थे। दोनों कौन्सल लोकपक्षके थे, अतएव सिनेटने जुलूस निकालना बन्द कर दिया। लोगोंको यह बात मालूम हो गयी और लोक-सभाने जुलस निकालनेकी स्वीकृति दे दी। सिनेट सभाकी मत्सर बुद्धिका परिणाम यह हुआ कि लोकसभाने यह निश्चय कर दिया कि जीतकर आनेपर सेनापतिका जुलूस निकालनेके लिए सिनेट सभासे परवानगी लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं। लोकसभाका ठहराव ही बहुत होगा। यह घटना विक्रमके ५०४ वर्ष पहले हुई। इस प्रकार अपनी मूर्खताके कारण सिनेट सभा धीरे धीरे अपने सब अधिकार खोती चली।

दूसरी विधान बनानेवाली समितिने प्लेबियन और पात्रिशियन लोगोंमें बेटी व्यवहार बन्द कर दिया था। इस विधानसे लोग बहुत तंग आ गये। कारण उस समय बहुत सी प्लेबियन लोगोंकी लडकियाँ पात्रिशियन लोगोंको व्याही गयी थीं और इस प्रकारके सम्बन्धसे पैदा हुई सन्तति

नीची निगाहसे देखी जाती थी। इनके अतिरिक्त अब बहुत-से पात्रिशियन लोग भी इस विधानको बुरा समझते थे, निदान बड़ी कठिनतासे यह विधान भी रद्द कर दिया गया। इस विधानके रद्द हो जानेसे पात्रिशियन लोगोंकी प्लेबियन स्त्रियोंसे पैदा हुई सन्तति भी पात्रिशियन मानी जाने लगी, और धीरे धीरे उनका दर्जा बढ़ गया। राज्यके बहुतसे ऊँचे ऊँचे पदोंपर प्लेबियन लोग नियत किये जाने लगे। प्लेबियन लोग चाहते थे कि वे भी कौन्सल बनाये जायँ। परन्तु पात्रिशियन लोग कौन्सलके पदपर पात्रिशियनके सिवा अन्य किसीको अधिष्ठित देखा न चाहते थे। फिर भी कौन्सलका पद प्लेबियन लोगोंको न देनेके लिए वे हठ नहीं कर सकते थे। अन्तमें कौन्सलके अधिकार कम कर दिये गये, इस पदको फौजी ट्रिब्यून नाम दिया गया, और दो नवीन पदोंकी योजना कर उनपर पात्रिशियन लोगोंको ही अधिष्ठित किये जानेका नियम बना दिया गया। इन पदोंको सेनसोर कहते थे। प्लेबियन लोग फौजी ट्रिब्यून हो सकते, परन्तु सेनसोरका पद उन्हें न मिल सकता था। सेनसोरका पद बहुत ऊँचा था। इस पदपर नियत किये हुए मनुष्यको बहुतसे अधिकार प्राप्त थे। लोगोंके झगड़े तोड़ना, न्याय करना, लोगोंके चाल चलन पर नजर रखना, लोकस्थितिका निरीक्षण करना आदि अधिकार उसे प्राप्त रहते थे। प्रति पाँचवें वर्ष नवीन सेनसोर चुना जाता था। सबसे पहले विक्रमसे ५०० वर्ष पहले सेनसोरकी जगहें भर गयीं तदनन्तर खजांचीकी जगह भी प्लेबियन लोगोंको मिलने लगी, परन्तु फौजी ट्रिब्यूनका पद उन्हें ८० वर्ष और न मिला। क्योंकि, यद्यपि पात्रिशियन लोगोंने यह पद प्लेबियन लोगोंको देना स्वीकार कर लिया।

था तथापि वे भाँति भाँतिके झगडे खडे कर प्लेबियन लोगोंको यह जगह नहीं देने देते थे।

विक्रमसे ४३६ वर्ष पहले रोममें अकाल पडा। उस समय स्पुरियस मेलियस नामके एक धनवान प्लेबियनने इटुरिया प्रान्तसे बहुत सा अनाज खरीदकर गरीब लोगोंमें बाँट दिया। ऐसा करनेपर वह सर्वप्रिय हो गया। यह बात पाट्रि-शियन लोगोंको अच्छी न लगी। वे डरने लगे कि कहीं यह फौजी ट्रिब्यून न बन बैठे। इसलिए वे उसके नाशका उपाय सोचने लगे। अन्तमें उन्होंने रोमके गल्लेके बाजारके मुख्य अधिकारी ल्यूशियस आगुरिनस द्वारा सिनेटमें उसपर मुकदमा चलाया। उसपर यह दोष लगाया था कि वह रोम में पुन राजपद स्थापित करनेकी चिन्तामें है और वह स्वय राजा होना चाहता है। इसीलिए रोज रातको इसके यहाँ गुप्त सभा होती है। सिनेट सभाने भयभीत होनेका बहाना कर रोमको इस सकटसे बचानेके लिए सिन्सिनेटसको पुन डिक्टेटर चुना। इस समय उसकी उम्र ८० वर्षकी थी, सिन्सिनेटस रोममें आमेलियसपर लगाये हुए आरोपसे मुक्ति पानेका उद्योग करने लगा, उस समय मेलियस उपस्थित था। तद-नन्तर, निर्णय सुननेको उसे न्यायसभामें लिवा लानेके लिए सिन्सिनेटसने, सिपियो सर्विलियस अहाला नामके एक मनुष्यको भेजा। परन्तु मेलियसने न्यायसभामें न जानेकी इच्छा प्रकटकी। यह कहते हुए उसने अपनी तलवारपर भी हाथ लगाया। बस इतनेसे ही अहालाका मिजाज बिगड गया और उसने मेलियसको वहीं मार डाला। यह अन्याय हुआ, परन्तु, सिन्सिनेटसने अहालाकी तारीफ की। मेलियस दोषी ठहराया गया और उसके घरको गिरा देनेका हुक्म दिया

गया। सिन्सिनेटसकी डिक्टेटरकी अवधि पूरी होते ही प्लेबियन लोगोंने अपने ट्रिब्यून द्वारा अहालापर खूनका आरोप लगा मुकदमा चलाया, परन्तु निर्णय होनेके पहले ही वह रोम नगर छोडकर भाग गया।

रोम नगरके आस पासके प्रदेशोंमें कई बलवान् राष्ट्र थे। उनमेंसे इट्रुस्कन राष्ट्र बडा शक्तिशाली था। रोम राष्ट्रको इनसे कई बार लडना पडा। यह, एक सुधरा हुआ राष्ट्र था। कलाकौशल और व्यापारमें भी इसने अच्छी उन्नति कर ली थी। इसके पास कई जहाज थे। भूमध्यसागरपर इट्रुस्कन और कार्थेजवासी लोगोंका ही अधिकार था। कार्थेज नगर अफ्रिकामें भूमध्यसागरके किनारे बसा हुआ था। दोनों ही भूमध्यसागरपर व्यापार करना चाहते थे और इसीलिए इट्रुस्कन और कार्थेजके लोगोंमें हमेशा युद्ध हुआ करता था। विक्रमसे ५३१ वर्ष पूर्व ग्रीक लोगोंने इट्रुस्कन लोगोंको हरा दिया। इसी समय इटलीके उत्तरमें रहनेवाले गाल लोग बार बार उनपर चढाई करने लगे। इससे इट्रुस्कन लोगोंकी शक्ति घट चली। रोमके लोगोंने भी यह अवसर हाथसे न जाने दिया। उन्होंने दक्षिणकी ओरसे चढाई कर उनकी राजधानी वी नगरको घेर लिया। रोमकी सेना कई वर्षोंतक घेरा डाले पडी रही, पर नगरका कोट बडा मजबूत था, नगर हाथ न आया। इसी समय विक्रम से ४८३ वर्ष पहले रोमके लोगोंने फिडेन नगरपर अधिकार कर लिया। अत वीसे सुलह हो गयी। परन्तु कुछ दिन बाद फिर लडाई छिड गयी। रोमके लोगोंने पुन वी नगरको घेर लिया। सात वर्षतक घेरा डाले पडे रहे। सातवें वर्ष पानी न बरसा। रोमसे कुछ दूर दक्षिणकी ओर आलबन नामका एक बहुत बडा सरोवर है।

इस समय एकाएक इस सरोवरमें पानी बढ़ने लगा। आस पासके सब खेत और घर पानीमें डूब गये। रोमके लोगोंने इसे किसी भावी अशुभकी सूचना समझी और इसका अर्थ समझनेके लिए, डेल्फीके देवताकी शरण ली। रोमके लोगों को उत्तर मिला कि इस सरोवरका पानी नीचेके प्रदेश में बह जानेके लिए एक नवीन मार्ग बनाए बिना वी नगर हाथ न आएगा। एक तरफसे सरोवरका पानी निकाल देनेसे दूसरी तरफसे नगरपर अधिकार हो जानेका क्या सम्बन्ध था, कुछ पता न चला। फिर भी, रोमके लोगोंने देवताके आज्ञानुसार एक नहर बनाया। सरोवरका पानी इसी नहर-मेंसे निकाला गया। यह नहर अब तक मौजूद है। यह करीब डेढ मील लम्बा, चार फुट चौडा और सातसे १० फुट ऊँचा है, आल्बन सरोवर समुद्रकी सतह से १००० फुट ऊँचा है।

इस प्रकार डेल्फीके देवताकी आज्ञा पालन करनेपर रोम-निवासी वी नगरपर अधिकार कर लेनेका उद्योग करने लगे। वीपर शीघ्र विजय पानेके लिए रोमके लोगोंने मार्कस फ्युरि-यस क्यामिलसको डिक्टेटर चुना। वी निवासियोंने सुलहके लिए प्रार्थना की, किन्तु रोमके लोगोंने उनकी प्रार्थनापर ध्यान नहीं दिया। फिर भी दुर्गकी दृढता और उनके साहसने रोम सैनिकोंको उसे जीतने न दिया। लगातार सात आठ वर्षतक घेरा जारी रहनेसे रोमके लोगोंको खेतीका काम बन्द रखना पडा था। इसलिए रोमकी सरकारको उन्हें वेतन देना पडा। सिपाहियोंको उनकी नौकरीके लिए वेतन देनेका यह पहला ही अवसर था।

दीवार तोडना कठिन जान क्यामिलसने नगरके नीचेसे

सुरङ्ग खोदना शुरू किया। यह सुरङ्ग नीचे नीचे जूनो देवता-के मन्दिरकी वेदीतक खोदा गया था। केवल एक पत्थर हटाना बाकी रखा गया था। क्यामिलसने अपोलो देवताकी मन्नत मानी थी कि लूटका १⁄१० भाग तुझे अर्पण करूँगा। इसके बाद उसने कुछ लोगोंको सुरङ्गमें जानेके लिए आज्ञा दी और बाहरसे नगरपर आक्रमण किया। इस समय वीका राजा जूनो देवताकी वेदीके पास हवन करनेके लिए खडा था। राजपुरोहितने राजासे कहा कि जो सबसे पहले इस अँतडीकी आहुति अग्निको अर्पण करेगा उसीकी जीत होगी। सुरङ्गमें खडे हुए रोमके लोगोंने यह बात सुन ली। वे एक-दम सुरङ्गसे बाहर निकल आये और झपटकर अँतडी छीन सबसे पहले अग्निको अर्पण कर दी। पूजार्थी लोग अभी आश्चर्यहीमें थे, कि उन सभोंने दौडकर अपने साथी सैनिकोंके आनेके लिए नगरका फाटक खोल दिया। फाटक खुलते ही रोमकी सेना जोरोंके साथ भीतर घुस आयी और नगरमें आग लगा दी। इस प्रकार देखते देखते वी नगरका अन्त हो गया।

इस विजयके लिए रोममें बडा आनन्द मनाया गया। लोगोंने क्यामिलसको दिग्विजयी समझा और उसे चार सफेद घोडोंके रथमें बिठाकर उसका जुलूस निकाला।

इसके बाद क्यामिलसने फालेरी नगरपर घेरा डाला। जिस समय वह घेरा डाले पडा था उस समय उस शहरका एक विश्वासघाती शिक्षक अपने विद्यार्थियों सहित उसके पास आया। उसने क्यामिलसको कहला भेजा कि ये सब नगरके प्रतिष्ठित लोगोंके लडके हैं। इन्हें कैद कर लेनेसे नगर एक क्षणमें आपके हाथ आ जायगा। यह सुनकर वह बडा बिगडा और उस शिक्षकको अपने सामने बुलवाया। क्यामि-

लसने उसके विद्यार्थियोंसे उसके हाथ पीछेकी ओर बँधवाये और उनके हाथोंमें मोटी लकड़ियाँ दे उसे मारनेकी आज्ञा दी और इस प्रकार पिटवाते पिटवाते उसे नगरकी ओर भेज दिया। यह बात सुनते ही फालेरी नगर निवासियोंकी आँखोंमें प्रेमाश्रु भर आये और वे सब स्वयं उसकी शरणमें दौड़कर आ मिले। क्यामिलस बड़ा उदार था। कपटसे स्वार्थका साध न करना यह नहीं जानता था। उसकी उदारता अनुकरणीय है।

अब वी, फालेरी आदि नगरोंका सब देश रोम राष्ट्रके अधिकारमें आ गया। ये सब देश और लूटका माल पाश्रिशियन लोगोंने आपसमें बाँट लिया। क्यामिलसने पाश्रिशियन लोगोंसे लूटका १० वाँ भाग अपोलो देवताको अर्पण करनेके लिए माँगा, तब तो वे उससे बड़े असन्तुष्ट हुए और उसके पराक्रम और देशसेवाकी बातोंको भूलकर उन्होंने उसपर लूटका माल बाँटनेमें विश्वासघात करनेका दोष लगाया। विवश हो बेचारेको देशत्याग करना पड़ा। किन्तु रोम छोड़ते समय उसने उस कृतघ्न नगरको शाप देते हुए कहा कि मुझे अकारण निकाल देनेके लिए तुझे एक दिन अवश्य पश्चात्ताप करना पड़ेगा।

निदान, रोमका राज्य बढ़ तो अवश्य गया, परन्तु नवीन प्रान्त जीतकर रोममें मिलानेवाले देशभक्त मनुष्यको देशत्याग करना पड़ा। फल वही हुआ जो होना था। अगले परिच्छेदमें देखिये, कुछ वर्षोंके बाद क्यामिलसका शाप शब्दशः सच्चा हुआ।



पाँचवाँ परिच्छेद

गाल और साम्नाइट लोगोंसे युद्ध

अबतक रोमके लोगोंने अपने शत्रुओंको जीतकर रोमकी रक्षा अच्छी तरह की। इसके बाद उन्हें गाल लोगोंसे लड़ना पड़ा। रोमनिवासी उनके सामने न ठहर सके और गालकी सेनाने उनको नष्ट कर डाला। गाल लोग मध्य एशियामेंसे यूरोपमें आये थे। वे आधुनिक फ्रांस देशमें जा बसे। वे यद्यपि निरे जंगली थे, तो भी शूरतामें उनकी बराबरी बहुत ही कम लोग कर सकते थे। वे अपने गाँवके चारों ओर कोट नहीं बाँधते थे। उनके पास बहुतसे पशु थे। एक स्थानपर घासकी कमी हो जानेसे वे दूसरे स्थानपर चले जाते थे। वे हृष्ट पुष्ट और बलवान थे। उनका स्वभाव उद्धत था। परिश्रमकर शान्तिसे जीवन निर्वाह करना वे नहीं जानते थे। दूसरोंके प्रदेशोंपर चढ़ाई करना लोगोंको लूटना और लूटके मालपर चैन करना ही उनका काम था। वे बराबर रोमकी ओर बढ़ रहे थे। किन्तु कई वर्षोंतक वे बीचके इट्रुस्कन लोगोंसे ही लड़ते रहे। इन्हीं लोगोंकी चढ़ाइयोंके कारण रोमके लोग इट्रुस्कन लोगोंको जीत सके थे। क्योंकि वे दूसरी ओरसे उनके द्वारा दबाये जा रहे थे।

विक्रमसे ४४८ वर्ष पहले गाल लोगोंने क्लुसियम नगरपर चढ़ाई की। यह नगर रोमसे १०० मीलकी दूरीपर बसा हुआ था। वहाँके लोगोंने रोमनिवासियोंसे सहायता माँगी, किन्तु रोमके लोगोंने उनको सहायता न देकर गाल

लोगोंको समझानेके लिए अपने प्रतिनिधि भेजे। उन्होंने गाल लोगोंको कहला भेजा कि क्लुसियम निवासियोंने जब तुम्हें तकलीफ नहीं दी तब तुम अकारण उनसे क्यों लड़ते हो? परन्तु गाल लोग ऐसी बात सुननेवाले थोड़े ही थे। उन्होंने उत्तर दिया कि क्लुसियम लोग अपने राज्यमेंसे कुछ प्रदेश छोड़ दें तो हम उनको कष्ट न देंगे। यदि उन्हें यह बात स्वीकार न होगी तो हम रोमके लोगोंके सामने उनपर चढ़ाई करेंगे और गाल लोगोंकी शूरता उन्हें दिखा देंगे। इसपर रोमके लोगोंने उनसे प्रश्न किया कि दूसरेके प्रदेशोंपर चढ़ाई करनेका तुम्हें क्या अधिकार है? गाल लोगोंके सेनापति ब्रेन्नसने उत्तर दिया कि हम शूर लोगोंका प्रत्येक वस्तुपर अधिकार है और तलवार ही हमारा स्वत्व है।

तदनन्तर गाल और क्लुसियम-निवासियोंमें युद्ध हुआ। इस युद्धमें रोमके प्रतिनिधि क्लुसियम लोगोंकी ओरसे लड़े थे। एक प्रतिनिधिने इस युद्धमें एक गाल सरदारको मारा। रोमसे युद्ध न छिड़नेपर भी रोमके प्रतिनिधियोंने क्लुसियम लोगोंकी सहायताकी थी। इससे गाल लोग आग बबूला हो गये और उन्होंने रोमके प्रतिनिधियोंको अपने सपुर्द करनेके लिए लिखा। सिनेट सभाने यह बात स्वीकार कर ली। परन्तु लोकसभाने गाल लोगोंको तुच्छ समझकर उनकी माँग अमान्य की। यह देख ब्रेन्नसको बड़ा क्रोध आया और वह एक दम रोमकी ओर बढ़ा। रास्तेमें उसने किसी नगरको पीड़ा न पहुँचायी। कारण, वह लोगोंको दिखाया चाहता था कि उसे खासकर रोमसे बदला लेना है। रोमके लोग भयभीत हो गये और उनकी बुद्धि चक्कर खाने लगी।

"विनाशकाले विपरीत बुद्धि" की कहावत चरितार्थ

होने लगी। गाल लोगोंके चढ़ आनेकी बात उन्हें पहले ही मालूम हो गयी थी। रोमके लोग जानते थे कि गालोंका स्वभाव बहुत उद्धत है तो भी उन्होंने अपनी रक्षाकी कोई योग्य व्यवस्था न की। उन्होंने उनका सामना करनेके लिए बहुत कम सेना भेजी। रोम नगरसे बारह मीलकी दूरीपर आलिया नदीके किनारे दोनों सेनाओंकी मुठभेड हो गयी। विक्रमसे ४४७ वर्ष पहले ३२ मिथुनको युद्ध हुआ। गाल लोगोंकी सेना ७० हजार थी। रोमके लोग केवल ४० हजार सेना ले उनसे लड रहे थे। रोमके नागरिक भी इस युद्धमें सैनिक बनकर आये थे। उनकी टुकडी अलग थी। सिपाहीगिरीका काम करनेवाले सैनिकोंका भाग अलग था। ब्रेन्नसने पहले नागरिकोंकी सेनापर हमला किया। अनभ्यस्त होनेके कारण वे शीघ्र ही हरा दिये गये। तदनन्तर ब्रेन्नसने दूसरे भागपर आक्रमण किया। गाल लोगोंने उन्हें भी सहजहीमें हरा दिया। हजारों रोमके सिपाही खेत रहे। बहुतसे लोग वी नगरमें जा छिपे और कुछ टाइबर नदीमें डूब मरे।

रोमकी सेनाके जीतनेके बाद यदि गाल लोग एकदम रोम नगरमें घुस गये होते तो उस नगरका नाम निशानतक न रहता। परन्तु वे दो दिनतक विश्राम करनेके लिए ठहर गये। अवसर पाकर लोगोंने नगरकी व्यवस्था कर ली। किन्तु बहुतसे सिपाही वी नगरमें आश्रय लिये पडे थे। अतएव रोमकी रक्षा उचित प्रकारसे न हो सकी। इसलिए नगर-वासियोंने नगर छोडकर अन्यत्र जाना ही अच्छा समझा। मूल्यवान् वस्तुओंको जमीनमें गाडकर और बहुतसी वस्तुएँ साथ लेकर नगरनिवासी आसपासके गाँवोंमें भाग गये। बहुतसे पात्रिशियन लोग और सिनेटके जवान सभासद

बहुतसी अन्नसामग्री अपने साथ ले क्यापिटोल किलेमें जा रहे। किन्तु सिनेटके वृद्ध सभासदोंने नगर सूना छोडकर जाना अच्छा नहीं समझा। इसलिए केवल वे सभामें आनेकी अपनी पोशाक पहनकर सभागृहमें अपने अपने स्थानपर जा बैठे।

इतनेमें गाल लोग रोमके पास आ पहुँचे। नगरके फाटक थे किन्तु पहरेपर सिपाही न थे। कोलाइन नामक फाटक ताडकर गाल लोग नगरमें घुस गये। उन्होंने नगर सूना पाया। सब घरोंके दरवाजे बन्द थे। यह देखकर वे निराश हो गये। इधर उधर देखते हुए वे फोरममें जा पहुँचे। उन्होंने यहाँ सिनेटके सभागृहमें कुछ सभासदोंको बैठे हुए देखा। उन्हें बडा आश्चर्य हुआ। एक सैनिकने एम० पापीरियस नामक सभासदकी दाढ़ीमें हाथ लगा दिया। इस धृष्टतासे क्रोधमें आ उस सभासदने उस सैनिकको एक डण्डा मारा। यह देखकर गाल लोगोंका क्रोध दूना हो गया। उन्होंने सब सभासदोंको मार डाला। नगरमें आग लगा दी। नगर जल उठा। परन्तु क्यापिटोल किला सुरक्षित था। यह किला एक ऊँचे पर्वतपर बनाया गया था और उसकी दीवारें मजबूत थीं। इसलिए गाल लोग उसमें न घुस सके। इसके सिवा किलेमें कुछ सैनिक भी थे। वे उन्हें किलेके पासतक नहीं फटकने देते थे।

धीरे धीरे ब्रेन्नसके सिपाहियोंको अन्नकी कमी पडने लगी। तब वे रोमके आसपासके प्रदेशोंमें लूटपाट मचाने लगे। सेनामें रोग फैल गया और बहुतसे गाल लोग मर गये। इसलिए ब्रेन्नस अपने प्रदेशको लौट आनेका विचार करने लगा।

वी नगरमें आश्रय लेकर रहे हुए रोमके सैनिक क्यापिटोल किलेके लोगोंके छुटकारेका प्रयत्न करने लगे। उन्हें विश्वास हो गया कि देशनिकाला दिये हुए क्यामिलसको सेनापति बनाये विना काम नहीं चलेगा। इसलिए उन्होंने क्यामिलससे लौट आनेकी प्रार्थना करनेके लिए कुछ मनुष्य भेजे। क्यामिलसने उत्तर दिया कि रोमन सिनेटने मुझे देशनिकालेकी सज़ा दी है, इसलिए सिनेटकी आज्ञा विना मैं रोम नहीं जा सकता। यह उत्तर पाकर लोग सङ्कटमें पड गये। कारण, सिनेटके सभासद् तो क्यापिटोल किलेमें थे। सिनेटसे आज्ञा पा लेना कठिन काम था, परन्तु एक युवक रोमनने क्यापिटोल किलेमें जाकर सिनेटकी आज्ञा प्राप्त करनेका बीडा उठाया। वह आधीरातको टाइबर नदी तैरकर उसपार गया। किलेके चारों ओर गाल लोगोंका कड़ा पहरा था, उनकी आँखें बचाकर वह युवक एक दुर्गम रास्तेसे पहाडपर चढ किलेके अन्दर जा पहुँचा और सिनेटसे क्यामिलसको सेनापति बनानेकी आज्ञा ले उसी मार्गसे वापस लौट आया। किलेमेंके लोगोंको बचनेकी आशा हो गयी। किन्तु फिसले हुए पत्थरोंसे और पाँवके चिह्नोंसे गाल लोगोंको भी उस गुप्त राहका पता लग गया। और वे उस राहसे ऊपर चढनेकी कोशिश करने लगे। गाल लोगोंका नेता ऊपर पहुँचनेके समीप आ गया। साथी सैनिक उसके पीछे पीछे ऊपर चढ रहे थे। यह उद्योग आधी रातके ऊपरके समयमें हो रहा था। इसलिए किसीको कुछ बात मालूम न हो सकी। कुत्तोंने भी आहट न सुनी। परन्तु जूनो नामके देवताके नामपर पाले हुए हंस आहट पा जागकर जोरसे चिल्ला उठे। उनकी आवाज सुनते ही लोग चौंक पडे और उनके चिल्लानेका कारण जाननेके लिए बाहर निकले।

देखा गाल लोग ऊपर चढे आते हैं। देखते ही मार्कस म्यानिलियस नामके युवकने आगे बढ सबसे आगेवाले मनुष्यको ढकेल दिया। उसके धक्केसे पीछेवाले सब मनुष्योंको धक्का लगा और वे सबके सब पहाडीसे लुढकने लगे। इस तरह बहुतसे गाल मर गये। प्रयत्न निष्फल हो जानेसे गाल लोगोंको बडा बुरा लगा। गरमीसे भी उन्हें तकलीफ होने लगी। नाना प्रकारके रोगोंसे भी सैनिक मरने लगे। तब घबराकर उन्होंने किसी प्रकार रोमके लोगोंसे मेल कर लेना ही अच्छा समझा। इधर क्यापिटोल किलेमेंके लोग भी उकता गये थे। दोनों ओरसे सुलहकी बातचीत होने लगी। ब्रेन्नसने रोमके लोगोंसे करकी तौरपर १ मन १० सेर सोना माँगा। निरुपाय हो उन्हें उनकी शर्तें स्वीकार करनी पडी। रोमके लोग सोना तौल देनेके लिए तैयार हो गये। परन्तु गाल लोग चाल चलने लगे। वे मनमाने बटखरेसे सोना तौलने लगे। जिससे सोना घटने लगा। गालोंकी जब यह धूर्त्तता रोमके लोगोंको मालूम हुई तो उन्हें बडा क्रोध हुआ। उधर ब्रेन्नसका भी मिजाज बिगडा। कारण, वह कहता था कि हारे हुए लोगोंको इतना घमण्ड क्यों होना चाहिए? उन्हें चुपचाप जो हम कहें वैसा करना चाहिए। निदान वह क्रोधमें आ अपनी तलवार तौलकी तरफ वाले पलडेमें डालकर बोला—"हारे हुए राष्ट्रको इतना घमण्ड क्यों होना चाहिए, हमारे रखे हुए वजनके बराबर सोना तौल देना ही उनका काम है।" इधर यह हो ही रहा था कि इतनेमें क्यामिलस अपनी सेना-सहित आ पहुँचा। रोमके लोगोंको ज्योंही यह बात मालूम हुई, उन्होंने वे सब बटखरे और तलवार गाल लोगोंपर फेंक मारे और सोना अपने हाथ लेकर कहा,—"रोमके लोग

सोनेसे अपना ऋण नहीं चुकाते, लोहे से चुकाते हैं। शक्ति हो तो चुकवाले।" निदान सुलहकी बात बन्द हो गयी। गाल लोग बड़े क्रोधमें वहाँसे चल दिये, और रोमसे दस मीलकी दूरीपर छावनी डालकर जा ठहरे। क्यामिलसने उनपर आक्रमण कर इतने लोगोंका वध किया कि गालोंकी शक्ति बिलकुल क्षीण हो गयी और उन्हें रोम छोड़कर हट जाना पड़ा।

गालोंकी इस चढ़ाईसे बहुत बुरा परिणाम हुआ। रोमका सब पुराना इतिहास जलकर भस्म हो गया। कारण धर्मोपदेशक ही इतिहास लिखते थे। ये लेख मन्दिरोंमें रखे जाते थे। गालोंने मन्दिर जला डाले थे, उनके साथ साथ लेख भी जल गये। अत गालोंकी चढ़ाईके पहलेका इतिहास विश्वसनीय नहीं। परन्तु उसके बादका जो रोमका इतिहास उपलब्ध है, उसमें कल्पित बातें कम पायी जाती हैं।

रोम नगर उजाड़ हो गया क्योंकि रोमके लोग भी कम नहीं मारे गये थे। बहुतसे अपना प्राण ले भाग गये थे। तथापि बाकी रहे हुए लोगोंसे रोमकी यह दशा न देखी गयी। दूसरे नगरोंमें जाकर रहे हुए लोग भी पुन रोम लौट आये। क्यामिलस अधिपति था ही, सब विचार करने लगे कि क्या किया जाय? कुछ लोगोंने सलाह दी कि रोमका सङ्गठन पुन पूर्ववत् किया जाय। कुछ लोग वी नगरमें जाकर रहनेकी सलाह देने लगे। सिनेट सभा इस विषयपर वादविवाद कर ही रही थी कि सभागृहके पाससे आवाज आई,—"अरे निशान यहीं गाड़ दे यह जगह अच्छी है।" सभाने इसे आकाशवाणी मानकर रोम नगरको पुन पूर्ववत् सङ्गठित करनेका निश्चय किया।

रोम नगरको पुन सङ्गठित करनेका निश्चय हो जानेपर भी नगरके उजाडघरोंकी लकडी और ईंटें मुफ्त ले आनेके लिए गरीब लोगोंको परवानगी दे दी गयी। कठिन परिश्रमसे डेढ वर्षमें रोमके लोगोंने नगरका निर्माण किया। कहाँ कैसी इमारत बनानी ठीक होगी। इसपर किसीने विशेष ध्यान नहीं दिया। क्योंकि उन्हें तो किसी तरह शीघ्र कामको पूरा करना था। इससे नगरके रास्ते टेढ़े मेढे और सँकरे हो गये। रोमके लोगोंकी सख्या बहुत ही कम हो गयी थी, जिससे राष्ट्र शक्तिहीन हो गया था। इसलिए रोमके लोगोंने वी नगरके बाकी रहे हुए लोगोंको और क्यापेना और फालेरीके लोगोंको अपनेमें मिला लिया और उन्हें जमीन तथा रोमके लोगोंके ही समान अधिकार दिये। उन्होंने अपने गत सामर्थ्यको पुन प्राप्त करनेके लिए जातिके दागको एक ओर रख दिया।

इस प्रकार लोक सख्या बढाकर रोमके राज्य कर्तागण उस नगरका गत वैभव पुन प्राप्त करनेका यत्न अभी कर ही रहे थे कि उस नगरके शत्रुओंने बदला लेनेका अच्छा अवसर पाकर उससे युद्ध करनेकी बीचमें ही तैयारी कर दी। परन्तु रोमके सेनापति वीर क्यामिलसने उन सबको हराकर रोमका दबदबा पुन सभोंपर जमा दिया।

इस समय रोम राष्ट्रकी दशा बडी बुरी हो रही थी। जलाये हुए घर बनानेके लिए सरकारने उन्हें बहुत सहायता दी थी। परन्तु पशु खरीदने आदिमें अधिक व्यय हो जानेके कारण उनके पास चढा हुआ सरकारी कर देनेके लिए पैसा न रहा। इसलिए उन्हें साहूकारोंकी शरण लेनी पडी। मार्कस क्यानिलससे उनका दु ख न देखा गया। वह उनका दु ख निवारण करनेकी कोशिश करने लगा। किन्तु इस

उद्योगमें थोडी भूल हो जानेके कारण उसे अपने प्राण गँवाने पडे। बात यह थी कि, इसीने क्यापिटोल किलेपरसे गाल लोगोंको ढकेल कर किलेकी रक्षा की थी। लोग उसके इस पराक्रमकी बडी तारीफ करते थे। अपनी प्रशंसा सुनकर यह फूला नहीं समाता था। किन्तु उधर लोग क्यामिलसको भी अधिक मान देते थे। उसे यह बात खटकने लगी और वह प्लेबियन लोगोंका पक्ष ले लाखों रुपये खर्च कर अपना प्रभाव जमानेका यत्न करने लगा। प्लेबियन लोग उसे बहुत चाहने लगे। इससे पाट्रिशियन लोगोंको भय होने लगा कि कहीं वह राज्यके सब अधिकार न दबा बैठे। इसीसे पाट्रिशियन लोग उससे द्वेष करने लगे और उसके नाश करनेका उद्योग करने लगे। उन्होंने उसपर राजद्रोहका अपराध साबित कर प्राण दण्डकी सजा दिलवा दी। और विक्रमसे ४४१ वर्ष पहले बेचारा म्यानिलस टार्पियन पहाडी परसे गिराकर मार डाला गया।

म्यानिलसकी मृत्युके आठ वर्ष बाद केयस लिसिनस और लूशस सेक्शस नामके दो ट्रिब्यूनने प्लेबियन लोगोंको पाट्रिशियन साहूकारोंके पजेसे छुडानेके लिए लोक सभामें तीन विधान उपस्थित किये। पहला विधान व्याज क्षमाकर ऋण सुलभ रीतिसे अदा करनेके लिए बनाया गया था। दूसरे विधानमें गरीब लोगोंको सार्वजनिक जमीनमेंसे कुछ हिस्सा देनेका ठहराव था, और इतनी जमीन प्राप्त करनेके लिए हरएक मनुष्यको ३३० एकडसे ज्यादा जमीन जोतनेकी और सार्वजनिक चरागाहपर १०० बैल और ५०० भेडसे अधिक पशु चरानेकी परवानगी न देनेका नियम था। इन दोनों नियमोंसे पाट्रिशियन लोगोंको विशेष भय न था।

क्योंकि वे जानते थे कि इन नियमोंके स्वीकार हो जानेपर भी उनको काममें लाना सहल न था। हाँ तीसरे नियमसे उन्हें विशेष भय था, क्योंकि इस नियमसे फौजी ट्रिब्यूनकी जगह तोड़ दी गयी थी और पहलेके समान दो कौन्सल चुननेका नियम बनाया गया था। इस विधानमें यह भी नियम था कि दोनों कौन्सलमेंसे एक कौन्सल अवश्य ही प्लेबियन रहा करे। इस विधानको लोकसभामें उपस्थित न होने देनेके लिए पात्रिशियन लोगोंने बहुत यत्न किया, परन्तु दोनों ट्रिब्यूनोंने उनकी एक न चलने दी। तब सिनेट सभाने कमिलसको डिक्टेटर बनाकर यह झगड़ा तोड़नेके लिए प्रार्थना की। परन्तु इस समय प्लेबियन लोगोंका पक्ष बहुत बलवान् था, इसलिए वह कुछ भी न कर सका और अन्तमें उसे भी अपनी स्वीकृति देनी पड़ी। इसके बाद लोकसभाने तीनों मसविदे स्वीकार कर लिये और सेक्सटसको प्लेबियन कौन्सल चुन डाला। जब प्लेबियन लोग जबर्दस्तीसे अपने मनकी बात पूरी करनेका प्रयत्न करने लगे तब पात्रिशियन लोगोंने विघ्न डालनेका निश्चय किया। कौन्सलका चुनाव हो जानेपर उसे कौन्सलका अधिकार देते समय कुछ धार्मिक कृत्य करना पड़ता था। रोमके धर्माधिकारी सेक्सटसको कौन्सलके अधिकारका अभिषेक करनेको प्रस्तुत न हुए, यही समय था जब कि कमिलस गाल लोगोंको हराकर सेना सहित वापस लौटा। उसने देखा प्लेबियन लोगोंकी माँग न्याय सगत है। निदान उसने सिनेट सभाको समझाया। सभाने उसका कहा मानकर सेक्सटसको प्लेबियन कौन्सल स्वीकार कर लिया।

सेक्सटस, विक्रमसे ४२२ वर्ष पहले कौन्सल हुआ। यही पहला प्लेबियन कौन्सल था। यह वर्ष रोमके इतिहासमें

स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जाने योग्य था। कारण, प्लेबियन कौन्सल की नियुक्ति हो जानेसे पात्रिशियन और प्लेबियन लोगों दरजा बराबर हो गया। इसी वर्षसे उनमें मित्रता हो शुरू हो गयी।

ऊपर लिखे अनुसार प्लेबियन कौन्सलकी नियुक्ति स्वीक करनेमें भी पात्रिशियन लोगोंने अपना काम बना ही लिया कौन्सलको सदैव युद्धपर रहना पड़ता था। इसलिए उ न्यायाधीशका काम करनेका अवकाश कम मिलता था। सं पात्रिशियन लोगोंने प्रोटर नामक अधिकारीकी योजना क उसे न्यायाधीश बनाया। प्रीटर होनेका अधिकार पात्रिशिय लोगोंको ही था।

ऊपर लिखे हुए बड़े बड़े और जिम्मेवारीके कामक फ्यामिलसने रोम नगरमें शान्ति स्थापित की। इसके बाद व केवल दो वर्ष और जीवित रहा। यद्यपि झूठी बातोंप विश्वासकर उसके देश भाइयोंने उसे देश निकाला दे दिय था, तो भी उस अपमानको भूलकर वह आजन्म रोमकी से करता रहा। रोमके लोगोंने भी आगे उसका अच्छा गौर किया। वे उसे राम्युलसकी तरह आदरकी दृष्टिसे देखते थे विक्रमसे ४२२ वर्ष पहले रोममें हैजा फैला। हजारों लो मरे। फ्यामिलसको भी उसी हैजेका शिकार बनना पड़ा।

इसके बाद रोमके लोगोंको साम्नाइट नामके एक जंग लोगोंका सामना करना पड़ा। ये पहले अपिनाइन पर्वतक माटेसी श्रेणीपर रहते थे।-इनकी उत्पत्तिकी कथा बड़ विचित्र है। प्राचीन समयमें इटलीमें यह चाल थी कि अकाल के वर्षके मेष (अप्रैल) और वृष (मई) मासमें जन्मे हुए मनुष और पशु देवताको बलि दिये जाते थे। किन्तु बादमें लोग इ

चालको बुरी समझने लगे और तब उन्होंने यह नियम बनाया कि ऐसे मनुष्य देशमें रखे जायँ और बड़े होनेपर ये देशसे निकाल दिये जायँ, इस तरह देशसे निकाले हुए मनुष्योंसे साम्नाइट लोग पैदा हुए थे। इनका प्रान्त रोमके दक्षिणमें था। इन्होंने पहले कपानिया प्रदेशकी राजधानी कापुआपर चढ़ाई की। यह नगर अच्छे स्थानपर बसा हुआ था। कापुआ नगर बड़ा समृद्धिशाली था। भोगविलासमें मग्न रहनेके कारण नगरवासी नाजुक और आलसी हो गये थे, इसलिए उन्होंने रोमके लोगोंसे सहायताके लिए प्रार्थना की। रोमन और साम्नाइट लोगोंमें सुलह थी, तो भी रोमके लोग कापुआ निवासियोंको सहायता देनेके लिए सहमत हो गये। साम्नाइट और रोमके लोगोंमें युद्ध हुआ। यह युद्ध विक्रमसे ४०० वर्ष पहले आरम्भ हुआ और विक्रमसे ३६८ वर्ष पहलेतक जारी रहा। इन तीन वर्षोंमें कई युद्ध हुए, उनमेंसे सबसे बड़ा युद्ध, गारस पर्वतके पास हुआ। इस युद्धमें वालेरस कोर्वस रोमकी सेनाका सेनापति था। रोमकी सेनाकी जीत हुई। इस खुशीमें कार्थेज निवासियोंने रोमके जुपिटर देवताके लिए एक सोनेका मुकुट भेजा। पहले रोम और कार्थेज निवासियोंमें मित्रता न थी, किन्तु लगभग पाँच वर्षसे उनमें सुलह हो गयी थी।

इस युद्धके समय, एक महत्वपूर्ण घटना हुई। इसमें आये हुए सब सैनिक प्लेबियन थे। वे गरीब थे। कापुआकी आबहवा अच्छी होनेसे और उत्तम भोजन मिलनेसे उन्हें वहाँ बहुत सुख मिला। अत उन्होंने रोम वापस जानेसे इन्कार कर दिया। दूसरा कारण यह था कि वे रोममें ऋणके बोझसे दबे जा रहे थे, अन्तमें अशान्ति फैल गयी। कापुआके

अधिकारी डर गये। इधर रोम राज्यके सूत्रधारोंको भी भय होने लगा, लाचार उन्हें प्लेबियन लोगोंकी बात माननी पडी। उन्हें पीछेका सब ऋण क्षमा करना ही पडा और व्याज लेना अन्याय ठहराया गया। पहले यह नियम बनाया गया था कि एक कौन्सल अवश्य प्लेबियन रहा करे। परन्तु अब उन्हें यह नियम बनाना पडा कि दोनों कौन्सल प्लेबियन हुए तौ भी कोई हर्ज नहीं।

इस प्रकार आपसी झगडेमें लगे रहनेके कारण रोमके लोगोंसे एक वर्षके लिए युद्ध बन्द रखना पडा। रोमके लोगोंको साम्नाइट लोगोंसे लडनेका काम लातिन (लैटिन) लोगोंके सपुर्द करना पडा, लातिन लोगोंने साम्नाइट लोगोंकी बडी दुर्दशा की। लातिन लोगोंको प्रबल होते देखकर रोम-निवासी उनसे जलने लगे। दोनोंमें सुलह होनेपर भी रोमके लोगोंने उनसे युद्ध करना जारी कर दिया। वेसुवियस पर्वतके पास युद्ध हुआ। रोमके लोगोंकी जीत हुई। लातिन लोगोंकी शक्ति इतनी घट गयी कि उन्हें सदैवके लिए परतन्त्रताकी बेडी पहननी पडी।

इसके बाद रोमके लोगोंने कई जातियोंको जीतकर अपने अधीन कर लिया। इससे रोमकी शक्ति बहुत बढ गयी। परन्तु उन्हें फिर भी साम्नाइट लोगोंसे लडना पडा। कारण लातिन लोगोंका प्रदेश जीत लेनेसे रोमकी सीमा साम्नाइट लोगोंसे जा मिली थी। सीमान्तके पास बलवान राष्ट्रका होना भयजनक समझकर रोमके लोगोंने उनपर चढ़ाई की। यह दूसरा साम्नाइट युद्ध विक्रमसे २८० वर्ष पहले हुआ। यह युद्ध बीस वर्ष तक होता रहा। दोनों पक्ष आस पासके लोगोंको अपनी अपनी ओर मिला लेनेका यत्न करते रहे।

काडाइनकी घाटीमें तुमुल युद्ध हुआ। यह स्थान साम्राइट लोगोंके प्रदेशमें दो ऊँचे पहाडोंके बीच में था। आने जानेका रास्ता बहुत तङ्ग था। साम्नाइट लोग पीछे हटते हटते रोमकी सेनाको ऐसे स्थानपर ले गये जहाँसे भागने को रास्ता भी न था। रोमकी सेनाने सोचा था कि साम्नाइट लोगोंके हारनेमें अब देर नहीं है, परन्तु यह उनकी भूल थी। पहाडपर साम्नाइट लोग तैयार बैठे थे। उन्होंने रोमकी सेनापर एकदम आक्रमण कर दिया। रोमके सैनिक घबरा गये। इस युद्धमे पाटियस साम्नाइट सेनाका सेनापति था।

निरुपाय हो रोमकी सेनाने सन्धिके लिए प्रार्थना की। साम्नाइट लोगोंने अपनी सन्धिकी शर्तोंमें कहा,—"रोमके लोग उनके जीते हुए प्रान्त लौटा दें। साम्नाइट लोगोंके प्रान्तमें बसे हुए लोगोंको वापस अपने प्रान्तमें ले जायँ। प्रत्येक राष्ट्र स्वतन्त्र बना दिया जाय। यदि रोमके लोग इन शर्तोंको स्वीकार करें तो बिना कर लिए हम उन्हें सुरक्षित जाने देंगे। परन्तु जाते समय प्रत्येक सैनिक अपने शस्त्र हमें देता जाय। हम रोमके लोगोंको जीवदान दे रहे हैं। अतएव उन्हें हमारी सेनाके सामने नीचा सिरकर घाटीसे बाहर निकलना चाहिए।" ये शर्तें बडी कडी थीं। इनसे रोमके लोगोंका बडा अपमान होता था। तो भी अपना प्राण बचानेके लिए रोमके लोगोंको शर्तें स्वीकार करनी पडीं।

दोनों कौन्सल और कुछ अधिकारियोंने रोमके प्रजासत्तात्मक राज्यकी ओरसे शपथपूर्वक शर्तें स्वीकार कीं। साम्नाइट लोगोंने ६०० रोमके लोगोंको जमानतकी तौरपर अपने यहाँ रख लिया। इस समय पाटियसने बडी उदारता दिखायी। उसने रोमकी सेनाको बिलकुल तकलीफ न होने

दी। सब लोगोंको जाने दिया। आहत और बीमार आद-मियोंको गाडीमें तथा घोडेपर बिठाकर रोम भेजनेकी व्यवस्था करा दी।

किन्तु यह सुलह अधिक समयतक न रही। क्योंकि रोमकी सिनेट सभासे यह अपमानास्पद सन्धि आगे चल कर स्वीकार न की जा सकी। उसने यह बात पाटियसको कहला भेजी और युद्धकी तैयारी करने लगी। रोमके लोगोंका सन्देश सुन कर पांटियस बडा नाराज हुआ। यदि वह चाहता तो रोमके लोगोंका नाम शेष कर देता। उसीने दयाकर उन्हें जीवदान दिया था। उसने रोमके लोगोंको कहला भेजा कि यदि तुम्हें सुलह स्वीकार नहीं है तो, मैंने जिन लोगोंको सुरक्षित जाने दिया है उन्हें पुन पूर्ववत् कार्डाइन घाटीमें आने दीजिये। और तब जो कुछ परिणाम हो उसे दोनों पक्ष मान्य करें। रोमके लोग इस बातपर क्यों प्रस्तुत होते? उन्होंने सुलह करनेवाले दोनों कौन्सलको पांटियसके पास भेज दिया और कहला भेजा कि ये ही अपराधी हैं। इन्हें तुम इच्छानुसार दण्ड दे सकते हो। रोमनिवासियोंने अपना यह कृत्य न्याय सङ्गत समझा था। किन्तु पाटियसने विश्वासघात समझा। क्रोधसे उसकी आँखें लाल हो आयीं, तो भी उसने दोनों कौन्सलको तकलीफ न दी बल्कि सही सलामत लौट जाने दिया।

युद्ध छिड गया। रोमकी शक्ति बढ़ती हुई देखकर इट्रुस्कन लोग डर गये थे। इसलिए वे साम्नाइट लोगोंके पक्षमें मिल गये, युद्ध हुआ। किन्तु रोमकी ही जीत हुई। विक्रमसे ३६१ वर्ष पहले साम्नाइट लोगोंको रोमकी अधीनता स्वीकार करनी पडी।

किन्तु साम्नाइट लोग शूर थे। रोमके अधीन रहना वे कैसे सहन कर सकते थे? स्वतन्त्रता देवीका भक्त भला परतन्त्रता पिशाचिनीकी सेवा कबतक करेगा! वनमें स्वच्छन्द विहार करनेवाला सिंह पिंजरेमें रहना कब पसन्द करेगा। स्वतन्त्र होनेके लिए उन्होंने फिर युद्ध छेड़ दिया। इस बार इटलीके अन्य सब जातिके लोग उनसे मिल गये। कारण रोमके बढ़ते हुए प्रभावको वे न सह सकते थे। वे रोमको नीचे गिराना चाहते थे क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि यदि रोमकी बढ़ती हुई शक्ति न रोकी जायगी तो एक न एक दिन रोम उन सबको नष्ट कर देगा। विक्रमसे ३५६ वर्ष पहले सेंटिनममें युद्ध हुआ। रोमके लोग बड़ी वीरतासे लड़े। उन्होंने शत्रुओंको खूब खदेड़ा। इस युद्धमें भी रोमकी ही जीत हुई।

साम्नाइट लोगोंसे तीसरा युद्ध हुआ। उसमें भी वे हार गये। इसके बाद उन्होंने कभी सिर नहीं उठाया। साम्नाइट लोग बार बार हराए जानेपर भी रोमके अधीन नहीं रहना चाहते थे। बार बार युद्ध करनेको तैयार होते थे। इसलिए उनका सर्वनाश करनेके लिए रोमके लोगोंने उनके देशमें लूट पाट मचा दी, घर जला दिए और उनका सर्वनाश कर दिया।

वृद्ध पाटियससे अपने प्यारे देशकी दुर्दशा न देखी गयी। उसने पुनः एक बार अपने लोगोंको बचानेका यत्न किया।

किन्तु कुछ भी फल न हुआ। शत्रु उसे कैदकर रोम नगर ले गया। वह उदार था। तीस वर्ष पहले उसने रोमकी सेना को जीवदान दिया था, किन्तु रोमकी सरकारने उसे धोखा दिया था। इस समय रोमके लोग उसके उपकारको भूल गये। उन्होंने पाटियसको निर्दयतासे मार डाला। इससे रोमके

बड़प्पनमें धब्बा लगा। यदि उन्होंने उससे अच्छा बत किया होता, उसके उपकार स्मरणकर जीवदान दिया हो तो क्या उनकी जीत हारमें बदल जाती? क्या उनका बड़प घट जाता? क्या नामवरी न होती?

एक ग्रन्थकारने लिखा है कि रोमके लोग पादाक्रान्त कि हुए लोगोंके साथ निर्दयताका ही बर्ताव करते थे। वे लो को डरानेके लिए ऐसा करते थे। रोमकी निर्दयता देख दूसरे लोग उससे शत्रुता करनेसे डरते थे। परन्तु अ उपकारकर्त्ताके साथ ऐसा व्यवहार करना, उसे निर्दयत मार डालना, लज्जास्पद है।

इस प्रकार रोमके लोगोंने साम्नाइट लोगोंका नाम कर दिया। साम्नाइट लोगोंकी दुर्दशा देखकर इटलीके दू राष्ट्र भी डर गये और सब रोमसे मित्रका सा बत करने लगे।

रोमके लोगोंने इतने वर्षतक लोहा बजाकर इटलीके स राष्ट्र अपने अधीन कर लिये। परन्तु इस समय रोम सक था। कारण इसी समय रोममें अकाल पड़ा। लोग मरने ल इसी बीचमें रोममें भयानक रोग फैल गया जिससे सैक मनुष्य मरने लगे। यह रोग तीन वर्षतक जारी रहा। त नन्तर शान्त हो गया।

अकाल, रोग और साम्नाइट युद्धके कारण रोमके गर लोगोंकी दशा बहुत ही बिगड़ गयी। अत हालहीमें जीते हु प्रदेशकी जमीनके छोटे छोटे टुकड़े गरीब लोगोंको मुफ्त देने विचार होने लगा। सिनेट सभाने भी स्वीकृति दे दी। पर पात्रिशियन लोग पुन पूर्ववत् झगड़ा करने लगे। लाच प्लेबियन लोग रोम छोड़कर जानिकुलम पहाड़ीपर जा बसे

पात्रिशियन लोगोंके घरका कामकाज वन्द हो गया। तव उनकी आँखें खुलीं। अन्तमें रोम राष्ट्रको इस सङ्कटसे बचानेके लिए हार्टेन्शस डिक्टेटर चुना गया। उसने यह झगडा सदेवके लिए मिटा दिया। उसने पात्रिशियन और प्लेबियन लोगोंको साधारण सभा की और गरीब प्लेबियन लोगोंको दी जानेवाली जमीनका विधान शपथपूर्वक स्वीकार करा लिया। उसने उस लोक सभामें यह भी स्वीकार करा लिया कि लोक सभामें बहुतसे जो विधान स्वीकार कर लिये जायें, सिनेट सभाको भी चाहिए कि उसकी अवश्य स्वीकृति दे। इस प्रकार पात्रिशियन लोगोंके अधिकार छीन लिये गये। इससे दोनों जातियोंका आपसी झगडा मिट गया और रोम राष्ट्रकी शक्ति बहुत बढ गयी और धीरे धीरे रोम-सूर्यका प्रकाश बढ़ने लगा।

ऊपर लिखे अनुसार यद्यपि रोमको अनेक सङ्कटोंका सामना करना पडा था तो भी रोम नगरमें कई बडी बडी इमारतें बनवायी गयी थीं। क्लाडियसने ही सब कुछ किया था। वह बुढापेमें अन्धा हो गया था। इसलिए उसे अन्धा क्लाडियस कहा करते थे। वह सेन्सोर बनाया गया था। उसने मुख्य दो प्रजा हितकारी काम किये। प्रथम रोम नगरमें पानीकी सुविधाके लिए नल लगवाये और दूसरे उसने रोमसे कापुआतक पक्की सडक बनवायी। यह सडक अठारह मील लम्बी थी। उसके अवशेष अब भी कहीं कहीं नजर आते हैं।

इटलीके दक्षिण भागमें ग्रीक लोगोंके उपनिवेश थे। वे उपनिवेश समृद्धिशाली थे। वे किसीकी परवाह न करते थे। उन उपनिवेशोंमें टारेंटम नामक एक प्रसिद्ध नगर था। यह नगर टारेंटम खाढ़ीके किनारे बसा हुआ था। इस नगरके

छठा परिच्छेद



कार्थेज प्युनिक आदि के युद्ध

छोटे छोटे युद्ध पूरे भी न हो पाए थे कि रोमन लोगों को एक बडी लडाई लडनी पडी। यह प्युनिक युद्ध था। यह लडाई कार्थेजके लोगोंसे हुई थी। इसलिए पहले उन लोगोंका इतिहास देना अच्छा होगा।

इटलीके दक्षिणमें सिसिली नामका एक द्वीप है। इस द्वीपके पास ही अफ्रिका खण्डका उत्तरी किनारा है। उस उत्तर किनारेपर प्राचीनकालमें कार्थेज नामका एक नगर बसा हुआ था। उससे भी पहले एशियामाइनरके किनारेपर फोनेशी (फिनीशियन) लोगोंका टायर नामक नगर था। यह नगर सम्पत्तिशाली और व्यापारका केन्द्र था। वहाँके कुछ लोगोंने वहाँकी राज्य पद्धतिसे अप्रसन्न हो कार्थेज नगर बसाया था। यह नगर ट्युनिसकी खाडीके किनारे बसा हुआ था। लोगोंने एक किला भी बनवाया था। इस किलेका नाम बेटजरा था। वहाँ एक बन्दरगाह भी बनाया गया था। यही कुछ वर्ष बाद बहुत बढ गया और आस पासके प्रदेशों से उसका व्यापार बहुत बढ गया। उसकी रक्षाका अच्छा बन्दोबस्त किया गया था। समुद्रकी ओर एक ऊँची दीवार थी। इसके अतिरिक्त बन्दरगाहके मार्गमें सुदृढ लोहेकी ज़ंजीर पडी थी। ज़मीनकी ओर एकके बाद एक ऐसी तीन

ऊँची दीवारें थीं। ये दीवारें ८० फुट ऊँची थीं। कार्थेज नगर सुरक्षित था, इसीसे उसका व्यापार बहुत बढ़ गया। धीरे धीरे कार्थेज सम्पत्तिशाली हो गया। अब उसने अफ्रिकाके मूल निवासियोंको कर देना बन्द कर दिया। भूमध्यसागरके पश्चिमी किनारेका सब प्रान्त उन्होंने अपने राज्यमें मिला लिया, और वहाँ अपनी व्यापारकी मण्डियाँ बसाईं। बालरिक टापू में तेल और ऊन बहुत होती थी। इसलिए उन्होंने उसे भी अपने राज्यमें मिला लिया। सर्डीनिया (सर्डीनिया) और कोर्सिका टापुओंको जीत लिया। सिसिली-का कुछ प्रदेश भी इन्होंने अपने राज्यमें मिला लिया था। स्पेनमें इनकी व्यापारकी मण्डियाँ बसी हुई थीं अपने राज्यके प्रदेशोंसे दूसरे लोग व्यापार न करने पाएँ, इस-लिए उनके राज्यमें प्रान्तोंसे व्यापार करनेका साहस करने वाले अन्य लोगोंको पानीमें डुबाकर मार डालनेका नियम था। अस्तु।

वहाँके राज्य सूत्र धनवान् लोगोंके हाथमें थे। रोमके सिनेटके समान वहाँ भी एक सभा थी। रोमके कौन्सलकी तरह वहाँ भी दो अधिकारी चुनकर नियत किये जाते थे। वे सब राज्यका काम देखते थे। वे सफेट कहाते थे। उनकी सिनेटके सभासदोंमेंसे कुछ लोगोंको चुन कर उनकी एक दूसरी सभा बनायी जाती थी। यह न्यायसभा थी। झगड़ोंका निप-टेरा यही सभा करती थी। इसके सिवा इस सभाको युद्धसे लौटकर आये हुए सेनापतियोंके आचरणकी छानबीन करने-का भी अधिकार था। सेनापतियोंका बर्ताव बुरा पाये जाने पर यह सभा उन्हें सजा भी दे सकती थी। राज्यकार्य चलाने-वाले बड़े लोगोंमें और सिनेट सभामें मतभेद हो जानेपर

लोकसभामें, बहुमतसे निर्णय होता था। इस नगरमें लोकमतका बड़ा प्राबल्य था।

कार्थेजके लोग युद्ध करते थे। परन्तु वे स्वय लड़ना नहीं जानते थे। सेनाकी छावनीको अपेक्षा उन्हें बाजार अधिक प्यारा था। तलवारसे अधिक उनका प्रेम तराजूकी डण्डीपर था। वे अपने लोगोंको लड़नेके लिए कभी नहीं भेजते थे। गाल स्पेन आदि दूसरे लोगोंको वेतन देकर सेनामें नौकर रखते थे। उनकी सेनामें कई जातिके सिपाही थे। एक ग्रन्थकारने लिखा है कि सैनिक मिलकर दङ्गा न करने पाएँ इसीलिए यह योजना की गई थी। जो हो।

अनेक जातिके सिपाही होनेसे कार्थेजकी सेनाको श्रेष्ठत्व प्राप्त न थी। परन्तु उनका जहाजोंका बेड़ा अच्छा था। उनके पास शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित बड़े बड़े जहाज थे। इन जहाजोंके कारण उनका व्यापार सुरक्षित था। गुलाम ही जहाज खेते थे। वे जहाज खेनेका काम सीखे हुए होते थे।

कार्थेजके लोग बाल नामके देवताकी पूजा अर्चना करते थे। वे उस देवताको सूर्यका अवतार मानते थे। नगरमें सङ्कट उपस्थित होनेपर, वे देवताका कोप शान्त करनेके लिए नगरका कोट काले कपड़ेसे ढँक देते थे। नगरके धनीमानी लोगोंके छोटे छोटे बालकोंका बलिदान किया जाता था। ये बालक जिन्दे, उनकी माताओंके सामने जलाये जाते थे, और शर्त यह थी कि उनकी आँखोंमें आँसू न आना चाहिए। छोटे छोटे सङ्कट उपस्थित होनेपर गुलामोंके लड़कोंका बलिदान किया जाता था।

सबसे पहले कार्थेजनिवासी और रोमके लोगोंका सम्बन्ध सिसिली द्वीपमें हुआ। विक्रमसे प्रायः आठ सौ वर्ष पहले

ग्रीक लोग इस टापूमें आकर बसे थे। वे व्यापार कुशल और साहसी थे। ग्रीक लोगोंके सिवा इस टापूके कुछ भागपर कार्थेज निवासियोंका भी राज्य था। ये भी व्यापार कुशल थे। ये सदैव ग्रीक लोगोंकी शक्ति नष्ट करनेका उद्योग करते रहते थे। इसलिए इन दोनों राष्ट्रोंमें सदैव युद्ध होता रहता था। उस द्वीपके मसीना गाँवमें कुछ इटालियन खलासी रहते थे। ग्रीक और कार्थेजनिवासी उन्हें वहाँसे निकाल देनेका उद्योग करने लगे। इसलिए उन्होंने रोमके लोगोंसे सहायता माँगी। रोमके लोग भी तो यही चाहते थे। कारण इटलीके बिलकुल पासवाला मसीना स्थान वे अपने अधीन रखना चाहते थे। खलासियोंकी सहायताके लिए रोमकी सेना भेजी गई। कार्थेज निवासियोंसे रोमका युद्ध हुआ। यही पहला प्युनिक युद्ध था। यह युद्ध बाईस वर्षतक अर्थात् विक्रमके ३२१ वर्ष पहलेसे विक्रमके २६८ वर्ष पहले-तक होता रहा।

इस युद्धके प्रारम्भमें दोनों सेनाओंकी तैयारी बराबर न थी। कार्थेजके लोगोंके पास जहाजी बेड़ा थे। किन्तु रोमके पास एक भी जहाज न था। परन्तु रोम सेनामें इटलीके लोग बहुत थे। वे साहसी और शूर थे। रोमके लोग अपने राज्यके लोगोंसे अच्छी तरह पेश आते थे, इसलिए रोम-पक्षकी जीतके लिए वे लोग जानकी परवाह न कर लड़ते थे। कार्थेजकी सेनामें भिन्न भिन्न जातिके लोग थे। वे एक प्रकारके बेगारी थे। 'कोउ नृप होय हमें का हानी' के न्यायानुसार उन्हें कार्थेजके लोगोंके हार जीतकी कुछ भी पर्वाह न थी। पर्वाह थी केवल अपने वेतनकी। महीना पूरा होते ही वेतन मिल गयी कि बस!

निदान, युद्ध आरम्भ होते ही पहली ही बारमें रोमके लोगोंने मसीना नगरपर अधिकार कर लिया। इसके बाद कार्थेज और ग्रीक लोगोंकी दो टुकड़ियाँ हो गईं। इससे और आसानी हुई, और रोमकी सेनाने अलग अलग दोनोंको लड़कर हरा दिया। ग्रीक लोग तो इतनी बुरी तरह हराए गये कि उनके सैराक्यूजके राजा हीरोको रोम सेनाकी शरणमें ही आना पड़ा। इसके बाद उसने सदैव रोमकी सहायता की। रोमके लोगोंको कार्थेजके लोगोंके सामुद्रिक बेड़ेसे बड़ी तकलीफ होने लगी। रोमके लोगोंको उसके सामने ठहरना कठिन हो गया। तब रोमके लोगोंको विश्वास हो गया कि उनका सामना करनेके लिए जहाजोंका बेड़ा होना आवश्यक है परन्तु जहाज बनानेकी विद्या वे नहीं जानते थे। इसी बीचमें एक कार्थेजका जहाज फूटकर इटलीके किनारे आ लगा। रोमके लोगोंने उसी नमूनेके दूसरे जहाज बनानेका काम शुरू कर दिया। और दो महीनेके अन्दर ही ३३० उत्तम जहाज समुद्रमें छोड़े गये। ये जहाज एक ओर तो तय्यार हो रहे थे और दूसरी ओर उनको खेनेके लिए लोगोंको शिक्षा दी जा रही थी। समुद्र तटके पास पानीमें मचान बाँधकर लोगोंको खेने का काम सिखाया जाता था। इससे जहाज़ तय्यार होते ही उनपर खलासी रखनेमें कठिनाई न उठानी पड़ी। इन जहाजोंमें बहुतसी सेना लेकर रोमके लोग कार्थेजके लोगोंका सामना करनेके लिए उधर चढ़े। परन्तु वे जहाज अच्छे न बने थे और खलासी भी कम प्रवीण थे इसलिए पहली ही बार १७ जहाज शत्रुके हाथ लग गए। परन्तु इसके बाद रोमके लोगोंने एक नवीन युक्ति ढूँढ निकाली, जिससे कार्थेज-के लोगोंकी सामुद्रिक शक्ति घट गई। रोमके लोग अपने

जहाजोंपर इस प्रकार सीढी बाँधते थे कि कार्थेजके लोगोंके जहाजके पास रोमके जहाज़के पहुँचते ही उस सीढीका एक सिरा उनके जहाजपर जा लगता था। रोमके सिपाही उस सीढीपर हो शत्रुके जहाजमें घुस जाते थे और लडकर उसे अपने अधिकारमें कर लेते थे। इस युक्तिकी योजना होनेके बाद सबसे पहला युद्ध सिसिली द्वीपके किनारे मैली स्थान पर हुआ। इस युद्धमें रोमके लोगोंने शत्रुके १४ जहाज डुबा दिये और तीस जहाज अपने अधिकारमें कर लिये। इस युद्धमें कार्थेजकी ओरके ३ हजार सिपाही मारे गये और सात हजार रोमके लोगोंने कैद कर लिए। इस जयसे रोमके लोग गर्वसे फूल गए। उन्होंने कौन्सल मार्कस आटिलस रेगुलस और मानलिस वल्सोको १३० जहाज और एक लाख सेना देकर कार्थेजकी ओर भेजा। वे रास्ते के द्वीप और प्रदेश जीतते जाते थे। अफ्रिकामें भी प्रत्येक युद्धमें उनकी जीत ही हुई। कार्थेजके लोग हतवीर्य हो गये। उन्हें मालूम हो गया कि यदि लडाई इसी तरह जारी रखी गई तो अवश्य ही सर्वनाश हो जायगा। इसलिए उन्होंने रेगुलसके पास सुलहके लिए अपने प्रतिनिधि भेजे, परन्तु रेगुलस गर्वसे अन्धा हो रहा था। उसने प्रतिनिधियोंसे ऐसी ऐसी शर्तें कहीं कि कोई उन्हें स्वीकार भी न करे। उसने बोलते बोलते प्रतिनिधियोंको ताना मारते हुए कहा—"समझदार मनुष्यको चाहिए कि या तो देश जीतता रहे या अपनेसे बलवान् मनुष्यकी अधीनता स्वीकार कर ले।" अन्तमें सुलहकी बातचीत तो बन्द हो गई, और दोनों पक्षोंमें पुन युद्ध ठन गया। इस युद्धमें कार्थेजके लोगोंने जान्थिपस नामके स्पार्टन सरदारसे सहायता ली थी। रोमकी सेना हारने लगी। अन्तमें, एक बडी लडाईमें रोमकी सेना हार गई

ओर रेगुलस शत्रुके यहाँ कैद हो गया। तदनन्तर दोनों ओरसे सुलहकी बातचीत होने लगी। उस समय कार्थेजके लोगोंने रेगुलससे कहा कि,—"हम तुम्हें अपनी छावनीमें जानेकी परवानगी दे सकते हैं। यदि, तुम वहाँ जाकर यह निश्चय कर आओ कि रोमकी सरकार हमारे कैद किये हुए सरदारोंके बदले दूसरे सैनिक लेकर उन्हें छोड दे। और यदि यह शर्त रोमकी सरकारको पसन्द न हो, तो तुम्हें चाहिए कि उसी समय वापस लौट आओ। तुम्हारी ऐसी प्रतिज्ञापर हम तुम्हें जाने दे सकते हैं।" रेगुलस उनको अभिवचन देकर अपने रोम सरकारके दरबारमें जा पहुँचा। परन्तु उसने स्वयं मनमें सोचा कि इस प्रकारका बदला रोमके लिये लाभप्रद न होगा। इसलिए उसने सिनेटको कार्थेजके लोगोंका कहा न माननेके लिए आग्रह किया। सिनेटने उसकी बात मान ली। रेगुलस जानता था कि कार्थेजके लोग उसे निर्दयतासे मार डालेंगे। तथापि, देशके आगे प्राणकी पर्वाह न कर 'प्राण जाइ वरु, वचन न जाई' के न्यायानुसार वह अपनी प्रतिज्ञा स्मरण-कर कार्थेज-सेनाकी छावनीमें वापस लौट गया। अहा! यह कैसा स्वदेश प्रेम है! अपने देशके भलेके लिए रेगुलस ने स्वयं अपना प्राण शत्रुके हवाले कर दिया। रेगुलसके वापस लौट जानेपर कार्थेजके सैनिकोंने उसे बुरी तरह मार डाला।

निदान प्युनिक युद्ध बन्द न हुआ। विक्रमसे २११ वर्ष पहले रोमके जहाज अफ्रिकासे सेना लेकर वापस जा रहे थे। एकाएकी समुद्रमें तूफान उठा और करीब २७५ जहाज समुद्रमें डूब गये। बहुत थोडे मनुष्य जीवित बचे, जो सिसिलीके किनारे जा लगे थे। सैराक्यूजके राजाने उन्हें रोम पहुँचवा दिया। यह समाचार सुनकर सिनेट सभाने

नये जहाज बनवानेका हुक्म दिया। तीन महीनेकी अवधिमें २२० नये जहाज़ बनकर तैयार हो गये। परन्तु शीघ्र ही करीब आधे जहाज फिर तूफानसे समुद्रमें डूब गये। रोमराष्ट्रके जहाजी बेडेकी यह दुर्दशा देखकर कार्थेज निवासियोंका उत्साह पुन बढ़ गया। वे रोमके लोगोंको सिसिलीसे निकाल देनेका यत्न करने लगे। उन्होंने हसड्रुबलको सेना सहित सिसिली भेजा। पानामस नगरके पास लडाई हुई। इस युद्धमें कार्थेज निवासियोंके पास १४० हाथी थे। रोमकी सेना हाथीसे बहुत डरती थी, फिर भी उसने दूरसे हाथियों पर शस्त्र चलाये। शस्त्रोंके आघातसे क्रुद्ध हो वे कार्थेजकी सेनामें इधर उधर भागने लगे। सारी सेना घबराकर भाग चली, जिससे उन्हें पीछे हटना पडा। रोमके लोगोंने पाना मस नगरपर अधिकार कर लिया। इस युद्धमें १०० हाथी रोमके लोगोंके हाथ लगे। वे उन्हें अपने साथ रोम ले गये। इस हारसे कार्थेजके लोग हताश हो गये, उनका उत्साह नष्ट हो गया। किन्तु उनमें हामिलकर नामका एक योद्धा बडा साहसी था। वह शूर और चतुर था। कार्थेजके लोगोंकी शक्ति नष्ट होनेपर भी उसने सोचा कि पिछली शक्तिको प्राप्त करनेके लिए कुछ वर्षोंतक विश्राम करना आवश्यक है। इसलिए बहुतसा कर देकर उसने रोमके लोगोंसे सुलह कर ली। इस सुलहनामेकी शर्तोंके अनुसार कार्थेज निवासियोंको सिसिली-से निकल जाना पडा। यह सन्धि विक्रमसे ~१७ वर्ष पहले हुई थी। हीरोके प्रान्तको छोडकर सब प्रान्त रोमके अधि कारमें आ गये। रोमको युद्ध खर्चके लिए कार्थेजके लोगोंने २२०० इयोइट टालेंट (वहाँ का सिक्का) देना स्वीकार किया था। यह रकम बीस वर्षमें चुका देनेकी शर्त थी। परन्तु

दोनों ही ओरके लोग इस सन्धिको स्थायी रखना नहीं चाहते थे। इसलिए यह सन्धि अधिक दिनोंतक न रह सकी।

इस सुलहके बाद सिसिली द्वीपपर रोमका झण्डा उड़ने लगा। समयपर वेतन न मिलनेके कारण कार्थेजकी सेना बिगड़ गयी। कार्थेजके लोगोंको सङ्कटमें देखकर रोमके लोगों ने कोर्सिका और सार्दीनिया द्वीपोंपर भी अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त रोमके लोग कार्थेज निवासियोंसे तय की हुई रकमसे अधिक कर माँगने लगे। इसी समय रोम के लोगोंने इलिरिया प्रान्त भी जीता। रोम राष्ट्र उस प्रान्त के लोगोंको अपनी प्रजा समझने लगा। वह, राज्यकार्यमें उनकी सलाह न लेता था। वहाँका राज्यकार्य करनेके लिए रोमसे सूबेदार आते थे। उन्हें रोमकी आज्ञामें रहना पड़ता था। रोमके लोग उन्हें अपना सहायक नहीं समझते थे। उन्हें जमीनके लिए रोम सरकारको कर देना पड़ता था।

इसी समय, गाल लोगोंसे जीते हुए प्रान्तमें नवीन लोगोंके बसानेका विचार होने लगा। इससे असन्तुष्ट हो वे रोम राष्ट्रसे लड़नेके लिए तैयार हो गये। परन्तु उन्हें हारना पड़ा। इसके तीन वर्ष बाद आल्प्स और एपिना, इन पर्वतों के बीचके प्रदेशपर भी रोमका राज्य जम गया। वहाँ कई नगर बसाये गये।

हामिलकरको बहुतसा समय मिल गया था। इसलिए रोमसे लड़नेके लिए उसने अपनी सेना तैयार कर ली। हामिलकरकी सरकारने उसे स्पेन भेजा। वहाँसे रवाना होते समय उसने होम किया। उस समय उसका लड़का हानिबल भी पास ही खड़ा था, उसकी उम्र नौ वर्षकी थी। उसने हानिबलको पास बुलाकर पूछा कि—"बेटा, क्या तुम भी

लड़ाईपर चलोगे ?" उसने कहा 'हाँ', तब हामिलकरने उत्तर दिया,—"हाँ तुम मेरे साथ चल सकते हो। परन्तु चलनेके पहले अग्निको साक्षीकर प्रतिज्ञा करो कि तुम आजन्म रोमके लोगोंको अपना शत्रु समझोगे।" उस बालकने प्रतिज्ञा कर ली। और सचमुच इस बालकने बड़े होनेपर अपनी प्रतिज्ञा सच्ची कर दिखाई।

हामिलकर स्पेन गया और टेगस नदीतकका प्रान्त जीत कर वहीं मर गया। उस समय स्पेनमें भिन्न भिन्न जातिके लोग रहते थे वे दरिद्री किन्तु शूर थे। उनसे लड़ने का अवसर आनेके कारण कार्थेजकी सेना युद्धविद्यामें निपुण हो गयी। हामिलकरकी मृत्युके बाद हसड्रुबल सेनापति हुआ। उसने बहुतसा प्रान्त जीतकर कार्थेज निवासियोंके राज्यमें मिला लिया। वह विक्रमसे २७८ वर्ष पहले युद्धमें मारा गया। इसके बाद हानिबल कार्थेजकी सेनाका अधिपति हुआ। उस समय उसकी उम्र २६ वर्षकी थी।

रोम और कार्थेजमें यद्यपि सुलह हो गयी थी तथापि उनके हृदयोंमें वैराग्नि की ज्वाला धधक रही थी। हानिबल स्पेनमें नये कार्थेज नगरमें ठहरा हुआ था। वह शीतकाल बितानेके लिए ही वहाँ विश्राम कर रहा था। रोमके लोग उसकी आँखोंमें खटकते थे। वह अपनी प्रतिज्ञा भूला न था। उसने अपनी सेना खूब तैयार कर रखी थी।

स्पेनके पूर्वी किनारेपर सागटम नामका एक नगर था। यह नगर ग्रीक लोगोंका था। वहाँके लोग कार्थेजके लोगोंसे बहुत डरते थे। इसलिए उन्होंने रोमसे मित्रता कर ली थी। रोमके लोग इसकी सहायता करते थे। कुछ बहाना बनाकर हानिबलने उस नगरपर चढ़ाई कर दी। उस नगरकी दीवारें

बडी मजबूत थीं। इसलिए हानिबलने और कुछ न कर उसपर घेरा डाल दिया। वह आठ महीनेतक घेरा डाले पडा रहा। नगरके लोग घबराये। अन्न सामग्री सब चुक गई। परन्तु जीते जी शत्रुकी शरण न जानेका उन्होंने निश्चय कर लिया था। इसलिए उन्होंने अपनी सब सम्पत्ति जला डाली और स्वय भी जल मरे। तदनन्तर नगर शत्रुके हाथ आया। यह हाल सुनकर रोमके लोगोंने अपना प्रतिनिधि कार्थेज निवासियोंके पास भेजा। वह उस समयकी पद्धतिके अनुसार बडा लबादा पहनकर सभामें गया था। उसने सभामें जाकर कहा—"मैं आपके लिए युद्ध और सुलह दोनों लेकर आया हूँ। जो आपकी इच्छा हो, उसे लीजिए।" बातचीत होनेपर प्रतिनिधिने ही कहा—"अच्छा, तो मैं आपको युद्ध ही देता हूँ।" यह सुन कार्थेजके लोगोंने उत्तर दिया—"बहुत अच्छा! हमें भी वही चाहिए था।" इस प्रकार दूसरा प्युनिक युद्ध शुरू हुआ।

यह खबर सुनते ही हानिबल रोमसेनासे लडनेके लिए रवाना हुआ। वह रोमसेनासे जमीनपर लडना चाहता था; समुद्र पर नहीं। उसकी इच्छा स्वय रोम राज्यमें घुसकर उसे जीतनेकी थी। सोचा था कि रोमके लोगोंका पराभव करनेमें इटलीके गाल आदि राष्ट्र अवश्य उसका साथ देंगे।

हानिबल स्पेन देशमें था। उसे इटली जाना था। उसने पिरिनीज पर्वत और होन नदी पार कर आल्प्स पर्वतके पश्चिमकी ओर वाले गाल लोगोंके प्रदेशमेंसे इटलीमें घुसनेका विचार किया था। परन्तु यह काम बडा कठिन था। पिरिनीज पर्वत पार करनेके लिए मार्ग न था, और बीचमें सघन जगल था। होन नदी बहुत चौडी थी और उसका

प्रवाह भी तेज था। गाल लोग हानिबल को अपने देशमेंसे होकर जाने भी देना न चाहते थे। इसके अतिरिक्त आल्प्स पर्वतको बर्फ़ पडते हुए ठढके समयमें पार करना कठिन था। परन्तु, हानिबल इन सब सकटोंका सामनाकर ससैन्य इटलीमें पहुँच ही गया। किन्तु,रास्तेमें उसके बहुतसे सिपाही मारे पडे।

हानिबलके पास बहुत बडी फौज थी, परन्तु वह सब सेना अपने साथ नहीं ले गया था। कार्थेज और स्पेनकी रक्षाके लिए वह बहुत सी फौज पीछे छोड आया था। वह ६० हजार पैदल १२ हजार सवार और ३७ हाथी लेकर ही इटलीकी ओर बढा था। परन्तु वह सब सेना भी इटली नहीं पहुँच पाई, लोग आधे रास्तेसे लौट गए। बहुतसे ठढ और हवासे बीमार हो मर गए। हानिबल ससैन्य पिरिनीज पर्वत पारकर होन नदीके किनारे जा पहुँचा। नदीके दूसरे किनारेपर गाल लोग उसका मार्ग रोकनेके लिए सेना सहित पडे थे। उसने अपने कुछ लोग नदीके ऊपरकी ओर भेजे। उनको आज्ञा दी गई थी कि वे छिपकर नदी पार करें और उस पार जा आग जलाकर अपने सकुशल पहुँच जानेकी सूचना दें। इसके बाद वे एक दम गाल लोगोंकी सेनापर पीछेकी ओरसे आक्रमण करें। नदीके उस पार पहुँचते ही उन्होंने सूचना दे दी। इशारा पाते ही हानिबलने ससैन्य नावोंमें बैठकर गाल लोगोंपर आक्रमण कर दिया। उसी समय हानिबलकी दूसरी टुकडीने भी पीछेसे उनपर आक्रमण किया। दो सेनाओंके बीचमें घिर जानेसे गाल लोग घबरा गए। हानिबलकी जीत हुई। इटलीमें पहुँचनेतक हानिबलके पास २० हजार पैदल, ६००० सवार और सात हाथी थे।

रोममें चारों ओर हाहाकार मच गया। घर घर रो
पीटना होने लगा। यह देख नगरमें ढिंढोरा पिटवाया ग
कि कोई घरमें या रास्ते पर जोरसे न रोए। मृत मनुष्यों
स्त्री बच्चोंका विलाप सुनकर लोगोंका धैर्य भाग न जा
उनकी वीर-श्री कम न हो, इसलिए यह डौंडी दी गई। इ
ढिंढोरेका सम्बन्ध युद्धसे था। इसलिए अधिकारियोंका उ
पर विशेष लक्ष था। अत लोगोंको यह सूचना मा
करनी पडी।

हरेक लडाईमें हार होनेपर भी रोमका धैर्य कम न हुआ
हानिबलके डरसे धनवानोंमेंसे कुछ लोग रोमसे चले जाने
विचार करने लगे। सिनेटने उनको सजा दी। हानिबल
बहुतसे रोमके सिपाही कैद कर लिये थे। सिनेटने उन
छुडानेसे इन्कार कर दिया। उन कैदियोंके बदले कर माँग
के लिए जब हानिबलने अपना दूत भेजा तो वह नगर
बाहर निकाल दिया गया। और सत्रह वर्षसे अधि
उम्रवाले सब लोगोंको सेनामें भरती होनेकी आज्ञा दे
गई। रोमकी यह नई सेना शीघ्र ही तय्यार हो गई। हानि
बलको विश्वास था कि रोमकी दुर्दशा देखकर आसपास
बहुतसे लोग उससे मिल जायँगे। कापुआ शहर उससे मि
भी गया। इसके अतिरिक्त ग्रीसके मासिडोनिया प्रान्त
राजा पाँचवें फिलिपने भी उसका पक्ष ग्रहण कर लिया
सैराक्यूजका हीरोके बादका राजा भी उसकी सहायता कर
को तय्यार हो गया। किन्तु, रोमके लोगोंने फिलिपके देश
बलवा करा दिया जिससे वह उधर ही लगा रहा। और प
बडी सेना भेजकर सैराक्यूज़ जीत लिया गया। तथा नगर
जलाकर नष्ट कर डाला गया। इसके बाद सारे सिसिली प

पर रोमका झण्डा उडने लगा। इटलीके कुछ लातिन नगरोंने रोमका साथ नहीं छोडा। वे पूर्ववत् रोमके सहायक बने रहे। हानिबल १६ वर्षसे रोम जीतनेकी कोशिश कर रहा था। रोमसे जितनी लडाइयाँ हुई उनमें उसीकी जीत भी हुई थी। परन्तु रोम पक्षके सब नगरोंको जीतनेके लिए बहुत बडी सेनाकी आवश्यकता थी। किन्तु उसके पास सेना कम थी। इसलिए उसने कार्थेजके राज्यसूत्रधारियोंको सेना भेजनेके लिए लिखा था, परन्तु वहाँसे सेना न आई। कारण उन्होंने एक बडी सेना हानिबलके साथ स्पेनमें रोम लोगोंसे लडनेके लिए भेज दी थी। इसके सिवा हानिबलकी शक्तिको बढती हुई देखकर वे डर भी गये थे कि कहीं वह राजा न बन बैठे। उन्होंने हानिबलको लिखा कि तुम्हारे पास जितनी सेना है उसीसे तुम बडी बडी लडाइयाँ जीत चुके हो, तब और सेना भेजनेकी आवश्यकता ही क्या है।

यही हानिबलकी आखिरी जीत थी। इधर सेनाकी प्रतीक्षामें जो हानिबलको कुछ कालतक चुप रहना पडा तो अवकाश पाते ही उधर रोमके लोगोंने पूरी तैयारी कर ली। वे प्रबल होते चले। हानिबलकी शक्ति घट चली। कापुआ नगर हानिबलसे जा मिला था। अत विक्रम से २६८ वर्ष पहले रोमके लोगोंने उसपर चढ़ाई की। हानिबल उसकी रक्षा न कर सका। रोमके लोगोंने कापुआपर अधिकार कर लिया। इसके बाद शीघ्र ही इटलीके दूसरे नगरोंने डरकर हानिबलका साथ छोड दिया। वे पुन रोम निवासियोंसे जा मिले। निदान हानिबलका प्रताप सूर्य धीरे धीरे अस्ताचलकी ओर जाने लगा।

हानिबलका भाई हासड्रुबल स्पेनमें रोम सेनासे लड रहा

था। वह अपने भाईसे मिलनेके लिए इटलीकी ओर बढा। उसने अपने भाईके पास, अपने आनेकी खबर देनेके लिए, एक दूत भेजा। किन्तु रोमकी सेनाने उसे रास्तेमें पकड लिया। दूतकी जबानी सब हाल सुन कर हासड्रुबलका सामना करनेके लिए रोमकी सेना भेजी गयी। युद्धमें हासड्रुबल मारा गया और रोमकी जीत हुई। हासड्रुबलका सिर हानिबलकी सेनामें भेज दिया गया। हानिबलको अपने भाईके इटलीमें आनेकी बात बिलकुल मालूम नहीं थी। भाई का सिर देखते ही वह मूर्च्छित हो गया। कुछ समयके बाद चेत होनेपर उसने रोते हुए कहा—"अभागे कार्थेज, तेरा नसीब फूट गया !!"

आशा अमर है! मृत्यु शय्या पर पडे हुए रोगसे जर्जर वृद्ध मनुष्यको भी जीनेकी आशा लगी रहती है। सब तरह निराश हो जानेपर भी आशा दूर नहीं होती। हानिबलके बहुतसे सहायकोंने उसे छोड दिया था, तथापि इटली जीतने की आशा उसने नही छोड दी थी। रोमनिवासी उसे बहुत तङ्ग करते थे, तो भी वह कार्थेज लौट जाना नहीं चाहता था। इसी समय, सिपिओ रोमकी सेनाका सेनापति बनाया गया। वह शूर था। उसके बापदादे भी रोमकी सेनाके सेनापति रह चुके थे। सिपिओ युद्धकला में बडा कुशल था। वह पहले स्पेन भेजा गया। वहाँ उसने कार्थेजके लोगोंको बहुत तङ्ग किया और विक्रमसे २६३ वर्ष पहले उन्हें स्पेनसे निकाल दिया। इस तरह स्पेनसे यश कमाकर सिपिओ वापस रोम लौट आया। उस समय हानिबल दक्षिण इटलीमें जमा हुआ था। रोमके लोग उसे इटलीसे निकाल देनेकी तदबीर सोचने लगे। सिपिओने रोमके लोगोंको सलाह दी

कि अफ्रिकामें चलकर कार्थेजसे युद्ध किया जाय। वहाँ युद्ध छिड़ते ही हानिवल सहायताके लिए कार्थेज बुला लिया जायगा। सिपिओकी बात सच निकली। सिपिओ शीघ्र ही कौसल बना दिया गया। विक्रमसे २६१ वर्ष पहले सिपिओ अफ्रिकामें आ पहुँचा। और पहले ही युद्धमें उसने कार्थेजकी सेनाके तम्बूमें आग लगवा दी सैनिक घबरा भाग चले। रोमकी सेनाने यह अवसर भी खाली न जाने दिया उन्हें चारों ओरसे घेर कर मारना शुरू किया। कार्थेजके लोग हार गए। निदान सहायताके लिए हानिवल इटलीसे बुला लिया गया। हानिवलके लौट आनेपर विक्रमसे २५६ वर्ष पहले जामा स्थानपर युद्ध हुआ। सिपिओके सवारोंने हानिवलके सवारोंको नष्ट कर डाला। कार्थेजकी सेनाके साथ बहुतसे हाथी थे। रोमके लोगोंने उनपर शस्त्र चलाना शुरु किया। वे क्रुद्ध हो घूमकर कार्थेजकी सेनामें भागने लगे। हजारों सैनिक कुचल गए। इस युद्धमें भी कार्थेजकी सेना हार गई। हानिवलके प्राण बड़ी मुश्किलसे बचे। इस जीतसे रोमके लोगोंको बड़ा आनन्द हुआ। वे सिपिओसे कार्थेजके लोगोंका नाम मिटा देनेके लिए प्रार्थना करने लगे। परन्तु वह उदारमना था। उसने लोगोंको समझाया कि पराजित शत्रु पर दया करनेमें जितना बड़प्पन है, उतना उसके नाश करनेमें नहीं, तदनन्तर उसने कार्थेजसे सुलह कर ली। सुलहकी शर्तें निम्नलिखित थीं—

१ कार्थेजके लोग अफ्रिकाके बाहर राज्य स्थापित न करें।

२ रोमकी सरकारसे अनुमति लिये बिना किसीसे युद्ध न करें।

३ प्रतिवर्ष रोम सरकारको १० हजार टालेंट* देते रहें।

४ दस जहाज छोड़कर शेष सब जहाज रोमकी सरकारके सपुर्द कर दें।

५ अपने सब हाथी रोम सरकारको दे दें।

कार्थेजके लोगोंने ये शर्तें स्वीकार कर लीं। इसके बाद सिपिओ रोम लौट गया। इस प्रकार दूसरे प्युनिक युद्धका अन्त हुआ। इस सन्धिके सम्बन्धमें एक जगह लिखा है कि कार्थेजके लोगोंने और तो सब शर्तें स्वीकार कर लीं, परन्तु कर देनेकी शर्तके स्वीकार करनेमें आनाकानी करने लगे। तब हानिबलने क्रुद्ध हो उनसे कहा,—"रोमके लोगोंने तुमसे शस्त्र छीन लिए, उसका तुम्हें दुःख नहीं! उन्होंने तुम्हारी युद्ध करनेकी स्वतन्त्रता छीन ली, उस बातकी शर्म नहीं!! परन्तु करका नाम सुनकर तुम्हारा जी घुटने लगा!!! धिक्कार है, तुम्हारी इस श्वान वृत्तिको, सहस्रों धिक्कार है!!!"

इसके बाद हानिबल कई वर्षतक जीता रहा। रोमके लोगोंको अब भी वह शत्रु समझता था। अब भी वह उनका नाश करना चाहता था। परन्तु, अब वह कुछ न कर पाता था। उसके सब प्रयत्न निष्फल होते चले। कारण कार्थेजके लोगोंका विश्वास उस परसे उठ गया था। इसलिए शेष आयुष्य बितानेके लिए उसे दूसरोंका आश्रय ढूँढना पड़ा। उसने कई राजाओंसे प्रार्थना की, किन्तु रोम राष्ट्रके डरसे किसीने उसे आश्रय नहीं दिया। अन्तमें बैथिनियाके राजा प्रुशियाजने उसे आश्रय दिया। किन्तु वहाँ जानेपर मालूम हुआ कि वह राजा उसे रोमके लोगोंके सपुर्द करना चाहता है।

* एक टालेंट ४० हजार रुपएका होता है।

इसलिए उसने विक्रमसे २३६ वर्ष पहले, विषपान कर आत्महत्या कर ली। हानिबलके सभावके सम्बन्धमें इतिहास-लेखकोंमें मतभेद है। कविवर लिविने उसके सम्बन्धमें लिखा है कि वह बडा साहसी था। बडे बडे काम करना ही उसे पसन्द था। उसकी शारीरिक और मानसिक शक्ति सर्वश्रेष्ठ थी। वह कभी थकता न था। सर्दी गरमीका उसपर कुछ भी असर न होता था। वह सादा भोजन करता था। पानी ही उसका एक मात्र पेय था। वह दिन रात कर्तव्य पालन करनेमें ही बिताता था। ऐश आराम और एकान्तकी उसे कभी आवश्यकता न हुई। अवकाशके समय वह जमीनपर ही सो जाया करता था। बहुमूल्य पोशाक उसने कभी नहीं पहनी। अपने शस्त्रास्त्र और घोड़ेको ही वह अपना वैभव समझता था। युद्धमें वह सदैव अपनी सेनाके आगे रहता था।

उपर्युक्त विवेचन पढकर हमें अपने पुराणप्रसिद्ध पूर्वजोंका स्मरण हो आता है।

दूसरा प्युनिक युद्ध एक राष्ट्र और एक योद्धामें हुआ था। रोमके लोग लगातार १६ वर्षतक लडते रहे, परन्तु तब भी उन्होंने हिम्मत न छोडी। हानिबल १६ वर्षतक इटलीमें रहा। उसका सामना करनेके लिए काफी सेना रखकर, रोमने स्पेन और अफ्रिकामें भी युद्धार्थ सेना भेजी थी। कार्थेजके लोगोंका हाल निराला था। शत्रुके देशमें पदार्पण करते ही वे हताश हो गये। उनका साहस छूट गया।

दूसरे प्युनिक युद्धका रोम राज्यपर बहुत प्रभाव पडा। भूमध्यसागरके तटके सब राज्योंमें रोम राज्य अत्यन्त शक्तिशाली हो गया। रोमके लोगोंने अपने राज्यके रक्षणार्थ ही ये लडाइयाँ लडी थीं। परन्तु इसमें "एक पन्थ दो काज" वाली

कहावत चरितार्थ हो गयी। इन युद्धोंके कारण रोमकी रक्षा तो हुई ही, पर साथ ही रोमके लोगोंको स्पेन देश भी मिल गया। उनके पास जहाजी बेड़ा बिलकुल न था। परन्तु इस युद्धके कारण रोमके पास उत्तम जहाज़ी बेड़ा हो गया। यह बेड़ा भविष्यत्में रोम राष्ट्रके बहुत काम आया। हानिबलके इटलीसे चले जानेपर उसका साथ देनेवाले लोगोंसे, रोमके लोग बुरी तरह पेश आने लगे। उन लोगोंको रोमनिवासी अपनी प्रजा समझने लगे। लातिन लोगोंको छोड़कर दूसरे सब लोगोंके साथ वे निर्दयताका बर्ताव करने लगे। इस युद्धके कारण रोमके लोगोंमें निर्दयता बढ़ गयी। गाँव देहात की अपेक्षा नगरमें शत्रुसे अधिक रक्षा होती थी। इसलिए किसान लोग नगरोंमें जा बसे। अत खेती बन्द हो गयी। इसका रोम राज्यपर बहुत बुरा असर पड़ा।

इस तरह, दूसरे प्युनिक युद्धसे कार्थेज नगर बहुत शक्तिहीन हो गया। तो भी वहाँके लोग साहसी और उद्योगी थे। करीब ५० वर्षतक उस देशमें शान्ति रही। इस बीचमें उनका व्यापार पुन: चमक उठा। रोमके लोगोंसे यह बात छिपी न थी। परन्तु राज्यकी व्यवस्था करने और अपने व्यवसायमें लगे रहनेके कारण उन्हें उधर ध्यान देनेके लिए कम समय मिलता। तो भी रोमके प्रमुख लोग कार्थेजके लोगोंके बढ़ते हुए प्रभावसे भली भाँति परिचित थे। मार्कस पोर्सिअस केटो नामका रोम सरदार बड़ा शूर और विद्वान् था। कार्थेजके लोगोंकी बढ़ती हुई शक्तिसे वह भली भाँति परिचित था। एक बार सिनेट सभा बैठी थी, उस समय बीचमें उठकर उसने अपने लबादेमेंसे तीन ताजे अंजीर नीचे गिराये और सभाको उद्देश कर कहा,—"ये अंजीर परसों कार्थेज नगरमें

बगीचेमेंसे तोड़े गये थे। इससे सिद्ध होता है कि शत्रु हमसे बहुत दूर नहीं है। सो, अब चुप बैठे रहनेसे काम न चलेगा। कार्थेजका नाश करना ही होगा।" अपने भाषणके अन्तमें भी उसने अपने इस "कार्थेजके नाश" वाले वाक्यपर विशेष जोर दिया। सिनेट सभाके ध्यानमें भी केटोकी बात ठीक जँच गयी। उसने भी सोचा कि शत्रु, रोग और अग्निको प्रबल होने देनेसे लाभ कभी नहीं होता। इसलिए सिनेटने कार्थेजसे युद्ध करनेकी परवानगी देदी। शीघ्र ही फौज भी तैयार कर ली गयी। अब लड़ाई आरम्भ करनेके लिए कारण खोजे जाने लगे। सिनेटने कार्थेजसे ३०० ऊँचे दरजेके आदमी जामिनकी तौरपर माँगे। कार्थेजने आज्ञा पालन की। तो भी रोमकी सेना समुद्र पारकर अफ्रिकामें जा पहुँची। यह देखकर कार्थेजके लोग बड़े भयभीत हुए। उन्होंने अपना दूत रोम सेनापतिके पास भेजा। दूतसे कहा गया कि कार्थेजके लोग अपने शस्त्रास्त्र रोम सेनाके सपुर्द कर दें। बेचारे कार्थेज-निवासियोंने यह शर्त भी स्वीकार कर ली और तदनुसार सब शस्त्रास्त्र रोम-सेनाके सपुर्द कर दिये गये। इस प्रकार कार्थेज लोगोंके निःशस्त्र हो जानेपर रोम सेनापतिने कार्थेज-को मटियामेट करदेनेकी आज्ञा दी। यह बात सुन कार्थेज निवासी एकदम अवाक् हो गये। रोमकी नीचता देखकर वे बड़े क्रुद्ध हुए और प्राण अर्पणकर अपनी रक्षाके लिए तैयार हो गये। उन्होंने मन्दिरोंमें कारखाने खोलकर लाखों नवीन शस्त्र तैयार किये। वहाँकी स्त्रियोंने धनुषकी प्रत्यञ्चा और दूसरे शस्त्रोंके लिए पतली रस्सियाँ बनानेके लिए अपने लम्बे लम्बे बाल तक काट कर दिये। इस प्रकार विक्रमसे २०६ वर्ष पहले तीसरा प्युनिक युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध विक्रम-

से २०३ वर्ष पहलेतक जारी रहा। इस युद्धमें सिपिओ रोमका सेनापति था। यह सिपिओ हानिबल को हरानेवाले सिपिओ-का पोता था। उसने कार्थेज नगरको घेर लिया। युद्ध छिड़ गया। कार्थेजकी सेना जानकी परवाह न कर लड़ने लगी। इस सेनामें सिपाहीगिरी करने वाले कार्थेजनिवासी कम थे। थे, देशभक्त नवयुवक। वे अपने देशके लिए लड़ रहे थे। जीतेजी शत्रुको नगरमें प्रवेश न करने देनेका उन्होंने दृढ़ सङ्कल्प कर लिया था। इसलिए उनकी बराबरी करना रोमके सैनिकोंके लिए कठिन हो गया। परन्तु रोमकी सेना अधिक थी और बाहरके प्रदेशपर रोमका अधिकार था। इसलिए उनका कुछ वश न चला। सिपिओने ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि कार्थेज नगरको अन्न मिलना कठिन हो गया। परन्तु इसपर भी उन्होंने शस्त्र न रखे। अन्तमें, रोम सैनिक चहार-दीवारीपर आक्रमण कर नगरमें घुस गये। भीतरके लोग प्राणोंकी परवाह न कर रोमकी सेनासे लड़ने लगे। यहाँ तक कि रोमके सैनिक बिना युद्ध किये एक घरमें भी प्रवेश नहीं कर पाते थे। अब रोमके सैनिकोंने अपनी निर्दयताकी सीमा दिखा दी। क्या वृद्ध, क्या युवा, क्या स्त्री, क्या बच्चे, जो हाथ लगा, उसे काटना शुरू किया। घर, गली और सड़कें मुर्दोंसे खचाखच भर गये। छ दिनतक कार्थेज नगरमें मार-काट होती रही। सात दिनतक नगर जलता रहा! इस नगरमें सात लाख मनुष्य थे। साढ़े छ. लाख तो रोम सैनिकोंके हाथ मारे गये। शेष मनुष्य उनके हाथ लगे। रोमके लोगोंने उन्हें गुलामकी तरह बेच डाला। इनमेंसे कुछ लोग दाँतोंमें तृण दबाकर रोम सैनिकोंकी शरणमें गये। कार्थेज-सेनाका सरदार हासड्रुबल भी इन्हींमेंसे एक था। उसका यह लज्जा-

स्पद काम उसकी औरतको बड़ा बुरा लगा। वह एक बहुत उत्तम पोशाक पहनकर एक मन्दिरकी अटारीपर चढ़ गयी। रोमके लोगोंने इस मन्दिरमें पहलेसे ही आग लगा दी थी। वह उस मन्दिरके साथ ही जल मरी। उसका यह साहस देख कर स्वयं सिपिओ आश्चर्यचकित हो गया। इस घटनासे उसे जगत्‌की नश्वरताका स्मरण हो आया और उसने अपने पास खड़े हुए लोगोंसे कहा—"कार्थेज सामान्य पराक्रमी नगर नहीं था। उसकी अभी यह अवस्था हो रही है! तब रोमके वैभवकी चिरस्थायिताका क्या भरोसा!" अस्तु, करीब एक हज़ार वर्षसे अपने मानको ऊँचा किये हुए कार्थेज नगरका इस तरह अन्त हो गया। अपने वैभवके ही कारण कार्थेजका नाश हुआ। वैभव प्राप्त होनेसे होना चाहिए था सुख, परन्तु महत्त्वाकांक्षी रोमके लोगोंसे पाला पड़नेके कारण उलटा परिणाम हुआ। महत्त्वाकांक्षासे अन्धे बने हुए व्यक्ति न्याया-न्यायकी कुछ भी परवाह नहीं करते। रोम भी नहीं कर सका। अस्तु।

अब हम यहाँ अन्य प्रदेशोंके सम्बन्धमें भी कुछ लिखेंगे। सिकन्दरकी मृत्युके बाद उसका राज्य छोटे छोटे टुकड़ोंमें बँट गया। हरएक सरदार अपने अपने सूबेके प्रदेशका राजा बन बैठा। ये लोग सदैव आपसमें लड़ा करते थे। इन्हीं प्रान्तोंमेंसे ग्रीसके उत्तरवाला मासिडोनिया प्रान्त भी एक था। वहाँके राजाकी सत्ता सारे ग्रीस देशपर थी। वह राजा बहुत बलवान् था। उसका नाम पाँचवाँ फिलिप था। हानियलकी आखिरी जीतके बाद फिलिपने उससे मित्रता कर ली थी। तभीसे फिलिप और रोमनिवासियोंमें युद्ध शुरू हो गया था। यह युद्ध सिपिओ आफ्रिकानसके कार्थेज

निवासियोंसे लडनेके लिए अफ्रिकामें जानेतक जारी था, परन्तु उसका कुछ भी फल नहीं हुआ। अफ्रिकामें जाकर युद्ध करनेके पहले रोमके लोगोंने फिलिपसे सुलह कर ली थी। इस निश्चयके बाद अफ्रिकामें ज़ामाकी लडाईमें हानिबलकी पूरी हार हो गयी। इसके बाद रोम निवासियोंको कार्थेजके लोगोंका बिलकुल डर न रहा। इसलिए रोमके युद्ध प्रिय लोग लडाई मोल लेनेकी तदबीर करने लगे। उन्होंने राजा फिलिपसे छेडछाड करनी चाही। उन्होंने उससे युद्ध छेडनेके लिए तीन कारण ढूँढ़ निकाले। प्रथम तो उसने हानिबलकी सहायताके लिए सेना भेजी थी। वह सेना जामाकी लडाईमें रोम सेनासे लडी थी। द्वितीय, भूमध्य सागरके पूर्वी भागपर उसने अपना अधिकार जमानेकी कोशिश की थी, जिससे रोमके मित्र रोड्स द्वीपवासियोंको बहुत कष्ट हुआ। तृतीय, फिलिपने सीरियाके राजा आंटिओकससे सुलह कर ली थी। इससे डरकर मिश्रके राजा टालमी एपिफानीजने रोमके लोगोंसे सहायता माँगी थी।

रोमकी प्रजा युद्धसे ऊब उठी थी। उसे अब विश्राम करनेकी जरूरत थी। परन्तु रोमके युद्धप्रिय लोगोंने उन्हें समझाया कि यदि फिलिप अभी अधिकारमें न कर लिया गया तो कुछ समय बाद बलवान् होकर हानिबलकी तरह राज्यको दुःख पहुँचायेगा। इस प्रकार उन्हें समझा-बुझाकर युद्धकी परवानगी ले ली। युद्ध शुरू हो गया।

यह युद्ध कुछ समयतक धीरे धीरे चलता रहा। अन्तमें विक्रमसे २५८ वर्ष पहले फ्लमिनायनस रोमका सेनापति हुआ और इसी समयसे सच्चा युद्ध प्रारम्भ हुआ। फ्लमिनायनस कुलीन और अच्छे स्वभावका मनुष्य था। वह शूर

भी था। सिनोसिफाली स्थानपर उसकी और फिलिपकी मुठभेड़ हो गयी। इससे पहले वहाँ खूब पानी बरस चुका था और कुहरा भी गिर रहा था। दोनों ओरकी सेना शत्रुको पास आया समझ एक एक कदम आगे बढ़ती जा रही थीं। इतनेमें सूर्य निकल आया और कुहरा दूर हो गया। दोनों सेनाएँ बिलकुल पास पास आ गयी थीं। युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह युद्ध तीन दिन तक होता रहा। फिलिपकी हार हुई। इस लड़ाईमें फिलिपके आठ हजार सैनिक मारे गये और पाँच हजार कैद कर लिये गये। अन्तमें विक्रमसे ७५३ वर्ष पहले फिलिप और रोमके लोगोंमें सन्धि हो गयी। फिलिपने अपनी जहाजी सेना रोमके सपुर्द कर दी। ग्रीस देश परसे अपना स्वामित्व उठा लिया और रोमको लड़ाईका खर्च दे दिया।

इस प्रकार सारा ग्रीस देश रोमके हाथ आ गया। वहाँके लोगोंको भय होने लगा कि कहीं रोमकी अधीनता स्वीकार न करनी पड़े। परन्तु रोम निवासियोंने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया। ग्रीस देशमें प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतुमें इस्समियन गेम्स नामक राष्ट्रीय खेल हुआ करते थे। लड़ाईके बाद ये खेल प्रारम्भ हो गये थे। उस समय सिनेट सभाका आज्ञा-पत्र उन्हें सुनाया गया। आज्ञापत्रमें लिखा था—"रोमकी सिनेटने फिलिप राजाको पदाक्रान्त करने पर, उस सिनेट-की ओरसे, फिलिपकी अधीनतामें, कारिंथ, थेसली आदि ग्रीसके सब स्थानोंको पूर्ण स्वतन्त्रता दी है। उन राज्योंमें रोमकी सेना न रखी जायगी, और उनसे कर भी वसूल न किया जायगा।" यह आज्ञापत्र सुनकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ और उनके नेत्रोंमें आनन्दाश्रु भर आये। चारों

ओर रोमका जयजयकार होने लगा। उस रातको वहाँ आये हुए ग्रीक लोगोंने खूब आनन्द मनाया। उन्होंने रोमके लोगोंको अनेक तरहसे अपनी कृतज्ञता दिखायी। हानिबलके समयमें बहुतसे रोमनिवासी ग्रीसमें गुलामोंकी तरह बेचे गये थे। ग्रीक लोगोंने इन गुलामोंको स्वतन्त्र कर दिया। इस प्रकार ग्रीक लोगोंसे धन्यवाद ले फ़्लेमिनायनस रोम लौट गया। लोगोंने उसका अच्छा स्वागत किया। उसके सन्मानार्थ लगातार तीन दिन तक जुलूस निकाले गये थे।

इस प्रकार ग्रीस स्वतन्त्र हो गया। परन्तु यह स्वातन्त्र्य स्वकष्टार्जित था नहीं, अत टिकाऊ न हो सका। क्योंकि अकारण मिली हुई वस्तु विशेषकर राजकीय भिक्षा अधिक समयतक नहीं टिकती। इस नियमके अनुसार ग्रीसकी स्वतन्त्रता शीघ्र ही चली गयी। जिसका वर्णन प्रसगानुसार पाठक आगे देखेंगे।

फिलिपसे सन्धि हो जानेपर रोमको एशियामाइनरके राजा अंटिओकससे लड़ना पड़ा। ग्रीसमें इटोलिया नामक एक प्रान्त है। वहाँके लोगोंने सिनोसिफालीके युद्धमें रोम राष्ट्रको सहायता दी थी किसी कारणसे उनका रोमके लोगोंसे अनबन हो गया। उन्होंने एशियामाइनरके राजासे मैत्री कर ली। और तदनन्तर थेसलीपर चढ़ाई कर दी। अत रोमको भी युद्ध करना पड़ा। इस समय हानिबल अंटिओकसके आश्रयमें था। थर्मापुलीकी घाटीमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें अंटिओकसके ५३ सहस्र सैनिक मारे गये। रोमके केवल ४०० सैनिक मारे गये थे। अंटिओकसकी हार होनेके कारण उसे विक्रमसे २४८ वर्ष पहले, ग्रीस छोड़ भाग जाना पड़ा। तब रोमके लोगोंने एशियामाइनरपर चढ़ाई

की और एशियामाइनरके परग्यामस प्रान्तके राजाको अपने अनुकूल कर अटिओकससे पुन युद्ध किया। यह युद्ध विक्रमसे २४७ वर्ष पहले सिपायलस पर्वतके पास म्याग्नीशिया स्थानपर हुआ था। इस समय लूसियस कार्नीलियस सिपिओ अर्थात् सिपिओ आफ्रिकेनसका भाई, रोमका सेनापति था। इस युद्धमें अटिओकसकी बडी हानि हुई। लाचार, उसने टारस पर्वतके पश्चिमका सब प्रदेश रोमको दे दिया और १५ हजार टालेंट कर देना स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त उसने हानिबलको रोमके सपुर्द करना स्वीकार किया। यह हाल सुनकर हानिबल वहाँसे चल दिया और बिथानियाके राजाके आश्रयमें जा रहा। परन्तु वहाँ भी रोमकी सेना अपना पीछा नहीं छोडती, यह देखकर उसने विषपान कर लिया। यह हाल, हम पहले ही लिख चुके हैं। इस लड़ाईमें सिपिओको बहुत सी लूट मिली। उसने अपने नाम साथ "एशियाटिकस" उपनाम लगाया।

इसके बाद विक्रम से २४६ वर्ष पहले इटोलियन लोगोंसे युद्ध छिडा। रोमके लोगोंसे इन्हें भी हार खानी पडी। सारा देश उजाड दिया गया। हजारों घर जला दिये गये। लाचार, उन्हें रोमकी अधीनता स्वीकार करनी पडी और युद्ध व्ययके लिए ५०० टालेंट देना पडा।

पहले एक जगह लिख आये हैं कि सिनोसिफालीके युद्ध- राजा पाँचवाँ फिलिप बिलकुल हार गया था। तो भी उसकी खुजली मिटी नहीं थी। वह रोमसे लडनेकी तैयारी करने लगा, किन्तु इसी बीच विक्रमसे २३२ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो गयी। उसका लडका पर्सियस लडाईकी तैयारी करता रहा। उसने विक्रमसे २२८ वर्ष पहले रोमसे

और रोमका जयजयकार होने लगा। उस रातको वहाँ आये हुए ग्रीक लोगोंने खूब आनन्द मनाया। उन्होंने रोमके लोगोंको अनेक तरहसे अपनी कृतज्ञता दिखायी। हानिबलके समयमें बहुतसे रोमनिवासी ग्रीसमें गुलामोंकी तरह बेचे गये थे। ग्रीक लोगोंने इन गुलामोंको स्वतन्त्र कर दिया। इस प्रकार ग्रीक लोगोंसे धन्यवाद ले फ्लमिनायनस रोम लौट गया। लोगोंने उसका अच्छा स्वागत किया। उसके सन्मानार्थ लगातार तीन दिन तक जुलूस निकाले गये थे।

इस प्रकार ग्रीस स्वतन्त्र हो गया। परन्तु यह स्वातन्त्र्य स्वकष्टार्जित था नहीं, अत टिकाऊ न हो सका। क्योंकि अकारण मिली हुई वस्तु विशेषकर राजकीय भिक्षा अधिक समयतक नहीं टिकती। इस नियमके अनुसार ग्रीसकी स्वतन्त्रता शीघ्र ही चली गयी। जिसका वर्णन प्रसंगानुसार पाठक आगे देखेंगे।

फिलिपसे सन्धि हो जानेपर रोमको एशियामाइनरके राजा अंटिओकससे लडना पडा। ग्रीसमें इटोलिया नामक एक प्रान्त है। वहाँके लोगोंने सिनोसिफालीके युद्धमें रोम राष्ट्रको सहायता दी थी किसी कारणसे उनका रोमके लोगोंसे अनबन हो गया। उन्होंने एशियामाइनरके राजासे मैत्री कर ली। और तदनन्तर थेसलीपर चढाई कर दी। अत रोमको भी युद्ध करना पडा। इस समय हानिबल अंटिओकसके आश्रयमें था। थर्मापुलीकी घाटीमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें अंटिओकसके ५२ सहस्र सैनिक मारे गये। रोमके केवल ४०० सैनिक मारे गये थे। अंटिओकसकी हार होनेके कारण उसे विक्रमसे २४८ वर्ष पहले, ग्रीस छोड भाग जाना पडा। तब रोमके लोगोंने एशियामाइनरपर चढाई

की और एशियामाइनरके परग्यामस प्रान्तके राजाको अपने अनुकूल कर अटिओकससे पुन युद्ध किया। यह युद्ध विक्रमसे २४७ वर्ष पहले सिपायलस पर्वतके पास म्याग्नीशिया स्थानपर हुआ था। इस समय लूसियस कार्नीलियस सिपिओ अर्थात् सिपिओ आफ्रिकेनसका भाई, रोमका सेनापति था। इस युद्धमें अटिओकसकी बड़ी हानि हुई। लाचार, उसने टारस पर्वतके पश्चिमका सब प्रदेश रोमको दे दिया और १५ हजार टालेंट कर देना स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त उसने हानिबलको रोमके सपुर्द करना स्वीकार किया। यह हाल सुनकर हानिबल वहाँसे चल दिया और बिथानियाके राजाके आश्रयमें जा रहा। परन्तु वहाँ भी रोमकी सेना अपना पीछा नहीं छोड़ती, यह देखकर उसने विष पान कर लिया। यह हाल, हम पहले ही लिख चुके हैं। इस चढ़ाईमें सिपिओको बहुत सी लूट मिली। उसने अपने नाम के साथ "एशियाटिकस" उपनाम लगाया।

इसके बाद विक्रम से २४६ वर्ष पहले इटोलियन लोगोंसे युद्ध छिड़ा। रोमके लोगोंसे इन्हें भी हार खानी पड़ी। सारा प्रदेश उजाड़ दिया गया। हजारों घर जला दिये गये। लाचार, उन्हें रोमकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी और युद्ध व्ययके लिए ५०० टालेंट देना पड़ा।

पहले एक जगह लिख आये हैं कि सिनोसिफालीके युद्धमें राजा पाँचवाँ फिलिप बिलकुल हार गया था। तो भी उसकी खुजली मिटी नहीं थी। वह रोमसे लड़नेकी तैयारी करने लगा, किन्तु इसी बीच विक्रमसे २३२ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो गयी। उसका लड़का पर्सियस लड़ाईकी तैयारी करता रहा। उसने विक्रमसे २२८ वर्ष पहले

युद्ध शुरू किया। यह युद्ध तीन वर्ष तक होता रहा। कभी एक पक्षकी हार होती थी, तो कभी दूसरे की। अन्तमें विक्रम से २२५ वर्ष पहले पिडना स्थानपर युद्ध हुआ। पर्सियसकी हार हुई और वह स्वय रोमके लोगोंके यहाँ कैद हो गया। मासिडोनिया प्रान्त रोम राज्यमें मिला लिया गया। इस प्रकार विक्रमसे २२५ वर्ष पहलेसे रोम साम्राज्यका प्रारम्भ हुआ। उस समयके यूरोपके सुधरे हुए सब राष्ट्र रोमके अधीन थे। मासिडोनिया प्रान्त जीतनेवाले एमिलियस पालसके रोम लौट जानेपर उसके सन्मानार्थ उसका जुलूस निकाला गया। इतिहास लेखक प्लटार्कने उसका अच्छा वर्णन किया है। उसने तीसरे दिनके जुलूसका वर्णन बडी उत्तमतासे किया है। यह वर्णन पढते समय छाती भर आती है और आँखोंसे आँसुओंका मेह बरसने लग जाता है। जुलूसके साथ पर्सियसके बच्चे भी थे। वे एक गाडीमें बिठाये गये। वे दोनों हाथ जोडकर रोमके लोगोंसे दयाके लिए प्रार्थना करते जा रहे थे। उन बच्चोंकी दशा देखकर रोमके दर्शकोंका आनन्द तिरोहित हो गया, उनकी आँखोंमें आँसू भर आये। सचमुच उस समय सुख दु:ख और हर्ष शोकका विलक्षण सम्मेलन था।

रोमने ग्रीसको स्वतन्त्रता दी थी। किन्तु उन्होंने पर्सियसको रोमके लोगोंसे लडते समय बहुत सहायता पहुँचाई थी। इसलिए, सिनेटने कारण जाननेके लिए एक सहस्र ग्रीक लोगोंको रोम बुलाया। इस समय रोमनिवासियोंकी नीचता बहुत बढ़ गयी थी। उन्होंने उनकी बात न सुनकर अपराधीकी तरह सिपाहियोंके सपुर्द कर दिया। पालीबियस नामक इतिहास लेखक भी इन्हीं लोगोंके साथ

परिचय रोमके बडे लोगोंसे था। इसलिए वह कैद नहीं किया गया। वह तीसरे प्युनिक युद्धमें कार्थेजका नाश करनेवाले पब्लियस कार्नीलियस सिपिओका शिक्षक हो गया। शेष सब ग्रीकलोगोंको १७ वर्षतक रोमकी कैदमें रहना पडा। इस अवधिमें प्राय. ७०० ग्रीक मर गये। ग्रीक लोगोंने उन्हें छुडानेके लिए बहुत कोशिश की, किन्तु कुछ भी फल नहीं हुआ। अन्तमें रोमके लोगोंने उन्हें छोड दिया। उन्होंने अपनी दु ख गाथा अपने देशभाइयोंको रो सुनाई। उनके दु खकी कथा सुनकर ग्रीक लोगोंको क्रोध हो आया और वे रोमसे लडनेकी तैयारी करने लगे। रोमने अवश्य बडा अन्याय किया था। परन्तु वे बलवान् थे। अत ग्रीक लोगोंको सोच समझ कर काम करना चाहिए था। किन्तु गुस्सेमें आकर वे रोमसे लडनेको तैयार हो गये जिससे उनकी स्वतन्त्रता नष्ट हो गयी। उन्हें परतन्त्रताकी बेडी पहननी पडी।

इस गुप्त वैराग्निकी ज्वाला धधक उठनेका एक और कारण था। ग्रीक राज्योंने स्व रक्षणार्थ एकियन लीग स्थापित की थी। स्पार्टा और अन्य राज्योंमें झगडा हो गया। उस झगडेको मिटानेके लिए उन लोगोंने रोमसे प्रार्थना की। रोमने स्पार्टाके पक्षमें फैसला सुनाया और कुछ राज्योंको उस लीगसे अलग कर देनेके लिए आज्ञा दी। रोमका कहना था कि आपसी झगडों को मिटानेके लिए ही यह आज्ञा दी गयी थी, परन्तु इस आज्ञाका भीतरी उद्देश्य लीगकी शक्ति घटाना था। रोमका फैसला ग्रीक राज्योंने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने रोमकी आज्ञा अमान्य की। कारिंथमें बलवा हुआ और वहाँके लोग रोम और स्पार्टासे लडनेको तैयार हो गये। रोमकी शक्तिका विचार न कर

युद्धार्थ तैयार हो जाना मूर्खता थी। नीतिमें जो कहा है— "प्रीती, वैर समान सों, करिये नीति विचार" वे भूल गये। अपने बलाबल एव शत्रुकी शक्तिका पूर्ण विचार न कर वे लडनेको तैयार हो गये।

इस युद्धमें सिसिलियस मेटेलस रोमका सेनापति था। इसने ग्रीकमें शिक्षा पायी थी। इसलिए युद्धमें ग्रीक लोगोंपर निर्दयता नहीं करता था। निदान वह ग्रीस देश जल्दी नहीं जीत सका। अत सिनेटने कौसल लूसियस ममियस को भेजा। उसने थोडे ही दिनोंमें ग्रीक लोगोंको हरा दिया। कारिंथ नगरको जला डाला और थीब्स और चालसिस नगरोंको गिराकर मट्टीमें मिला दिया। युद्ध शुरु होनेके पहले कारिंथमें बलवा हुआ था। उस समय बलवा करनेवालोंने रोमके प्रतिनिधिका अपमान किया था। इसलिए हजारों कारिंथियन लोग मारे गये। बहुतसे गुलामकी तरह बेच डाले गये। ममियसने सब राज्योंको नष्ट कर अकाया नाम का रोमके लोगोंका एक प्रान्त बना डाला। विक्रमसे २०२ वर्ष पहले सितम्बर मासमें कारिंथ नगरका नाश किया गया। इससे करीब डेढ महीने पहले अफ्रिकामें कार्थेज नगर मट्टीमें मिला दिया गया था। कारिंथ प्राचीन ग्रीक नगर था। वहाँ अनेकों कलाकौशलके अमूल्य पदार्थ थे। वे सब रोमके लोगोंने लूट लिये। रोम सेनापतिने बहुत सी अमूल्य वस्तुएँ रोम भेज दीं।

इस प्रकार ग्रीस देशकी स्वतन्त्रता नष्ट हो गयी। पहले वह वैभव, कलाकौशल, विद्या आदि गुणोंके कारण ससारमें बहुत प्रख्यात हो गया था। किन्तु अब वह रोम राज्यका एक प्रान्तमात्र था। यद्यपि रोमने ग्रीसका राज्य छीन लिया

था तो भी ग्रीकको विद्या और कलाने उसको अपने वश कर लिया। सच है, "विद्या और कलाकी सब जगह पूछ होती है।" ग्रीक विद्या और कलाकौशलने रोमके लोगोंका मन इतना आकर्षित कर लिया कि रोमके लोगोंको मालूम होने लगा कि कुछ दिन ग्रीसमें विद्याभ्यास किये विना शिक्षा पूरी नहीं होती। निदान बहुतसे रोमके लोग ग्रीसमें जाकर रहने लगे थे।

इस समय स्पेनमें रोमकी सेना स्पेनके मूल निवासियों-से भी लड रही थी। पहले स्पेनपर कार्थेजके लोगोंका अधिकार था। तब उन्होंने रोमके विरुद्ध कार्थेजके लोगोंको सहायता दी थी। परन्तु रोमने कार्थेजको हराकर स्पेनसे निकाल दिया। सारा देश रोमके अधिकारमें आ गया। तब स्पेनके मूलनिवासी रोमसे लडने लगे। रोमनिवासी उन्हें हराकर सारे देशपर अपना आतङ्क जमाना चाहते थे। परन्तु स्पेनको अपने अधिकारमें कर लेनेसे रोमको कुछ भी लाभ न था। कारण वह देश उपजाऊ न था। कहीं कहीं सोने चाँदीकी खानें अवश्य थीं, परन्तु किसी देशसे जो लाभ हो सकता है वैसा उनका महत्त्व न था। यह युद्ध रोमने केवल अपनी युद्ध प्रियताके कारण ही शुरू किया था।

हाँ, प्रत्यक्ष वैसा कोई लाभ न होनेपर भी एक अप्रत्यक्ष लाभ अवश्य हुआ। रोमकी सेनाको उस देशमें उत्तम सैनिक शिक्षा मिली। सैनिक, साहसी और शूर हो गये।

विक्रमसे २५४ वर्ष पहले स्पेनमें बलवा हुआ और पहली ही बार सेनापति सेंप्रोनियस मारा गया। रोमकी सेना स्पेन-के किले जीतने लगी। मूल निवासियोंने बहुत कोशिश की किन्तु कुछ भी लाभ नहीं हुआ। धीरे धीरे रोमके लोग प्रान्त-

पर प्रान्त जीतते गये और अन्तमें विक्रमसे २३५ वर्ष पहले सारा स्पेन देश रोमके लोगोंने अपने अधिकारमें कर लिया।

परन्तु स्पेनके लोग अभी निराश नहीं हुए थे। वे रोमके लोगोंको देशसे निकाल देनेका विचार कर रहे थे। इसी समय उस देशके पश्चिमी किनारेपर रहनेवाले लुसितानी लोगोंमें विरिआथस नामक व्यक्तिका उदय हुआ। उसने सेना इकट्ठीकर रोमके लोगोंसे छेड़छाड़ करनी शुरू कर दी।

वह आठ वर्षतक रोमकी सेनासे लड़ता रहा। कई लड़ाइयोंमें उसने रोम-सेनाको हराया भी। अन्तमें, कौंसल फेबियस म्याग्जिमस सर्विलियनसको विवश हो विरिआथससे सुलह करनी पड़ी और लुसितानी लोग स्वतन्त्र हो गये। तदनन्तर उसके बादके कौंसलने कोशिशकर यह सुलह अस्वीकृत करवा ली। इसके बाद उसने घूस देकर विरिआथसके कुछ मित्रोंको अपनी ओर मिला लिया और उनके द्वारा उसे एक दिन, रातको मरवा डाला। अपने नेताके मारे जानेसे लुसितानी लोगोंकी आशा नष्ट हो गयी, उनका धैर्य जाता रहा। और तब धीरे धीरे सारा प्रदेश रोमके हाथ आ गया।

विरिआथसका उदाहरण देखकर आसपासके लोग भी स्वतन्त्र होनेके लिए उद्योग करने लगे। डूरो नदीके उद्गम स्थानपर न्युमानाशिया नामका एक नगर था। वहाँके लोग कुछ गड़बड़ करने लगे। यह देखकर रोमकी सेनाने उसे घेर लिया। सात वर्षतक रोमकी सेना उसे घेरे पड़ी रही। सिनेटने कई सेनापति भेजे, परन्तु कोई भी नगरपर अधिकार न कर सका। तब सिनेटने कार्थेजका नाश करनेवाले सिपिओको भेजा। वह भी तीन वर्षतक न्युमानाशियाको न

जीत सका। उसने यह नगर तलवारके बलसे नहीं, लोगोंको भूखों मारकर, जीता था। उसने नगरके चारों ओर दो खाइयाँ खोदी थीं। इसके अलावा पासकी नदी भी रोक दी गयी थी। इतना कड़ा बन्दोबस्त होनेपर भी उस नगरके कुछ लोग अपने प्राणोंकी परवाह न कर रोमके लोगोंकी सेनाकी आँखें बचा बाहर निकल गये। उन्होंने आसपासके गाँवोंसे सहायता माँगी, किन्तु सिपिओके डरसे कोई भी सहायता देनेको सम्मत न हुआ। एक गाँवके लोग सहायता करनेको तैयार हो गये। यह खबर पाते ही सिपिओने उस गाँवके ४०० आदमियोंको पकड़ मँगवाया और उनके हाथ पाँव काट डाले। इससे सब लोग डर गये। अन्तमें, निराश हो न्युमानाशियाके लोगोंने सुलहके लिये प्रार्थना की। परन्तु सिपियो सुलह करनेको राजी न हुआ। इससे वे लोग चिढ़ गये और जीतेजी शत्रुके शरण न जानेका उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया। बहुतसे लोग अन्नके बिना मर गये। कइयोंने आत्म हत्या कर ली। शेष लोगोंने रोमकी सेनाके लिए नगरके फाटक खोल दिये। परन्तु सिपिओको निराश होना पड़ा। कारण नगरमें कुछ भी न था। इस जीतसे सारे स्पेन देशपर रोमका झण्डा फहराने लगा।

जिस समय स्पेनमें युद्ध हो रहा था, उसी समय सिसिली-में बलवा हुआ। रोमके लोगोंने विदेशीय राष्ट्रोंको जीतकर कई लोगोंको कैद कर लिया था। ये युद्धमें कैद किये गये लोग गुलामकी तरह बेच डाले गये थे। इन गुलामोंके मालिक बहुत बुरी तरह पेश आते थे। उनसे तङ्ग आकर सिसलीके गुलामोंने बलवा किया। यह बलवा बड़ी मुश्किल-से मिटाया गया। बीस हजार बलवाई मार डाले गये।

सातवाँ परिच्छेद

सत्ताधीश होनेपर रोमके लोगोंकी सामाजिक अवनति, उसके सुधारक यत्न और जुगार्थासे युद्ध आदि

मनुष्य कितना ही समझदार हो, वह कितना ही सावधान रहे, तो भी स्वाभाविक व्यवहारका उसकी मूल प्रकृतिपर अवश्य प्रभाव पड़ता है। वह उसे रोक नहीं सकता। प्रारम्भमें रोमके लोग बहुत गरीब थे। वे परिश्रमी थे। ऐश आराम उन्हें बिलकुल पसन्द न था। अपने राज्यकी वृद्धिके सिवा उन्हें कोई बात नहीं सूझती थी। परन्तु ज्यों ज्यों उनका राज्य बढ़ने लगा, बाहरसे उनके देशमें द्रव्य आने लगा, त्यों त्यों उनकी वृत्ति बदलती गयी। खेतीपर अपना निर्वाह करना उन्हें बुरा मालूम होने लगा। वे धनवान हो गये। वे अपना समय युद्ध और राजकार्यमें खर्च करने लगे। उनमें लोभ बढने लगा। धनके लिए वे अधीर होने लगे। कोई कुछ भी क्यों न कहे, उन्हें उसकी परवाह न थी। उन्हें तो केवल धनसे काम था। जो लोग पहले भेंट तक नहीं लेते थे, वे ही अब हर तरहसे लोगोंसे धन खींचने लगे।

रोमके लोग अब बहुत आरामतलब हो गये थे। ग्रीक लोगोंके सहवाससे उन्होंने उनकी रीतिनीति ग्रहण कर ली। ग्रीक लोग रोमनिवासियोंसे विशेष चतुर थे। उन्होंने कलाकौशलमें खूब तरक्की कर ली थी। और उसी

परिमाणसे उनका विलास भी बढ गया था। रोमके लोग उनका अनुकरण करने लगे। जिससे धीरे धीरे उन्होंने अपने सब अच्छे अच्छे रीति रिवाजोंको छोड दिया और स्वय विलासी बन गये। उन्हें अपने रीति रिवाज खराब और ग्रीक लोगोंके अच्छे मालूम होने लगे। रोमके रईसोंके यहाँ ग्रीक गुलाम थे। वे उनसे ग्रीक-भाषा सीखने लगे। रोमके लोगोंको ग्रीक भाषा इतनी पसन्द आयी कि रोमका इतिहास भी ग्रीक लोगोंसे लिखाया जाने लगा। बहुतसे इतिहास लेखक रोमके रईसोंके यहाँ नौकर थे। इसलिए रोमका इतिहास लिखते समय जहाँ जहाँ अपने मालिकके कुलका सम्बन्ध आया है, उन्होंने अतिशयोक्ति भी की है। रोमके कई एक बडे लोग अपनी वंशावली, ईनियस, हर्क्युलीस आदि ग्रीक देवताओंसे मिलाने लगे। जिस प्रकार आजकल भारतमें अगरेजी सीखे बिना शिक्षा पूरी नहीं होती, उसी प्रकार उस समय रोममें ग्रीक भाषा सीखना, शिक्षाका मुख्य अङ्ग माना जाने लगा। रोमके रईसोंके यहाँ, उनके लडकों को ग्रीक भाषा सिखानेके लिए शिक्षक नौकर थे। ग्रीक विद्याने ही नहीं, ग्रीक स्त्रियोंने भी रोमके लोगोंको अपने वशमें कर लिया था। इससे कुटुम्बमें कलह पैदा होने लगे, इससे गृह सौख्यका भी सर्वनाश हो चला। उसी समय एक पाखण्डी मत भी ग्रीससे रोममें आया। उससे रोममें बहुत अनाचार बढ गया। अन्तमें रोम सरकारको वह मत कडाई से बन्द करदेना पडा। इस प्रकार रोमका नैतिक-ह्रास होने लगा, जिससे, उनका तेज, बल और वैभव धीरे धीरे नष्ट होने लगा।

संस्कृतमें एक कहावत है, "राजा कालस्य कारणम्।"

यह कहावत भारतके लिए तो चरितार्थ होती है। पर रोमके लोगोंके सम्बन्धमें इससे प्रतिकुल प्रकार दृष्टिगोचर हुआ। कारण, ग्रीक लोग राजा न थे। इससे मानना पडता है कि सामान्य व्यवहारमें मनुष्यमें अनुकरण करनेकी प्रवृत्ति होती है, उसमें ऊँच नीचका कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता। परन्तु उस समय रोममें भी दो पक्ष थे, नया और पुराना। नये पक्षका नेता पब्लियस सिपिओ आफ्रिकानस और पुराने पक्षका नेता मार्कस केटो थे।

सिपिओ आफ्रिकानस प्रसिद्ध सेनापति था। उसने अफ्रिकामें हानिबलको हराया था। वह शूर था। उसके पास बहुत बडी सम्पत्ति थी। इससे बहुतसे लोग उसके पक्षमें मिल गये थे। परन्तु वह अभिमानी था। वह अपनेको शूर और अधिक धनवान समझता था। वह सबको तुच्छ दृष्टि-से देखता था। इससे बहुत कम लोग उसे चाहते थे। मार्कस केटो हमेशा उसके विरुद्ध रहता था। केटो उससे शत्रुता भी रखता था। उसने सिपिओ एशियाटिकस (यह आफ्रिकानसका भाई था) पर सरकारी रुपयोंके गबन करनेका मुकदमा चलाया। इससे सिपिओ आफ्रिकानस बडा क्रुद्ध हुआ। उसने न्यायसभामें जाकर इस मुकदमेसे सम्बन्ध रखनेवाले सब कागजात चीर फार डाले। तदनन्तर उसने वहाँके लोगोंसे कहा "जामाके युद्धमें हानिबलको हराये आज पूरे १४ वर्ष हो गये। इसलिए हमें ईश्वरका उपकार मानना चाहिए। अत चलिए मन्दिरमें चल प्रार्थना करें।" उसके साथ सब लोग उठकर चल दिये। न्यायसभामें केवल प्रार्थीगण ही रह गये। इस घटनासे सिपिओ आफ्रिकानसका मन खट्टा हो गया और वह रोम छोडकर दूसरी जगह चला

गया। उसने फिर कभी रोमका नामतक न लिया। उसने अपने मृत्युपत्रमें लिख दिया था कि उसका शव रोम नगरसे बहुत दूर गाडा जाय।

ऊपरके विवेचनसे सिद्ध होता है कि रोमके नामी नामी रईस नियमकी बिलकुल परवाह न करते थे। वे समय आ पडने पर नियमोंको एक ओर रख देते थे। अस्तु।

मार्कस केटो प्राचीन मतवादियोंका नेता था। वह पुरानी लकीरका फकीर था। उसका रहन सहन सादा था। वह अपने लडकोंको स्वय पढाता था। उनके स्वास्थ्यकी ओर उसका विशेष ध्यान रहता था। वह कहा करता था कि रोमके लोग ग्रीक लोगोंके रीति रिवाज और रहन सहन ग्रहण करते जा रहे हैं यह बहुत बुरा है। इससे कभी लाभ न होगा। उसकी बात लोगोंको सच मालूम होती थी, परन्तु उसके अनुकूल आचरण कोई नहीं करता था। ग्रीक विद्यासे उसे बडी घृणा थी। एक बार कुछ ग्रीक वैद्य रोममें जा वैद्यकीका काम करने लगे। केटो, लोगोंको उनसे दवाइयाँ न खरीदनेके लिए आग्रह करने लगा। विक्रमसे २१२ वर्ष पहले डायोजिनीज, क्रिटोलस और कार्निएडीज नामक तीन ग्रीक तत्त्ववेत्ता किसी राजकीय कार्यके लिए रोम गये। उनके व्याख्यान सुननेके लिए सहस्रों लोग जाने लगे। केटोको यह बात बडी बुरी लगी और उसने उद्योग कर उन्हें वहाँसे निकलवा दिया। परन्तु उनके भाषण रोमके तरुण लोगोंके मन आकर्षित कर लिये थे, सो बहुतसे युवक ग्रीसमें जा उनके व्याख्यान सुनने लगे।

इस समय रोमकी स्त्रियोंमें भी शिक्षाका प्रचार बहुत हो गया था। वे राजकीय कार्योंमें मत देनेका अधिकार माँगने

लगीं। बहुतसे लोगोंको यह बात अच्छी मालूम हुई। किन्तु केटो जलने लगा। वह कहा करता था कि स्त्रियोंका राज्य रसोईघरके भीतर ही होता है। उन्हें बाहरके किसी व्यवहार-की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। वह सभामें लोगोंसे कहा करता था कि जो जहाँकी चीज है वह वहीं शोभा पाती है। ये स्त्रियाँ तुम्हारे सिरपर चढ़ती आ रही हैं, उनका निवारण करो। नहीं तो वे तुम्हें तुच्छ समझने लग जायँगी और तब उनका निवारण करना कठिन हो जायगा।

इससे पहले रोमकी स्त्रियाँ गृहकार्यमें ही लगी रहती थीं। कपड़े सीना, पीसना कूटना आदि काममें ही उनका समय व्यतीत होता था। हाँ, भोजन बनानेके लिए नौकर रखे जाते थे, किन्तु गृहिणीको उनपर देखरेख रखनी पड़ती थी। सब गृहकार्य गृहिणीके इच्छानुसार ही होते थे। गृहिणी दूसरोंका काम करती थी। इस कामके बदलेमें मिला हुआ द्रव्य उनका निजका होता था। उसपर अन्य किसीकी सत्ता न रहती थी।

परन्तु कालचक्रकी गतिके साथ साथ सब कुछ बदल गया था। कार्थेज निवासियोंसे युद्ध होने (विक्रम से २७२ वर्ष पहले) के समय रोमके लोग घबरा गये थे। उस समय शत्रुका पराभव करनेके लिए अपनी सम्पत्तिका विनियोग करनेके लिए विक्रम से २७२ वर्ष पहले यह नियम बना दिया गया था कि लोग द्रव्य ऐश आराम और शरीरका शृङ्गार करनेमें व्यय न करें। रोमकी स्त्रियाँ भिन्न भिन्न रङ्गका कपड़ा न पहनें, सवा तोलेसे अधिक सोना अपने पास न रखें और धर्मसम्बन्धी उत्सवके सिवा कभी दो घोड़ेकी गाड़ी में न बैठें। उस समय रोमकी स्त्रियोंको ये नियम बड़े कष्टकर

मालूम हुए, परन्तु प्रसङ्ग वह भयानक था। इसलिए, अपने देशके लिए उन्होंने उसके विरुद्ध एक शब्द भी न निकाला। परन्तु अब वह समय निकल गया था। चारों ओर रोमकी विजय दुन्दुभी बज रही थी। "ऋधि, सिधि सम्पति नदी सुहाई। उमगि रोम अम्बुधि कहँ आई।" इस चौपाईके अनुसार रोममें, दूसरे देशोंसे प्रवाहित हो, सम्पत्ति आ रही थी, तब रोमकी स्त्रियोंको वे नियम दुःसह मालूम होने लगे, और वे उसे रद्द करानेका उद्योग करने लगीं। इस उद्योगकी आवाज सिनेट सभामें भी पहुँचायी गयी। क्योंकि नियम बनाने और उनको रद्द करनेका पूर्ण अधिकार सिनेटको ही था। लसियस वालेरियस नामका सुधारक, नेता बनकर यह कार्य करने लगा। सदैव पिता, पति और भाई की आज्ञा में रहने वाली स्त्रियाँ सिनेटके सभासदोंके घर जा जाकर उन्हें अपने अनुकूल कर लेनेका उद्योग करने लगीं।

अन्तमें, सिनेटमें स्त्रियोंकी प्रार्थनापर विचार होने लगा। प्राथिनी स्त्रियोंका मुख्य प्रतिपक्षी मार्कस केटो था। उसने आवेशपूर्ण भाषण किया। उसने सभासदोंको लक्ष्य कर कहा,— "ये स्त्रियाँ जो तुम्हारे सिरपर चढ़ी जा रही हैं। इसमें तुम्हारा ही दोष है। तुमने इन्हें अपने अधिकारमें नहीं रखा, इससे अब ये मुँहलग होगयी हैं। ये हमारे स्वत्व कुचल रही हैं। न जाने आगे ये और क्या करेंगी। ये उद्धत हो चली है। क्या तुम इन्हें इनके इच्छानुसार बर्ताव करने दोगे ? सँभलो। जरा सोचो ! ये स्त्रियाँ क्या चाहती हैं। यही न, कि ये व्यर्थ व्यय कर सकें, नाटकवालोंकी तरह सजकर बाजारोंमें सेर कर सकें ? यह नियम रद्द होते ही हम पुरुषोंका दिवाला निकल जायगा। इनका खर्च चलाते चलाते हमारे नाकोंदम

लगीं। बहुतसे लोगोंको यह बात अच्छी मालूम हुई। किन्तु केटो जलने लगा। वह कहा करता था कि स्त्रियोंका राज्य रसोईंघरके भीतर ही होता है। उन्हें बाहरके किसी व्यवहार-की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। वह सभामें लोगोंसे कहा करता था कि जो जहाँकी चीज है वह वहीं शोभा पाती है। ये स्त्रियाँ तुम्हारे सिरपर चढती जा रही हैं, उनका निवारण करो। नहीं तो वे तुम्हें तुच्छ समझने लग जायँगी और तब उनका निवारण करना कठिन हो जायगा।

इससे पहले रोमकी स्त्रियाँ गृहकार्यमें ही लगी रहती थीं। कपडे सीना, पीसना कूटना आदि काममें ही उनका समय व्यतीत होता था। हाँ, भोजन बनानेके लिए नौकर रक्खे जाते थे, किन्तु गृहिणीको उनपर देखरेख रखनी पडती थी। सब गृहकार्य गृहिणीके इच्छानुसार ही होते थे। गृहिणी दूसरोंका काम करती थी। इस कामके बदलेमें मिला हुआ द्रव्य उनका निजका होता था। उसपर अन्य किसीकी सत्ता न रहती थी।

परन्तु कालचक्रकी गतिके साथ साथ सब कुछ बदल गया था। कार्थेज निवासियोंसे युद्ध होने (विक्रम से २७२ वर्ष पहले) के समय रोमके लोग घबरा गये थे। उस समय शत्रुका पराभव करनेके लिए अपनी सम्पत्तिका विनियोग करनेके लिए विक्रम से २७२ वर्ष पहले यह नियम बना दिया गया था कि लोग द्रव्य ऐश आराम और शरीरका शृङ्गार करनेमें व्यय न करें। रोमकी स्त्रियाँ भिन्न भिन्न रङ्गका कपडा न पहनें, सवा तोलेसे अधिक सोना अपने पास न रखें और धर्मसम्बन्धी उत्सवके सिवा कभी दो घोडेकी गाडी में न बैठें। उस समय रोमकी स्त्रियोंको ये नियम बडे कष्टकर

गहने कपडे धारण करनेका उन्हें पूर्ण अधिकार है। उन्हें उनका अधिकार देना हमारा कर्तव्य है। उनको इस अधिकारसे वञ्चित रखना सरासर अन्याय है। फिर, पुरुषोंके बन्धनसे भी तो वे मुक्त होना नहीं चाहतीं। स्वेच्छाचारकी उन्हें इच्छा नहीं। वे अपने वैवाहिक बन्धन—प्रेमबन्धन—को तोडना नहीं चाहतीं। केटो महाशयने उनपर वृथा दोष लगाया है। यह उनकी भूल है। रोमकी स्त्रियोंके मनमें स्वप्नमें भी ये नाशक विचार पैदा नहीं हुए। उन्हें पुरुषोंके अधीन ही रहना चाहिए। वे स्वयं भी यही चाहती हैं। पर, पुरुषोंको अपने अधिकार चलाते समय न्यायान्यायका विचार अवश्य कर लेना चाहिए।"

इस प्रकार कई दिनोंतक वादविवाद होता रहा। अन्तमें, स्त्रियोंकी ही जीत हुई। नियम रद्द कर दिये गये। इससे स्त्रियोंको बडा आनन्द हुआ। उन्होंने अपना आनन्द प्रदर्शित करनेके लिए रोममें एक दिन खूब उत्सव मनाया।

रोमके बडे बडे लोगोंकी स्थिति और वृत्तिमें भेद पड गया था। पहले रोमके लोगोंके दो भाग—पात्रिशियन और प्लेबियन थे। परन्तु विक्रमसे ४२२ वर्ष पहले ये भेद मिट गये। दोनोंके समान स्वत्व स्वीकार कर लिये गये थे जिससे वे बराबरीके नातेसे व्यवहार करते थे। किन्तु इस समय रोमके लोगोंमें एक नया भेद पैदा हो गया था जिससे लोगोंको बडा कष्ट होता था। पहले पात्रिशियन लोग प्लेबियन लोगोंको तकलीफ देते थे। परन्तु अब धनवान लोग गरीबोंको तकलीफ देने लगे थे। इस समय पात्रिशियन और प्लेबियनके बदले धनवान (आप्टिमेट) और गरीब (आब्सिक्यूरी) ये दो भेद हो गये थे। धनी वर्गमें कुछ प्लेबियन और कुछ

आ जायगा और तब अन्तमें पछताना पड़ेगा।" केटोका भाषण पूरा होनेपर लूसियस वालेरियस उठा। उसने केटोके भाषणका घोर विरोध करते हुए कहा,—"इससे पहले भी रोम-की स्त्रियोंने सार्वजनिक कामोंमें हस्तक्षेप किया है। उन्होंने कई बार रोमका भला किया है। राम्युलसके समयमें किसने मध्यस्थ हो सबैन लोगोंको युद्धसे पराङ्मुख किया था? कोरिओलेनसकी सेनाको किसने वापस लौटाया था? गाल लोगोंको कर चुकानेके लिए अपने स्वर्णालङ्कार किसने उतार दिये थे? इसी स्त्री समाजने। हमारी स्त्रियाँ कई बार अपनी राष्ट्रभक्ति दिखला चुकी हैं। उन्होंने रोमपर महदुपकार किये हैं। उन्हीं स्त्रियोंकी प्रार्थना पर विचार न करना, उनकी प्रार्थना अस्वीकार करना, हमें शोभा नहीं देता। हम अपने गुलामोंकी प्रर्थनाका भी अनादर नहीं करते, तब हमें अपनी स्त्रियोंकी प्रार्थनाका अनादर क्यों करना चाहिए? वे कोई नयी चीज नहीं माँगती हैं। उनकी माँग अनुचित नहीं है। वे जो नियम रद्द करवाना चाहती हैं, वे हालमें ही बनाये गये हैं। सकटके समयमें वह नियम बनाया गया था। उससे पहले कई शताब्दीतक, उस नियमके रहनेपर भी रोमकी स्त्रियोंने अपना कर्तव्य पालन करनेमें कमी कसर न की। तब उन नियमोंके रद्द हो जानेसे हमें डर क्या है? हम आनन्द में हैं। ईश्वरने हमें सब कुछ दे रखा है। और देखिए, हम स्त्रियोंको तो गहने कपड़े पहननेकी आज्ञा नहीं देते और स्वय मजेमें बहुमूल्य पोशाक पहनकर घूमते हैं। क्या यह न्याय है? स्त्रियोंको गहने कपड़े अधिक प्रिय होते हैं। अपने शरीरको गहने कपड़ोंसे सुसज्जित करनेमें स्त्रियोंको अधिक आनन्द होता है, यह उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

रोप कर सकते, किन्तु ट्रिव्यून लोगोंमें आपसमें मेल न था। सिनेटके सभासद ट्रिव्यून लोगोंको लड़ाकर या अपने पक्षका डिक्टेटर नियत कर अपना कार्य साध लिया करते थे।

इस प्रकार रोमका राज्य सिनेटके हाथमें था। रोमके जीते हुए प्रान्तोंपर राज्य करनेके लिए सूबेदार भेजे जाते थे। ये सूबा भी प्राय सिनेटके सभासद ही रहा करते थे। सूबेदार लोगोंको नियमित वेतन नहीं दिया जाता था। किन्तु वे अपने प्रान्तोंमे बहुत सा रुपया इकट्ठा कर लिया करते थे। इससे लोग सूबा होनेके लिए अधीर रहा करते थे। सूबेदार लोग अपने प्रान्तके लोगोंके सुधारकी ओर बहुत कम ध्यान देते थे। रोमके लोग समझने लगे थे कि दूसरोंपर राज्य करनेके लिए ही हमारा जन्म हुआ है। इसलिए इन सूबेदारोंके अत्याचारकी ओर वे बहुत कम ध्यान देते थे। लोगोंकी धारणा थी कि अत्याचार करनेपर भी अपने अधीनके लोग बलवा करनेका साहस कभी नहीं करेंगे। इस धारणासे सूबेदारोंको उत्तेजना मिलती थी। फिर भी एक बातसे सूबेदार लोग बहुत डरा करते थे। वह यह कि प्रत्येक सूबेदारको रोम वापस आनेपर सिनेट सभामें अपने शासनकी रिपोर्ट पेश करनी पड़ती थी और सिनेटमें मतभेद उत्पन्न हो जानेपर सभासदोंके मत उसके विरुद्ध हो जानेका डर रहता था। इसके अतिरिक्त रोमके लोग घूस, सरकारी रुपयोंकी अधिकता और न्यायभ्रष्टता आदिको सार्वजनिक अपराध समझते थे। इनका न्याय लोकसभामें होता था। अत लोकसभामें दुर्दशा होनेका भय रहता था। इससे सूबेदार लोग सोच समझकर काम करते थे। वे इससे दबते अवश्य थे। किन्तु, लोगोंको दावतें देकर और मनों अनाज रोमके अधिकारियोंमें बिना मूल्य बाँट

पात्रिशियन घराने थे। गरीब दलमें गरीब प्लेबियन घराने और कुछ दरिद्री पात्रिशियन घराने थे। इस प्रकार एक वर्ग बहुत ही धनवान और दूसरा वर्ग बहुत ही दरिद्र होनेसे रोमके प्रजासत्तात्मक राज्यकी जड हिल गयी। पुराने राज्य-कर्त्ताओंने राज्यकार्यमें लोगोंकी सम्मति लेनेका नियम इस-लिए बनाया था कि सरकार, लोगोंको विपत्ति पहुँचानेवाला कोई काम न करे। कोई भी मनुष्य किसी पर अत्याचार न कर सके और लोगोंका हित करनेवाला मनुष्य ही निर्वाचित हो। परन्तु इस नियमका ठीक ठीक पालन होनेके लिए, जन-समूहका सारासार विचार करनेवाला और साधारणत सुखी होना जरूरी है। किन्तु, गरीबीके कारण सारासार विचार करनेकी शक्ति न रखनेवाले जनसमूहसे ऐसे अधिकारका ठीक उपयोग नहीं होता। स्वार्थान्ध धनवानोंके पंजेमें फँस जानेपर ऐसे जनसमूहको बड़े कष्ट भोगने पड़ते हैं। क्योंकि वे स्वार्थ साधु अपना मतलब साध लेते हैं जिससे राज्यको अवश्य धक्का पहुँचता है। इस समय रोममें ऐसा ही हुआ। लोगोंने रोमके गरीब लोगोंको भोज दे दे कर अपनी ओर मिला लिया और उनके मतके बलपर राज्यके उच्च अधिकार प्राप्त कर लिये। इससे गरीब लोग सिनेटमें प्रवेश नहीं पा सकते थे।

पहले कौंसल ही राज्यकार्य चलाता था। सिनेट उसे सहायता देती थी। परन्तु इस समय सिनेटके हाथमें ही सब राज्यका भार था। कौंसलको सिनेटकी आज्ञा पालन करनी पड़ती थी। सिनेटके अधिकार अनियन्त्रित थे। राज्यव्यवस्था जमाखर्च देखना, विदेशोंसे युद्ध या सुलह करना आदि काम सिनेट सभा ही करती थी। ट्रिब्यून सिनेटके कामोंमें हस्त-

लेप कर सकते, किन्तु ट्रिब्यून लोगोंमें आपसमें मेल न था। सिनेटके सभासद ट्रिब्यून लोगोंको लड़ाकर या अपने पक्षका डिक्टेटर नियत कर अपना कार्य साध लिया करते थे।

इस प्रकार रोमका राज्य सिनेटके हाथमें था। रोमके जीते हुए प्रान्तोंपर राज्य करनेके लिए सूबेदार भेजे जाते थे। ये सूबा भी प्राय सिनेटके सभासद ही रहा करते थे। सूबेदार लोगोंको नियमित वेतन नहीं दिया जाता था। किन्तु वे अपने प्रान्तोंमें बहुत सा रुपया इकट्ठा कर लिया करते थे। इससे लोग सूबा होनेके लिए अधीर रहा करते थे। सूबेदार लोग अपने प्रान्तके लोगोंके सुधारकी ओर बहुत कम ध्यान देते थे। रोमके लोग समझने लगे थे कि दूसरोंपर राज्य करनेके लिए ही हमारा जन्म हुआ है। इसलिए इन सूबेदारोंके अत्याचार-की ओर वे बहुत कम ध्यान देते थे। लोगोंकी धारणा थी कि अत्याचार करनेपर भी अपने अधीनके लोग बलवा करनेका साहस कभी नहीं करेंगे। इस धारणासे सूबेदारोंको उत्तेजना मिलती थी। फिर भी एक बातसे सूबेदार लोग बहुत डरा करते थे। वह यह कि प्रत्येक सूबेदारको रोम वापस आनेपर सिनेट सभामें अपने शासनकी रिपोर्ट पेश करनी पड़ती थी और सिनेटमें मतभेद उत्पन्न हो जानेपर सभासदों-के मत उसके विरुद्ध हो जानेका डर रहता था। इसके अति-रिक्त रोमके लोग घूस, सरकारी रुपयोंकी अधिकता और न्यायभ्रष्टता आदिको सार्वजनिक अपराध समझते थे। इनका न्याय लोकसभामें होता था। अत लोकसभामें दुर्दशा होने-का भय रहता था। इससे सूबेदार लोग सोच समझकर काम करते थे। वे इससे दबते अवश्य थे। किन्तु, लोगोंको दावतें देकर और मनों अनाज रोमके अधिकारियोंमें बिना मूल्य बाँट

कर वे उन्हें अपनी ओर मिला लेते थे। नाटक, मल्लयुद्ध आदि तमाशे दिखाकर उनको प्रसन्न रखते थे। इस प्रकार बिना मूल्य अनाज मिलने और खेल तमाशोंमें लगे रहनेसे रोमके लोग आलसी हो गये थे। उनका वह तेज अब विलीन हो गया था।

सारांश यह कि, सारे इटली देशकी ऐसी ही दुर्दशा हो गयी थी। हानिबलकी चढाइयोंसे लोग हैरान हो गये थे। तिस-पर भी हानिबलका साथ देनेवाले लोगोंकी रोमके लोगोंने बडी दुर्दशा की, जिससे वे बेचारे बहुत ही कष्ट पाने लगे। उनमेंसे बहुतसे लोग रोम नगरमें जा बसे। पहले इट्रुरिया आदि रोमके आसपासके प्रान्त अच्छी दशामें थे। परन्तु रोमके लोगोंने उनका नाश कर डाला था। वहाँकी जमीन रोमके बडे बडे लोगोंमें बाँट दी गयी थी। वे लोग गुलामोंसे खेती करवाते थे। परन्तु कुछ दिनके बाद, इस काममें शिथिलता होने लगी, क्योंकि गुलामोंसे खेतीकाकाम अच्छी तरह होता नहीं था। निदान बाहरी प्रदेशोंसे रोममें बहुतसा अनाज आने लगा। इससे उन बडे लोगोंने जमीन जोतना बन्द कर दिया, और इटलीकी बहुतसी जमीन परती रह गयी। खेतीका काम बन्द हो जानेपर गुलाम, घरका दूसरा काम काज करनेमें लगा दिये गये।

राष्ट्रके विपत्ति-ग्रस्त होनेपर भी, उसके सपूत अपने कर्तव्य पालनमें कभी नहीं चूकते। अपने काममें सफल होनेपर भी उनकी कीर्त्ति इतिहासमें अमर रहती है। बाहरके प्रान्त और सारे इटली देशकी प्रजाकी दुर्दशा देखकर रोम नगरके ग्रॅाकचि उपनामवाले दो भाइयोंको बहुत कष्ट होने लगा। और वे सुधारके लिए उद्योग करने ...

टायबीरियस सेम्प्रोनियस और ...

लडके थे। टायवीरियस प्रेवियन था। भिन्न भिन्न देशोंमें पराक्रम कर उसने बहुत कीर्ति सम्पादन की थी। वह अपने स्वातन्त्र्यके लिए विशेष प्रसिद्ध था। वह दो बार कौंसल और एक बार सेन्सोर हो चुका। कार्नीलिया, हानिबलका नाश करनेवाले सिपिओ आफ्रिकेनसकी लडकी थी। जब लोगोंने सिपिओके भाईपर मुकदमा चलाया था तब टायवीरियसने, निरपेक्ष बुद्धिसे उसका पक्ष लिया था। उसके इस उपकारको स्मरणकर और उसकी सच्ची योग्यता जानकर सिपिओने उसे अपनी लडकी ब्याह दी थी। उसको तीन बच्चे हुए थे। टायबीरियस और केयस नामके दो लडके और कार्नीलिया नामकी एक लडकी। इनका पिता इनकी बाल्यावस्थामें ही मर गया था। इनकी माताने पुनर्विवाह न कर अपना समय बालकोंको उत्तम शिक्षा देनेमें बिताया। अलङ्कार धारण न करनेका नियम रद्द हो जानेपर कुछ स्त्रियाँ उसके पास जाकर उसे अपने आभूषण दिखलाने लगीं। तब उसने अपने दोनों पुत्रोंको दिखाकर कहा कि यही मेरे सच्चे और बहुमूल्य आभूषण हैं।

टायबीरियस, केयससे नौ वर्ष बडा था। अत पहले उसीने सार्वजनिक कामोंमें प्रसिद्धि पायी। वह अपने बहनोई सिपिओ आफ्रिकेनसके साथ कार्थेजकी अन्तिम चढाईमें था। बाद स्पेनमें भी इसने युद्ध किये थे। स्पेन जाते समय, रास्तेमें लोगोंकी दुर्दशा देखकर उसका हृदय भर आया। और इसीसे उसके मनमें रोमकी राज्य पद्धतिमें सुधार करनेकी प्रेरणा उत्पन्न हुई। उसे मालूम हो गया था कि इटलीकी बहुतसी जमीन परती पडी थी। थोडीसी जमीनपर युद्धमें दूसरे देशोंसे कैदकर लाये हुए लोगों द्वारा खेती करायी जाती है,

कर वे उन्हें अपनी ओर मिला लेते थे। नाटक, मल्लयुद्ध आदि तमाशे दिखाकर उनको प्रसन्न रखते थे। इस प्रकार बिना मूल्य अनाज मिलने और खेल तमाशोंमें लगे रहनेसे रोमके लोग आलसी हो गये थे। उनका वह तेज अब विलीन हो गया था।

सारांश यह कि, सारे इटली देशकी ऐसी ही दुर्दशा हो गयी थी। हानिबलकी चढाइयोंसे लोग हैरान हो गये थे। तिस-पर भी हानिबलका साथ देनेवाले लोगोंकी रोमके लोगोंने बडी दुर्दशा की, जिससे वे बेचारे बहुत ही कष्ट पाने लगे। उनमेंसे बहुतसे लोग रोम नगरमे जा बसे। पहले इट्रुरिया आदि रोमके आसपासके प्रान्त अच्छी दशामें थे। परन्तु रोमके लोगोंने उनका नाश कर डाला था। वहाँकी जमीन रोमके बडे बडे लोगोंमें बाँट दी गयी थी। वे लोग गुलामोंसे खेती करवाते थे। परन्तु कुछ दिनके बाद, इस काममें शिथिलता होने लगी, क्योंकि गुलामोंसे खेतीकाकाम अच्छी तरह होता नहीं था। निदान बाहरी प्रदेशोंसे रोममें बहुतसा अनाज आने लगा। इससे उन बडे लोगोंने जमीन जोतना बन्द कर दिया, और इटलीकी बहुतसी जमीन परती रह गयी। खेतीका काम बन्द हो जानेपर गुलाम, घरका दूसरा काम काज करनेमें लगा दिये गये।

राष्ट्रके विपत्ति-ग्रस्त होनेपर भी, उसके सपूत अपने कर्तव्य पालनमें कभी नहीं चूकते। अपने काममें सफल होनेपर भी उनकी कीर्त्ति इतिहासमें अमर रहती है। बाहरके प्रान्त और सारे इटली देशकी प्रजाकी दुर्दशा देखकर रोम नगरके ग्रयाक्चि उपनामवाले दो भाइयोंको बहुत कष्ट होने लगा। और वे सुधारके लिए उद्योग करने लगे। ये दोनों टायबीरियस सेम्प्रोनियस ग्रयाक्चस और कार्नीलियाके

लडके थे। टायबीरियस प्रेवियन था। भिन्न भिन्न देशोंमें पराक्रम कर उसने बहुत कीर्त्ति सम्पादन की थी। वह अपने स्वातन्त्र्यके लिए विशेष प्रसिद्ध था। वह दो बार कौंसल और एक बार सेन्सोर हो चुका। कार्नीलिया, हानिबलका नाश करनेवाले सिपिओ आफ्रिकेनसकी लडकी थी। जब लोगोंने सिपिओके भाईपर मुकदमा चलाया था तब टायबीरियसने, निरपेक्ष बुद्धिसे उसका पक्ष लिया था। उसके इस उपकारको स्मरणकर और उसकी सच्ची योग्यता जानकर सिपिओने उसे अपनी लडकी ब्याह दी थी। उसको तीन बच्चे हुए थे। टायबीरियस और केयस नामके दो लडके और कार्नीलिया नामकी एक लडकी। इनका पिता इनकी बाल्यावस्थामें ही मर गया था। इनकी माताने पुनर्विवाह न कर अपना समय बालकोंको उत्तम शिक्षा देनेमें विताया। अलङ्कार धारण न करनेका नियम रद्द हो जानेपर कुछ स्त्रियाँ उसके पास जाकर उसे अपने आभूषण दिखलाने लगीं। तब उसने अपने दोनों पुत्रोंको दिखाकर कहा कि यही मेरे बच्चे और बहुमूल्य आभूषण हे।

टायबीरियस, केयससे नौ वर्ष बडा था। अत पहले उसीने सार्वजनिक कामोंमें प्रसिद्धि पायी। वह अपने बहनोई सिपिओ आफ्रिकेनसके साथ कार्थेजकी अन्तिम चढ़ाईमें था। बाद स्पेनमें भी इसने युद्ध किये थे। स्पेन जाते समय, रास्ते में लोगोंकी दुर्दशा देखकर उसका हृदय भर आया। और इसीसे उसके मनमें रोमकी राज्य पद्धतिमें सुधार करनेकी प्रेरणा उत्पन्न हुई। उसे मालूम हो गया था कि इटलीकी बहुतसी जमीन परती पडी थी। थोडीसी जमीनपर युद्धमें दूसरे देशोंसे कैदकर लाये हुए लोगों द्वारा खेती करायी जाती है,

रोमके गरीब लोगोंको काम न मिलनेके कारण फाके करने पड रहे हैं। इसके अतिरिक्त रोमके धनवान लोगोंने इटली की बहुतसी सरकारी जमीन दबा ली है। रोमका राज्य चढानेके लिए, अपने प्राणोंकी परवाह न कर लडनेवाले रोमके गरीब लोगोंको एक इंच जमीन भी नहीं दी गयी है। स्पेनमें अपनी धवल कीर्त्ति-ध्वजा फहराकर वह रोम लौट आया। सिनेटने उसके शौर्यकी वडी प्रशंसा की। स्पेनसे लौट आने पर वह गरीब लोगोंका कष्ट निवारण करनेका उपाय सोचने लगा। इस समय रोम राज्यकी जमीन दो भागोंमें बँटी थी। थोडी जमीन तो बडे बडे लोगोंकी थी और शेष उन्हें खेती करनेके लिए दे दी गयी थी। यह जमीन इस शर्तपर दी गयी थी कि आवश्यकता पडनेपर वापस दे दी जाय और कोई भी मनुष्य ३०० एकडसे ज्यादा जमीन न रखे। यह नियम विक्रमसे ४२३ वर्ष पहले बना था। यह नियम मुख्यकर सरकारी जमीनके लिए ही बनाया गया था। परन्तु लोगोंने इस नियमकी कोई परवाह न की थी। यह नियम स्वीकार हुए २२५ वर्ष हो गये थे। सैकडों लोग शताब्दियोंसे सरकारी जमीनका उपभोग कर रहे थे और वे अब उसे अपनी ही मिलकियत समझते थे। टायबीरियसने सोचा कि लिसिनियन विधान काममें लाये बिना रोमके ग़रीब लोगोंकी स्थिति न सुधरेगी। अतः अपना कार्य पूरा करनेके लिए वह उसी क्रमसे उद्योग करने लगा।

टायबीरियस ने निरपेक्ष बुद्धिसे इस काममें हाथ डाला था। यदि उसने रोमकी तत्कालीन स्थितिका निरीक्षण किया होता, तो उसे मालूम हो जाता कि उसका प्रयत्न निष्फल होगा। लिसिनियन विधानको काममें लानेसे रोमके सब बडे

लोगोंको अपनी अपनी जमीन छोड देनी पडती। किन्तु वे चुपचाप जमीन छोड देनेके लिए कब तय्यार होते। इसके अतिरिक्त कई पीढ़ियोंसे यह जमीन उनके अधिकारमें होनेसे, उनसे जमीन छीन लेना सरासर अन्याय था। इसके अतिरिक्त जमीन बाँट देनेसे ही तो गरीब लोगोंकी दरिद्रता नष्ट हो न जाती। उस समय, बिना दाम खर्च किये दावतें खा खाकर रोमके नीचे दर्जेके लोग आलसी भी हो गये थे। अत: उनका आलस मिटाना पहला काम था। वे लोग व्यापारसे घृणा करने लगे थे। उनकी इस घृणाको समूल नष्ट कर उन्हें व्यापारमें लगाना दूसरा आवश्यक काम था। राज्यके सब ऊँचे ऊँचे पदोंपर धनी लोग ही नियुक्त थे। उन पदों पर साधारण रोमके लोगोंको नियुक्त करानेका यत्न किया जाना तीसरा काम था। परन्तु ये बातें टायबीरियसके ध्यानमें नहीं आयी थीं। उसकी समझसे लिसिनियन विधान ही एक मात्र साधन था। अत उसी नियमपर अमल करानेके साधनोंपर वह विचार करने लगा।

अपने कामको पूरा करनेके लिए ट्रिब्यून होना आवश्यक समझकर वह ट्रिब्यूनका अधिकार पानेके लिए कोशिश करने लगा। उसका जन्म सेबियन वशमें हुआ था, अत ट्रिब्यूनका पद पानेका उसे हक था। इसके सिवा किसी भी एक ट्रिब्यूनको सिनेटमें पेश किये हुए प्रस्तावोंको अस्वीकार करवानेका अधिकार था। ट्रिब्यूनसे लडाई झगडा करनेवालेको दण्ड दिया जाता था। टायबीरियसको बडे ही लोगोंसे लडना था। इसलिए यह अधिकार पाना आवश्यक मालूम हुआ।

टायबीरियस ट्रिब्यून बननेके लिए उद्योग करने लगा। यह पढ़ा लिखा और वक्ता भी अच्छा था। लोगोंके मन

आकर्षित करनेकी विद्या उसे अच्छी तरह याद थी। रोमके लोग उसे दिलसे चाहते थे। एक बार उसने एक भाषण दिया। उसका सारांश यह था कि—"हिंसक पशु जङ्गलों और पहाड़ों मे रहते हैं। वे वहाँ सुखपूर्वक निवास कर सकते हैं। परन्तु रोमके लिए अपने प्राणोंकी परवाह न कर शत्रुसे लडनेवाले रोमके लोग इस रोममें सुखपूर्वक निवास नहीं कर सकते। पवन और प्रकाशके सिवा आज उनके पास कुछ नहीं। वे अपने बच्चोंतकका पालन-पोषण नहीं कर सकते। उनके स्त्री-बच्चोंके शरीर पर काफी कपडे भी नहीं मिलते। उनके बाल बच्चे दाने दानेको मुहताज हो रहे हैं। ऐसी दुःखमय स्थिति में, अपने देश, अपने धर्म और अपने लोगोंके सरक्षणार्थ उन्हें युद्ध करनेके लिए ले जाना क्या अन्याय नहीं है? क्योंकि, जिस देशमें उनका घर नहीं, जिस देशमें उनका हितचिन्तक नहीं और जिस देशमें वे सुखपूर्वक अपना जीवन नहीं बिता सकते उस देशके लिए उनसे लडनेको कहना, अन्याय, घोर अन्याय है। आज रोममें कोई भी ऐसा साधन मौजूद नहीं है, जिसके कारण वे रोमसे प्रेम कर सकें, उसे वे अपना देश समझें और उसकी रक्षाके लिए वे तनमनसे युद्ध करनेको तय्यार हों। रोमके धनी लोगोंके सुख और ऐश आरामके लिए इन गरीब बिचारोंको अपने प्राण जोखिममें डालने पडते हैं। युद्धमें जाते समय हम उन्हें ससारके मालिक कहते हैं। परन्तु वास्तवमें, रोमकी एक मुट्ठी भर धूल पर भी उनका अधिकार नहीं।" इस प्रकार जब लोगोंने उसके मनकी थाह पाली उन्हें उसके विचार मालूम हो गये, तब वह विक्रमसे १९० वर्ष पहले ट्रिब्यून चुना गया।

टायबीरिसने ट्रिब्यून होने पर लिसिनियन विधानमें

कुछ रद्दबदल किये और तब उसे अमलमें लानेके लिए प्रस्ताव सहित लोक-सभामें पेश किया। नियमके अनुसार टायबीरियसका यह प्रस्ताव ठीक था। परन्तु लोक सभामें यह प्रस्ताव उपस्थित होते ही घर घरमें इसकी चर्चा होने लगी। धनवान लोगोंमें हलचल सी मच गयी। वे टायबीरियसको अपना शत्रु समझने लगे और उसका यत्न निष्फल करनेके लिए जीतोड़ उद्योग करने लगे। उन्होंने खुल्लमखुल्ला वादविवाद कर टायबीरियसको हराना चाहा, परन्तु कुछ भी फल न हुआ। तब उन्होंने दूसरी युक्ति लगायी। टायबीरियसका साथी एक और ट्रिब्यून था। उसका नाम आक्टेवियस था। धनी लोगोंने उसे अपनी ओर मिलाकर टायबीरियसके प्रस्तावके विरुद्ध मत देनेको प्रस्तुत कर लिया। आक्टेवियसने टायबीरियसका घोर विरोध किया। इससे टायबीरियस चिढ़ गया और उसने प्लेबियन लोगोंके सबकी सभा द्वारा उसे ट्रिब्यून पदसे अलग करा दिया। इससे झगड़ा और भी बढ़ गया, यहाँतक कि मारपीट तक नौबत आ पहुँची। परन्तु आक्टेवियसके पक्षके लोगोंकी एक न चली और लिसिनियन विधान अमलमें लानेकी तजवीज करनेके लिए तीन सभासदोंकी एक कमेटी बनायी गयी। इस कमेटीमें टायबीरियस, उसका छोटा भाई केयस और श्वसुर आपियस क्लाडियस थे।

उस विधानको अमलमें लाते समय कमेटीके सामने सङ्कटोंका पहाड़ सा खड़ा हो गया। धनी लोग तो उनके काममें बाधा पहुँचाते ही थे, परन्तु इसके सिवा एक और बड़ा सङ्कट रास्ता रोके खड़ा था। लोगोंसे जमीनके लेनेके बाद उन्हें इस क्षतिके बदलेमें कुछ मूल्य देनेका नियम था। ये

आकर्षित करनेकी विद्या उसे अच्छी तरह याद थी। रोमके लोग उसे दिलसे चाहते थे। एक बार उसने एक भाषण दिया। उसका सारांश यह था कि—"हिंसक पशु जङ्गलों और पहाड़ों में रहते हैं। वे वहाँ सुखपूर्वक निवास कर सकते हैं। परन्तु रोमके लिए अपने प्राणोंकी परवाह न कर शत्रुसे लडनेवाले रोमके लोग इस रोममें सुखपूर्वक निवास नहीं कर सकते। पवन और प्रकाशके सिवा आज उनके पास कुछ नहीं। वे अपने बच्चोंतकका पालन पोषण नहीं कर सकते। उनके स्त्री-बच्चोंके शरीर पर काफी कपडे भी नहीं मिलते। उनके बाल बच्चे दाने दानेको मुहताज हो रहे हैं। ऐसी दु:खमय स्थिति में, अपने देश, अपने धर्म और अपने लोगोंके संरक्षणार्थ उन्हें युद्ध करनेके लिए ले जाना क्या अन्याय नहीं है? क्योंकि, जिस देशमें उनका घर नहीं, जिस देशमें उनका हितचिन्तक नहीं और जिस देशमें वे सुखपूर्वक अपना जीवन नहीं बिता सकते, उस देशके लिए उनसे लडनेको कहना, अन्याय, घोर अन्याय है! आज रोममें कोई भी ऐसा साधन मौजूद नहीं है, जिसके कारण वे रोमसे प्रेम कर सकें, उसे वे अपना देश समझें और उसकी रक्षाके लिए वे तनमनसे युद्ध करनेको तय्यार हों। रोमके धनी लोगोंके सुख और ऐश आरामके लिए इन गरीब विचारोंको अपने प्राण जोखिममें डालने पडते हैं। युद्धमें जाते समय हम उन्हें संसारके मालिक कहते हैं। परन्तु वास्तवमें, रोमकी एक मुट्ठी भर धूल पर भी उनका अधिकार नहीं।" इस प्रकार, जब लोगोंने उसके मनकी थाह पाली, उन्हें उसके विचार मालूम हो गये, तब वह विक्रमसे ११० वर्ष पहले ट्रिब्यून चुना गया।

टायबीरिसने ट्रिब्यून होने पर लिसिनियन विधानमें

कुछ रद्दबदल किये और तब उसे अमलमें लानेके लिए प्रस्ताव सहित लोक-सभामें पेश किया। नियमके अनुसार टायबीरियसका यह प्रस्ताव ठीक था। परन्तु लोक-सभामें यह प्रस्ताव उपस्थित होते ही घर घरमें इसकी चर्चा होने लगी। धनवान लोगोंमें हलचल सी मच गयी। वे टायबीरियसको अपना शत्रु समझने लगे और उसका यत्न निष्फल करनेके लिए जीतोड़ उद्योग करने लगे। उन्होंने खुल्लमखुल्ला वादविवाद कर टायबीरियसको हराना चाहा, परन्तु कुछ भी फल न हुआ। तब उन्होंने दूसरी युक्ति लगायी। टायबीरियसका साथी एक और ट्रिब्यून था। उसका नाम आक्टेवियस था। धनी लोगोंने उसे अपनी ओर मिलाकर टायबीरियसके प्रस्तावके विरुद्ध मत देनेको प्रस्तुत कर लिया। आक्टेवियसने टायबीरियसका घोर विरोध किया। इससे टायबीरियस चिढ़ गया और उसने प्लेबियन लोगोंके सबकी सभा द्वारा उसे ट्रिब्यून पदसे अलग करा दिया। इससे झगड़ा और भी बढ़ गया, यहाँतक कि मारपीट तक नौबत आ पहुँची। परन्तु आक्टेवियसके पक्षके लोगोंकी एक न चली और लिसिनियन विधान अमलमें लानेकी तजवीज करनेके लिए तीन सभासदोंकी एक कमेटी बनायी गयी। इस कमेटीमें टायबीरियस, उसका छोटा भाई केयस और श्वसुर आपियस क्लाडियस थे।

उस विधानको अमलमें लाते समय कमेटीके सामने सङ्कटोंका पहाड़ सा खड़ा हो गया। धनी लोग तो उनके काममें बाधा पहुँचाते ही थे, परन्तु इसके सिवा एक और बड़ा सङ्कट रास्ता रोके खड़ा था। लोगोंसे जमीनके लेनेके बाद उन्हें इस क्षतिके बदलेमें कुछ मूल्य देनेका नियम था। ये

आकर्षित करनेकी विद्या उसे अच्छी तरह याद थी। रोमके लोग उसे दिलसे चाहते थे। एक बार उसने एक भाषण दिया। उसका सारांश यह था कि—"हिंसक पशु जङ्गलों और पहाड़ों में रहते हैं। वे वहाँ सुखपूर्वक निवास कर सकते हैं। परन्तु रोमके लिए अपने प्राणोंकी परवाह न कर शत्रुसे लड़नेवाले रोमके लोग इस रोममें सुखपूर्वक निवास नहीं कर सकते। पवन और प्रकाशके सिवा आज उनके पास कुछ नहीं। वे अपने बच्चोंतकका पालन-पोषण नहीं कर सकते। उनके स्त्री-बच्चोंके शरीर पर काफी कपड़े भी नहीं मिलते। उनके बाल बच्चे दाने दानेको मुहताज हो रहे हैं। ऐसी दुःखमय स्थिति में, अपने देश, अपने धर्म और अपने लोगोंके संरक्षणार्थ उन्हें युद्ध करनेके लिए ले जाना क्या अन्याय नहीं है? क्योंकि, जिस देशमें उनका घर नहीं, जिस देशमें उनका हितचिन्तक नहीं और जिस देशमें वे सुखपूर्वक अपना जीवन नहीं बिता सकते, उस देशके लिए उनसे लड़नेको कहना, अन्याय, घोर अन्याय है! आज रोममें कोई भी ऐसा साधन मौजूद नहीं है, जिसके कारण वे रोमसे प्रेम कर सकें, उसे वे अपना देश समझें और उसकी रक्षाके लिए वे तनमनसे युद्ध करनेको तय्यार हों। रोमके धनी लोगोंके सुख और ऐश आरामके लिए इन गरीब बिचारोंको अपने प्राण जोखिममें डालने पड़ते हैं। युद्धमें जाते समय हम उन्हें संसारके मालिक कहते हैं। परन्तु वास्तवमें, रोमकी एक मुट्ठी भर धूल पर भी उनका अधिकार नहीं।" इस प्रकार जब लोगोंने उसके मनकी थाह पाली उन्हें उसके विचार मालूम हो गये, तब वह विक्रमसे १८० वर्ष पहले ट्रिब्यून चुना गया।

टायबीरिसने ट्रिब्यून होने पर लिसिनियन विधानमें

कुछ रद्दबदल किये और तब उसे अमलमें लानेके लिए प्रस्ताव सहित लोक-सभामें पेश किया। नियमके अनुसार टायबीरियसका यह प्रस्ताव ठीक था। परन्तु लोक-सभामें यह प्रस्ताव उपस्थित होते ही घर घरमें इसकी चर्चा होने लगी। धनवान लोगोंमें हलचल सी मच गयी। वे टायबीरियसको अपना शत्रु समझने लगे और उसका यत्न निष्फल करनेके लिए जीतोड़ उद्योग करने लगे। उन्होंने खुल्लमखुल्ला वादविवाद कर टायबीरियसको हराना चाहा, परन्तु कुछ भी फल न हुआ। तब उन्होंने दूसरी युक्ति लगायी। टायबीरियसका साथी एक और ट्रिब्यून था। उसका नाम आक्टेवियस था। धनी लोगोंने उसे अपनी ओर मिलाकर टायबीरियसके प्रस्तावके विरुद्ध मत देनेको प्रस्तुत कर लिया। आक्टेवियसने टायबीरियसका घोर विरोध किया। इससे टायबीरियस चिढ़ गया और उसने प्लेबियन लोगोंके सघकी सभा द्वारा उसे ट्रिब्यून पदसे अलग करा दिया। इससे झगड़ा और भी बढ गया, यहाँतक कि मारपीट तक नौबत आ पहुँची। परन्तु आक्टेवियसके पक्षके लोगोंकी एक न चली और लिसिनियन विधान अमलमें लानेकी तजवीज करनेके लिए तीन सभासदोंकी एक कमेटी बनायी गयी। इस कमेटीमें टायबीरियस, उसका छोटा भाई केयस और श्वसुर आपियस क्लाडियस थे।

उस विधानको अमलमें लाते समय कमेटीके सामने सङ्कटोंका पहाड़ सा खड़ा हो गया। धनी लोग तो उनके काममें बाधा पहुँचाते ही थे, परन्तु इसके सिवा एक और बड़ा सङ्कट रास्ता रोके खड़ा था। लोगोंसे जमीनके लेनेके बाद उन्हें इस क्षतिके बदलेमें कुछ मूल्य देनेका नियम था। ये

नियम बहुत ही खराब और पेंचीले थे। इससे इस विधानको अमलमें लानेमें विलम्ब होने लगा। धनी लोगोंने यह अवसर हाथसे जाने नहीं दिया। उन्होंने रोमनिवासियोंके हृदयपर यह बात अङ्कित कर दी कि इस तरह लोगोंको वशीभूत कर टायबीरियस राजा होना चाहता है। यह बात मालूम होतेही टायबीरियस अपने पक्षके लोगोंका मन अपनी ओर अधिक आकर्षित करनेका यत्न करने लगा। इसी समयपर गामसके राजा अटालसकी मृत्यु हो गयी। उसने अपने मृत्यु पत्रमें अपना राज्य रोम नगरको अर्पण कर दिया था। उस राजाके खजानेमें बड़ा धन था। टायबीरियसने यह धन गरीब लोगोंमें बाँट दिया। परन्तु टायबीरियसका यह काम नियमके विरुद्ध था। यद्यपि ट्रिब्यून और प्लेबियन लोगोंके सङ्घकी सभाने भी यह धन गरीब लोगोंमें बाँट देनेकी परवानगी देदी थी तो भी सिनेटसे अनुमति लेना आवश्यक था। किन्तु टायबीरियसने सिनेटसे स्वीकृति न लेकर ही वह धन बाँट दिया था। उसका यह काम नियमविरुद्ध था। बात यह थी कि टायबीरियसके हृदयमें स्वपक्षाभिमान और गरीब रोमके लोगोंके हितकी इच्छा इतनी प्रबल हो रही थी कि अपना उद्देश पूरा करनेके लिए वह किसी कामके करनेमें विशेष आगा पीछा न करता था।

निदान टायबीरियस और धनीदलमें कलह शुरू हो गया किन्तु इससे कुछ हुआ हवाया नहीं। अन्तमें टायबीरियसकी ट्रिब्यूनके अधिकारकी अवधि पूरी हो गयी। वह पुन अपनेको ट्रिब्यून चुनवानेके लिए उद्योग करने लगा। किन्तु उसके प्रतिपक्षी उसके चुनावमें बाधा डालनेका प्रयत्न करने लगे। चुनावके समय टायबीरियसके पक्षके बहुतसे लोग

अनुदारता दिखायी कि न्युमेशिया नगरके लोगोंको विवश हो आत्महत्या करनी पड़ी।

इधर रोममें तो धनी और गरीबोंमें यह युद्ध छिड़ा हुआ था और उधर इटलीके लोग और ही कुछ विचार कर रहे थे। वे रोमसे असन्तुष्ट हो गये थे। क्योंकि रोम ही राज्यकी व्यवस्था करता था, इटलीके दूसरे राष्ट्र उसे कर देते थे। उन्हें युद्धके समय सिपाही और धनसे रोमकी सहायता करनी पड़ती थी। इससे रोमनगरको छोड़ कर इटलीके अन्य नगरोंके सामन्त लोग रोमनिवासियोंसे नफरत करने लगे थे। वे चाहते थे कि राज-काजमें उनकी भी सलाह ली जाया करे। रोमके लोगोंने युद्धमें पकड़े हुए कैदियोंको गुलाम बनाया था। परन्तु बाद बहुतसे गुलाम छोड़ दिये गये थे। इन गुलामोंको रोमके लोगोंके अधिकार मिल गये थे। इस बातसे इटलीके दूसरे लोग बड़े नाराज हुये। इनको तो रोमराज्यके काममें मत देनेका पूरा अधिकार था, परन्तु इटलीके बड़े बड़े लोग इस अधिकारसे वञ्चित रखे गये थे। यह बात उन लोगोंको बड़ी खटकती थी। वे इस अत्याचारको दूर करानेका यत्न करने लगे। उन्होंने लिविओ एमिलिआनसको अपना नेता बनाया था। उसके मारे जानेकी खबर पाकर वे लोग एक दम निराश हो गये। उनमें परपर्ना नामक एक मनुष्य था। उस समय रोममें यह नियम था कि अच्छे काम करनेवालोंको विशेष अधिकार दिये जाते थे। तदनुसार अपने नगरमें अच्छे काम करनेके कारण उसे लातिन अधिकार मिल गया था। इसके अधिक महत्वपूर्ण काम कर उसने रोमन स्वत्व भी प्राप्त और वह शीघ्र ही कौंसल हो गया। परन्तु वह रोमं

करनेके लिए बनाई हुई कमेटीके सभासद बना दिये गये। परन्तु इस कमेटीसे कुछ भी काम न हो सका, क्योंकि धनवान लोग पद पद पर टटा बखेडा करने लगे। अन्तमें उन्हें यह कार्य छोड देना पडा।

जिस समय ऊपर लिखी हुई घटनाएँ हो रही थीं उसी समय टायबीरियसका साला सिपिओ एमिलिआनस न्युमेशिया नगरका नाशकर स्पेनसे रोम लौट आया। उसने आप्टिमेट लोगोंका पक्ष ले टायबीरियसका घोर विरोध किया। यह सदैव ही इस विषय पर खूब वाद विवाद किया करता था। एक दिन सबेरे वह अपने विस्तरपर मरा पाया गया। उस रातको सोनेके पहले उसकी प्रकृति ठीक थी। उसे दूसरे दिन व्याख्यान देना था। भाषण लिखनेके लिए वह अपने सोनेके कमरेमें दावात कलम ले गया था उसकी हत्या करनेवालेका पता लगाना कठिन हो गया। तथापि कुछ बडे बडे लोगोंपर सन्देह पैदा हो गया था। किन्तु इतने बडे आदमीका खून हो जानेपर भी सिनेटने खूनीका पता लगानेका यत्न न किया। यह पुरुष एक विचित्र प्राणी था। उसके विचार कैसे भी क्यों न रहे हों, पर रोमके लिए—रोमके लोगोंके हितके लिए—वह अपना कर्तव्य पालन करते समय अपने विचारोंको एक ओर रख देता था। यही रोमवालोंका वास्तविक गुण था। वह ग्रीक विद्याका प्रेमी था, कार्थेजका नाश करना वह नहीं चाहता था। किन्तु जब उस काम पर वह नियुक्त कर दिया गया तो उसने अपना कर्तव्य उसी रीतिसे पालन किया। रोमके उद्देश्यके अनुसार उसने कार्थेजको मिट्टीमें मिलाकर छोडा। शान्त स्वभाव तथा उदार होते हुए भी उसने इतनी

अनुदारता दिखायी कि न्युमेशिया नगरके लोगोंको विवश हो आत्महत्या करनी पडी।

इधर रोममें तो धनी और गरीबोंमें यह युद्ध छिडा हुआ था और उधर इटलीके लोग और ही कुछ विचार कर रहे थे। वे रोमसे असन्तुष्ट हो गये थे। क्योंकि रोम ही राज्यकी व्यवस्था करता था, इटलीके दूसरे राष्ट्र उसे कर देते थे। उन्हें युद्धके समय सिपाही और धनसे रोमकी सहायता करनी पडती थी। इससे रोमनगरको छोड कर इटलीके अन्य नगरोंके सामन्त लोग रोमनिवासियोंसे नफरत करने लगे थे। वे चाहते थे कि राज काजमें उनकी भी सलाह ली जाया करे। रोमके लोगोंने युद्धमें पकडे हुए कैदियोंको गुलाम बनाया था। परन्तु बाद बहुतसे गुलाम छोड दिये गये थे। इन गुलामोंको रोमके लोगोंके अधिकार मिल गये थे। इस बातसे इटलीके दूसरे लोग बडे नाराज हुये। इनको तो रोमराज्यके काममें मत देनेका पूरा अधिकार था, परन्तु इटलीके बडे बडे लोग इस अधिकारसे वञ्चित रखे गये थे। यह बात उन लोगोंको बडी खटकती थी। वे इस अत्याचारको दूर करानेका यत्न करने लगे। उन्होंने सिपिओ एमिलिआनसको अपना नेता बनाया था। उसके मारे जानेकी खबर पाकर वे लोग एक दम निराश हो गये। उनमें परपर्ना नामक एक मनुष्य था। उस समय रोममें यह नियम था कि अच्छे काम करनेवालोंको विशेष अधिकार दिये जाते थे। तदनुसार अपने नगरमें अच्छे काम करनेके कारण उसे लातिन अधिकार मिल गया था। इसके बाद अधिक महत्वपूर्ण काम कर उसने रोमन सत्त्व भी प्राप्त कर लिए और वह शीघ्र ही कासल हो गया। परन्तु वह रोमें

नगरका निवासी न था, इसलिए सिनेटके सभासद उससे भीतर ही भीतर द्वेष रखने लगे। उधर इटलीके अन्य प्रदेशोंके लोग रोमकी सत्ता कम करना चाहथे थे। सिपिओकी मृत्युके बाद अनुकूल अवसर पाकर सिनेटके सभासदोंने परपर्नाको रोमसे निकाल दिया।

इससे रोमके सिनेट और रोमके बाहरके इटलीके बड़े बड़े लोगोंमें झगडा शुरू हो गया। रोमनगरके बहुतसे लोग सिनेटके प्रतिकूल थे। यह झगडा शुरू होते ही वे इटलीके लोगोंसे मिल गये और मिलकर रोम नगरमें रोमके लोगों और रोमके बाहरके लोगोंको राजकीय अधिकार दिलानेका उद्योग करने लगे। इस काममें टायबीरियसका छोटा भाई केयसग्रयाक्वस उनका नेता था। यह एक प्रसिद्ध व्याख्यानदाता था। उसका भाषण बड़ा ओजस्वी और प्रभावशाली होता था। श्रोतागण उसके भाषणसे मोहित हो जाते थे। यह एक साधारण व्यक्ति था। उसकी महत्वाकांक्षा बहुत बढी हुई थी। टायबीरियसने केवल रोमके गरीब लोगोंकी स्थिति सुधारनेका यत्न किया था, किन्तु केयसका उद्देश रोमके सारे राज्य-पद्धतिका रुख बदल डालनेका था। उसकी माता कार्नीलियाने राजनैतिक झझटोंमें न पडनेके लिए उसे बहुत समझाया। परन्तु वह अपनी बातपर दृढ़ रहा।

इटलीके पक्षका अगुआ बनते ही फुल्वियस भी उससे आ मिला। कुछ दिन बाद फुल्वियस कौंसल हो गया। कौंसल होते ही उसने सिनेट सभामें इटलीके लोगोंको रोमके अधिकार दिलानेके लिए प्रस्ताव उपस्थित किया। सिनेटको यह बात न रुची। उसने फुल्वियसको अन्य स्थान पर युद्ध करनेके लिए भेज दिया, और केयसको सर्डीनिया द्वीप-

का अधिकारी बनाकर उधर रवाना कर दिया। इस प्रकार अपने नेताओंके रोमसे चले जानेके कारण इटलीके लोग कुछ निराश हो गये और अन्तमें ऊबकर फ्रेजेली नामक एक छोटेसे राज्यने रोमसे युद्ध शुरू कर दिया। रोमके लोग भी यही चाहते थे। उन्होंने बलवा शान्त कर डाला। बलवाइयोंको इतनी कडी सजा दी कि ३० वर्ष तक इटलीके लोगोंने रोमन अधिकार माँगनेका नाम तक न लिया।

सिनेटने केयसपर फ्रेजेली प्रान्तके लोगोंको उभाडनेका दोष लगाया। परन्तु अपराध साबित न होनेसे वह छूट गया और सिनेटका प्रयत्न निष्फल हुआ। केयसके लिए इसका परिणाम अच्छा ही हुआ। लोगोंने उसे ट्रिब्यून चुना और लोग उससे अपने भाईका अनुकरण करनेके लिए आग्रह करने लगे। निदान उसने जमीनके विधानमें कुछ परिवर्तन करानेका उद्योग किया, परन्तु उसे सफलता न हुई। आखिर उसने गरीब लोगोंको बिना मूल्य अन्न बाँटनेकी पद्धति शुरू की। उसने ऐश आरामकी चीजोंपर नवीन कर लगाये और इस प्रकार इकट्ठे हुए द्रव्यसे अन्न खरीदकर गरीब लोगोंमें बाँट देनेका नियम बनाया। सिपाहियोंको सरकारसे कपडे देनेका नियम बनाया। रोमके गरीब लोगोंके लिए भिन्न भिन्न स्थानोंमें उपनिवेश बसाये। सडक, पुल आदि सार्वजनिक काम शुरू कर बहुतसे गरीब लोगोंके उदर-पूर्तिका साधन खडा कर दिया।

आजतक सिनेटके सभासद ही न्यायाधीश बनाये जाते थे। उसने यह नियम बनाया कि नट्स नामके जातिके बडे बडे लोग भी न्यायाधीश बनाये जायँ। नट्स लोग नीच पंक्तिके थे। ब्याजपर रुपये देना, रेहन रखना आदि धन्धा करते थे।

नगरका निवासी न था, इसलिए सिनेटके सभासद उससे भीतर ही भीतर द्वेष रखने लगे। उधर इटलीके अन्य प्रदेशोंके लोग रोमकी सत्ता कम करना चाहते थे। सिपिओकी मृत्युके बाद अनुकूल अवसर पाकर सिनेटके सभासदोंने परपर्नाको रोमसे निकाल दिया।

इससे रोमके सिनेट और रोमके बाहरके इटलीके बड़े बड़े लोगोंमें झगडा शुरू हो गया। रोमनगरके बहुतसे लोग सिनेटके प्रतिकूल थे। यह झगडा शुरू होते ही वे इटलीके लोगोंसे मिल गये और मिलकर रोम नगरमें रोमके लोगों और रोमके बाहरके लोगोंको राजकीय अधिकार दिलानेका उद्योग करने लगे। इस काममें टायबीरियसका छोटा भाई केयसग्रयाक्चस उनका नेता था। यह एक प्रसिद्ध व्याख्यानदाता था। उसका भाषण बड़ा ओजस्वी और प्रभावशाली होता था। श्रोतागण उसके भाषणसे मोहित हो जाते थे। वह एक साधारण व्यक्ति था। उसकी महत्वाकांक्षा बहुत बढ़ी हुई थी। टायबीरियसने केवल रोमके ग़रीब लोगोंकी स्थिति सुधारनेका यत्न किया था, किन्तु केयसका उद्देश रोमके सारे राज्य-पद्धतिका रुख बदल डालनेका था। उसकी माता कार्नीलियाने राजनैतिक झंझटोंमें न पड़नेके लिए उसे बहुत समझाया। परन्तु वह अपनी बातपर दृढ़ रहा।

इटलीके पक्षका अगुआ बनते ही फुल्वियस भी उससे आ मिला। कुछ दिन बाद फुल्वियस कौंसल हो गया। कौंसल होते ही उसने सिनेट सभामें इटलीके लोगोंको रोमके अधिकार दिलानेके लिए प्रस्ताव उपस्थित किया। सिनेटको यह बात न रुची। उसने फुल्वियसको अन्य स्थान पर युद्ध करनेके लिए भेज दिया और केयसको सर्डीनिया द्वीप-

का अधिकारी बनाकर उधर रवाना कर दिया। इस प्रकार अपने नेताओंके रोमसे चले जानेके कारण इटलीके लोग कुछ निराश हो गये और अन्तमें ऊबकर फ्रेजेल्ली नामक एक छोटेसे राज्यने रोमसे युद्ध शुरू कर दिया। रोमके लोग भी यही चाहते थे। उन्होंने बलवा शान्त कर डाला। बलवाइयोंको इतनी कड़ी सजा दी कि ३० वर्ष तक इटलीके लोगोंने रोमन अधिकार माँगनेका नाम तक न लिया।

सिनेटने केयसपर फ्रेजेल्ली प्रान्तके लोगोंको उभाड़नेका दोष लगाया। परन्तु अपराध साबित न होनेसे वह छूट गया और सिनेटका प्रयत्न निष्फल हुआ। केयसके लिए इसका परिणाम अच्छा ही हुआ। लोगोंने उसे ट्रिब्यून चुना और लोग उससे अपने भाईका अनुकरण करनेके लिए आग्रह करने लगे। निदान उसने जमीनके विधानमें कुछ परिवर्तन करानेका उद्योग किया, परन्तु उसे सफलता न हुई। आखिर उसने गरीब लोगोंको बिना मूल्य अन्न बाँटनेकी पद्धति शुरू की। उसने ऐश आरामकी चीजोंपर नवीन कर लगाये और इस प्रकार इकट्ठे हुए द्रव्यसे अन्न खरीदकर गरीब लोगोंमें बाँट देनेका नियम बनाया। सिपाहियोंको सरकारसे कपड़े देनेका नियम बनाया। रोमके गरीब लोगोंके लिए भिन्न भिन्न स्थानोंमें उपनिवेश बसाये। सड़क, पुल आदि सार्वजनिक काम शुरू कर बहुतसे गरीब लोगोंके उदर पूर्तिका साधन खड़ा कर दिया।

आजतक सिनेटके सभासद ही न्यायाधीश बनाये जाते थे। उसने यह नियम बनाया कि नट्स नामके जातिके बड़े बड़े लोग भी न्यायाधीश बनाये जायँ। नट्स लोग नीच पंक्तिके थे। ब्याजपर रुपये देना, रेहन रखना आदि धन्धा करते थे।

किन्तु इस रद्दबदलसे कोई विशेष लाभ न हुआ। क्योंकि जिस प्रकार सिनेटके समासद् पक्षपात करते थे उसी प्रकार नट्स लोग भी अपने जातिका पक्षपात करते थे। इसके अतिरिक्त वे घूस लेकर ही न्याय किया करते थे। परन्तु बड़े बड़े लोगोंके नट्स लोगोंके लोकपक्षके अनुकूल हो जानेसे उस पक्षकी शक्ति कुछ बढ़ गयी।

केयसने यह सब काम किये सही, परन्तु रोमके बाहरके लोगोंको राजकीय विषयोंमें मत देनेका अधिकार दिलानेका उद्देश्य सिद्ध न हुआ। केयसने अनेकों लोकहितकारी काम करके साधारण जनसमूहको अपनी ओर कर लिया था। परन्तु रोमके बाहरके लोगोंको राजकीय अधिकार देनेसे वहाँके बड़े बड़े लोगोंके महत्त्व घट जानेका भय था। अत वे केयसके काममें विघ्न डालने लगे। वे केयसको शत्रु समझने लगे। उसके नाशका उपाय सोचने लगे। इसी समय केयसने ट्रिब्यूनके अधिकार पदसे इस्तीफा दे दिया। तदनन्तर वह रोमके लोगोंके उपनिवेश बसानेके लिए कापूआ, टारेंटम, कार्थेज आदि नगरोंकी ओर चला गया। अवसर पाकर धनवान लोगोंने ओपिमियस नामक व्यक्तिको कौसल बना दिया। केयसके लौट आनेपर ओपिमियसके एक नौकरने उसका अपमान किया। केयसके पक्षके लोगोंने उसका प्रतिकार किया। रोमके बड़े बड़े लोग भी यही चाहते थे। सिनेट सभाने रोमराज्यपर सङ्कट आनेका बहाना कर ओपिमियसको डिक्टेटर चुना। अत अपना प्राण बचानेके लिए केयस प्लेबियन लोगोंकी आवेंटाइन पहाड़ीपर चला गया। इसपर ओपिमियसने यह इनाम रक्खा कि केयसका सिर काटकर लानेवालेको उस सिरके तौलके बराबर सोना दिया जायगा।

ह सुन केयसको वहाँसे भी भागना पडा। वह वहाँसे निकल-
र सबलिसियन पुलपर होकर टाइबर नदी पार ही कर रहा
ा कि शत्रुओंने उसका मार्ग आ रोका। जब उसने समझ
लिया कि शत्रुओंसे बचना असम्भव है तो उसने अपने एक
ुलामसे अपना सिर कटवा डाला। पश्चात् एक मनुष्यने
स सिरका भेजा निकालकर उसमें शीशा भर दिया और
ापोमियससे उसके बराबर सोना तौलवा लिया।

इस तरह केयसको अपने भाईकी तरह देशहितके लिए
कालमें ही कालके गालमें जाना पडा। सिनेटने उसका घर-
ार सब जब्त कर लिया। परन्तु कुछ दिन बाद रोमके
ोगोंने कृतज्ञतापूर्वक उसका और उसके भाईकी मूर्ति
नवाकर रोम नगरके प्रसिद्ध स्थानपर स्थापित किया। बहुत-
े रोमके इतिहास लेखक रोमके धनवान लोगोंके दास हो
हे थे। उन्होंने अपने इतिहासमें इन दोनों भाइयोंकी बहुत
निन्दा की है। परन्तु रोमकी जनता उन्हें आदरकी दृष्टिसे
खती थी। वह उन्हें देवतुल्य पूज्य मानती थी।

उपर्युक्त कार्यवाहीसे केयसका अन्त हो जानेपर रोमके
नी लोगोंको कुछ सन्तोष हुआ। उन्होंने टायबीरियस और
यस द्वारा स्वीकार कराये हुए सब विधान रद्द करवा दिये
ौर रोमकी स्थिति फिर पहलेकीसी हो गयी।

इसके बाद रोम सरकारको न्युमिडिया देशके राजासे
डना पडा। अफ्रिकाके उत्तरमें अलजीयर्स नामक एक देश
। इसका ही प्राचीन नाम न्युमिडिया था। न्युमिडियाके
ाजा मिसिपो और रोमके सरकारमें परस्पर सम्बन्ध था।
ब कार्थेजके साथ युद्ध हुआ था तब इसने रोम सरकारको
हुत सहायता दी थी। इस राजाके तीन पुत्र थे। दो उसकी

विवाहिता पत्नीसे थे और एक दासी पुत्र था। मिसिपो अपनी विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न दोनों पुत्रोंमें ही अपना राज्य बाँट देना चाहता था। दासीपुत्रके लिए वह चाहता था कि वह किसी तरह इस ससारसे ही विदा हो जाय। सिपिओने जब न्युमेशिया नगरपर घेरा डाला था उस समय मिसिपोने उसे सेना देकर सिपिओकी सहायताके लिए भेजा था। परन्तु इससे उस दासीपुत्र—जुगर्था—का लाभ ही हुआ। जुगर्था बडा चालाक व्यक्ति था। वह रोमके लोगोंके मनकी थाह पा गया था। उसने घूस देकर रोमके कई प्रतिष्ठित सरदारोंसे मित्रता कर ली थी। विक्रमाब्दसे १७५ वर्ष पूर्वमें मिसिपो मर गया। मरते समय उसने अपना राज्य तीनों पुत्रोंमें बराबर बाँट दिया। परन्तु जुगर्थाकी पिपासा अब और भी बढ गयी। वह चाहता था कि वही सारे राज्यका स्वामी बन जाय। इसलिए उसने उन दोनोंमें से बडेको मरवा डाला और छोटेको जिसका नाम अधेरबल था। देशसे बाहर निकलवा दिया। अधेरबलने रोमके सिनेट तक अपनी बात पहुँचायी। परन्तु जुगर्थाने सिनेटके सभासदोंको घूस देकर अपने अधीन कर लिया था इसी कारण उन्होंने उसकी बातपर पहले तो बिलकुल ध्यान ही नहीं दिया। परन्तु बादमें सिनेटने यह निपटेरा किया कि न्युमिडियाका राज्य अधेरबल और जुगर्था बाँट लें। अधेरबल न्युमिडिया आकर जुगर्थासे आधा राज्य माँगने लगा। अधेरबल सिन्त्रा नगरमें ठहरा हुआ था। अत जुगर्थाने उस नगरपर घेरा डालकर उसे अपने अधिकारमें कर लिया। अधेरबलको उसके साथियों सहित विक्रमाब्दसे १६२ वर्ष पूर्व मार डाला। यह समाचार जब रोममें पहुँच तो लोगोंको बडा दुःख हुआ और उन्होंने न्युमिडिआके राज्यकार्यमें हस्तक्षेप करनेका निश्चय कर

लिया। शीघ्र ही एक सेना न्युमिडिया भेजी गयी। किन्तु इस सेनाके सेनापतिने भी जुगर्थासे घूस खा ली। निदान उसने जुगर्थाके अनुकूल सुलह कर,ली। यह हाल मालूम होनेपर सिनेटके सभासद बड़े नाराज हुये और उन्होंने जुगर्थाको रोम बुलाया। एक ट्रिब्यूनने रोमके अधिकारीको घूस देकर बिगाड़नेका उसपर अपराध लगाया। वह कुछ भी उत्तर न दे सका। परन्तु यहाँ भी घूसने उसकी सहायता की। उसने दूसरे ट्रिब्यूनको घूस देकर अपनी ओर कर लिया। निदान उसपर अपराध लगानेवाले ट्रिब्यूनको चुप हो जाना पड़ा। इससे तो उसकी मुक्ति हुई। परन्तु उसने एक राजाका खून करवा डाला इससे उसका रोममें रहना कठिन हो गया। वह रोम नगरसे निकाल दिया गया। रोमसे बाहर निकलते समय उसने उस नगरकी ओर संकेत कर कहा— "रोम, तुझे खरीदनेमें कुछ भी देर नहीं लगती। खरीदने-वाला मात्र चाहिए।" इससे रोमकी तत्कालीन स्थितिका अनुमान हो सकता है।

जुगर्था अपनी राजधानीमें पहुँचने भी न पाया था कि रोमकी सरकारने एक सरदारको सेना सहित वहाँ भेजा। किन्तु उस सरदारने उससे युद्ध नहीं किया। इसके बाद उसका भाई सेनापति बनाकर भेजा गया। जुगर्थाने युक्तिसे उसे भी हरा दिया। अन्तमें रोमकी सरकारने सिसिलियस मेटे-लसको सेनापति बनाकर भेजा। यह एक शूर वीर योद्धा था। इससे जुगार्थाकी एक न चली। उसे हार खानी पड़ी। परन्तु रोमके राज्यकर्ताओंमें आपसमें इधर द्वेष बढ़ गया था। इससे गड़बड़ मच गया। मेटेलसकी बदली हो गयी और उसका स्थान उसके प्रतिस्पर्धी केयस मारियस को मिला।

मेटेलस एक कुलीन वंश का था। किन्तु मारियस ऐसा न था। वह एक गरीब किसानका लडका था। घरकी गरीबीके कारण उच्च शिक्षा नहीं मिली थी। परन्तु वह शारीरिक श्रम करनेका अभ्यासी था जिससे उसका शरीर मजबूत हो गया था। उसका मन सुसंस्कृत न था। इसीलिए वह ग्रीक विद्या का बडा तिरस्कार करता था। ग्रीक विद्याके भक्तोंकी निन्दा करता था। उसका स्वभाव क्रोधी और चिडचिडा था। बचपनसे ही उसके हृदयमें महात्वाकांक्षा अंकुरित हो चली थी। इसलिए वह अपनी जन्मभूमिको छोड रोमकी सेनामें आ भरती हो गया था। जब सिपिओने स्पेनके न्युमेशिया नगरको घेरा था। उस समय भी वह रोमकी सेनामें था। इस युद्धमें सिपिओने उसकी शूरता का परिचय पाया। उसकी शूरता देखकर सिपिओने कहा था कि भविष्यमें वह खूब उन्नति करेगा। इन वाक्योंसे मारियसकी महत्वाकांक्षा और भी बढ़ गयी। रोम लौटने पर वह सार्वजनिक कामोंमें भाग लेने लगा। आजतक रोमके सभी नेता उच्चवर्गीय थे। परन्तु मारियस साधारण प्रजामेंसे ही था। लोगों पर उसका प्रभाव भी अधिक पडता था। वह ट्रिब्यून बना दिया गया। ट्रिब्यून होते ही उसने ट्रिब्यूनके चुनावमें धनी लोगोंको हस्तक्षेप करनेसे रोकनेके लिए एक मसविदा पेश किया। रोमके धनी लोगोंने उसका विरोध किया। एक कौंसलने मारियसको धमकाया भी। किन्तु मारियस ऐसी बन्दरघुडकीसे डरनेवाला थोडे ही था। उसने उलटे उसी कौंसलको धमकाया कि अधिक गडबड करोगे तो नियम विरुद्ध कार्य करनेके अपराधमें तुम्हें जेलखाने भिजवा दूँगा। इससे वे सब डर गये। लोगों पर उसका प्रभाव पडने लगा।

इसी समय दैववशात् उसका विवाह एक धनी पुरुषकी लडकीसे हो गया। लडकी सीजर वंशकी थी। उसका नाम जुलिया था। जुलियस सीजर जुलियाके भाईका पुत्र था।

धनीवंशसे सम्बन्ध हो जाने के कारण रोमके धनी लोग उसका कम विरोध करने लगे। मेटेलस उसे अपने साथ अफ्रिकामें जुगर्थासे युद्ध करनेके लिए ले गया। वहाँ मारियसने और भी शूरता प्रकट की। अफ्रिकामें एक भविष्यवादीने उससे कहा था कि शीघ्र ही तुम अच्छा पद पाओगे। यह सुनकर उस महत्वाकांक्षी पुरुषकी अभिलाषा बहुत बढ गयी। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह शीघ्र ही कौंसल हो जायगा, इसलिए वह रोम जानेके लिए मेटेलससे आज्ञा माँगने लगा। मेटेलस उसके मनकी बात जान गया। किन्तु, उसे विश्वास था कि उसकी आशा व्यर्थ है। मारियसको महत्पद कभी न मिलेगा। एक बार मेटेलसने उससे कहा भी था कि इतनी जल्दी क्यों करते हो? मेरा लडका कौंसलका पद पानेके लिए उद्योग करनेवाला है। वयके मानसे अभी २० वर्ष और बाकी हैं। तुम भी उसीके साथ उद्योग करना। यह बात मारियसको अपमानजनक मालूम हुई। उसने मेटेलससे बदला लेनेका निश्चय कर लिया। भाँति भाँतिकी झूठी झूठी बातें उडाकर उसने लोगोंके मन मेटेलसकी ओरसे दूषित कर दिया। उसने कहा कि मेटेलस अकारण युद्धको आगे बढा रहा है, यदि यह काम मेरे सपुर्द किया जाय तो मैं शीघ्र ही इस युद्धका अन्त कर दूँ। मेटेलस यह सह न सका। बडी कठिनाईके बाद उसने उसे रोम जानेकी परवानगी दे दी। रोम आते ही वह अपना इष्ट हेतु सिद्ध करनेका यत्न करने लगा। उसने तरह तरहके यत्न किये और लोगोंके मन अपने वशमें

कर लिये। वह कौंसल चुना गया। अब उसके आनन्दका क्या पूछना? मारियसके कौंसल होनेकी ख़बर सुनकर मेटेलस निराश हो गया और उसे बड़ा बुरा लगा। किन्तु करता ही क्या। इधर मारियसने येन केन प्रकारेण अफ्रिकाके युद्धपर अपनी नियुक्ति करवा ली। विवश हो मेटेलसको अपनी जगह छोड़नी पड़ी। मारियसने जुगर्थासे होनेवाली लड़ाईके सूत्र अपने हाथमें लिये। अफ्रिका जाते समय मारियस ल्युशियश कार्नेलियस सुल्लाको रोमसे अपने साथ ले गया था। यह शूर वीर और चतुर था। मारियससे इसका स्वभाव बिलकुल भिन्न था। पाट्रिशियन वंशमें उसका जन्म हुआ था। वह सुशिक्षित और ग्रीकविद्याका पण्डित था। दरबारके काममें यह बहुत चतुर था। मारियसमें इन गुणोंका बिलकुल अभाव था। किन्तु एक बातमें दोनोंका साम्य था। यानी दोनों ही द्वेषी, निर्दयी और क्रूर थे। जिस प्रकार मारियसने मेटेलसको नीचा दिखाया उसी प्रकार सुल्लाने भी मारियसको नीचा दिखाया। इसने उसके कुटुम्बी और पक्षपातियोंको भी मार डाला।

न्युमिडियामें मारियस जुगर्थासे लड़ने लगा। कुछ समय तक तो जुगर्थाने मारियसकी एक न चलने दी। परन्तु बादमें उसके मित्र मारिटानियाके राजा बाकचस ने उससे विश्वासघात किया। निरुपाय हो उसे रोमके लोगोंकी शरण लेनी पड़ी। सुल्लाकी युक्तिसे ही जुगर्था हाथ लगा था। इससे मारियसका प्रभाव कुछ कम हो गया। परन्तु इसकी परवाह न कर वह दो वर्ष और न्युमिडियामें रहा और यद्यपि सारा देश जीत लिया तो भी सुल्लाके गुप्त उद्योग जारी ही रहे। वह सेनाके सिपाहियोंसे मिलकर रहता था। संकटके समय

वह सिपाहियोंकी सहायता करता था। इससे सैनिक उसे बहुत चाहने लगे। और इस तरह धीरे धीरे मारियस परसे सैनिकोंका मन हटने लगा। जब मारियसको यह बात मालूम हुई तो वह सुल्लासे भीतरी द्वेष रखने लगा। परन्तु तो भी उसका कुछ उपाय न चलता था।

अफ्रिकामें कीर्ति सम्पादन कर वह विक्रमसे १६१ वर्ष पहले रोम लौट आया। उसका जुलूस निकाला गया। जुलूसमें जुगर्था सबसे आगे किया गया था उसके हाथ पाँवमें हथकडी बेडी पडी थी। इसके बाद जुगर्था मामेटाईन नामके जेलमें बन्द कर दिया गया। जेलखानेमें बडी भीड थी। उसे खानेको भी नहीं दिया जाता था। निदान इस दुःखपूर्ण स्थितिमें आठ रोज़ तक अन्न न मिलनेके कारण भूख से व्याकुल हो न्युमिडिया देशका राजा जुगर्था कुत्तेकी मौत मरनेके लिए विवश हुआ। एक देशके पराक्रमी राजाका इस प्रकार अन्त होना, समयके कुचक्रके फेरका ही प्रभाव कहा जा सकता है।

रोमके लोग मारियसके लौट आनेकी राह बडी उत्कण्ठा-से जोह रहे थे। क्योंकि इटली इस समय सङ्कटमें था। मध्ययूरोपके रहनेवाले केल्ट और जर्मन लोग अपने स्त्री बच्चों सहित अपने देशसे बाहर निकल आये थे। इटलीके वैभवकी बात सुनकर वे उस देशको लूटना चाहते थे। इन लोगोंमें ३ लाख योद्धा थे। इसके अतिरिक्त उनके साथ उनके स्त्री-बच्चे और बहुतसे दूसरे लोग भी थे। उनका डीलडौल मजबूत था, वे बडे हृष्ट पुष्ट थे। विक्रमाब्दसे १५० वर्ष पहले रोमके लोगोंने उनका सामना किया। परन्तु उनकी हार हुई। इसके बाद वे लोग स्विट्जर्लैंण्डमेंसे होकर दक्षिण गाल प्रदेशमें जा

उतरे। विक्रमाब्द से १६६ वर्ष पहले कौसल सिलेनसकी हार हुई। इसके दो वर्ष बाद लांजिनियसको हारना पड़ा। वह युद्धमें मारा गया। इसके दो वर्ष बाद होन नदीके किनारे जगली लोगोंने रोमके लोगोंको बिलकुल हरा दिया। रोमकी सेनामें ८० हजार सिपाही थे। वे सबके सब मारे गये। बार बार हारनेके कारण रोमके लोग निराश हो गये। उनकी समझसे इस सकटसे इटलीका उद्धार करनेवाला मारियस-के सिवा दूसरा कोई न था। किसी मनुष्यके एक बार कौसल चुने जानेपर १० वर्षके भीतर वह फिर दूसरी बार कौसल नहीं चुना जा सकता था। परन्तु इस विघ्न का निवारण करनेके लिए इस नियमका उल्लंघन कर लोगोंने उसे दूसरी बार कौसल चुना। परन्तु वे जगली लोग इटली-में न आकर स्पेनमें जा लूटपाट करने लगे। वे दो वर्षतक स्पेन में रहे। रोमके लोग जानते थे कि वे एक न एक दिन उन्हें अवश्य कष्ट देंगे। इसलिए उन्होंने मारियसको तीसरी और चौथी बार कौसल चुना।

केल्ट और जर्मन लोगोंके स्पेनमें चले जानेके कारण मारियसको पर्याप्त समय मिल गया। उसने अवसरको हाथसे नहीं जाने दिया। वह अपनी सेनाको युद्धविद्यामें निपुण करने लगा। स्पेनसे लौटते समय वे लोग इटलीमें घुसकर लूट मार न करने पायें इसलिए मारियस अपनी सेना सहित होन नदीके तटपर आधुनिक आरिज नगरके पास जा ठहरा। बहुत दिन तक वह वहाँ उन जगली लोगों-की बाट जोहते पड़ा रहा। सेनाको कुछ भी काम न था। इसलिए मारियसने सिपाहियोंसे उस स्थानसे समुद्र तक १२ मील लम्बी नहर खुदवायी। यह नहर इटलीसे रसद लानेमें

सुभीता होनेके उद्देशसे बनवायी गयी थी। इतनेमें जगली लोग भी पास आ पहुँचे। उन्होंने अपनी सेना दो भागोंमें बाँट दी थी। एक टुकडी आल्प्स पर्वतके उत्तरकी ओरसे टायरोल प्रान्तमें होकर इटलीमें घुसी और दूसरी टुकड़ी दूसरी ओर से। इससे मारियसकी मुठभेड हो गयी। शत्रुकी सेनाके पास आ जानेपर भी मारियसने एकदम युद्ध शुरू नहीं किया। छोटी छोटी अनेक लडाइयाँ लडकर उसने अपनी सेनाको जगली लोगोंकी लडनेकी रीतिसे वाकिफ कर दिया। इसके बाद विक्रमसे ४५ वर्ष पहले आधुनिक एक्स नगरके पास भयानक युद्ध हुआ। इस युद्धमें जगली लोगोंकी हार हुई और उन्हें बडी हानि उठानी पडी।

इस युद्धमें हजारों जगली खेत रहे। उनके स्त्री बच्चे अपमानके भयसे अग्निमें जल मरे। यह देख मारियस और उसके साथी लोग बहुत सन्तुष्ट हुए। इस समय जब कि वह ऐसे आनन्द सागरमें मग्न हो रहा था, उसे यह सम्वाद मिला कि वह पाँचवीं बार कौसल बनाया गया। यह खबर सुनकर उसे असीम आनन्द हुआ। इस खुशीके उपलक्षमें उसने लूट-का अधिकाश भाग ईश्वरको अर्पण कर दिया।

इस प्रकार जब कि मारियस आनन्द मना रहा था और रोमके लोग उसकी इस जीतके उपलक्षमें उसे भोज देनेकी तैयारी कर रहे थे कि उसी समय उसे सम्वाद मिला कि जगली लोगोंकी दूसरी टुकडी टायरोल प्रान्तमें होकर इटलीमें घुस आयी है। निदान वह इस उत्सवको एक ओर रख, उनका सामना करनेके लिए उस ओर आगे बढा। इसके पहले रोमके लोगोंने क्याटुलस नामक एक सरदारको उनका सामना करनेके लिए भेज दिया था। वह हारकर पीछे हटता

अधिकार था। परन्तु इस बलवेके बाद उनके शस्त्र छीन लिये गये। अपने पास शस्त्र न रहनेसे वे जंगली जन्तुओंसे जंगलमें अपनी रक्षा नहीं कर सकते थे।

धीरे धीरे रोमके धनी लोगोंकी सत्ता कम होने लगी और साधारण लोगोंकी शक्ति बढने लगी। पहले सिनेट सभा ही पांटिफ धर्माध्यक्षका चुनाव करती थी। परन्तु विक्रमसे ४६ वर्ष पहले यह अधिकार सिनेटसे छिन गया। इसके बाद साधारण लोकमतके धर्माध्यक्षका चुनाव होने लगा। दूसरे वर्ष जमीनसम्बन्धी विधान स्वीकार करानेका यत्न किया गया, पर फल अनुकूल न हुआ। इसके बाद विक्रमसे ४३ वर्ष पहले एक विधान और बनाया गया। पहले सिनेट ही न्यायाधीशके मुकदमोंकी देखभाल करती थी। परन्तु अब इस विधानसे यह अधिकार साधारणजनोंके हाथमें आया। रोम नगरके बाहरका मनुष्योंको रोम नगरनिवासी होनेका अधिकार देनेका नियम भी इसी समय बनाया गया। इस तरह धीरे धीरे लोक-मत प्रबल होने लगा और सिनेटका प्रभाव बहुत कुछ कम हो गया। इस समय यदि कोई कर्तव्य परायण मनुष्य होता तो वह बहुतसे लोक हितकारी काम किये होता। परन्तु कोई भी कर्तव्य परायण व्यक्ति आगे न आया। केवल मारियस ही एक ऐसा व्यक्ति था।

मारियस युद्धविद्यामें तो प्रवीण था, किन्तु राज्यकार्य करने तथा राज्यसम्बन्धी कामोंमें रद्दबदल करनेकी शक्ति उसमें नहीं थी। युद्धविद्या और राजकाजका अति निकट सम्बन्ध है। परन्तु, एक विद्यामें पारङ्गत व्यक्तिको दूसरी विद्यामें भी विशारद होना ही चाहिए, यह कोई साधारण नियम नहीं। इंग्लिस्तानके इतिहाससे परिचित पाठक जानते होंगे कि ड्यूक

ऑफ् वेलिंग्टन असाधारण पराक्रमी थे। उन्होंने कई बड़ी बड़ी लड़ाइयोंमें अनुपम विजय पायी थी। परन्तु प्रधान अमात्य बनाये जानेपर वे राज्यकी व्यवस्था नहीं कर सके। उनका फजीता हुआ। ऐसा ही राघोबा दादा पेशवाका भी उदाहरण है। मारियस राजनीतिके दॉव पेंचसे परिचित नहीं था। वह राजनीतिकी कुटिल चाल चलना नहीं जानता था। इसके अतिरिक्त सुल्ला लोगोंका मन वशकर मारियसके दोषोंका पता लगाया करता था। इससे मारियस कोई काम अच्छी तरह नहीं कर सकता था। लूसियस आपुलियस साटर्नायनस नामके गुण्डेने लोकसभामें दो विधानोंके मसविदे पेश किये थे। पहले विधानका आशय यह था कि चार पॉच वर्ष पहले जङ्गली लोगोंसे जीती हुई जमीन इटली और रोमके गरीब लोगोंमें बाँट दी जाय। दूसरे विधानका तात्पर्य यह था कि सरकार अनाजका भाव निश्चय कर दे और उसी भावसे अनाज बेचा जाया करे। ये दोनों विधान स्वीकार कराते समय इतनी चाल चली गयी कि बेचारे मारियसको नीचा देखना पड़ा। अन्तमें उसे विक्रमसे ४२ वर्ष पहले राज-कार्यसे अपना हाथ खींचना पड़ा। उसे राजनीतिके झगड़ोंसे दूर रहनेके लिए बाध्य होना पड़ा।

रोमके शहरके लोग रोमके अधिकार प्राप्त करनेके लिए खूब उद्योग कर रहे थे। रोमके लोगोंकी स्वार्थ परताके कारण इटलीके लोग जी जानसे प्रयत्न कर रहे थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि वैसा अधिकार जल्दी न मिलनेसे उन्हें हानि उठानी पड़ेगी। उन्हें भय था कि उनकी जमीन रोम निवासियोंके हाथमें चली जायगी। वे रोमके धनी लोगोंकी जमीन जोतते थे। यह जमीन सरकारी थी। रोमके

अधिकार था। परन्तु इस बलवेके बाद उनके शस्त्र छीन लिये गये। अपने पास शस्त्र न रहनेसे वे जंगली जन्तुओंसे जंगलमें अपनी रक्षा नहीं कर सकते थे।

धीरे धीरे रोमके धनी लोगोंकी सत्ता कम होने लगी और साधारण लोगोंकी शक्ति बढ़ने लगी। पहले सिनेट सभा ही पांटिफ धर्माध्यक्षका चुनाव करती थी। परन्तु विक्रमसे ४८ वर्ष पहले यह अधिकार सिनेटसे छिन गया। इसके बाद साधारण लोकमतके धर्माध्यक्षका चुनाव होने लगा। दूसरे वर्ष जमीनसम्बन्धी विधान स्वीकार करानेका यत्न किया गया, पर फल अनुकूल न हुआ। इसके बाद विक्रमसे ४३ वर्ष पहले एक विधान और बनाया गया। पहले सिनेट ही न्यायाधीशके मुकदमोंकी देखभाल करती थी। परन्तु अब इस विधानसे यह अधिकार साधारणजनोंके हाथमें आया। रोम नगरके बाहरका मनुष्योंको रोम नगरनिवासी होनेका अधिकार देनेका नियम भी इसी समय बनाया गया। इस तरह धीरे धीरे लोक-मत प्रबल होने लगा और सिनेटका प्रभाव बहुत कुछ कम हो गया। इस समय यदि कोई कर्तव्य परायण मनुष्य होता तो वह बहुतसे लोक हितकारी काम किये होता। परन्तु कोई भी कर्तव्य परायण व्यक्ति आगे न आया। केवल मारियस ही एक ऐसा व्यक्ति था।

मारियस युद्धविद्यामें तो प्रवीण था, किन्तु राज्यकार्य करने तथा राज्यसम्बन्धी कार्मोमें रद्दबदल करनेकी शक्ति उसमें नहीं थी। युद्धविद्या और राजकाजका अति निकट सम्बन्ध है। परन्तु, एक विद्यामें पारङ्गत व्यक्तिको दूसरी विद्यामें भी विशारद होना ही चाहिए, यह कोई साधारण नियम नहीं। इङ्गलिस्तानके इतिहाससे परिचित पाठक जानते होंगे कि ड्यूक

कुटुम्बके लोग भी उसे देशद्रोही कहने लगे थे। उसके कुटुम्बके बालक भी उसके मतके विरुद्ध हो गये थे। एक बार इटली-के पक्षका एक मनुष्य ड्रसस के यहाँ भोजन करने गया। ड्रसस का भतीजा पोर्सियस केटो उस कमरेमें आया जहाँ वह बैठा हुआ था। इस समय पोर्सियस चार वर्षका था। अतिथिने यों ही उससे पूछा,—"क्या तुम हमारे पक्षमें आओगे ?" लडकेने साफ इन्कार कर दिया। अतिथिने बडे प्रेमसे उसे मिठाई देकर फिर वही प्रश्न किया लडकेने फिर भी "नाहीं" कर दिया। अतिथिने तब कुछ क्रोध दिखाते हुये उसका पैर पकडकर खिडकीके बाहर औंधा लटकाकर बोला,—"बोल, अब भी हमारे पक्षमें आयेगा या नहीं ?" किन्तु फिर भी लडकेने "नाहीं" ही कहा। यह देखकर अतिथिको बडा आश्चर्य हुआ।

जब ड्रससने देखा, कि उसके हित मित्र ही उसका विरोध करने लगे तो उसने खुल्लमखुल्ला इटलीके लोगोंका पक्ष स्वीकार कर लिया। तो भी वह सदैव इटलीके लोगोंको रोकनेका उद्योग करता रहता था। परन्तु थोडे ही समय बाद वे लोग बिगड खडे हुए और आगे ड्रससका कहना नहीं माने। उनका नेता १० हजार लोगों सहित रोमके पास आ पहुँचा। इससे सारे नगर में हलचल मच गयी। इस गडबड में ड्रसस अपने अनुयायियों सहित घर आते समय रास्तेमें मारा गया। ड्रसस विक्रमसे ३३ वर्ष पहले मारा गया था।

ड्रसस देशाभिमानी था। वह समझता था कि वह देश-का जितना हित कर रहा है उतना आजतक किसीने नहीं किया और न कोई आगे करेगा ही। उसने मरते समय कहा

धनी लोगोंने इसे दबा लिया था। टायबीरियस ग्रयाक्वसके ही समयसे यह जमीन रोमके धनी लोगोंसे छीनीजाकर गरीब लोगोंमें बाँट देनेका उद्योग चल रहा था। यदि यह उद्योग सफल हो जाता तो इटलीके हजारों लोग दाने दानेके लिए मुहताज हो जाते। अत रोमके अधिकार प्राप्तकर नवीन जमीनके बँटवारेमें हिस्सेदार होना इटलीके लोगोंके लिए विशेष लाभप्रद था। इसी लिए वे यत्न भी कर रहे थे।

जङ्गली लोगोंकी चढाईके समय यह पारस्परिक कलह कुछ कम हो गया था। परन्तु इस सङ्कटसे छुटकारा पाते ही यह कलहाग्नि पुन: धधकने लगी। इन जङ्गली लोगोंका विध्वस कर इटलीके सहस्रों सैनिक युद्ध विद्यामें निपुण होकर लौटे थे। इटलीके लोगोंको विश्वास हो गया था कि अवसर आनेपर ये सैनिक बहुत काम आवेंगे। इसके अतिरिक्त रोम नगरमें भी कई लोग उनके पक्षमें थे। उनमें लिवियस ड्रसस मुख्य था। यह कुलीन, उदार, सरल और प्रामाणिक मनुष्य था। यह रोमके धनी और इटलीके लोगोंमें समझौता करानेका उद्योग कर रहा था। इसलिए उसने सिनेट सभाको सब अधिकार, जो कि छीन लिए गये थे, वापस दिलवा दिये और वह रोमके गरीब लोगोंको जमीन और इटलीके लोगोंको रोमके अधिकार भी दिलवानेका प्रयत्न करने लगा। वह बुद्धिमान था और उसका चित्त भी बहुत ही निर्मल था। दिखाऊपन उसे बिलकुल न भाता था। वह जो कुछ कहता था वही करता था।

ड्रससने यद्यपि बडे लोगोंके लाभकी अनेक बातें की थी तथापि जब उन्हें मालूम हो गया कि वह इटलीके लोगोंके पक्षमें है तब सब उससे द्वेष करने लगे। यहाँतक कि उसके

कुटुम्बके लोग भी उसे देशद्रोही कहने लगे थे। उसके कुटुम्बके बालक भी उसके मतके विरुद्ध हो गये थे। एक बार इटली के पक्षका एक मनुष्य ड्रससके यहाँ भोजन करने गया। ड्रसस-का भतीजा पोर्सियस केटो उस कमरेमें आया जहाँ वह बैठा हुआ था। इस समय पोर्सियस चार वर्षका था। अतिथिने यों ही उससे पूछा,—"क्या तुम हमारे पक्षमें आओगे ?" लडकेने साफ इन्कार कर दिया। अतिथिने बडे प्रेमसे उसे मिठाई देकर फिर वही प्रश्न किया लडकेने फिर भी "नाहीं" कर दिया। अतिथिने तब कुछ क्रोध दिखाते हुये उसका पैर पकडकर खिडकीके बाहर औंधा लटकाकर बोला,—"बोल, अब भी हमारे पक्षमें आयेगा या नहीं ?" किन्तु फिर भी लडकेने "नाहीं" ही कहा। यह देखकर अतिथिको बडा आश्चर्य हुआ।

जब ड्रससने देखा, कि उसके हित मित्र ही उसका विरोध करने लगे तो उसने खुल्लमखुला इटलीके लोगोंका पक्ष स्वीकार कर लिया। तो भी वह सदैव इटलीके लोगोंको रोकनेका उद्योग करता रहता था। परन्तु थोडे ही समय बाद वे लोग बिगड खडे हुए और आगे ड्रससका कहना नहीं माने। उनका नेता १० हजार लोगों सहित रोमके पास आ पहुँचा। इससे सारे नगर में हलचल मच गयी। इस गडबड में ड्रसस अपने अनुयायियों सहित घर आते समय रास्तेमें मारा गया। ड्रसस विक्रमसे ३२ वर्ष पहले मारा गया था।

ड्रसस देशाभिमानी था। वह समझता था कि वह देश का जितना हित कर रहा है उतना आजतक किसीने नहीं किया और न कोई आगे करेगा ही। उसने मरते समय कहा

था,—"मेरे भाइयो, इष्ट मित्रो, इस प्रजासत्तात्मक राज्यका मेरे समान राष्ट्रहितकर्त्ता क्या कभी मिलेगा?" इसे गर्वोक्ति कह सकते हैं, किन्तु यह ड्रूससके लिए भूषणावह है। ऐसा सोचनेवाले व्यक्तिके हाथसे बहुत कुछ राष्ट्रहित होना संभव है।

उपर्युक्त प्रकारसे धनी लोगोंने बेचारे ड्रूससको मरवा डाला। रोमके न्यायाधीश ड्रूससके खून करनेवालेका पता लगानेमें टालटूल करने लगे। यह देखकर इटलीके लोग चिढ़ गये। बिना युद्ध किये काम न चलता देखकर वे रोमके लोगोंसे लड़नेकी तयारी करने लगे। इस बलवेमें पेलिग्नियन, पायसेंटाइन, लुकेनियन, आपुलियन आदि मध्य इटलीके प्रमुख राष्ट्र शामिल थे। मार्सियन जातिके लोग अगुआ हुए थे। इन लोगोंने ईश्वरको साक्षी रख विश्वास घात न करने की प्रतिज्ञा की थी। यह निश्चय किया गया था कि सब एक दम बलवा करें। उन लोगोंने इटलीके सब छोटे छोटे राष्ट्रोंका एक प्रजासत्तात्मक राज्य स्थापित करनेका निश्चय किया था। इस नवीन राज्यकी राजधानीका नाम इटालिका रखनेका और इसे कार्फिनममें बनानेका निश्चय किया गया था।

किन्तु इट्रूरियन, लातिन, और अम्ब्रियन लोगोंने रोमका साथ नहीं छोड़ा था। कारण रोमके लोगोंने उन्हें रोमके अधिकार देनेका वचन दिया था।

इस समय रोमके पास अपने प्रति पक्षीसे चौगुनी सेना थी। परन्तु यह सेना इधर उधर बिखरी हुई थी और सेनानायकोंमें मेल भी न था। वे एक दूसरेसे भीतरी द्वेष रखते थे।

विक्रम से ३३ वर्ष पहले युद्ध आरम्भ हुआ। इस वर्षके अन्तमें रोमके लोगोंको अच्छी तरह मालूम हो गया कि रोम नगरके बाहरके लोगोंको रोमके अधिकार दिये बिना शान्ति न होगी। तथापि उन्होंने वे अधिकार एक दम नहीं दे दिये। सबसे पहले रोमके अधिकार उन लोगोंको दिये गये जिन्होंने बलवा नहीं किया। तदनन्तर यह प्रसिद्ध किया गया कि शत्रुकी सेनाके जो लोग दो महीनेके अन्दर हथियार रख देंगे, उन्हें रोमके अधिकार दिये जायँगे। इस घोषणा-पत्रसे शत्रुकी सेनामें बडी गडबडी मची। बहुतसे लोग युद्ध बन्द कर अपने अपने घरको लौट गये। इससे रोमकी सेना इस बलवे-को शान्त करनेमें बहुत कुछ सफल मनोरथ हुई। परन्तु उन्हें मालूम हो गया कि यह बहुत दिनों तक नहीं निभ सकेगा। इसलिए उन्होंने खूब सोच विचार कर बहुतसे राष्ट्रोंको रोम के अधिकार दे दिये। इस युद्धमें कुल सवा दो लाख सैनिक खेत रहे।

क्षतिके परिमाणसे इटलीके लोगोंका लाभ कम हुआ। क्योंकि रोमके अधिकार पानेके लिए उन्हें एक बार रोम अवश्य जाना पडता था। इटलीके दूर दूरके प्रदेशोंके मनुष्योंके लिए रोम जाना कठिन था। इसके अतिरिक्त किसी मनुष्यको रोमके अधिकार मिलने पर—वह रोमका रहनेवाला है ऐसा निश्चय हो तो उसे अपने मूल नगरके अधिकारसे वञ्चित रहना पडता था। इससे रोमसे लड झगडकर लिये हुए अधिकारका अधिक उपयोग नहीं होता था। रोमने अधिकार पाये हुए लोग दस भागोंमें विभक्त किये गये थे। ये सब पहलेके ३५ सर्वोमें शामिल कर लिये गये थे। परन्तु रोमके लोग इन नवीन नगरनिवासी लोगोंसे प्राचीन तथा

वास्तविक रोम नगरनिवासियोंकी तरह व्यवहार नहीं करते थे। वे उन्हें कम दरजेके समझते थे।

इस प्रकार इस युद्धसे प्रत्यक्षमें कुछ भी लाभ नहीं हुआ, तथापि अप्रत्यक्ष रीतिसे रोमके राज्यपर इसका अच्छा प्रभाव पडा। रोमके लोग धीरे धीरे अपने सकीर्ण विचारोंको त्याग करने तथा उदारताको अपनाने लगे। रोमके बाहरके लोगोंको वे अपने समान समझने लगे। इसके बाद गाल और स्पेन देशके लोगोंको रोमके अधिकार दे दिये गये। इस युद्धका दूसरा परिणाम यह हुआ कि रोमके राज्यकी नींव मजबूत हो गयी। केवल एक बार रोम हो आनेसे ही रोमके स्वत्व मिल जाते थे। इससे लोग परायापन भूलकर रोम नगरको अपनाने लगे।

ऊपर लिखा हुआ वर्णन पढते समय हमें भारतवर्षके स० १८१५ के वलवेका स्मरण हो आता है। इस वलवेके शान्त हो जानेपर श्रीमती महारानी विक्टोरियाने एक घोषणापत्र निकाला था। जिस प्रकार रोमके लोगोंने लडाई खतम हो जानेपर इटलीके लोगोंको अधिकार दिये थे। उसी प्रकार महारानी विक्टोरियाने वलवेके बाद घोषणापत्र निकालकर भारतवासियों और यहाँके देशी राज्योंके अधिकारको स्वीकार किया था। इससे लोगोंके मनमें विश्वासकी जड जम गयी, जिससे राज्यकी नींव बडी मजबूत हो गयी।

इन लडाइयोंमें मारियस और सुल्ला रोमके मुख्य सरदार थे। इस समय मारियसकी उम्र ७० वर्षकी थी। सुल्ला जवान था। वे एक दूसरेसे द्वेष रखते थे। इस अन्तिम युद्धमें अन्तिम विजय सुल्लाकी ही हुई। इससे मारियसको बहुत

बुरा लगा। इतना बूढा हो जाने पर भी मारियसकी महत्वाकांक्षा घटी नहीं थी।

इस युद्धके समाप्त होते ही रोमको दूसरे युद्धमें लिप्त होना पडा। एशियाखण्डमें भी रोमराज्य था। उसके उत्तरमें पाटस नामका एक देश था। वहाँ मिथ्रिडेट्स राजा राज्य करता था। उसके पूर्वज बडे पराक्रमी थे। मिथ्रिडेट्स भी कम शूर नहीं था। वह, देश जीत जीत कर अपना राज्य बढाता जाता था। उसने जब क्यापाडोशिया देश जीतकर अपने एक मित्रको दे दिया, तब बिथिनिया देश पर चढाई की। अतएव उसका सामना करनेके लिए रोम सरकारने सुल्लाको नियुक्त किया। किन्तु मारियस उसकी नियुक्ति रद्द करानेका प्रयत्न करने लगा। मारियस ७० वर्षका बूढा था तो भी उसका साहस कम न हुआ था। वह जवानोंकी तरह युद्ध और खेलोंमें बडे उत्साहसे भाग लेता था। वह लोगोंको दिखाता था कि यद्यपि मैं बूढा हो गया हूँ तो भी साहस और काम करनेमें नवयुवकोंसे किसी भाँति कम नहीं हूँ। उसने अनेक प्रयत्न कर लोगोंके मन फिरा दिये और पब्लियस सलिसियस रुफस नामक ट्रिब्यूनको अपनी ओर कर लिया। उसकी सहायतासे पाटस देशपर चढाई करनेके लिए अपनी नियुक्ति करवा ली। इससे चिढकर सुल्लाने अपने पक्षवालोंकी सहायतासे मारियसकी नियुक्ति करनेवाले अधिकारीको मार डाला और स्वय पाटस देशकी ओर जानेकी तैयारी करने लगा। मारियसने नयी सेना इकट्ठीकर सुल्लाको रोकना चाहा, किन्तु वह सफल मनोरथ नहीं हुआ। उसे वहाँसे भागना पडा, क्योंकि उसका सिर काटकर लानेवालेको इनाम देनेका इश्तिहार दिया गया था। वह अफ्रिका भाग

वास्तविक रोम नगरनिवासियोंकी तरह व्यवहार नहीं करते थे। वे उन्हें कम दरजेके समझते थे।

इस प्रकार इस युद्धसे प्रत्यक्षमें कुछ भी लाभ नहीं हुआ, तथापि अप्रत्यक्ष रीतिसे रोमके राज्यपर इसका अच्छा प्रभाव पडा। रोमके लोग धीरे धीरे अपने सकीर्ण विचारोंको त्याग करने तथा उदारताको अपनाने लगे। रोमके बाहरके लोगोंको वे अपने समान समझने लगे। इसके बाद गाल और स्पेन देशके लोगोंको रोमके अधिकार दे दिये गये। इस युद्धका दूसरा परिणाम यह हुआ कि रोमके राज्यकी नींव मजबूत हो गयी। केवल एक बार रोम हो आनेसे ही रोमके स्वत्व मिल जाते थे। इससे लोग परायापन भूलकर रोम नगरको अपनाने लगे।

ऊपर लिखा हुआ वर्णन पढते समय हमें भारतवर्षके स० १६१५ के बलवेका स्मरण हो आता है। इस बलवेके शान्त हो जानेपर श्रीमती महारानी विक्टोरियाने एक घोषणापत्र निकाला था। जिस प्रकार रोमके लोगोंने लडाई खतम हो जानेपर इटलीके लोगोंको अधिकार दिये थे। उसी प्रकार महारानी विक्टोरियाने बलवेके बाद घोषणापत्र निकालकर भारतवासियों और यहाँके देशी राज्योंके अधिकारको स्वीकार किया था। इससे लोगोंके मनमें विश्वासकी जड जम गयी, जिससे राज्यकी नींव बडी मजबूत हो गयी।

इन लडाइयोंमें मारियस और सुल्ला रोमके मुख्य सरदार थे। इस समय मारियसकी उम्र ७० वर्षकी थी। सुल्ला जवान था। वे एक दूसरेसे द्वेष रखते थे। इस अन्तिम युद्धमें अन्तिम विजय सुल्लाकी ही हुई। इससे मारियसको बहुत

बुरा लगा। इतना बूढा हो जाने पर भी मारियसकी महत्वाकांक्षा घटी नहीं थी।

इस युद्धके समाप्त होते ही रोमको दूसरे युद्धमें लिप्त होना पडा। एशियाखण्डमें भी रोमराज्य था। उसके उत्तरमें पाण्टस नामका एक देश था। वहाँ मिथ्रिडेट्स राजा राज्य करता था। उसके पूर्वज बडे पराक्रमी थे। मिथ्रिडेट्स भी कम शूर नहीं था। वह, देश जीत जीत कर अपना राज्य बढाता जाता था। उसने जब क्यापाडोशिया देश जीतकर अपने एक मित्रको दे दिया, तब विथिनिया देश पर चढाई की। अतएव उसका सामना करनेके लिए रोम सरकारने सुल्लाको नियुक्त किया। किन्तु मारियस उसकी नियुक्ति रद्द करानेका प्रयत्न करने लगा। मारियस ७० वर्षका बूढा था तो भी उसका साहस कम न हुआ था। वह जवानोंकी तरह युद्ध और खेलोंमें बडे उत्साहसे भाग लेता था। वह लोगोंको दिखाता था कि यद्यपि मैं बूढा हो गया हूँ तो भी साहस और काम करनेमें नवयुवकोंसे किसी भाँति कम नहीं हूँ। उसने अनेक प्रयत्न कर लोगोंके मन फिरा दिये और पब्लियस स्लिसियस रुफस नामक ट्रिब्यूनको अपनी ओर कर लिया। उसकी सहायतासे पाण्टस देशपर चढाई करनेके लिए अपनी नियुक्ति करवा ली। इससे चिढकर सुल्लाने अपने पक्षवालोंकी सहायतासे मारियसकी नियुक्ति करनेवाले अधिकारीको मार डाला और स्वय पाण्टस देशकी ओर जानेकी तैयारी करने लगा। मारियसने नयी सेना इकट्ठीकर सुल्लाको रोकना चाहा, किन्तु वह सफल मनोरथ नहीं हुआ। उसे वहाँसे भागना पडा, क्योंकि उसका सिर काटकर लानेवालेको इनाम देनेका इश्तिहार दिया गया था। वह अफ्रिका भाग

जानेवाला था। परन्तु इटलीके किनारे जहाज लगनेपर उसे मालूम हुआ कि उसके पकडनेवाले पास ही आ पहुँचे हैं। इसलिए वह जङ्गलमें भाग गया। वहाँ उसने सारी रात वितायी। तदनन्तर वह भटकता हुआ मिन्टयूरनी गाँवमें जा पहुँचा। वहाँ वह नावपर चढ़ने ही वाला था कि इतनेमें उसके पीछा करनेवाले लोग वहाँ भी जा पहुँचे। परन्तु वह नावपर चढ चुका था। वे मल्लाहसे मारियसको उनके सुपुर्द कर देने या समुद्रमें ढकेल देनेके लिए कहने लगे। उन्होंने मल्लाहको बहुत डराया धमकाया। परन्तु उनकी बन्दर घुडकियोंसे मल्लाह डरा नहीं। उसे दया आ गयी। मारियसको नावपर रखना हानिकारक समझकर मल्लाहने उसे लिरिस नदीके उद्गमके पास एक स्थानपर उतार दिया। वहाँ वह एक गरीब किसानके यहाँ रहा, किन्तु उसे पकडनेवाले वहाँ भी आ पहुँचे। तब वह वहाँसे भागकर एक दलदलमें जा छिपा। परन्तु शत्रु वहाँ भी पहुँच गये और वह बन्दी कर लिया गया। वह मिन्टयूरनी गाँवके जेलखाने में रखा गया। उसको मारनेके लिए एक गुलाम नियत किया गया था। वह गुलाम हाथमें नङ्गी तलवार लेकर मारियसके पास पहुँचा। तब वह तेजस्वी बूढा उसकी ओर देखकर बोला,—"अरे, मारियसको मारनेके लिए तेरा हाथ कैसे उठता है?" यह सुनते ही गुलाम घबरा गया और तलवार फेंककर भागा। इसके बाद उस गाँवके अधिकारियोंने उसके पिछले पराक्रमका स्मरणकर उसे अफ्रिका चले जाने दिया।

सुल्ला और मारियसके रोमसे चले जानेपर रोममें पुन गडबडी होने लगी। लूसियस कार्नेलियस सिन्ना नामक कौंसल लोगोंको अपने अनुकूल कर मारियसको रोम बुलानेके

लिए उद्योग करने लगा। इस समय पक्षपातकी बात बहुत बढ़ गयी थी। एक बार लोकमत लेते समय मारपीट हो गयी और सैकड़ों लोग मारे गये। अन्तमें सुल्लाके पक्षके लोगोंने सिन्नाको रोमसे निकाल दिया। परन्तु इटलीके लोगोंकी सहायता लेकर वह रोमपर चढ़ाई करनेकी तयारी करने लगा। इस समय मारियस भी अपने साथियों सहित इटली पहुँच गया था। वह भी सिन्नासे जा मिला। उन्होंने रोमपर अधिकार कर लिया। मारियस सुल्लाके पक्षके लोगोंसे बदला लेना चाहता था। इसलिए उसने उसके पक्षके लोगोंका वध करना शुरू किया। सैकड़ों मनुष्य मारे गये। सुल्लाका घर गिरा दिया गया और उसकी जायदाद जब्त कर ली गयी। पाँच दिनतक रोममें कत्लआम होता रहा। सिन्ना इससे उकता गया। उसने लोगोंका वध करनेवाले मारियसके साथियोंका वध करवाकर यह मारकाट बन्द करवायी। तदनन्तर मारियस और सिन्ना दोनों कौसल बन कर रोमका राज्य करने लगे। मारियस सातवीं बार कौसल हुआ था। परन्तु वह अधिक समयतक जीवित न रहा। वह बूढ़ा हो गया था। उसे देशत्यागके समान भारी सङ्कटोंका सामना करना पड़ा था जिससे वह और शक्तिहीन हो गया था। इनके सिवा उसे यह डर लगा रहता था कि कहीं सुल्ला पुनः रोमपर अधिकार न कर ले। वह शराब भी बहुत पीता था। उसके शक्तिहीन होनेका यह भी एक कारण था। मनमें शान्ति न रहनेसे उसे रातमें नींद भी नहीं आती थी। यदि नींद आ भी जाती तो वह बुरे बुरे स्वप्न देखा करता था। अस्तु, मारियसके मरनेसे लोगोंके मनका बोझ हलका हो गया। उससे लोगोंका पिण्ड छूटा।

मारियसको रोमसे निकाल देनेपर सुल्ला ग्रीस गया। क्योंकि अथेन्स और थीब्स नगर रोमके अत्याचारसे घबरा कर मिथ्रिडेट्सके पक्षमें मिल गये थे। अथेन्समें मिथ्रिडेट्स-की बहुतसी सेना थी। सुल्लाने उसे घेर लिया। सुल्ला कई दिनतक घेरा डाले पड़ा, पर नगर हाथ न आया। अन्तमें वे लोग थक गये। चहारदीवारीका एक भाग सूना देखकर सुल्लाने उधरसे नगरमें प्रवेश किया। कत्लआमका हुक्म हो गया। नगर लूट लिया गया। सुल्लाने विक्रमसे ८६ वर्ष पहले अथेंस नगर जीता था तदनन्तर वह मिथ्रिडेट्सका पीछा करता हुआ बिओशिया प्रान्तमें गया। चिरोनिया और आर्चो-मेनसके युद्धमें मिथ्रिडेट्स हराया गया। तदनन्तर विक्रमसे २७ वर्ष पहले वह हेलेस्पाएट पारकर एशियामें घुसा। मिथ्रि डेट्सने वहाँ बसे हुए रोमन लोगोंको मार डाला था। उसने दूसरे लोगोंको भी बहुत तंग किया था। इसलिए वे किसी पराक्रमी पुरुषकी राह देख रहे थे, जो देशमें शान्ति स्थापित करे। सुल्लाने यह अवसर हाथसे जाने नहीं दिया। उसने वहाँके धनी लोगोंसे बहुतसा धन लिया। मिथ्रिडेट्स-से सब जीते हुए प्रान्त छुड़ा लिये। उसने ग्रीस, मासिडो-निया और एशिया माइनरकी राज्य व्यवस्था पूर्ववत् कर दी। उसने अपने सैनिकोंको पुरस्कार देकर सन्तुष्ट किया। तद-नन्तर १६०० जहाजोंके साथ सुल्ला इटलीकी ओर रवाना हुआ। इस समय लूटमें सुल्लाको बहुत माल मिला था। इस लूटमें उसे आरिस्टाटल और थियोफ्राटसके ग्रन्थ भी मिले थे। ये ग्रन्थ वह अपने साथ रोम ले गया। सुल्ला युद्धके लिए विदेश गया था किन्तु उसका विद्या-व्यसन वहाँ भी नहीं छूटा था। युद्धमें लगे रहनेपर भी सुल्ला ज्ञानोपार्जन करना नहीं भूला

था। इन ग्रन्थोंके प्राप्त होनेसे रोमके जिज्ञासुओंको नया ज्ञान भण्डार मिल गया था।

इटली रवाना होते समय सुल्लाने रोमके सिनेटको एक पत्र लिखा था। उसमें उसने अपने युद्धका खाका खींचते हुए लिखा था कि मैं रोम आ रहा हूँ। मैं अपने विरोधियों-का नाश करूँगा। रोमके प्रजासत्तात्मक राज्यमें ऊधम मचाने वालोंका वध किये बिना न रहूँगा। पत्र पढते ही रोमके सिनेटके छक्के छूट गये। सिनेटके सभासदोंने सुल्लासे नम्रता पूर्वक बर्ताव करनेका निश्चय किया। परन्तु सिन्ना और दूसरे कांसल कार्बोको यह बात ठीक न मालूम हुई। तब सिन्ना साम्नाइट और लुकेनियस लोगोंकी सहायतासे सुल्लाका सामना करनेके लिए एड्रियाटिक समुद्रके पार पहुँचा। किन्तु बीचमें ही उसके सिपाहियोंने उसका खून कर डाला।

सिन्नाका खून हो जाने पर कांसल कार्बो राज्यकार्य चलता रहा। उसने सिन्नाके स्थान पर नवीन कांसलका चुनाव नहीं होने दिया। इस अवधिमें उसने अपने शत्रुओंसे बदला ले लिया इतनेमें सुल्ला इटली आ पहुँचा और वह रोम नगर पर अधिकार कर लेनेकी तयारी करने लगा।

इधर इटली पर तो यह ग्रह लग रहा था और उधर रोम-के क्यापिटोल नामी किलेमें एकाएकी आग लग गयी। सारा किला जलकर भस्म हो गया। इसके साथ ही रोमके भविष्य कथनकी सिबिलाइन पुस्तकें भी जल गयीं।

हम ऊपर लिख आये हैं कि साम्नाइट लोगोंने मारियस का पक्ष लिया था। सुल्लाकी सर्वत्र विजय हुई थी। इससे इन लोगोंको भय होने लगा कि कहीं सुल्ला रोमपर भी अधि कार न कर ले। उन्होंने सुल्लाके आनेके पहले ही रोमको नष्ट

कर डालनेका विचार किया और सुल्लाकी आँख बचाकर उन्होंने रोमपर धावा किया। सुल्लाने उनका पीछा किया। कोलाइन दरवाजेके पास दोनों सेनाओंकी मुठभेड हो गयी। तुमुल युद्ध हुआ। सुल्लाकी जीत हुई। एक ग्रन्थकारने लिखा है कि इस युद्धमें ५० हजार लोग मारे गये। आठ हजार साम्नाइट लोग कैद कर लिये गये थे। सुल्लाने रोमनगरके खेलोंके मैदानमें इनका भी वध करवा डाला।

इस प्रकार रोमकी रक्षा कर सुल्ला अपनेको रोमका डिक्टेटर बनानेका प्रयत्न करने लगा। उसने नाना प्रकारसे पहले अपने सैनिकोंको वशमें कर लिया और तब अपने शत्रुओंसे बदला लेनेका उपाय सोचने लगा। उसने शुरूमें ही कह दिया था कि अपने शत्रुओंका समूल नाश किये बिना मैं रोममें उत्तम राज्य व्यवस्था स्थापित न कर सकूँगा। निदान, कोलाइन फाटकके पासकी लडाईके दूसरे दिन सुल्लाने बलोना देवीके मन्दिरमें सिनेटके सभासदोंको बुलाया। सुल्ला सभामें भाषण कर रहा था कि मन्दिरके पास ही बहुतसे लोगोंके चिल्लानेकी आह भरी आवाज सुनाई दी। सभासद इसका कारण जाननेके लिए आपसमें कानाफूसी करने लगे। यह देखकर सुल्लाने कहा,—"उह, इसमें क्या है। मैंने कुछ दुष्ट लोगोंको सजा देनेकी आज्ञा दी है। यह उन्हीं लोगोंकी आवाज है।" हम ऊपर लिख चुके हैं कि सुल्लाने आठ हजार साम्नाइट लोगोंके वध करनेकी आज्ञा दी थी। यह उन्हींका करुण स्वर सुनाई दे रहा था। इससे साफ मालूम होता है कि यह सेनापति कितना क्रूर हृदयी था।

साम्नाइट लोगोंको वध करालेने पर सुल्लाने रोम नगरमें रहनेवाले अपने शत्रुओंसे बदला लेनेका निश्चय किया। एक

रोज सभामें भाषण करते समय उसने अपने पराक्रमका वर्णन करते हुए लोगोंसे कहा कि यदि तुम लोग मुझसे अच्छी तरह पेश आओगे तो मैं तुम्हें कष्ट न दूँगा। परन्तु मैं अपने शत्रुओंको, चाहे वे छोटे हों या बड़े, मारे विना न रहूँगा। ये शब्द उसके मुँहसे निकलने भी न पाये थे कि रोममें उसके शत्रुओंका वध होने लगा। ऐसा अवसर पाकर उसके पक्षपातियोंने अपने निजके शत्रुओंको भी मारनेमें कसर न की। इस मारकाटमें कई प्रसिद्ध पुरुष यमसदन पहुँचा दिये गये। हजारों वेकसूर लोगोंका बलिदान किया गया।

यह भयानक मारकाट कई दिनोंतक जारी रहा। एक दिन क्याटुलस नामक सिनेटके सभासदने सभामें सुल्लासे पूछा कि यह नरमेध और कितने दिनों तक होता रहेगा। उत्तरमें सुल्लाने उसे एक नामावली दिखायी। उसमें ८० मनुष्योंके नाम थे। उस नामावलीके नीचे लिखा हुआ था कि विधानद्वारा इनकी रक्षा न की जा सकेगी, इनका वध निश्चय होगा और इन्हें मारनेवालेको पुरस्कार दिया जायगा। यह सुनकर सिनेटके सभासद् अकचका गये। वे कानाफूसी करने लगे। परन्तु सुल्ला उनके रगरगसे परिचित था। उसके पास शक्तिशाली सेना थी। इसलिए उसे विलकुल डर न था। सुल्ला प्रतिदिन नये नये नाम प्रसिद्ध कर अपने प्रतिपक्षियोंको मरवाने लगा। ज्योंहीं कोई पूछता कि अब यह नरमेध यज्ञ कब पूरा होगा, सुल्ला मुस्कराकर यही जवाब देता कि ठहरो, अभी बहुतों के नाम मुझे याद नहीं हुए हैं।

केवल रोममें ही नहीं, इटलीके अन्य नगरोंमें भी मारकाट हो रही थी। वहाँ भी सहस्रों निरपराधी मनुष्योंका बलिदान हो रहा था। लोग अपने अपने शत्रुओंका नाश करानेके लिए

सुल्लाके गुलामों और नौकरोंको भेंट देकर उनका नाम नामावलीमें लिखवा देते थे। सब लोग डरने लगे। क्योंकि कौन जानता था कि कब किसका नाम नामावलीमें प्रसिद्ध हो जायगा। सब लोग चिन्तासे व्याकुल हो गये। बेचारोंका खाना पीना सब छूट गया। यह नरमेध यज्ञ बराबर सात महीनेतक होता रहा। इससमयतक लगभग एक लाख रोम निवासी, तीन हजार मानकरी, एक सौ सिनेट के सभासद और कौंसलकी योग्यताके लगभग बीस मनुष्य मारे गये। सुल्लाने इनकी जायदाद बेचवाकर उसकी कीमत सरकारमें जमा करा ली। यह सब धन उसने अपने सिपाहियोंको बाँट दिया। उस जमानेमें रङ्कसे राव और रावसे रङ्क होनेमें एक पल भी नहीं लगता था। लोगोंके जान माल सुरक्षित न थे।

सुल्लाके इस मारकाटका परिणाम बहुत बुरा हुआ। नामावलीमें जिसका नाम निकल जाता था उसे जो आश्रय देता उसे प्राणदण्ड देनेका विधान था। इससे कोई उन्हें आश्रय नहीं देता था। नामावलीमें अपना नाम देखते ही लोग गाँव छोड़कर पहाड़ोंमें भाग जाते थे। इससे बहुतसे लोगोंके निर्वाहके साधन नष्ट हो गये थे। अत बेचारोंको अपनी उदरपूर्तिके लिए लोगोंको लूटना पड़ता था। इट्रूरिया, साबेलिया, साम्निम तथा लुकेनिया प्रान्तोंके पहाड़ोंमें लुटेरोंके झुण्डके झुण्ड फिरा करते थे। लोगोंके जानमाल बिलकुल सुरक्षित न थे।

स्पेन, गाल, सिसिली इत्यादि इटलीके बाहरके देश रोमके अधीनस्थ थे। सुल्ला उन्हें कष्ट देने लगा। सुल्लाके अत्याचारसे तङ्ग आकर बहुतसे लोग उन देशोंमें आ बसे। इसलिए सुल्लाने सेना भेजकर उन प्रान्तोंको तङ्ग करना शुरू

किया। इसके अतिरिक्त रोमके शत्रु चारों ओर सिर उठा रहे थे। उनको दबानेके लिए धनकी बहुत जरूरत थी। इस-लिए सुल्ला प्राचीन कर-विधानपर पानी फेरकर लोगोंसे और अधिक कर मॉगने लगा। सुल्लाकी मॉग पूरी करनेके लिए लोगोंको अपने नगरकी सार्वजनिक भूमि, मन्दिर, बन्दरगाह, नगरके कोटके पत्थर आदि रेहन रखने पडे। इसके अतिरिक्त सुल्लाने धन इकट्ठा करनेके लिए एक और युक्ति निकाली। उसने मिश्र देशकी सार्वभौम सत्ता दूसरे टालमी अलेग्जण्डरको बेच दी और उससे मृत्यु पत्रमें वह सत्ता पुन रोमको दे देनेके लिए लिखवा लिया। उसने दूसरे देशोंके राजाओंको डरा धमकाकर बहुतसा धन इकट्ठा किया। इस प्रकार वह सर्वत्र अत्याचार करने लगा, जिससे रोमकी धवल कीर्तिमें बडा धब्बा लगा।

सुल्लाका अत्याचारपूर्ण शासन विक्रमाब्दसे २५ वर्ष पहले कार्तिककी १६ वीं तिथिसे अर्थात् कोलाइन फाटकके पास साम्नाइट लोगोंको पराजित करनेके बाद—शुरू हुआ था। उसने सारे रोमन राज्यको हैरान किया था। परन्तु स्मरण रहे कि अभीतक दोनों कौंसल जीवित थे। अत सुल्लाका रोममें कानूनन कुछ भी अधिकार न था। वह केवल सेनापति था। रोमके कानूनसे उसे नगरमें आनेका अधिकार न था। इसी कारण वह नगरसे बाहर फौजकी छावनीमें ही रहता था। इस तरह वह लोगोंका दिखाया चाहता था कि वह रोमन राज्यविधानका उल्लङ्घन करना नहीं चाहता। परन्तु नगरसे बाहर रहनेपर भी उसने सारे देशको तबाह कर डाला था। ऊपर हम उसकी निर्दयताका चित्र खींच चुके हैं। इसी समय एक कौंसल मर गया। तदनन्तर सिसिलीमें सुल्लाके

एक सरदारने दूसरे कौंसल कार्बोका खून कर डाला। उन दोनों कौंसलकी एक वर्षकी अवधि पूरी होनेमें थोडे दिन शेष थे। अवधि पूर्ण होनेतक सिनेटने सुल्लाके एक सरदारको व्यवस्थापक बनाया। इस सरदारने सुल्लाके कोशिश करनेपर उसे डिक्टेटर बनानेका प्रस्ताव पेश किया। सिनेटने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। करीब १२० वर्षोंसे जिन रोमके लोगोंने किसीको डिक्टेटर न चुना था उन्होंने इतने समयके उपरान्त सारे देशको तङ्ग करनेवाले सुल्लाको ही डिक्टेटर बनाया। इसके अतिरिक्त केवल छ मासके लिए डिक्टेटर चुननेका नियम था। परन्तु इस नियमकी अवहेलना कर रोमके लोगोंने उसे जबतक वह चाहे तबतकके लिए डिक्टेटरका पद दे दिया। इस प्रकार रोमके लोगोंने अपने अधिकारोंकी परवाह न कर अपनेको अनाथकी नाईं उस अत्याचारी राक्षसके अधीन कर दिया।

डिक्टेटर होते ही सुल्ला अपने इच्छानुसार रोमके राज्य-पद्धतिकी व्यवस्था करने लगा। उसके विरोधी सब मारे ही जा चुके थे। इसलिए अब उसका विरोध करनेवाला कोई भी नहीं रह गया था। इस समय रोम-राज्यमें लोकमत बहुत प्रबल हो गया था। सुल्ला लोकमतकी प्रधानताको नष्ट कर राज्यका सूत्र बडे बडे लोगोंके हाथमें देना चाहता था। उसने और मारियसने करीब ४०० सिनेटके सभासदोंको मार डाला था। सुल्लाने उनके स्थानपर अपने पक्षके लोगोंको नियुक्त कर दिया। इससे सभामे उसका पक्ष प्रबल हो गया। वह उनके मतके जोरसे अपनी इच्छानुसार नियम स्वीकार करवा लेता था। पहले जन-सङ्घों द्वारा स्वीकार किये हुए विधान ही अमलमें लाये जाते थे। उसने यह नियम रद्द कर दिया। ट्रिब्यून पदाधिकारियोंके सब अधिकार छीन लिये।

अब ट्रिब्यूनके पदाधिकारी न तो जन सङ्घकी सभामें विधानके प्रस्ताव ही पेश कर सकते थे और न सिनेट सभामें पेश किये हुए प्रस्तावके विरुद्ध मत दे कर उसे अस्वीकार ही कर सकते थे। जन-सङ्घके नेताओंका प्रभाव कम करनेके लिए उसने यह भी आज्ञा निकाली कि ट्रिब्यूनका अधिकार पाये हुए मनुष्यको कौंसलका पद न दिया जाया करेगा। साधारण लोगोंको मुख्य न्यायाधीश चुननेका अधिकार प्राप्त था। उसने उनसे यह अधिकार छीन कर सिनेट सभाको दे दिया।

सुल्लाके इस व्यवहारको देखकर यही मालूम होता है कि वह इटलीके लोगोंको दिये हुए अधिकार उनसे छीन लिये होगा। परन्तु नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। उसने इतने लोगोंका वध कराया था कि रोमकी जनसंख्या बहुत ही कम हो गयी थी। इससे उसने ऐसा नहीं किया। इसके अतिरिक्त रोमन स्वत्व प्राप्त करनेके लिए इटलीके लोगोंको बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था। इसलिए बहुत कम लोग रोमन स्वत्व प्राप्त करनेके झंझटमें पड़ते थे। अत सुल्लाको उनसे कुछ भय न था।

राज्यविधान तथा नियमोंका नाम मात्रके लिए लोकमत द्वारा पुष्ट होना आवश्यक समझ कर सुल्लाने उन सब गुलामोंको जिनके स्वामी वध किये गये थे, स्वतन्त्र कर उन्हें रोमन स्वत्व दे दिये। उसने अपने सवा लाख सैनिकोंको इटलीमें भिन्न भिन्न स्थानोंपर उपजाऊ जमीन मुफ्तमें दे दी थी। उनसे उसने उपनिवेश बसाये और उन्हें रोमन अधिकार दे दिये। इससे सुल्ला का पक्ष बलवान हो गया, किन्तु इसके कुछ दिन बाद राज्यको बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी।

रोमके लोगोंकी नैतिक स्थिति सुधारनेके लिए—उनको ऐश आरामसे दूर रखनेके लिए—उसने भोजनके सम्बन्धमें

नियम बनाये। उसने अमीर और ग़रीब लोगोंके लिए खाने की चीजें और उनका मूल्य निर्दिष्ट कर दिया था। ये नियम बहुत दिन तक न चल सके।

इन नियमोंके अमलमें आनेपर सुल्लाने राज्यसे अपना सम्बन्ध अलग करना चाहा। क्योंकि उसे जो कुछ करना था वह उसने कर लिया था। उसने अपने इष्टमित्रों और अनुयायियोंको जमीन देकर अच्छी व्यवस्था कर दी थी, इस कारण उसे पूर्ण विश्वास था कि वे सकटमें उसका साथ जरूर देंगे। एक बार सब लोगोंको इकट्ठा कर सुल्लाने एक भाषण दिया। वक्तृतामें उसने अपने किये हुए कामोंकी मीमांसा की थी। तदनन्तर उसने सब लोगोंको उत्तम भोज दिया। भोजके लिए इतनी सामग्री बनायी गयी थी कि दो रोज तक खायी जाने पर भी खतम न हुई। तब बहुत सी सामग्री टाइबर नदीमें बहा दी गयी। तदनन्तर वह अपने सिंहासनसे नीचे उतर आया और उसने अपने साथके सिपाहियोंको—अपने अरदलीके सब लोगोंको—छुट्टी दे दी। अर्थात् वह साधारण मनुष्य हो गया।

इस प्रकार विक्रमाब्दसे २२ वर्ष पहले सुल्लाने अपनी खुशीसे राज्य छोड दिया। वह रोमके पासवाले प्यूटेओली नामक अपनी जागीरके गाँवमें जाकर रहने लगा। उसने अपना शेष जीवन ग्रन्थ लिखने और आनन्द प्रमोदमें बिताया। वह विद्वानोंको बहुत चाहता था। वह घण्टों उनसे वाद-विवाद किया करता था। उसने स्वय अपना जीवनचरित्र लिखा था। जो, बोधप्रद और मननीय है। इसकी मृत्यु विक्रमाब्दसे २१ वर्ष पहले हुई। उसका अन्तिम सस्कार बडे ठाटबाटसे किया गया। उसके शवके साथ हजारों आदमी स्मशान

तक गये थे। सुल्लाने मारियसका शव कब्रसे निकलवा कर ओनिओ नदीमें फेंकवा दिया था। उसके शवका कोई अपमान न करने पाये इसलिए उसने अपना शव जलानेके लिए कहा था। तभीसे उसके जातिके लोग मृतकोंकी शव जलाने लगे।

सुल्लाके चरित्रका सिंहावलोकन करनेसे हमें रोवेस्पियर का स्मरण हो आता है। ये दोनों ही नरासुर थे। मारियस और सुल्लाकी तुलना करनेसे मालूम होता है कि मारियस सुल्लासे लाख दरजे अच्छा था। मारियस क्रोधके आवेशमें ही लोगोंको मरवाता था। परन्तु सुल्ला खूब सोच विचारकर युक्तिपूर्वक मनुष्य वध कराता था। सुल्ला महाराक्षस था। इस विवेचनको पढ़ते समय हमें नेपोलियन बोनापार्टका स्मरण हो आता है। परन्तु इन सब महत्वाकांक्षी व्यक्तियोंमेंसे सुल्ला नीचातिनीच था। वह बहुत कामी था। साठ वर्षका बूढ़ा होने पर भी उसकी विषयवासना तृप्त नहीं हुई थी। अपनी पाशविक इच्छाको पूर्ण करनेके लिए वह पाप करनेसे कभी बाज़ नहीं आता था। अन्तमें वह प्रमेह सदृश किसी रोगसे पीड़ित होकर ही मरा था। एक ग्रन्थकारने लिखा है कि अपनी विषयवासना तृप्त करनेके लिए ही सुल्ला राजकार्यसे अलग हो गया था।

आठवाँ परिच्छेद

सरटोरियस, स्पाटकिस, मिथ्रिडेट्स आदिसे युद्ध, पाम्पे और सीजरका उदय

सुल्लाके राज्याधिकार छोड़नेपर राज्यका सूत्र रोमके चतुर और प्रभाव शाली मनुष्योंके हाथ लगा। सुल्लाने लोकपक्षके प्रमुख लोगोंको मार डाला था। अतः इस समय अधिकतर धनी लोगोंका ही प्रभुत्व था। इनमें मेटेलियस पायस, लिसिनियस ल्युकुलस, लिसिनियस क्रासस आदि प्रमुख थे। मेटेलियस पायस राजनीतिके कामोंमें अधिक निपुण न था। परन्तु नैतिक दृष्टिसे उसका चालचलन, बहुत ही अच्छा था। ल्युकुलस शूर और धनी तथा बहुत ही उदार था। प्रजाके साथ वह अच्छा बर्ताव करता था। इसने कभी प्रजापर अत्याचार नहीं किया। उस समय रोमके सूबेदार प्रजापर बहुत अत्याचार करते थे। वे प्रजाका धन लूट लेते थे। क्रासस भी बहुत धनवान था। उसके बापने बहुत सा धन इकट्ठा कर रखा था। इसने भी अन्याय से बहुत सा धन इकट्ठा किया था। जिस समय सुल्ला बध किए जानेवाले लोगोंकी नामावलीकी मुनादी कराता था, उस समय यह उन लोगों की जायदाद कम कीमतमें खरीद लेता था। इस तरह वह बड़ा धनवान हो गया था। इसके अलावा उसके पास बहुतसे गुलाम थे। उसके अधिकांश गुलाम अच्छे मुहर्रिर और उत्तम कारीगर थे। यह उन्हें भाड़े पर दिया करता था।

इस प्रकार भी वह बहुत सा धन उपार्जन कर लेता था। उसने अपने रहनेके घरके अतिरिक्त दूसरी इमारत नहीं बनवायी थी। इमारतोंमें रुपया खर्च करना वह अपव्यय समझता था। वह धनवान कहलानेके लिए ही धन इकट्ठा करता था उसने अपने धनका उपयोग सुखोपभोगके लिए कभी नहीं किया। वह अधिक पढा लिखा नहीं था किन्तु तत्वज्ञान और इतिहास वह अच्छी तरह जानता था। प्रयत्न करनेसे वह उत्तम वक्ता हो गया था। उसका भाषण बहुत अच्छा होता था। लोग उसका कहा झट मान लेते थे।

इस समय दो और व्यक्तियोंने भी प्रसिद्धि पायी थी। इन दोनोंका जन्म एक ही दिन हुआ था। उनमेंसे एक मार्कस टुलियस सिसरो था। वह विक्रमाब्दसे ४६ वर्ष पहले जन्मा था। यह लब्ध प्रतिष्ठित, अभिमानी और हठी था। यह प्रसिद्ध ग्रन्थ लेखक और अनुपम वक्ता था। उसने ईश्वर सम्बन्धी तथा अन्य गहन विषयों पर कई ग्रन्थ लिखे हैं। ये ग्रन्थ अब भी महाविद्यालयोंमें पढाये जाते हैं। उसके पूर्वज भी बडे विद्वान थे। वह तत्कालीन सब विषयोंमें पारङ्गत था। वह ज्ञान सम्पादनार्थ प्रयत्नशील रहा करता था। विद्योपार्जनके लिए वह ग्रीस गया था और वहाँपर इसी उद्देश्यसे कुछ समय तक ठहरा था। वहाँसे वह एशिया माइनर भी गया था। छब्बीस वर्षकी अवस्था प्राप्त होनेपर वह वकीली करने लगा। वह तत्कालीन प्रसिद्ध वकीलोंमेंसे एक था। मारियस और सुल्लाके झगडेमें उसे लडाईका भी अनुभव हो गया था।

दूसरा व्यक्ति पाम्पे था। उसने अपने पितासे युद्ध विद्या सीखी थी। वह बहुत ही शूर था। वह आरम्भसे ही सुल्लाका पक्षपाती था। उसीने रोमकी सेनाको सुल्लाके पक्षमें मिलाया

था। वह सिपाहीगिरी करता था तो भी सुल्लाकी तरह तत्व ज्ञान और भाषा विषयमें भी उसकी अच्छी गति थी। वह एक उत्तम वक्ता था। पाम्पे दुराचारी नहीं था। तत्कालीन परिस्थिति पर विचार करनेसे मालूम होता है कि उसका आचरण निर्मल था। परन्तु वह बहुत ही गम्भीर स्वभावका था। वह अपने मनकी बात किसीसे नहीं कहता था। पाम्पेकी शक्तिमें बढ़ती देखकर सुल्ला उससे जलने लगा। एक बार वह सुल्लाकी आज्ञासे अफ्रिका गया था। वहाँ उसने अच्छा नाम कमाया। अफ्रिकाका काम पूरा कर पाम्पे अपनी सेना सहित वापस लौटा। सुल्लाने उसे कहला भेजा कि वह सेनाको छुट्टी देकर रोम आये। पाम्पेने उसकी बात न मानी। पाम्पेके आनेकी खबर सुनकर रोमके लोगोंको बहुत आनन्द हुआ और उसकी अगवानीके लिए वे नगरसे बाहर आये। सुल्लाको भी उनके साथ जाना पड़ा। उसने पाम्पेको "म्याग्नस" (महान्) शब्दसे सम्बोधित किया। जयध्वनिसे दशों दिशाएँ गूँज उठीं। पाम्पेने अपना जुलूस निकालनेकी परवानगी माँगी। वह सिनेटका सभासद न था, तो भी लोगोंने उसे जुलूस निकालनेकी परवानगी दे दी!

केयस वेरिस नामक व्यक्ति भी इस समयतक प्रसिद्ध हो गया था। वह बहुत ही दुराचारी था। यदि सिसरोकी लिखी हुई बातें सच मान ली जायँ तो कहना पड़ेगा कि वह एक प्रसिद्ध लुटेरा था। इसके चरित्रसे तत्कालीन रोमके सूबेदारोंके आचरणका पता लग जाता है। वह बहुत ही अत्याचारी था। नीचसे नीच व्यक्तिसे भी घूस लेनेमें वह आगा पीछा नहीं करता था। प्रजाको लूट कर वह अपनी थैली भरा करता था। उससे सब लोग तंग आ गये थे। वह केवल द्रव्य-

लोभी ही न था, पर क्रूर, दुर्व्यसनी, दुष्ट, अविचारी और पाषाणहृदयी भी था। वह सदैव दुष्टोंकी सगतिमें रहा करता था। पहले वह मारियसके पक्षमें था। उसने अपने मित्रसे विश्वासघात किया और तब बहुत सा सरकारी पैसा हजमकर वह सुल्लासे आ मिला। सुल्लाने उसे ब्रुइजियम (ब्रडिसी) भेजा। वहाँ उसने बडी लूटपाट की। इसके बाद वह सिसिलिया भेजा गया। वहाँ उसने एक अधिकारीसे विश्वासघात किया। लोगोंपर अत्याचारकर उसने बहुत सा द्रव्य इकट्ठा किया। एक शहरने कुछ रोजके लिए उसे एक जहाज दिया था। वह उसे दबा बैठा। एक शहरमें दयाना देवताकी मूर्तिपर सोना मढ़ा हुआ था। पाम्पेने वह सब सोना खुरचवा लिया। यह सब धन खर्चकर वह रोमका सरदार बन गया। रोममें एक वर्षतक काम करनेपर वह सिसिली द्वीपका सूबेदार बनाया गया। वह अपने साथ एक उत्तम चित्रकार और एक कुशल शिल्पकार ले गया था। उसने उत्तम उत्तम कारीगरीके नमूने लोगोंसे जबरदस्ती छीन लिये। उसने अपने लोगोंसे किसानोंपर बहुत अत्याचार करवाया। उसने स्वय कई खेत कटवाये थे। उसने अपना खजाना भरनेके लिए एक और बुरे मार्गका अवलम्बन किया था। उसने पथिकोंको लूटनेके लिए आदमी तैनात किये थे। इस प्रकार उस दुष्टने अपरिमित सम्पत्ति जमा की थी। यह सम्पत्ति उसने सात जहाजोंमें भरकर रोम भेज दिया था।

केयस वेरिसने लोगोंको बहुत हैरान किया था। उससे तग आ लोगोंने रोम आकर उसपर फर्याद की। सिसरोको इन लोगोंने अपना वकील बनाया था। उसने केयस वेरिस-

कर केयस वेरिस वहाँसे चल दिया और मार्सेलसमें आकर रहने लगा। वह लगभग २७ वर्षतक मार्सेलसमें ठहरा था।

सुल्लाके पक्षके एक और व्यक्तिने भी प्रसिद्धि पायी थी। उसका नाम सर्जियस क्याटेलैन था। उसने सुल्लाके जमानेमें अनेक राक्षसी कृत्य कर अपनी थैली भरनेमें कसर न की थी। उसका सारा जन्म बदमाशी, दगाबाजी और दुर्व्यसनोंमें बीता था। एक भी ऐसा दुर्गुण न था जो उसमें न पाया जाता रहा हो, या यों कहिए कि वह सर्व दुर्गुण सम्पन्न था। उस जमानेमें घूसका बोलबाला था। उसने घूस देकर सब अधिकार प्राप्त कर लिये थे। वह कौंसल होनेके लिए जी जानसे कोशिश कर रहा था। परन्तु उसका प्रयत्न सफल न हुआ। एक दूसरा ही मनुष्य कौंसल चुना गया। इससे चिढ़ कर उसने उस कौंसलका खून करनेके लिए षडयन्त्र रचा। परन्तु उसके उतावलेपनसे उस षडयन्त्रका पता लग गया और उसका प्रयत्न निष्फल हुआ। इस असफलतासे निराश न होकर वह दुगुने उत्साहसे प्रयत्न करने लगा। अन्तमें उसका मनोरथ पूर्ण हुआ।

इस समय एक और व्यक्तिने भी प्रसिद्धि पायी थी। वह एक बहुत विलक्षण व्यक्ति था। उसका चरित्र महत्वपूर्ण घटनाओंसे परिपूर्ण है। वह अबसे हजारों वर्ष पहले हुआ है, किन्तु आज भी आचार-विचार, रहन-सहन पर उसके चरित्र का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उसका नाम रोमके इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिखा हुआ है। उसके राज्यका इतिहास महत्व-पूर्ण है। इसका नाम जुलियस सीजर था। यह पाम्पे और सिसरोसे ६ वर्ष छोटा था। यह मारियसके पक्षका था। लोग इसे बहुत चाहते थे। अपने पिताके सन्तोषार्थ उसने

एक धनीवंशकी स्त्रीसे विवाह किया था। परन्तु पिताकी मृत्युके बाद उसने उससे सम्बन्ध त्याग दिया था। तदनन्तर उसने सिन्नाकी पुत्री कार्नेलियासे विवाह कर लिया था।

रोम लौट आनेपर सुल्लाने पाम्पेसे अपनी स्त्रीको छोड़ देनेके लिए कहा। पाम्पेने उसकी बात मान ली। इसके बाद उसने सीजरसे भी यही बात कही। परन्तु उसने ऐसा करनेमे साफ इन्कार कर दिया। इस समय सीजरकी अवस्था १७ वर्षकी थी। सुल्लाकी आज्ञाकी अवहेलना करनेके कारण सीजरको रोममें रहना हानिकारक मालूम होने लगा। इस लिए वह सबैन लोगोंमें जाकर रहने लगा। परन्तु सुल्लाने क्षमा कर उसे रोम बुला लिया। तो भी सीजरको सुल्लाका भय बना रहता था। इसलिए वह फिर वहाँसे चल दिया और जबतक सुल्ला जिन्दा रहा उसने रोममें पैर नहीं रखा। इस समय वह विद्योपार्जन करनेके लिए प्रवास कर रहा था। अनेकों सकट सहकर बडे परिश्रमसे उसने खूब विद्याध्ययन किया। वह उत्तम लेखक और वक्ता बनकर रोम लौटा। रोम लौट आनेपर वह सार्वजनिक कामोंमें भाग लेने लगा।

जुलियस सीजर विलक्षण पुरुष था। वह सुल्लाके भयसे देश त्याग कर अन्य प्रदेशोंमें घूम रहा था। एक बार उसका जहाज एशिया माइनरके पास सिलिसियन नामक खलासियोंकी जातिके हाथ लगा। ये लोग जगली, क्रूर और अविचारी थे। वे रोमके लोगोंसे दिली दुश्मनी रखते थे। सीजर इन लोगोंके हाथ लगा। परन्तु सीजर बडा चालाक था। उसमें समयको देखकर काम करनेकी बुद्धि थी। मनुष्यकी परख करना वह जानता था। लोगोंको अपने वशमें करनेकी विद्या उसे मालूम थी। उन लोगोंके हाथ बन्दी हो जानेपर

इसने जुनियस ब्रूटस नामक सूबेदारको अपनी ओर कर लिया। उसने विक्रमाब्दसे २० वर्ष पहले सेना सहित रोमकी ओर प्रस्थान किया। उसने सिनेट सभाको कहला भेजा कि मैं लोगोंको उनके अधिकार वापस दिलानेके लिए आया हूँ। मैं डिक्टेटर होऊँगा। उसका सामना करनेके लिए क्याटुलस और पाम्पे सेना सहित आगे बढ़े। रोमके पास ही मलवियन पुलके पास युद्ध हुआ। लेपिडसकी हार हुई। इस हारसे उसके हृदयपर गहरी चोट लगी और सर्डीनिया द्वीपमें वह मर गया। उसके पक्षके बाकी बचे हुए लोग स्पेन देशमें भाग गये। इसके बाद धीरे धीरे रोम राज्यका सूत्र पाम्पेके हाथमें चला गया।

रोमका राज्याधिकार हाथमें आनेपर भी पाम्पे स्वस्थ न रह सका। उसके स्वस्थ न रहनेका कारण यह था कि मारियसके पक्षके अवशिष्ट लोगोंने सरटोरियस नामक मनुष्यको अपना अगुआ बना स्पेनमें बलवा कर दिया था। सरटोरियसके विचार पुष्ट होते थे। वह अनुभवी भी था। उसे कालचक्रके हेर फेरका अच्छा अनुभव था। जब मारियस जंगली लोगोंसे युद्ध करनेके लिए गाल देश गया, तब यह भी उसके साथ था। गुप्तचरका काम करनेमें यह बहुत चतुर था। वेष बदल शत्रुकी सेनामें घुसकर यह मारियसको बहुत सहायता पहुँचाता था। जिस समय सुल्ला मिथ्रिडेट्‌ससे लड़ रहा था उस समय यह सिन्नाके पक्षमें था। सिन्नाके साथ यह रोमसे भाग गया था। मारियस और सिन्नाने सुल्लाको हराकर रोमपर अधिकार कर लिया था, उस समय भी यह उनके साथ था। परन्तु मारियसने जो सुल्ला बध करनेकी आज्ञा दी थी, उसमें सरटोरियसका हाथ न था। बधकी

आज्ञा बन्द करानेके लिए इसने ही सिल्लाको मारियस लोगोंको मरवा डालनेकी सलाह दी थी। सुल्लाको रोम लौट आने पर सरटोरियस स्पेनमें भाग गया था। वहाँ उसने लुसिनानी लोगोंका पक्ष ग्रहण कर लिया था। उसने बहुतसी सेना इकट्ठी कर ली थी। स्पेनकी राज्यव्यवस्था उत्तम रखनेके कारण इसने अच्छा नाम पाया था। यह बहुत ही होशियार था। स्पेन देशके लुसिनानी लोगोंके लड़कोंको पढ़ानेके लिए इसने एक पाठशाला स्थापित की थी। प्राचीन कालमें इसे ही शिक्षाका महत्व मालूम था। दूसरे लोग शिक्षाको अधिक महत्व नहीं देते थे। इसके साथ एक सफेद हरिणका बच्चा था। भोले लुसिनानी लोग समझते थे कि यह बच्चा सरटोरियसके कानमें कुछ कहा करता था और इसीसे उसके मनोरथ सिद्ध होते थे। यही कारण था कि वे लोग उसके और भी अधिक भक्त हो गये थे। लेपिडसकी सेनाके अवशिष्ट सैनिक परपर्ना सरदारके साथ थे। वे भी उससे जा मिले थे। इस प्रकार उसे शक्तिशाली होते देख सिनेटको भय होने लगा। इसलिए विक्रमाब्दसे १८ वर्ष पहले पाम्पे सेना सहित उधर भेजा गया। वह पाँच वर्षतक सरटोरियससे लड़ता रहा। परन्तु पाम्पे उसे जीत न सका। इधर सरटोरियसकी प्रवृत्तिमें अन्तर पड़ने लगा। वह अपने लोगोंपर अत्याचार करने लगा। क्रोधमें आकर उसने अपनी पाठशालामें पढ़नेवाले सरदारोंके लड़कोंको मरवा डाला। इससे वे सब लोग चिढ़ गये। परपर्ना उसका खूनकर सेनापति बन बैठा। परन्तु पाम्पेके सामने वह न ठहर सका। बलवाइयोंका साहस हवा हो गया। अन्तमें पाम्पेने उन्हें हरा दिया। परपर्ना इस युद्धमें मारा गया। पाम्पे आठ वर्षतक स्पेनमें लड़ता रहा था। इस

लड़ाईके समाप्त होनेका हाल सुनकर रोममें आनन्द मनाया गया। कारण सरटोरियससे सिनेट बहुत डरती थी। उसे यह डर था कि वह हानिबलके समान शक्तिशाली होकर कहीं रोमपर चढ़ाई न कर दे।

इधर विदेशसे युद्ध हो रहा था और उधर रोममें प्रजाकी शक्ति बढ़ती जा रही थी। लेपिडसने लोगोंको उनके अधिकार पुनः देनेका जो प्रयत्न किया था, वह निष्फल हुआ। परन्तु इससे लोगोंकी आशा दूनी हो गयी थी। विक्रमाब्दसे १६ वर्ष पहले, लिसिनियस ट्रिब्यूनने लोक सभामें भाषण किया। उसने अपने भाषणमें यह दिखानेकी चेष्टा की थी कि सुल्लाने ट्रिब्यूनके अधिकार क्यों छीन लिये थे। भाषणके अन्तमें उसने इस बातपर जोर दिया था कि अपने प्रतिनिधिको पुनः अधिकार दिलाये जानेका यत्न किया जाना चाहिए। लोगोंने यह बात स्वीकार कर ली। निदान, वैसा प्रयत्न होने लगा। अन्तमें विक्रमाब्दसे १८ वर्ष पहले लियसकॉटा नामक कौंसलको लाचार होकर यह नियम बनवाना पड़ा कि ट्रिब्यूनको राज्यमें बड़े बड़े पद देनेमें कोई हर्ज नहीं। उसी वर्ष ओपियस नामके ट्रिब्यूनने सिनेट सभामें एक विधानके प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया। सिनेट सभा लोकमतसे इतनी भयभीत हो रही थी कि उसने ओपियससे कुछ न कहा।

सरटोरियसकी मृत्युके बाद रोमपर दूसरा सङ्कट आया। इस समय रोमके लोग बहुत अभिमानी हो गये थे। वे गुलामोंपर बहुत अत्याचार करते थे। वे अपने मनोरञ्जनके लिए गुलामोंको तलवारें देकर युद्ध करवाते थे। गुलामोंको यह काम सिखानेके लिए एक पाठशाला स्थापित की गयी

माम्र्स्से १४ वर्ष पहले हुई। तब पाम्पे और क्रासस सेना सहित रोमकी ओर बढ़े। उनके साथ बहुतसे कैदी थे। रोम आनेपर झगडा खडा हो गया। पाम्पे कहता था कि मैंने विजय पायी और क्रासस कहता था कि मेरे कारण विजय हुई। इस समय पाम्पेने कहा था कि क्राससने साँपको छेडा ही मात्र था परन्तु उस विषधरको मारनेका श्रेय मुझीको है। परन्तु पाम्पेका कहना असत्य था। क्योंकि क्राससने ही स्पार्टाकसको मारकर बलवाइयोंको मार भगाया था। परन्तु क्राससकी अपेक्षा पाम्पे लोगोंको अधिक प्रिय था। लोगोंने कहा कि गुलामोंको जीतनेकी अपेक्षा स्पेनमें जाकर विजय पाना अधिक कठिन था। अत उन्होंने पाम्पेका ही अधिक आदर सत्कार किया।

विजय प्राप्त करनेपर पाम्पे रोम लौट आया और वह कौंसलका पद पानेके लिए कोशिश करने लगा। वह बहुत ही पराक्रमी था। यदि वह चाहता तो लोक मतकी परवाह न कर रोमका राज्याधिकार दबा सकता था। क्योंकि वह स्पेन आदि देशोंमें अपने पसीनेकी जगह खून बहानेके लिए तयार रहनेवाले मित्रोंको नियत कर आया था। वे लोग उसे अवश्य सहायता करते। परन्तु पाम्पेने सोचा था कि लोकमतके बलपर ही रोमके राज्यका सूत्रधार होना श्रेयस्कर है। कौंसल होनेके लिए बडे वयकी मर्यादा थी। पाम्पेकी उम्र कुछ कम थी। परन्तु रोमके लोग उससे बहुत प्रसन्न थे। इसलिए उन्होंने उसे कौंसल बनाया। क्राससको लोग नहीं चाहते थे। परन्तु पाम्पेके कारण वह भी कौंसल बनाया गया। पाम्पे मेहनती और समझदार था। इससे क्राससका तेज फीका पड गया। पाम्पे ही रोम राज्यका

मुख्य सूत्रधार बन बैठा। ये कौंसल विक्रमाब्दसे ३ वर्ष पहले बनाये गये थे।

राज्यका मुख्य सूत्रधार होना अच्छा तो है परन्तु राज्य-कर्त्ताका मन सदा अस्थिर रहता है। क्योंकि उसे राज्यका गुरुतर भार वहन करना पड़ता है। राज्यकी लाभ हानिसे उसका मन व्यग्र रहता है। अधिकार प्राप्त होनेके बाद शीघ्र पाम्पेको मालूम हो गया कि राज्य शकट हाँकना सहज नहीं है। शुरू शुरूमें वह क्रासस‌को दबाये रखता था। हमेशा उसके साथ अरदलीके सैनिक रहा करते थे। वह यह सब इसलिए करता था कि लोगोंपर उसका प्रभाव पड़े। परन्तु इससे उसका उद्देश सिद्ध न हुआ। तब वह शौर्यसे लोगोंपर रोब गाँठनेकी धुनमें लगा। भूमध्यसागरमें कुछ लोग लूट मार मचा रहे थे। अत वह उधर भेजा गया। ये लोग जहाज लूट लेते थे। कार्थेज और रोड द्वीपके राजाने इनका बन्दोबस्त कर रखा था। परन्तु कार्थेज नष्ट करनेके बाद रोमके लोगोंने रोड द्वीपके राजाको जहाजी सेना कम करनेके लिए मजबूर किया था। तबसे ये लुटेरे बेरोक टोक जहाज लूटा करते थे। इसका कारण यह था कि रोमके पास काफी सामुद्रिक सेना न थी। रोमके युद्ध और सुलाके अत्याचारों से तङ्ग आ बहुतसे लोग उन लुटेरोंसे जा मिले थे। इससे इनकी सख्या बहुत बढ गयी थी। ये व्यापारिक जहाज ही नहीं लूटते थे, किन्तु रोमके लोगोंके समुद्रतटपरके विलास मन्दिर भी लूट लेते थे। ये गुप्त वेश धारण कर देशमें घूमा करते थे और लुटेरोंको अपने वश करके शहरोंको लुटवा लेते थे। इस प्रकार उन्होंने बहुत सा धन इकट्ठा कर लिया था। इनके जहाज खेनेके डाँड चाँदीसे मढ़े हुए थे। ये विलक्षण

शूर थे। उन्होंने चार सौ शहर जीत लिये थे। वे मनुष्योंको कैद कर लेते थे और बहुत बड़ी रकम वसूल कर उन्हें छोड़ देते थे। जुलियस सीजर भी एक बार इनके हाथ लग गया था। ये इतने शक्तिशाली हो गये थे तो भी रोमके लोगोंने उनकी कुछ भी परवाह न की। परन्तु अब ये रोमका अनाज लूटने लगे तब कहीं उनकी आँखें खुलीं। विक्रमाब्दसे १३ वर्ष पहले सर्विलियस इनका बन्दोबस्त करनेके लिए भेजा गया। परन्तु उससे कुछ भी न बन सका। अन्तमें पाम्पेको स्वयं जाना पड़ा। सिनेट सभाने बहुत कोशिशकी, परन्तु लोगोंने पाम्पेको ही इस कामके लिए चुना। तीन वर्षके लिए सारा रोमका राज्य उसके अधिकारमें दे दिया गया। उन लुटेरोंको दबानेके लिए पाम्पेको एक लाख बीस हजार पैदल, पाँच हजार सवार और ५०० जहाज दिये गये थे।

लुटेरोंको दबानेके लिए पाम्पेकी नियुक्ति होते ही रोममें अनाजका भाव घट गया। इससे साफ मालूम होता है कि लोगोंको उसके पराक्रमपर बहुत भरोसा था। उसने सिनेटके २४ सभासद अपने साथ लिये थे। भूमध्यसागरको १३ भागोंमें बाँटकर प्रत्येक भागपर जहाजोंकी एक एक टुकड़ी मुकर्रर कर दी। इस प्रकार बन्दोबस्त करनेसे लुटेरोंको भूमध्यसागरमें घूमना अशक्य हो गया। पाम्पेने तीन महीनेकी अवधिमें ३६८ जहाज पकड़ लिये, १२० बन्दरगाह नष्ट कर डाले, दस हजार लुटेरोंको मार डाला और बीस हजार कैद कर लिये गये। शरण आये हुए लोगोंपर पाम्पेने दया दिखायी और उनसे नवीन उपनिवेश बसाये। इस प्रकार पाम्पेने रोमका सङ्कट दूर किया। इससे रोमके लोग उसके अधिक भक्त हो गये।

भूमध्यसागरका काम हो जानेपर पाम्पेको मिथ्रिडेट्स-पर चढ़ाई करना पड़ा। क्योंकि वह फिर बखेड़ा करने लगा था। युद्धपर जाना या न जाना पाम्पेके हाथमें न था। रोम नगरके निवासी ही युद्धपर जानेके लिए किसी सरदारको चुनते थे। यह काम सरल न था। क्योंकि पाम्पेकी तरह और भी कई लोग प्रसिद्धि पाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त रोममें पाम्पेके शत्रु भी कम न थे। वे हमेशा उसका अनिष्ट चिन्तन किया करते थे। परन्तु पाम्पेके मित्र हर तरह पाम्पे-की ही नियुक्ति करवा लेते थे।

विक्रमाब्दसे १७ वर्ष पहले ल्युकुलस और कॉटा, मिथ्रि डेट्ससे युद्ध करनेके लिए भेजे गये थे। कौंसल ल्युकुलसने एशिया माइनरकी रोमकी सेनाकी उत्तम व्यवस्था करके मिथ्रि डेट्सको हराया था। तब वह आर्मीनियाके राजा टिग्रानसके आश्रयमें चला गया। उस राजाने ल्युकुलससे लड़नेकी तैयारी की। ल्युकुलस टारस पर्वत और युफ्रेटीज नदी पार कर आर्मीनियामें घुस गया और दो लड़ाइयोंमें टिग्रानसको हरा दिया। उसने उसकी राजधानीपर भी अधिकार कर लिया होता, पर उसके सिपाही उसकी सख्तीसे ऊब उठे थे। उन्होंने आगे बढ़नेसे इन्कार कर दिया। लाचार उसे एशिया माइनर लौट जाना पड़ा। टिग्रानसने यह मौका हाथसे न जाने दिया। उसने पुन अपने प्रान्तोंपर अधिकार कर लिया।

इसी समय पाम्पेने लुटेरोंका नाश किया था। इसके बाद पाम्पेको मिथ्रिडेट्ससे लड़नेके लिए नियत करानेकी कोशिश होने लगी। जुलियस सीजर और क्रासस भी पाम्पे-के लिए प्रयत्न कर रहे थे। क्योंकि, वे उसे रोमसे बहुत दूर रखना चाहते थे। ल्युकुलसके लिए भी कम कोशिश नहीं की

गयी थी। परन्तु पाम्पेका पक्ष प्रबल था। अन्तमें उसीकी जीत हुई। ल्युकुलस रोम बुला लिया गया। उसने अपने जीवनके शेष दिन लिखने पढनेमें बिताये।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि टिग्रानसने अपने प्रान्तोंपर पुनः अधिकार कर लिया था। अतएव पाम्पेके मित्रोंने इस घटनाको अधिक महत्त्व दे उसे एशियामाइनरका अप्रतिबद्ध अधिकार देनेका प्रस्ताव किया। सिनेटने इसका विरोध किया, पर यह प्रस्ताव स्वीकार हो गया।

इस प्रकार एशियामाइनरकी सारी रोमकी सेनाका आधिपत्य प्राप्तकर पाम्पेने मिथ्रिडेट्सका पीछा किया। पाम्पेने ऐसी व्यवस्थाकी कि मिथ्रिडेट्सको सहायता मिलना असम्भव हो गया। तब पाम्पेसे युद्ध करना हानिकारक समझकर मिथ्रिडेट्सने सुलहके लिए प्रार्थना की। पाम्पेने उत्तरमें कहला भेजा कि पहले हमारे अधीनस्थ होना स्वीकार करो, तब तुम्हारी बात सुनी जायगी। मिथ्रिडेट्सने यह बात स्वीकार न की। क्योंकि वह लड़ाई टालना चाहता था। निदान, पाम्पेने लेसर अर्मीनियामें उसपर छापा डाला। मिथ्रिडेट्स युक्साइन समुद्रके उत्तरीतटके पहाड़ोंमें भाग गया। पाम्पे उसका पीछा न कर सका। मिथ्रिडेट्सने मध्य यूरोपके जङ्गली लोगोंकी एक बडी सेना इकट्ठी कर ली और तब वह रोमपर एकदम आक्रमण करनेकी तैयारी करने लगा। इतनेमें वहीं उसके लड़केने उसके विरुद्ध बलवा कर दिया। उसे भय हुआ कि कहीं वह उसे पाम्पेके हवाले न कर दे। इसलिए उसने विष खा लिया। परन्तु वह मरा नहीं। तब उसने अपने एक नौकरसे अपना सिर कटवा डाला। यह घटना क्रिस-माससे ६ वर्ष पहले हुई। पाम्पेकी आज्ञासे मिथ्रिडेट्सके

शवको उसकी जन्मभूमि सिनोपमें बड़े समारोहके साथ दफन किया गया।

पाम्पेने एक एक करके अर्मीनिया, सीरिया, फिनीशिया और इराकको जीत लिया। उसने कई नये नगर बसाये। युफ्राइज पर्वतसे जार्डन नदीतक रोम राज्यकी सीमा फैल गयी। पाम्पेने इराक देशको अजीब ढङ्गसे जीता था। यहाँकी राजगद्दीके लिए झगड़ा हुआ था। हिरक्यानस और आरिस्टोब्यूलस नामक राजपुत्र राज्यपर अपना अपना स्वत्व बतलाते थे। इन दोनोंमें हिरक्यानस ज्येष्ठ था। पाम्पेके इराककी सीमाके पास पहुँचते ही दोनोंने उससे सहायता माँगी। पाम्पेने किसीको सहायता न दी। क्योंकि वह पेट्रा नामक व्यवसायिक नगरपर अधिकार करना चाहता था। इसलिए पाम्पे उधर बढ़ा। पाम्पेके आनेकी खबर सुनते ही नगर वासियोंने रोमकी अधीनता स्वीकार कर ली। अब पाम्पेको उधर जानेकी जरूरत न रही। इसलिए वह इराक देशमें घुसा और हिरक्यानसका पक्ष स्वीकार कर लिया। उसने जेरुसलेम नगरपर अधिकार कर लिया था, किन्तु आरिस्टोब्यूलसके सिपाहियोंने एक देवालयमें जमा हो पाम्पेका मार्ग रोका। पाम्पेने तीन महीनेतक उनसे लड़कर वह मन्दिर ले लिया। जेरूसलेमका परकोटा गिरा दिया गया। हिरक्यानस सिंहासनपर बिठाया गया और आरिस्टोब्यूलस बन्दी बनाया गया।

पाम्पे विक्रमाब्दसे ४ वर्ष पहले रोम लौट गया। वह करीब नौ वर्षतक बाहर था। इस अवधिमें रोमकी कायापलट हो गयी थी, यह सब देखकर पाम्पेकी बुद्धि चक्कर खाने लगी। वह यह भी निश्चित न कर सका कि राजनीतिके किस

मार्गका अनुसरण करे। सिसरो उससे मित्रता करना चाहता था। कनिष्ठ केटो उसके विरुद्ध था। क्रासस और ल्युकुलस उसके खुले दुश्मन थे। सीजर ऊपरसे उसके पक्षका मालूम होता था, तो भी उसकी आन्तरिक इच्छा यह थी कि रोमका राज्यसूत्र अकेले उसीके हाथ में रहे और पाम्पे उसके अधीन रहे। पाम्पेने १४ आश्विन (कन्या) को जयोत्सव मनाया। इस समय उसका जुलूस भी निकला था। उसके रथके साथ उसके जीते हुए ३०० राजा पैदल चलते थे। जुलूसके साथ कई पीतलके तख्ते लोगोंके सिरपर दिये गये थे। उनपर लिखा था कि पाम्पेने एक हजार किलोंपर अधिकार किया है सैकड़ों नगरोंपर विजय पायी है, छापा डालकर ६०० जहाजोंपर कब्जा कर लिया है और २६ नये शहर बसाये हैं। पाम्पेने राज्यकी आमदनी भी बहुत बढ़ायी है।

पाम्पेके युद्धार्थ रोमसे चले जानेपर "अंधेर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा" की कहावत चरितार्थ होने लगी। पाम्पेके चले जाने पर एक भयंकर षड्यन्त्रका पता लगा। इस षड्यन्त्रका रचयिता ल्युशियस सर्जियस क्याटेलैन था। इसे सर्वदुर्गुणोंकी प्रतिमूर्ति कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह युग ही, दुराचार, अनीति और दुर्गुणोंका था। इसके समान दुराचारी, दुर्गुणी और अनीतिमान व्यक्ति रोममें दूसरा न था यह हृष्टपुष्ट और बलवान् था। यह सुल्लाका साथी था। सुल्लाने जो नरमेध यज्ञ किया था उसमें ये महात्मा प्रमुख होता थे। इसने धनके लिए अपने सहोदर तकका खून किया था। मनुष्योंको कष्ट पहुँचानेमें ही यह अपनी शक्तिका दुरुपयोग करता था। यह अपने भले-के लिए रोम राष्ट्रका अहित करनेमें भी नहीं चूकता था।

उस पापयुगका यह महापापी था। यह दुष्ट, अफ्रिका देशके रोमनप्रान्तका सूबेदार बनाया गया था। इससे पाठकोंको मालूम हो जायगा कि उस समय रोमके लोगोंकी नैतिक स्थिति कितनी अधोगतिको पहुँच गयी थी। क्याटलैनने अफ्रिकामें ऐसे क्रूर कार्य किये कि जिनके वर्णन करनेकी शक्ति हमारी जड़ लेखनीमें नहीं।

क्याटलैनने राज्यक्रान्ति करनेके लिए षड्यन्त्र रचा। रोमके कई बदमाश लोग भी इसमें शामिल थे। वे समझते थे कि राज्यक्रान्ति होनेसे उन्हें बहुत लाभ होगा। उनका विचार तत्कालीन कौंसलका खून करनेका था। रोम नगर जला देनेका भी उन्होंने विचार किया था। परन्तु उनका प्रयत्न सफल न हुआ। तदनन्तर दो वर्ष बाद कौंसलके चुनाव का समय आया। सिसरो और क्याटलैन दोनों ही इस पदके लिए उम्मेदवार थे। सिसरो कौंसल बनाया गया। क्याटलैन का मनोरथ सिद्ध न हुआ। इससे वह चिढ़ गया और उसने सिसरोसे बदला लेनेकी ठान ली। यह बात सिसरोको मालूम हो गयी। उसने उसपर मुकदमा चलाया। परन्तु अपराध साबित न होनेके कारण क्याटलैन बच गया। तब तो उसने सिसरोको मार डालनेकी कसम खाली। वह शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित अपने साथियों सहित पकड़ा भी गया। परन्तु निर्णय होनेके पहले ही वह अपने साथियों सहित गॉल देशकी ओर चल दिया। रोमकी सेनाने उसका पीछा किया। युद्ध हुआ। क्याटलैन युद्धमें मारा गया। उसका सिर काट-कर रोम भेजा गया था। सिसरोने इसके नौ सरदार कैद किये थे। अपराधी साबित हो जानेपर उन्हें फाँसी दी गयी। इसके बाद सिसरोने कौंसलके पदसे त्यागपत्र दे दिया।

उत्तम कार्य करनेके कारण लोगोंने उसकी बहुत तारीफ की। इससे उसे अभिमान हो आया। वह अपनेको सबसे अधिक कर्त्तव्यदक्ष समझने लगा। वह लोगोंको तुच्छ मानने लगा। इससे लोग उससे नाराज हो गये और इसके बाद उसे कोई भी अधिकारका काम न दिया गया।

इसी समय एक और दुष्टात्मा उत्पन्न हुआ था। उसका नाम पब्लियस क्लाडियस पलचर था। वह बहुत ही दुष्ट था। वह सर्व दुर्गुण सम्पन्न था। बहुतसे बदमाश उसके अनुकूल थे। एक समय सीजरके यहाँ कुछ धार्मिक कार्य था। उस समय केवल स्त्रियोंका होना ही आवश्यक था। यह दुष्ट स्त्री वेष धारण कर स्त्रियोंमें जा घुसा था। लोगोंको यह बात मालूम हो गयी। यह पकड़ा गया और इसपर मुकदमा दायर किया गया। सिसरोके भाषणके कारण दोषी साबित हो गया। किन्तु इसने न्यायाधीशको घूस देकर छुटकारा पा लिया। तभीसे यह सिसरोसे शत्रुता रखने लगा। भाँति भाँतिके जाल फैलाकर यह सिसरोको फँसानेका यत्न करने लगा। इसने सिसरोपर यह आरोप लगाया कि क्याटलैनके नौ साथियोंके अपराध साबित न होनेपर भी उसने उन्हें मरवा डाला। सिसरो स्वभावत: अधीर और डरपोक था। इस मुकदमेका फैसला होनेके पहले ही वह रोमसे भागकर अज्ञातवासमें रहने लगा। तो भी इस दुष्टने न्यायाधीशसे उसे दोषी ठहरवा कर यह फैसला सुनवाया कि सिसरो रोम राज्यका शत्रु है। यदि वह वापस आवे तो रोमके इर्द गिर्द चार सौ मीलतक कोई उसे पानी या आग न दे। इस नियमके भङ्ग करनेवालेको फाँसीकी सजा दी जायगी। निदान सिसरो ग्रीस देशमें आ दु खसे दिन बिताने लगा। उसका सारा उत्साह

धूलमें मिल गया। भाँति भाँतिके कुतर्कोंसे उसका मन व्यग्र होने लगा। इधर रोममें उसका घर लूट लिया गया। पलेटन पहाड़ीपर उसका एक उत्तम मकान था। वह गिराकर धूलमें मिला दिया गया। इतना होनेपर भी सिसरो पुन रोम बुलाया गया। क्योंकि उसे सूबेदार बनाकर अन्यत्र भेजना था। सिसरो विक्रम सवत् ६ में रोम लौट आया। उसके लौट आनेसे लोगोंको बड़ा आनन्द हुआ और लोगोंने उसका अच्छा स्वागत किया। इससे यही मालूम होता है कि उस समय रोमके लोगोंने उसका खूब आदर सत्कार किया था, तो भी सिसरोको यह सब बुरा मालूम होता था। क्योंकि उसका उत्साह और स्वाभिमान नष्ट हो गया था।

इन सब झफटोंके जमानेमें जुलियस सीजर नाना प्रकारके यत्न कर एक एक कदम आगे बढ़ता जाता था। रोममें पाटिफ नामका एक पद था। यह पद सर्वश्रेष्ठ था। इस पदपर आरूढ़ हुआ व्यक्ति धर्माचार्य माना जाता था। जुलियस सीजर लोगोंको अपने अनुकूल कर यह पद पानेके लिए कोशिश करने लगा। उसे बहुत कष्ट उठाना पड़ा और ऋण लेकर बहुत द्रव्य खर्च करना पड़ा। इतना होनेपर भी यह निश्चित न था कि उसे यह पद मिल जायगा। चुनावके दिन अपनी माताके चरणोंका नमस्कार कर वह घरसे बाहर निकला। उस समय उसकी माताने आँखोंमें आँसू भरकर बड़े प्रेमसे आशीर्वाद दिया—"विजयी भव"। इसके उत्तरमें जुलियसने कहा था,—"पांटिफ चुना जाऊँगा तो घर आऊँगा, नहीं तो फिर कभी मुँह न दिखाऊँगा।" उसने अपना वचन पाला। वह पाटिफ चुना गया। जुलियस फूला न समाता

था। वह आनन्दसागरमें गोते लगाता हुआ घर पहुँचा। उसकी माताको भी बहुत आनन्द हुआ।

पांटिफका पद पानेके लिए सीजरने बहुत धन खर्च किया था। इसके अतिरिक्त वह कुछ अपव्ययी भी था। इसीसे वह बड़ा ऋणी हो गया था। परन्तु उसकी महत्वाकांक्षा दिन पर दिन बढ़ती ही जाती थी। वह पाम्पे, सुल्ला, मारियस आदिके समान पराक्रम करना चाहता था। अपनी यह इच्छा पूर्ण करनेके लिए उसे रोमसे बाहर जाना इष्ट था। स्पेन देशके एक प्रान्तपर सूबेदारकी जरूरत थी। सीजरने उधर जानेकी तयारी की। उसके पास द्रव्य न था। इसलिए उसने क्राससससे २५ लाख रुपये कर्ज लिए। सिनेटने उसे स्पेन जानेसे रोका। परन्तु सिनेटकी आज्ञाका उल्लङ्घन कर वह स्पेन जा पहुँचा और उस देशका राज्य सूत्र अपने हाथमें ले लिया। सीजर जानता था कि सिनेटकी आज्ञा उल्लङ्घन करनेके लिए उससे कैफियत जरूर तलब की जायगी। परन्तु वह भी अच्छी तरह यह जानता था कि स्पेनकी सेना अपने वशमें कर लेनेसे किसीको बोलनेतककी हिम्मत न होगी। इसलिए वहाँ जाते ही उसने वहाँके लोगोंसे लड़ाई छेड़ दी। इस युद्धमें उसे इतना लूटका माल मिला कि उसने अपना सब कर्ज अदा कर दिया और सिपाहियोंको खूब इनाम दिया। इस युद्धमें उसे मालूम हो गया कि वह सेनापतिका काम अच्छी तरहसे कर सकता है। तदनन्तर विक्रमाब्दसे ३ वर्ष पहले अपने पदसे त्यागपत्र दे, रोमसे किसीके आनेतककी प्रतीक्षा न कर वह वहाँसे चल दिया और रोम जा पहुँचा। तदनन्तर पाम्पे और क्राससससे मिलकर यह स्थिर हुआ कि रोमके राज्यसूत्र तीनोंके हाथमें रहें। ये तीनों ट्रायवरेट या

त्रिकूट कहलाते थे। इसके बाद विक्रमाब्दसे ८ वर्ष पहले सीजर कांसल हो गया। कांसल होते ही उसने रोमका विधान रद्दबदल करनेका काम प्रारम्भ किया। उसने जमीन के विधानका मसविदा पेश किया । तदनुसार पाम्पेके शूर सिपाहियोंको जमीन देनेका नियम बनाया । इससे गरीब लोगोंको रोमके कम्पानिया प्रान्तकी सरकारी जमीन बाँट देनेका भी नियम था। रोमके धनी लोगोंने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। लोक सभामें मत लेते समय बहुत गड़बड़ मची, यहाँतक कि मारपीट तककी नौबत आ गयी। परन्तु अन्तमें वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

सीजरने एक वर्षतक कासलका काम किया। इस अवधि में उसे बहुत ज्ञान हो गया। उसे मालूम हो गया कि सिनेट सभामें कुछ दम नहीं रहा, घूस देकर जो अधिकार चाहे मिल सकता है। इन लक्षणोंसे उसे यह भी मालूम हो गया कि प्रजासत्तात्मक राज्यकी नाड़ी धीरे धीरे मन्द होने लगी। इससे रोमके राज्य सूत्रको अपने हाथमें लेनेका प्रयत्न करना चाहिए और शक्तिके बलपर रोम राज्यका प्रधान सूत्रधार बन बैठना चाहिए । अतुल पराक्रम दिखा लोगोंपर अपना प्रभाव जमानेके सिवा दूसरा उपाय नहीं। इसी समय गॉल देश में बलवा होनेपर सिनेटने एक दूसरे कामपर सीजर को नियुक्ति की थी। परन्तु सिनेटकी आज्ञाका उल्लंघन कर लोक सभासे, गॉल देशके युद्ध पर अपनी नियुक्ति करवा ली। उसके साथ तीन बड़ी रोमन पलटनें थी। प्रत्येक पल टनमें छ छ हजार सैनिक थे।

गॉल देश जाते समय मार्गमें सीजरको कई जातिके लोग मिले। उनमेंसे अधिकांश जर्मनीके राजा आरिओविस्टसके

था। वह आनन्दसागरमें गोते लगाता हुआ घर पहुँचा। उसकी माताको भी बहुत आनन्द हुआ।

पांटिफका पद पानेके लिए सीजरने बहुत धन खर्च किया था। इसके अतिरिक्त वह कुछ अपव्ययी भी था। इसीसे वह बड़ा ऋणी हो गया था। परन्तु उसकी महत्वाकांक्षा दिन पर दिन बढ़ती ही जाती थी। वह पाम्पे, सुल्ला, मारियस आदिके समान पराक्रम करना चाहता था। अपनी यह इच्छा पूर्ण करनेके लिए उसे रोमसे बाहर जाना इष्ट था। स्पेन देशके एक प्रान्तपर सूबेदारकी जरूरत थी। सीजरने उधर जानेकी तयारी की। उसके पास द्रव्य न था। इसलिए उसने क्राससरो २½ लाख रुपये कर्ज लिए। सिनेटने उसे स्पेन जानेसे रोका। परन्तु सिनेटकी आज्ञाका उल्लङ्घन कर वह स्पेन जा पहुँचा और उस देशका राज्य सूत्र अपने हाथमें ले लिया। सीजर जानता था कि सिनेटकी आज्ञा उल्लङ्घन करनेके लिए उससे कैफियत जरूर तलब की जायगी। परन्तु यह भी अच्छी तरह वह जानता था कि स्पेनकी सेना अपने वशमें कर लेनेसे किसीको बोलनेतककी हिम्मत न होगी। इसलिए वहाँ जाते ही उसने वहाँके लोगोंसे लड़ाई छेड़ दी। इस युद्धमें उसे इतना लूटका माल मिला कि उसने अपना सब कर्ज अदा कर दिया और सिपाहियोंको खूब इनाम दिया। इस युद्धमें उसे मालूम हो गया कि वह सेनापतिका काम अच्छी तरहसे कर सकता है। तदनन्तर विक्रमाब्दसे ३ वर्ष पहले अपने पदसे त्यागपत्र दे, रोमसे किसीके आनेतककी प्रतीक्षा न कर वह वहाँसे चल दिया और रोम जा पहुँचा। तदनन्तर पाम्पे और क्राससरो मिलकर यह स्थिर हुआ कि रोमके राज्यसूत्र तीनोंके हाथमें रहें। ये तीनों ट्रायवरेट या

त्रिकुट कहलाते थे। इसके बाद विक्रमाब्दसे २ वर्ष पहले सीजर कासल हो गया। कांसल होते ही उसने रोमका विधान रद्दबदल करनेका काम प्रारम्भ किया। उसने जमीनके विधानका मसविदा पेश किया। तदनुसार पाम्पेके शूर सिपाहियोंको जमीन देनेका नियम बनाया। इसके गरीब लोगोंको रोमके कम्पानिया प्रान्तकी सरकारी जमीन बाँट देनेका भी नियम था। रोमके धनी लोगोंने इस प्रस्तावका घोर विरोध किया। लोक सभामें मत लेते समय बहुत गड़बड़ मची, यहाँतक कि मारपीट तककी नौबत आ गयी। परन्तु अन्तमें यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

सीजरने एक वर्षतक कासलका काम किया। इस अवधिमें उसे बहुत ज्ञान हो गया। उसे मालूम हो गया कि सिनेट सभामें कुछ दम नहीं रहा, घूस देकर जो अधिकार चाहे मिल सकता है। इन लक्षणोंसे उसे यह भी मालूम हो गया कि प्रजासत्तात्मक राज्यकी नाड़ी धीरे धीरे मन्द होने लगी। इसमें रोमके राज्य सूत्रको अपने हाथमें लेनेका प्रयत्न करना चाहिए और शक्तिके बलपर रोम राज्यका प्रधान सूत्रधार बन बैठना चाहिए। अतुल पराक्रम दिखा लोगोंपर अपना प्रभाव जमानेके सिवा दूसरा उपाय नहीं। इसी समय गॉल देशमें बलवा होनेपर सिनेटने एक दूसरे कामपर सीजरकी नियुक्ति की थी। परन्तु सिनेटकी आज्ञाका उल्लंघन कर लोक सभासे, गॉल देशके युद्ध पर अपनी नियुक्ति करवा ली। उसके साथ तीन बड़ी रोमन पलटनें थी। प्रत्येक पलटनमें छ छ हजार सैनिक थे।

गॉल देश जाते समय मार्गमें सीजरको कई जातिके लोग मिले। इनमेंसे अधिकांश जर्मनोंके राजा आरिओविस्टसके

था। वह आनन्दसागरमें गोते लगाता हुआ घर पहुँचा। उसकी माताको भी बहुत आनन्द हुआ।

पाटिफक्स पद पानेके लिए सीजरने बहुत धन खर्च किया था। इसके अतिरिक्त वह कुछ अपव्ययी भी था। इसीसे वह बड़ा ऋणी हो गया था। परन्तु उसकी महत्वाकांक्षा दिन पर दिन बढ़ती ही जाती थी। वह पाम्पे, सुल्ला, मारियस आदिके समान पराक्रम करना चाहता था। अपनी यह इच्छा पूर्ण करनेके लिए उसे रोमसे बाहर जाना इष्ट था। स्पेन देशके एक प्रान्तपर सूबेदारकी जरूरत थी। सीजरने उधर जानेकी तयारी की। उसके पास द्रव्य न था। इसलिए उसने क्राससे २५ लाख रुपये कर्ज लिए। सिनेटने उसे स्पेन जानेसे रोका। परन्तु सिनेटकी आज्ञाका उल्लङ्घन कर वह स्पेन जा पहुँचा और उस देशका राज्य सूत्र अपने हाथमें ले लिया। सीजर जानता था कि सिनेटकी आज्ञा उल्लङ्घन करनेके लिए उससे कैफियत जरूर तलब की जायगी। परन्तु यह भी अच्छी तरह वह जानता था कि स्पेनकी सेना अपने वशमें कर लेनेसे किसीको बोलनेतककी हिम्मत न होगी। इसलिए वहाँ जाते ही उसने वहाँके लोगोंसे लड़ाई छेड़ दी। इस युद्धमें उसे इतना लूटका माल मिला कि उसने अपना सब कर्ज अदा कर दिया और सिपाहियोंको खूब इनाम दिया। इस युद्धमें उसे मालूम हो गया कि वह सेनापतिका काम अच्छी तरहसे कर सकता है। तदनन्तर विक्रमाब्दसे ३ वर्ष पहले अपने पदसे त्यागपत्र दे, रोमसे किसीके आनेतककी प्रतीक्षा न कर वह वहाँसे चल दिया और रोम जा पहुँचा। तदनन्तर पाम्पे और क्राससे मिलकर यह स्थिर हुआ कि रोमके राज्यसूत्र तीनोंके हाथमें रहें। ये तीनों ट्रायवरेट या

त्रिकूट कहलाते थे। इसके बाद विक्रमाब्दसे २ वर्ष पहले सीजर कासल हो गया। कांसल होते ही उसने रोमका विधान रद्दबदल करनेका काम प्रारम्भ किया। उसने जमीन-के विधानका मसविदा पेश किया। तदनुसार पाम्पेके शूर सिपाहियोंको जमीन देनेका नियम बनाया। इसके गरीब लोगोंको रोमके कस्पानिया प्रान्तकी सरकारी जमीन बाँट देनेका भी नियम था। रोमके धनी लोगोंने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। लोक सभामें मत लेते समय बहुत गडबड मची, यहाँतक कि मारपीट तककी नौबत आ गयी। परन्तु अन्तमें यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

सीजरने एक वर्षतक कांसलका काम किया। इस अवधि में उसे बहुत ज्ञान हो गया। उसे मालूम हो गया कि सिनेट सभामें कुछ दम नहीं रहा, घूस देकर जो अधिकार चाहे मिल सकता है। इन लक्षणोंसे उसे यह भी मालूम हो गया कि प्रजासत्तात्मक राज्यकी नाडी धीरे धीरे मन्द होने लगी। इससे रोमके राज्य सूत्रको अपने हाथमें लेनेका प्रयत्न करना चाहिए और शक्तिके बलपर रोम राज्यका प्रधान सूत्रधार बन बैठना चाहिए। अतुल पराक्रम दिखा लोगोंपर अपना प्रभाव जमानेके सिवा दूसरा उपाय नहीं। इसी समय गॉल देशमें बलवा होनेपर सिनेटने एक दूसरे कामपर सीजर की नियुक्ति की थी। परन्तु सिनेटकी आज्ञाका उल्लघन कर लोक सभासे, गॉल देशके युद्ध पर अपनी नियुक्ति करवा ली। उसके साथ तीन बडी रोमन पलटनें थी। प्रत्येक पल टनमें छः छः हजार सैनिक थे।

गॉल देश जाते समय मार्गमें सीजरको कई जातिके लोग मिले। उनमेंसे अधिकांश जर्मनोंके राजा आरिओविस्टसके

अधीन थे। सीजरने उनको जीतनेका निश्चय किया। उसने एक पक्षको सहायता दे, दूसरे पक्षको मट्टीमें मिलानेका क्रम शुरू किया। आरिओविस्टसके पंजेसे छुटकारा पानेके लिए लोग सीज़रके पक्षमें आने लगे। परन्तु बेचारे बुरी तरह फँसे। आरिओविस्टसके पंजेसे छूटकर वे सीजरके चगुलमें चढ़ गये। इस घटनाके पढ़ते समय हमें भारतमें अँगरेज़ीराज्यकी स्थापनाके समयका इतिहास स्मरण हो आता है। अँगरेजोंने हिन्दुस्थानमें भी इसी क्रमका अनुकरण किया था। सीजरने जरमनीके राजाका पराभव कर सारे गॉल देशपर अधिकार कर लिया। इस विजयका सम्वाद सुनकर रोमन लोग बहुत प्रसन्न हुए। सिनेट सभा भी सन्तुष्ट हुई। सिनेटने यह निश्चय किया कि इस महाविजयके लिए सन्तोष प्रदर्शनार्थ १५ दिनतक रोममें उत्सव मनाया जाय! आजतक रोममें इतना बड़ा उत्सव कभी नहीं हुआ था। केटोने उत्सव न मनानेके लिए बहुत कोशिशकी परन्तु उस बेचारेकी एक न चली। क्योंकि सीज़र रोमन लोगोंका प्रिय पात्र था। "दुनियाँ झुकती है, झुकानेवाला चाहिये" की कहावतकी सत्यता दृष्टिगोचर होने लगी।

इस प्रकार पहले पाँच वर्षोंमें सीजरने पिरैनीज पर्वतके उत्तरका और राइन नदीके पश्चिमका सब प्रान्त जीत लिया। तदनन्तर धिक्रम सघत् ८ में वह इंग्लिश खाड़ी पारकर इङ्गलिस्तान जा पहुँचा। वह वहाँ अधिक दिनोंतक नहीं रहा। तो भी उसने उस देशके कुछ भागपर अधिकार कर लिया। वहाँसे लौट आनेपर वह गाल देशकी व्यवस्था करने लगा। उस राज्यकी व्यवस्थासे उसकी वास्तविक योग्यता प्रकट हो गयी। गॉलदेश जीतकर आमोदप्रमोदमें लगे

रहनेपर रोमकी राज्य व्यवस्थासे उसने अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ा था। रोमकी प्रत्येक घटनाका वह पता लगाता रहता था। अपने मित्रोंकी सहायतासे वह रोममें अपना पक्ष प्रबल करनेका उद्योग कर रहा था। जब लड़ाईका समय न होता तो वह गालदेशके दक्षिणमें ल्यूका नामक स्थानमें जाकर रहता था। वहाँ उसके सब सहयोगी उससे जा मिलते थे और वहीं आगेके कार्यक्रमपर विचार हुआ करता था सीजर अतुलनीय योद्धा तो था ही साथ ही उत्तम ग्रन्थकार भी था। उसने गालदेशमें जो लड़ाइयाँ लड़ी थीं उनका वर्णन उसने स्वयं लिखा था। उसकी भाषा मनोहर तथा हृदयग्राही होती थी। अब भी लोग उसके लिखे ग्रन्थोंको बड़े प्रेमसे पढ़ते हैं। उसके सिपाही उसकी आज्ञाका पालन करनेमें कभी आगा पीछा न करते थे। उसके सेनापतित्वमें वे अपने प्राणोंकी भी परवाह न कर लड़ते थे। उसने गालदेश-की उत्तम व्यवस्था की थी, जिससे वहाँकी प्रजा उसे बहुत चाहने लगी। देशोंके जीतनेपर सीजर वहाँकी प्रजाके साथ अच्छी तरह पेश आता था। वह उनके साथ कभी भी निर्दयता पूर्वक वर्ताव नहीं करता था। तोभी, लोग उससे डरते थे। उसकी उपेक्षा करनेकी उन्हें हिम्मत न होती थी। उसने गालदेशमें सड़कें बनवायी थीं। उन लोगोंको रोमके लोगों-की रीति भाँति सिखायी थी। वह अपने अधीनस्थ अधि-कारियोंको समझाया करता था कि गाललोगोंपर दया दिखानेमें ही रोमका भला है। इस व्यवस्थाके कारण गॉल-लोग रोमका राज्य चाहने लगे। सीजरके शासनकालमें गालदेशमें शान्तिका अटल साम्राज्य छाया हुआ था। उसके पाँच वर्षके शासनकालमें एक भी बलवा न हुआ। गॉललोग

सन्तुष्ट थे। रोमके इतिहासमें सीजरकी राज्यव्यवस्थाका इतिहास महत्वपूर्ण है। इसे आदर्श भी कह सकते हैं। भारत वर्षमें अँगरेजी राज्यकी व्यवस्था करनेके लिए लार्ड विलियम बेंटिक, सर जान मालकम आदि ने सीजरकी राज्य व्यवस्था का ही अनुकरण किया था।

सीजरने गालदेश ही नही जीता, वरन् स्विट्जरलैंएड पर भी अधिकार कर लिया था। उसे यहाँ कई लडाइयाँ लडनी पडीं थीं। हजारों लोग मारे गये। स्विट्जलैंएडके लोग उसके भयसे देश त्यागकर भाग चले थे। परन्तु सीजरने उन्हें रास्तेमें घेर लिया। दोनों दलोंमें घोर युद्ध हुआ। हजारों लोग मारे गये। एक ग्रन्थकारने लिखा है कि ३,६८,००० मनुष्य देश त्यागकर चले थे, परन्तु लडाई होने पर केवल ११,००० वापस लौटे।

कितना ही सुख क्यों न हो? राज्य-व्यवस्था कितनी ही उत्तम क्यों न हो? देशमें शान्तिका अटल राज्य क्यों न हो? पर परतन्त्रता, परतन्त्रता ही है। स्वतन्त्रताका रसास्वाद उसमें कहाँ? सच है.—

सुख स्वप्नकी सम्प्राप्ति भी दासत्वसे दूरस्थ है।
सब सृष्टिकी सुसमृद्धि भी स्वच्छन्द व्यक्ति-करस्थ है॥
आधीनतायुत स्वर्गका भी वास है भाता नहीं।
स्वाधीन रौरव नरकमें भी, त्रास है पाता नहीं॥

(प्रणवीर प्रताप)

निदान परतन्त्रतासे पीडित हो वे लोग स्वतन्त्र होनेका उपाय करने लगे। इधर निरन्तर युद्धमें लगे रहनेसे सीजर -ब उठा था। इसलिए इटलीमें कुछ कालके लिए विश्राम करना चाहता था। शीतकालका मौसम था। पर्वतके

शिखर वर्फसे ढके हुए थे। गाल लोगोंने सोचा कि वह उस समय उधर न जा सकेगा। इसलिए उन्होंने बलवा खडा कर दिया। उनका सेनापति वर्सिन जेटोरिक्स था। वह शूर और साहसी था। उसने लोगोंसे कहा कि गाँव जला दिये जायँ, जिससे रोमके लोगोंको कहीं आश्रय न मिल सके। उसकी आज्ञाका पालन किया गया। केवल एक नगरके लोगोंने बलवा नहीं किया। यह समाचार सुनते ही सीजरने सेना सहित प्रस्थान किया। ठण्ढ और वर्फकी परवाह न कर वह गॉल देश आ पहुँचा। उसने उस नगरको, जिसने बलवा नहीं किया था, घेर लिया। नगरपर अधिकार कर लिया। क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या वृद्ध, क्या बालक, सबका वध किया गया। गॉल सरदार आलेसिया नगरमें नज़रबन्दी कर ठहरा हुआ था। सीजरने उसे घेर लिया। गॉल सेना उसपर आक्रमण करती रही। परन्तु सीजर जरा भी विचलित न हुआ। उसने बड़ी वीरता दिखायी। आखिर शत्रुकी सेनाको हार माननी पड़ी और नगरपर सीजरका अधिकार हो गया। गॉल सरदार बन्दी कर लिया गया। सीजर उसे अपने साथ रोम ले गया। इस जीतके बाद सीजरने सारे गॉल देशपर अधिकार कर लिया। दस लाख गॉल लोगोंका वध किया गया, दस लाख गुलाम बनाये गये और आठ सौ नगर जला दिये गये। किन्तु इस युद्धमें सहस्रों रोमके सैनिक भी मारे गये। इसके बाद सीजरने गॉल देशकी राज्यव्यवस्थामें सुधार किया। प्रजाके सुखके लिए अनेक काम किये गये उस देशमें रोमके रीति-रसमका प्रचार करनेके लिए अनेक उपाय किये गये। मध्य यूरोपमें आजकल जो जो रीति रिवाज परिपक्व दशाको पहुँच

गये हैं, सीज़रने ही उनका बीजारोपण किया था। इन सब कारणोंसे सारे रोमराज्यमें सीजरका गुणगान होने लगा। पाम्पे और क्रासस्का तेज फीका पड गया।

सीजर जब गॉल देशमें था, तभी उसने पाम्पे और क्राससको अपिनाइन पर्वतके पास, लुका गाँवमें बुलवाया था। वहाँ सर्वसम्मतिसे यह निश्चय हुआ कि पाम्पे स्पेनका क्रासस सिरियाका और सीजर गाल देशका गवर्नर रहे। उसने बड़े प्रयत्नसे यह व्यवस्था और पाँच वर्षोंतक चलाने के लिए रोमके लोगोंकी स्वीकृति ले ली। परन्तु कुछ भी फल न हुआ। कारण—तीनों हीके मन साफ़ न थे। एक दूसरेसे द्वेष करते थे। बाहरसे वे तीनों एक दीखते थे, परन्तु उनके हृदय एक न थे। वे तीनों ही रोमके दरबारमें रहना चाहते थे। क्योंकि रोमके दरबारियोंको अपनी ओर कर हर एक रोमका प्रमुख राज्य-सूत्रधार बनना चाहता था। पाम्पे स्पेन जाना नहीं चाहता था। इसलिए वह भाँति भाँतिके बहाने कर रोममें जाया आया करता था और लोक मत अपनी ओर करनेकी चेष्टा करता था। उसने लोक रञ्जनार्थ एक उत्तम नाटकशाला बनवायी थी। इस नाटकघरमें ४० हजार लोग बैठ सकते थे। वह लोगोंको नित नये खेल दिखाया करता था। पहलवानोंके दङ्गल होते थे। लोग तालियाँ बजा बजा कर अपना आनन्द प्रकाशित करते थे। परन्तु यह आनन्द थोड़े ही समयके लिए था। पाम्पेको कुछ लाभ न हुआ। वह लोक प्रिय होना चाहता था। परन्तु उसका यह उद्देश्य सिद्ध न हुआ।

उधर क्राससका जी घबराने लगा। भूमध्यसागरके लुटेरोंको जीत कर पाम्पेने अपना रोब जमाया था। गाल-

देश जीतकर सीजरने नाम कमाया था। इसलिए क्रासस भी पराक्रम करना चाहता था। अत. उसने सीरियासे पूर्वकी ओरवाले पार्थिया देशपर चढ़ाई करनेका विचार किया। वह बडी तय्यारी कर फ्रात नदी पार कर आगे बढ़ा और उन लोगोंका पीछा करता हुआ मेसोपोटेमियाके सघन जगलोंमें घुस गया। वहाँ किसीने विश्वासघात कर उसे शत्रुके सुपुर्द कर दिया। उन्होंने उसे मार डाला। इस प्रकार विक्रमके चौथे वर्ष इस त्रिकुटमेंसे क्राससका अन्त हो गया। बाकी दोनोंमें स्पर्धा होने लगी।

सीज़रकी लड़की जुलिया पाम्पेको ब्याही थी। इससे दोनोंका निकटका सम्बन्ध था। परन्तु इससे पहले मार-पीट हो जानेसे पाम्पेके वस्त्रपर रक्तका छींटा आ पडा था। घर आनेपर जुलियाने रक्तका दाग देखा। उस समय वह गर्भवती और अशक्त थी। रक्तका दाग देख कर वह डर गयी। उसकी बीमारी बढ गयी और शीघ्र ही वह मर गयी। इससे उन दोनोंका सम्बन्ध टूट गया। सीजर दस वर्षके लिए पूर्वी देशोंपर सूबेदार (गवर्नर) बना कर भेजा गया था। यह अवधि विक्रम स० ६ के पौष (धनु) मासमें पूरी होती थी। इस समयके पूरा होते ही सीजर रोम लौट जाता तो उसे साधारण मनुष्यकी तरह जाना पडता। परन्तु सीजरको यह बात इष्ट न थी। क्योंकि यदि वह साधारण जनकी हैसियतमें रोम लौट जाता तो सम्भव था कि उसे प्राण गॅवाने पडते। इसलिए उसकी यह इच्छा थी कि सूबेदारका पद छोडनेके पहले मुझे कांसलका पद मिल जाय। रोमके दरबारमें सीजरके बहुतसे मित्र थे। परन्तु सिनेट को 'नाकसे नथ भारी' होने लगी थी। इस लिए उसने

सीज़रको वहाँसे बुला लेना ही ठीक समझा। सिनेट यह भी चाहती थी कि दूसरा पद देनेके पहले सीज़र सेनापतित्व के पदसे अलग कर दिया जाय। कारण—सीजरके पास सेना एक प्रबल शस्त्र स्वरूप था। पाम्पेने प्रयत्न कर सीजरके कार्योंकी जाँच पडताल करानेका प्रबन्ध कराया था कारण, पाम्पेने लोगोंसे कहा था कि सीजरने अपने प्रान्तके लोगोंपर बड़ा अत्याचार किया है। केटोने इन अत्याचारोंका पता लगानेका काम अपने हाथमें लिया था। तब लोगोंको पूरा विश्वास था कि जाँचके समय यदि पाम्पे अधिकारारूढ़ हुआ तो सीजर अवश्य दोषी ठहराया जायगा। उस समयके सिसरोके एक सम्वाददाताने लिखा है,—"पाम्पे ने यह निश्चय किया कि अपनी सेनाके अधिपतिके पदसे त्यागपत्र दिये बिना सीजरको कभी कॉसल न होने दूँगा। और सीजर अच्छी तरह जानता है कि अपने अधिकार से त्यागपत्र देते ही उसे अपने प्राण गँवाने पड़ेंगे।"

विक्रमके ७ वें वर्ष सीजर सिसालाइन गॉल देश में—जिसे आज कल उत्तर-इटली कहते हैं—गया। वहाँ उसने खूब नाम कमाया। वहाँ के लोग उसका बड़ा मान करते थे। इसके बाद वह फारदर गॉलदेशमें गया। वहाँ उसने अपनी सेनाका निरीक्षण किया। उधर रोममें सङ्कट यथास्थिति उपस्थित हो गया था। वहाँ सीजरके पक्षकी रक्षा करने वाला एक भी प्रभावशाली व्यक्ति न रहा। सीज़र चिन्ताग्रस्त रहने लगा। उसने केयस स्क्रिबोनियस क्युरियो नामके अपने पुराने मित्रको इस कामके लिए चुना। वह अच्छे कुलमें पैदा हुआ था। वह होशियार और कर्तव्यपरायण था। परन्तु था वह व्यसनी। इसीसे ... ऋण हो

गया था। सीजरने गॉल देशसे धन भेज उसे ऋणमुक्त कर अपने पक्षमें मिला लिया। उसकी स्त्रीका नाम फुल्विया था। यह क्लोडियसकी—वही क्लोडियस जो स्त्रीवेश धारण कर सीजरके घरमें घुसा था—विधवा थी। यह षड्यन्त्री और चालाक स्त्री थी। क्युरियो उस समय पाम्पे के पक्षमें था। हम ऊपर लिख चुके हैं कि उसे ऋण मुक्त कर, सीजरने अपनी ओर कर लिया था। निदान वह धीरे धीरे गुप्त रीतिसे पाम्पेके विरुद्ध कोशिश करने लगा। और अनुकूल अवसर पाते ही उसने खुली तौरसे सीजरका पक्ष ग्रहण कर लिया। अब अकेला क्युरियो ही सीजरका हित-चिन्तक न था। लाखों रुपये खर्च कर सीजरने बहुतसे लोगोंको अपनी ओर कर लिया था। वे प्रकटमें तो पाम्पेके पक्षमें मालूम होते थे किन्तु भीतर भीतर सीजरकी हितचिन्तनामें ही लगे रहते थे। उन्होंने यद्यपि प्रत्यक्ष रूपसे सीजरका पक्ष ग्रहण नहीं किया था, तब भी वे सदा सीजरके प्रतिकूल किये गये प्रयत्नोंको निष्फल करनेके उद्योगमें लगेरहते थे।

सिनेट सीजरके प्रतिकूल थी। वह उसे गाल देशके अधिकारसे अलग किया चाहती थी। उस समय रोमका पञ्चाङ्ग भी सिनेटके हाथमें था। सिनेट अपने इच्छानुसार तिथि महीनोंका क्षय या वृद्धि करनेमें पूर्ण स्वतन्त्र थी। पञ्चाङ्गके अनुसार सीजरकी मुद्दत २१ कार्तिकको ही पूरी होनी थी, पर वास्तवमें असली मुद्दत इससे छ मास पूरी होती थी। क्युरियो इस समय कासल था। उसने न्यायका स्वाग धारण कर सिनेटसे कहा कि सीजर तो बहुत दूर है, पर पाम्पे रोमके पास ही है। अपना अधिकार छोड़े बिना उसे रोममें न आने देना चाहिए। परन्तु पाम्पेको यह बात

सीजरको वहाँसे बुला लेना ही ठीक समझा। सिनेट यह भी चाहती थी कि दूसरा पद देनेके पहले सीजर सेनापतित्वके पदसे अलग कर दिया जाय। कारण—सीजरके पास सेना एक प्रबल शस्त्र स्वरूप था। पाम्पेने प्रयत्न कर सीजरके कार्योंकी जाँच पड़ताल करानेका प्रबन्ध कराया था कारण, पाम्पेने लोगोंसे कहा था कि सीजरने अपने प्रान्तके लोगोंपर बड़ा अत्याचार किया है। केटोंने इन अत्याचारोंका पता लगानेका काम अपने हाथमें लिया था। सब लोगोंको पूरा विश्वास था कि जाँचके समय यदि पाम्पे अधिकारारूढ़ हुआ तो सीजर अवश्य दोषी ठहराया जायगा। उस समयके सिसरोके एक सवाददाताने लिखा है,—"पाम्पे ने यह निश्चय किया कि अपनी सेनाके अधिपतिके पदसे त्यागपत्र दिये बिना सीजरको कभी कॉंसल न होने दूँगा। और सीजर अच्छी तरह जानता है कि अपने अधिकार से त्यागपत्र देते ही उसे अपने प्राण गँवाने पड़ेंगे।"

विक्रमके ७ वें वर्ष सीजर सिसालाइन गॉल देश में—जिसे आज कल उत्तर-इटली कहते हैं—गया। वहाँ उसने खूब नाम कमाया। वहाँ के लोग उसका बड़ा मान करते थे। इसके बाद वह फारदर गॉलदेशमें गया। यहाँ उसने अपनी सेनाका निरीक्षण किया। उधर रोममें सङ्कट यथास्थिति उपस्थित हो गया था। वहाँ सीजरके पक्षकी रक्षा करने वाला एक भी प्रभावशाली व्यक्ति न रहा। सीजर चिन्ताग्रस्त रहने लगा। उसने केयस स्क्रिबोनियस क्युरियो नामके अपने पुराने मित्रको इस कामके लिए चुना। वह अच्छे कुलमें पैदा हुआ था। वह होशियार और कर्तव्यपरायण था। परन्तु था वह व्यसनी। इसीसे उसे बहुत ऋण हो

गया था। सीजरने गॉल देशसे धन भेज उसे ऋणमुक्त कर अपने पक्षमें मिला लिया। उसकी स्त्रीका नाम फुल्विया था। यह क्लोडियसकी—वही क्लोडियस जो स्त्रीवेश धारण कर सीजरके घरमें घुसा था—विधवा थी। यह षड्यन्त्री और चालाक स्त्री थी। क्युरियो उस समय पाम्पे के पक्षमें था। हम ऊपर लिख चुके हैं कि उसे ऋण-मुक्त कर, सीजरने अपनी ओर कर लिया था। निदान वह धीरे धीरे गुप्त रीतिसे पाम्पेके विरुद्ध कोशिश करने लगा। और अनुकूल अवसर पाते ही उसने खुली तौरसे सीजरका पक्ष ग्रहण कर लिया। अब अकेला क्युरियो ही सीजरका हित-चिन्तक न था। लाखों रुपये खर्च कर सीज़रने बहुतसे लोगोंको अपनी ओर कर लिया था। वे प्रकटमें तो पाम्पेके पक्षके मालूम होते थे किन्तु भीतर भीतर सीजरकी हितचिन्तनामें ही लगे रहते थे। उन्होंने यद्यपि प्रत्यक्ष रूपसे सीज़रका पक्ष ग्रहण नहीं किया था, तब भी वे सदा सीजरके प्रतिकूल किये गये प्रयत्नोंको निष्फल करनेके उद्योगमें लगेरहते थे।

सिनेट सीजरके प्रतिकूल थी। वह उसे गाल देशके अधिकारसे अलग किया चाहती थी। उस समय रोमका पञ्चाङ्ग भी सिनेटके हाथमें था। सिनेट अपने इच्छानुसार तिथि महीनोंका क्षय या वृद्धि करनेमें पूर्ण स्वतन्त्र थी। पञ्चाङ्गके अनुसार सीजरकी मुद्दत २१ कार्तिकको ही पूरी होती थी, पर वास्तवमें असली मुद्दत इससे छः मास पूरी होती थी। क्युरियो इस समय कासल था। उसने न्यायका स्वाग धारण कर सिनेटसे कहा कि सीजर तो बहुत दूर है, पर पाम्पे रोमके पास ही है। अपना अधिकार छोड़े बिना उसे रोममें न आने देना चाहिए। परन्तु पाम्पेको यह बात

स्वीकार न थी। वह खुल्लमखुल्ला कहने लगा कि पाम्पेकी नियत बिगड़ गयी है। वह जबरदस्ती रोम राज्य-सत्ता अपने हाथमें लिया चाहता है। क्युरियो लोगोंको यह दिखानेका यत्न करने लगा कि वह दोनों पक्षोंको समान दृष्टिसे देखता है। और इसीलिए उसने सिनेटमें यह प्रस्ताव पेश किया कि यदि ये दोनों सरदार अपना अपना अधिकार न छोड़ें तो ये प्रजासत्तात्मक राज्यके शत्रु माने जायँ और उनका दमन करनेके लिए रोम सरकार सेना भेजे। लोगोंने इस प्रस्तावका अनुमोदन तो किया, पर कुछ भी लाभ न हुआ। अन्तमें सिनेटने पार्थियन लोगोंसे युद्ध करनेका बहाना कर दोनों सरदारोंसे एक एक पलटन माँगी। पाम्पेने यह बात मान ली। परन्तु उसने सिनेटसे कहा कि मैंने तीन वर्ष पहले सीज़रको एक पलटन दी थी, वह वापस दिलवायी जाय। पलटन माँगनेमें उसका उद्देश यह था कि सीज़रकी शक्ति घट जाय और उसकी शक्ति बनी रहे। वह यह भी दिखाना चाहता था कि मैंने लोगोंका कहा मान लिया। परन्तु सीजर भी कच्चे गुरुका चेला न था। उसे विश्वास था कि दो पलटन भेज देनेपर भी उसकी शक्ति न घटेगी। कारण उसने अपने धनसे रोमके कई लोगोंको अपने वशमें कर लिया था। इसलिए उसने दोनों पलटनें भेज दीं। सीजरने पलटनें रवाना करते समय प्रत्येक सैनिकको खूब इनाम दिया था ताकि वे समयपर काम आयें। इन पलटनोंके रोम पहुँचनेपर सिनेटने उन्हें पार्थियन लोगोंसे लड़नेके लिए नहीं भेजा। समय आ पड़नेपर सीजरका सामना करनेके उद्देशसे ये दोनों पलटनें कापुआ भेज दी गयीं।

सिनेटको सीजरसे लड़नेकी तय्यारी करते देख क्युरियोने

रोमसे चल देना ही अच्छा समझा। अतएव रोममें कायदे कानूनकी पाबन्दी न रहनेके कारण नगर छोड़नेका बहाना कर वह सीजरके पास चला गया।

इस समय सीजर इटली और गालके सीमान्तपर बहने वाली रुबिकान नदीके उत्तर तटपर बसे हुए रोवेना नगरमें ठहरा हुआ था। वह वहाँ रहकर रोमकी परिस्थितिका पता लगाया करता था, वह वहीं अपने प्रयत्नोंके सूत्र हिलाया करता था। सूबेदारोंको अपने प्रान्त छोड़कर अन्यत्र जानेकी परवानगी न थी और इसीसे सीजर सीमान्त प्रदेश में आकर रहा था।

सीजरसे मिलनेके बाद विक्रम पोपके फ्युरियो सीजरका पत्र लेकर रोम गया। उस पत्रमें सीजरने लिखा था कि यदि पाम्पे सब अधिकार छोड़ दे तो मैं भी अधिकार छोड़नेके लिए तय्यार हूँ। परन्तु अकेले मुझे ही अधिकार छोड़नेको हुक्म दिया जायगा तो मैं उसे न मानूँगा। इतना ही नहीं, परन्तु इस प्रकार मुझे कष्ट देने और मेरे देशपर अत्याचार करनेके कारण मैं स्वय रोमपर चढ़ाई कर बदला लूँगा।

सिनेट सभामें कुछ पाम्पेके पक्षपाती थे। वे यह पत्र सिनेटमें नहीं बाँचने देते थे। परन्तु तत्कालीन ट्रिब्यून सीजरके अनुकूल थे। इसलिए पत्र सभामें पढ़ा गया। खूब वाद विवाद होनेके बाद बहुमतसे यह निश्चय हुआ कि यदि सीजर अपनी फौज न तोड़े तो वह राज्यका शत्रु समझा जाय और उसका बन्दोबस्त करनेके लिए सेना भेजी जाय। अटोनायनस और क्याशियस नामक ट्रिब्यूनने यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं किया, किन्तु उनकी एक न चली। सिनेटने राज्य-के सकट ग्रस्त होनेका बहाना कर तत्कालीन दोनों कोसलको

डिक्टेटर नियत किया। पाम्पेने रोमके दरवाजेके पास अपनी सेनाकी छावनी डाली तदनन्तर सिनेटमें यह ठहराव हुआ कि दोनों ट्रिब्यून सिनेट सभासे निकाल दिये जायें। तब रोममें रहना भयानक समझकर दोनों ट्रिब्यून और क्युरियो सीजरके पास चले गये। सीज़रसे मिलकर उन्होंने रोमके सब हाल कह सुनाए। और उसे दिखा दिया कि युद्ध किये बिना काम न चलेगा सीजर भी तो यही चाहता था।

कुछ लोगोंका मत है कि रोमन विधानसे ही सीजर को रोमके विरुद्ध बलवा करनेका अधिकार मिल गया था। सीजरने अपना आचरण ऐसा रखा कि विधानके उल्लंघन करनेका सब दोष उसके प्रतिपक्षियोंके माथे ही मढा गया। वह बेदाग बच गया। परन्तु हमारी समझसे सीजरने ही यह सब किया था। इसके अलावा गत ८० वर्षोंमें लोगोंके विचार बहुत कुछ बदल गये थे। पुरानी कल्पनाओंका ह्रास हो गया। न्यायके काममें पक्षपात का प्रभाव बढ़ने लगा था। राज्यके बन्धन ढीले पड़ गये थे और चारों ओर अव्यवस्था फैल गयी थी। इन्हीं सब परिवर्तनोंके कारण सीजरका मार्ग कुछ सुगम हो गया। छोटा ग्रयाक्चस, सुल्ला, सिन्ना आदिके जमानेसे पाम्पे और सीजरके जमानेकी तुलना करनेसे साफ मालूम होता है कि रोमकी प्रजासत्ता धीरे धीरे घटती जा रही थी। राज्यसत्ताकी स्थापना करनेकी पूर्ण तय्यारी हो गयी थी। रोमके धनी मनुष्य चाहते थे कि राज्य सूत्र कुछ मुख्य व्यक्तियोंके हाथमें रहें और सिनेट सभा उनका रुख देखकर कार्य सम्पादन करती रहे। अन्य लोग चाहते थे कि सब अधिकारोंसे हाथ धोना पड़ा, तोभी कोई हानि नहीं, परन्तु राज्य-सूत्र, लोकमतसे निर्वाचित मनुष्यके ही हाथमें

रहे। विद्वान् और विचारवान् लोग राजकीय मामलोंसे अलग रहनेकी कोशिश करने लगे। 'कोउ नृप होय हमें का हानी' के अनुसार वे दूरसे तमाशा देखते रहने लगे। आटिकस, व्यवहार दक्ष, चतुर और समझदार था। उसने तीन पीढ़ियोंकी राज्य व्यवस्था देखी। केटो और ब्रूटस भी कुछ कम विद्वान् न थे। सर्वोत्तम तत्वज्ञानके अनुसार उनके मत स्थिर हुए थे। वे अपने मतके अनुसार लोगोंके मत तय्यार करनेकी कोशिश में लगे हुए थे परन्तु उनकी इच्छा पूरी न हुई। उन्हें मालूम हो गया कि रोमके प्रजासत्तात्मक राज्यमें सद्गुणोंके प्रभावका असर कम होने लग गया था। विद्वानों को मुंह बन्द कर बैठ रहनेका समय आ गया था। रोममें धूर्त्त लोगोंका प्रभाव बढ़ने लगा था। वाचाल व्यक्तियोंका विशेष सम्मान होता था। खरी खरी सुनानेवालोंका निरादर होने लगा था। केवल सिसरो रोमके प्रजा सत्तात्मक राज्यकी सेवा कर रहा था। वह खुली तौरपर कहा करता था कि कायदेसे सिद्ध हुई राज्यसत्ताका आदर करना स्वतन्त्रताका मूल तत्व है। परन्तु उस समय सिसरोके समान बहुत कम आदमी पाये जाते थे। क्यूरियो सीजर आदि स्पष्टवक्ता सज्जन खुल्लमखुल्ला कहा करते थे,—"रोमका राज्य नाम मात्र के लिए प्रजासत्तात्मक है। अब उसमें कुछ दम न रहा। रोमके प्रजासत्तात्मक राज्यकी नाडियाँ मन्द हो चली है। बहुत ही जल्द उसका अन्त हो जायगा।"

ऊपर लिख आये हैं कि दोनों ट्रिब्यून और क्यूरियो रोम छोड़ कर चले गये थे। तत्कालीन दोनों कौंसल भी पाम्पे की छावनी में चले गये थे और उन्होंने सब अधिकार सुपुर्द कर दिया था। निदान शीघ्र ही लडाईकी तय्यारियाँ

होने लगीं। नवीन सेना भरती की जाने लगी। पाम्पेने अपनी स्पेन देशकी सेना इटली नहीं मँगवाई थी। क्योंकि उसने वह सेना, सीजरपर युद्धके समय पीछेसे आक्रमण करनेके लिए रख छोड़ी थी। उस समय रोमके अधिकारियोंने लोगोंको बड़ी पीडा पहुँचायी। उन्होंने लोगोंसे ज़बर्दस्ती रुपया वसूल किया था। इतना ही नहीं, उन्होंने इटलीके कई धनी मन्दिरोंका धनतक छीन लिया था।

यह हाल सुनते ही सीजरने रोमपर चढ़ाई करनेका निश्चय किया। और सेनाका एक भाग ले वह इटलीमें घुस गया।

इस प्रकार पाम्पे और सीजरमें युद्ध छिड़ गया। पाम्पे गर्व से फूल रहा था। उसे पूर्ण विश्वास था कि उसी की जीत होगी। उसकी तय्यारी भी अच्छी थी। परन्तु सीजर और ही ढङ्ग का आदमी था। वह उतावले स्वभाव का न था। उसकी सेना भी अच्छी थी। कई मित्र उसकी सहायता करने को तय्यार थे। इसके अतिरिक्त असंख्य रुपये खर्च कर उसने बहुतसे लोगोंको गुप्त रीतिसे अपनी ओर कर लिया था।

ऊपर लिखे अनुसार दोनों ओर युद्धकी तय्यारियाँ हो रही थीं। किन्तु सीजरका मन शान्त न था। उसके मन में कल्पनाकी तरङ्गें उठ रही थीं। सीजर राजनीतिके दाँव पेंच जानता था। वह इतिहासमें लिखने योग्य काम करता था। वह स्वयं उत्तम ग्रन्थकार था। इस लिए वह वही काम करता था जो कि उसकी कीर्त्ति बढ़ाते थे। वह जानता था कि लड़ाई कर अपने देशबान्धवोंके रक्तकी नदी बहाना अच्छा नहीं परन्तु उसका कुछ वश न चलता था। उसने कहा था कि पाँसे फेंक तो दिये हैं अब जो कुछ होगा वही ठीक।

इस समय रोममें बड़ी गड़बड़ मच गयी। लोग सीजरका पराक्रम जानते थे। उस सङ्कटके समयमें दोनों कौंसिलके डिक्टेटर बनाये गये थे तो भी लोग विशेष चिन्ताग्रस्त थे। क्योंकि कौंसिलमें कुछ दम न था। और इसीसे लोग घबरा रहे थे। एक बार किसीने पाम्पेसे पूछा था कि यदि सीजर अपनी सब सेना लेकर आए तो तुम क्या करोगे? इसके उत्तरमें पाम्पेने कहा था कि कुछ परवाह नहीं। मैं जहाँ लात मारूँगा वहींसे बहुत सी सेना निकाल दूँगा। प्रसङ्ग आ पड़नेपर पाम्पेने यत्न भी किया, लेकिन कुछ भी फल न हुआ। इस समय रोममें भी बहुत सेना थी। यदि इतनी ही सेना सीजरका सामना करनेके लिए भेज दी जाती, तो सीजरकी अवश्य हार होती। परन्तु सीजरके रुबिकान नदी पार कर इटलीमें घुस आनेकी खबर सुनते ही पाम्पेका बल और साहस रफूचक्कर हो गया। तब, सेना क्या कर सकती थी? सेनापति ही हताश हो जाय तो सैनिक क्यों न निरुत्साह हों! सिनेटके सभासद अपने अपने प्राण ले रोमसे भाग गये थे। सरकारी खजानेकी उचित व्यवस्था करना भी वे भूल गये थे। यदि कोष सुरक्षित स्थानमें रख दिया जाता तो पाम्पे आदिको विशेष सहायता मिलती। अस्तु।

सीजरके सैनिक उसके अनन्य भक्त थे। वे एक निष्ठ थे। किन्तु एक व्यक्तिमात्र का अपवाद था। उसका नाम लायेनस था। वह कई वर्षोतक सीजरके साथ रहा था। वह समझता था कि मेरे ही बाहुबलके प्रभावसे जहाँ तहाँ सीजरकी जीत होती है। पाम्पेके पक्षवालोंने द्रव्यका लोभ दिखा उसे अपनी ओर कर लिया। इससे पाम्पेको कुछ सन्तोष हुआ। परन्तु सीजरको बिलकुल रञ्ज न हुआ। क्योंकि वह उसको

योग्यता जानता था। लावेनसके सीजरकी सेनासे निकल जानेपर उसने उसे वापस बुलानेकी कोशिश भी न की। इतना ही नहीं, उसने उसका वेतन भी उसके पास भिजवा दिया था। लावेनसके चले जानेसे सीजरकी कुछ भी हानि नहीं हुई। वह इटलीमें घुसता जाता था। बहुतसे नगर उसके अधीन हो गए थे। सीजरने लोगोंके साथ अच्छा बरताव कर उन्हें अपने पक्षमें मिला लिया। कार्फीनियम शहरमें पाम्पेके पक्षने सीजरका सामना किया। परन्तु सिनेटके सिपाही सीजरके अनुकूल थे। इसलिए सीजरके आतेही उन्होंने नगर उसके अधीन कर दिया। डामीशियस पाम्पेके पक्षकी सेनाका सेनापति था। सीजरने उसे छोड़ दिया।

सीजरको रोमकी ओर आते सुनकर पाम्पे इटली छोड़ कर चले जानेका विचार करने लगा। वह ब्रुडुसियमकी ओर रवाना हुआ। इधर सीजरने ६० दिनमें सारे इटलीदेशपर अधिकार कर लिया। और तब उसने पाम्पेका पीछा किया पाम्पे वहाँसे निकल भागनेकी तय्यारी करने लगा। इतनेमें सीजरने उस बन्दरको घेर लिया। परन्तु पाम्पे वहाँसे निलक भागा। आगे सीजरने उसका पीछा नहीं किया। क्योंकि उसके पास जहाज न थे। वह रोममें आकर राज्यकी व्यवस्था करने लगा। किसीने सीजरको न रोका। शनीके मन्दिरमें सोना रखा हुआ था। मेटिलस नामक ट्रिब्यूनने उससे कहा था कि मैंने गॉल लोगोंको जीत लिया है। अब वे रोमपर चढ़ाई न करेंगे। इसलिए डरनेका कोई कारण नहीं। अतः आप अब चुप रहिए। ये वाक्य सुनते ही मेटिलस चुप हो गया। उसने चुपचाप सीजरको सर्ण लेने दिया।

नवाँ परिच्छेद

पाम्पेकी मृत्यु, सीजरका प्रभाव

पाम्पे और तत्कालीन दोनों कॉसलोंके इटली छोड़कर चले जानेपर राज्यके सूत्र सीजरके हाथमें आगये। यदि वह चाहता तो अपने प्रतिपक्षियोंसे बदला ले सकता था। परन्तु उसने अपने अधिकारका दुरुपयोग नहीं किया। उसे एक बार मार्गमें सिसरो मिला, उसने, सीजरके पक्षमें मिल जानेसे साफ इन्कार कर दिया। परन्तु सीजरने उसको बिलकुल तकलीफ न दी। उसने रोमके लोगोंसे साफ कह दिया कि रोमके कॉसल आदि अधिकारी भाग गये हैं, तो भी मैं तुम्हें बिलकुल कष्ट न दूँगा। वह रोममें गया उस समय उसके साथ-शरीर-रक्षक न थे। वह साधारण मनुष्य की तरह नगरमें गया था। यदि वह चाहता तो थोड़ेसे परिश्रमसे रोमके धनी लोगोंसे बहुत धन ले लेता। परन्तु उसने ऐसा करना ठीक न समझा। उसने शनिके मन्दिरका सोना ले लिया था।

सीजरके रोममें आकर रहनेपर वहाँके उद्योग धन्धे पूर्ववत् चलने लगे। परन्तु अब रोमपर कॉसलका तथा सेनाका अधिकार था। इस समय सीजर और रोमके लोग बहुत चिन्ता ग्रस्त हो रहे थे। क्योंकि अनाजकी कमी थी। सर्डिनिया, सिसिली, और आफ्रिकाके रोमके प्रान्तोंसे रोमके लिए अनाज आता था। परन्तु उनपर पाम्पेके पक्षका

अधिकार था। अतः उन प्रान्तोंको अपने कब्जेमें कर रोमको अनाज पहुँचाना सीजरने अपना आवश्यक कर्तव्य समझा। इसलिए उसने तीनों प्रदेशोंमें एकदम सेना भेजी। सर्डीनिया और सिसली द्वीपपर अधिकार करनेमें देर न लगी। सर्डीनियाके लोग सीजरके अनुकूल थे। अतः सीजरकी सेनाके वहाँ पहुँचते ही उन्होंने उसका अच्छा स्वागत किया। सिसलीमें कनिष्ट केटो, पाम्पेके पक्षकी सेनाका अधिपति था। उस टापूके पास सीजरकी सेनाके पहुँचते ही वह भी सिसली छोड़कर चला गया। हाँ, आफ्रिकामें सीजरकी सेनाकी जीत न हुई। पाम्पेके पक्षके लोगोंने न्युमिडियाके राजाकी सहायतासे सीजरकी सेनाको हरा दिया और उसके सेनापति क्यूरियोको मारडाला। इसलिए उस सेनाको वापस रोम लौट जाना पड़ा।

इस प्रकार सार्डीनिया और सिसली द्वीपपर अधिकार कर लेनेसे रोमको अनाजकी चिन्तासे छुटकारा मिला। तदनन्तर सीजरने सारे इटाली देशका राज्य कार्य अटोनाइनसके सुपुर्द किया, रोम नगरका बन्दोबस्त करनेका काम मार्कस लेपिडसको सौंपा और स्वयं सेना सहित स्पेनकी राह ली। कारण, पाम्पेने स्पेनमें एक बड़ी सेना रख छोड़ी थी। पाम्पेका विचार था कि सीजरके इटली स्वाधीन कर लेनेपर, पश्चिम और पूर्वकी ओरसे उसपर एकदम चढ़ाई करदी जाय। पश्चिमकी ओरसे चढ़ाई करनेका काम उसने अपनी स्पेन देशकी सेनाको सौंपा था। और पूर्वकी ओरसे आक्रमण करनेके लिए यूनान और एशियाके राजाओंकी सेना जमा करनेके इरादेसे वह स्वयं उधर गया था। उसकी सेना रपायरस स्थानमें छावनी डाले पड़ी थी।

स्पेनकी ओर रवाना होते समय सीजरने कहा था कि मैं ऐसी सेनासे युद्ध करनेके लिए आ रहा हूँ, जिसपर अधिपति नहीं है। और लौट आनेपर मैं एक ऐसे सेनापतिपर चढाई करूँगा कि जिसके पास सेना न होगी। अर्थात पाम्पेकी सेना तो स्पेनमें थी परन्तु स्वय पाम्पे वहाँ न था। स्पेनमें सीजर पाम्पेकी सेनासे युद्ध करनेके लिए जा रहा था। इस सेनाको हरा कर लौटनेपर उसे पाम्पेसे युद्ध करना था। परन्तु स्पेनकी सेना नष्ट हो जानेपर पाम्पे सेना रहित सेनापति रह जायगा। स्पेनके मार्गमें मसालिया नामक एक नगर मिला। वहाँके लोगोंने बलवा किया था। इसलिए उस नगरके बन्दोबस्तके लिए कुछ सेना वहाँ छोडकर सीजर आगे बढा। स्पेनमें उसे रसद कम मिलने लगी। इससे सैनिकोंको विशेष कष्ट होने लगा। यह देखकर पाम्पेके पक्षके लोगोंका उत्साह बढ गया। परन्तु सीजर न डगमगाया। नदियोंमें बाढ आरही थी। बाँसकी नावें बनवा कर उनपर चमडा मढ़वाया गया। और इन नावोंकी सहायतासे सीजरने आस पासके प्रान्तोंसे अपना सम्बन्ध बनाए रखा। पाम्पेकी सेनाका सामना करनेका प्रसग आनेपर, सीजरका सामर्थ्य देख कर लोग चकित होगए और पाम्पेके पक्षके बहुतसे लोग उससे आ मिले। इन लोगोंके साथ सीजरने अच्छा बर्ताव किया। उसकी इस उदारताको देखकर बहुतसे लोग उसके पक्षमें मिल गये। शीघ्र ही सीजरने स्पेनपर कब्जा कर लिया।

स्पेनसे लौटती बार सीजर मसालिया गया। वहाँके लोग उसकी शरण आये। सीजरने उनको पुन स्वतन्त्रता दी। परन्तु इससे नगरवासियोंके हृदयपर गहरी चोट पहुँची और धीरे धीरे नगरकी शक्ति बिलकुल नष्ट हो गयी।

अधिकार था। अतः उन प्रान्तोंको अपने कब्जेमें कर रोमको अनाज पहुँचाना सीजरने अपना आवश्यक कर्तव्य समझा। इसलिए उसने तीनों प्रदेशोंमें एकदम सेना भेजी। सर्डीनिया और सिसली द्वीपपर अधिकार करनेमें देर न लगी। सर्डीनियाके लोग सीजरके अनुकूल थे। अतः सीजरकी सेनाके यहाँ पहुँचते ही उन्होंने उसका अच्छा स्वागत किया। सिसलीमें कनिष्ट केटो, पाम्पेके पक्षकी सेनाका अधिपति था। उस टापूके पास सीजरकी सेनाके पहुँचते ही वह भी सिसली छोड़कर चला गया। हाँ, आफ्रिकामें सीजरकी सेनाकी जीत न हुई। पाम्पेके पक्षके लोगोंने न्युमिडियाके राजाकी सहायतासे सीजरकी सेनाको हरा दिया और उसके सेनापति क्यूरियोको मारडाला। इसलिए उस सेनाको वापस रोम लौट जाना पड़ा।

इस प्रकार सार्डीनिया और सिसली द्वीपपर अधिकार कर, लेनेसे रोमको अनाजकी चिन्तासे छुटकारा मिला। तदनन्तर सीजरने सारे इटाली देशका राज्य कार्य अन्टोनाइ-ससके सुपुर्द किया, रोम नगरका बन्दोबस्त करनेका काम मार्कस लेपिडसको सौंपा और स्वयं सेना सहित स्पेनकी राह ली। कारण, पाम्पेने स्पेनमें एक बड़ी सेना रख छोड़ी थी। पाम्पेका विचार था कि सीजरके इटली स्वाधीन कर लेनेपर, पश्चिम और पूर्वकी ओरसे उसपर एक दम चढ़ाई करदी जाय। पश्चिमकी ओरसे चढ़ाई करनेका काम उसने अपनी स्पेन देशकी सेनाको सौंपा था। और पूर्वकी ओरसे आक्रमण करनेके लिए यूनान और एशियाके राजाओंकी सेना जमा करनेके इरादेसे वह स्वयं उधर गया था। उसकी सेना डायरस स्थानमें छावनी डाले पड़ी थी।

स्पेनकी ओर रवाना होते समय सीजरने कहा था कि मैं ऐसी सेनासे युद्ध करनेके लिए जा रहा हूँ, जिसपर अधिपति नहीं है। और लौट आनेपर मैं एक ऐसे सेनापतिपर चढाई करूँगा कि जिसके पास सेना न होगी। अर्थात पाम्पेकी सेना तो स्पेनमें थी परन्तु स्वय पाम्पे वहाँ न था। स्पेनमें सीजर पाम्पेकी सेनासे युद्ध करनेके लिए जा रहा था। इस सेनाको हरा कर लौटनेपर उसे पाम्पेसे युद्ध करना था। परन्तु स्पेनकी सेना नष्ट हो जानेपर पाम्पे सेना रहित सेनापति रह जायगा। स्पेनके मार्गमें मसालिया नामक एक नगर मिला। वहाँके लोगोंने बलवा किया था। इसलिए उस नगरके बन्दोबस्तके लिए कुछ सेना वहाँ छोडकर सीजर आगे बढा। स्पेनमें उसे रसद कम मिलने लगी। इससे सैनिकोंको विशेष कष्ट होने लगा। यह देखकर पाम्पेके पक्षके लोगोंका उत्साह बढ गया। परन्तु सीजर न डगमगाया। नदियोंमें बाढ आरही थी। बाँसकी नावें बनवा कर उनपर चमडा मढ़वाया गया। और इन नावोंकी सहायतासे सीजरने आस पासके प्रान्तोंसे अपना सम्बन्ध बनाए रखा। पाम्पेकी सेनाका सामना करने का प्रसग आनेपर, सीजरका सामर्थ्य देख कर लोग चकित होगए और पाम्पेके पक्षके बहुतसे लोग उससे आ मिले। इन लोगोंके साथ सीजरने अच्छा बर्ताव किया। उसकी इस उदारताको देखकर बहुतसे लोग उसके पक्षमें मिल गये। शीघ्र ही सीजरने स्पेनपर कब्जा कर लिया।

स्पेनसे लौटती बार सीजर मसालिया गया। वहाँके लोग उसकी शरण आये। सीजरने उनको पुन स्वतन्त्रता दी। परन्तु इससे नगरवासियोंके हृदयपर गहरी चोट पहुँची और धीरे धीरे नगरकी शक्ति बिलकुल नष्ट हो गयी।

रोममें सीजरके मित्रोंका प्रयत्न सफल हुआ और वह डिक्टेटर चुना गया। यह संवाद सुनकर उसे बहुत आनन्द हुआ। इसमें विशेषता यह थी कि उसे कौंसलने डिक्टेटर नहीं बनाया था, परन्तु प्रीटरने लोकमत लेकर सिनेट सभाके विरोध करनेपर भी उसे डिक्टेटर नियत किया था। सीजरसे ये बातें छिपी न थीं और इसीलिए वह तदनुसार बर्ताव करता था। अपनी ओरके मनुष्यके डिक्टेटर होनेसे रोमके लोगोंको बहुत खुशी हुई और उनकी यह धारणा हो गयी कि उन्हींके सामर्थ्यसे सीजरको यह उच्च पद मिला है। परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि यह सब सीजरकी सेनाकी शक्तिका प्रभाव है।

इस समय सीजर केवल ११ दिनतक डिक्टेटर रहा था। इतने थोड़े समयमें उसे बहुत काम करना था। तो भी उसने इतने थोड़े समयमें कई अच्छे काम किये। पाम्पेने कई लोगोंको देशसे निकाल दिया था। सीजरने इन सब लोगोंको वापस बुलाया। सुल्लाके जमानेमें कई लोग मारे गये थे। उनके अधिकार उनके लड़कोंको दिये गये। ब्याजकी दर सैकड़ा ४० तक बढ़ गयी थी। सीजरने उसे बहुत कम कर दिया। तदनन्तर सिनेटसे अपनेको कौंसल नियत करवाकर वह पाम्पेसे लड़नेके लिए रवाना हुआ।

ऊपर लिख चुके हैं कि पाम्पे यूनान और एशिया माइनर के राजाओंकी सेना इकट्ठी कर रहा था। वे सब सेनासहित उससे आ मिले थे। वे पाम्पेको उत्तम सेनापति और श्रेष्ठ राजनीति विशारद समझते थे और इसीसे वे उसकी सहायताके लिए आये थे। पाम्पे इटलीसे अपने साथ २५ हजार सिपाही ले गया था। इसके अतिरिक्त सीरियाके सूबेदारके

२० हजार सिपाही भी उससे आ मिले थे। उसके पास कुल ४५ हजार रोमके सिपाही थे। और यूनान और एशिया माइनरके सिपाही मिलाकर उसके पास एक लाख सैनिक थे।

सीजरके पास कम सेना थी। उसकी सहायता करनेवाला भी कोई न था। सीजरके पास कुल १५,००० पैदल और ६०० सवार थे। यह सेना बहुत ही कम थी। परन्तु इन दोनों सेनाओंमें जमीन आसमान का अन्तर था। पाम्पेकी सेना शिक्षित न थी और वह एकनिष्ठ भी न थी। परन्तु सीजरकी सेना युद्धविद्यामें निपुण थी। उसे सब तरहका अनुभव था। सेना सीजरको ईश्वरकी तरह मानती थी। विक्रमके ८ वें वर्ष सीजर ब्रुंडिसियस स्थानपर आ पहुँचा। उस समय एड्रियाटिक समुद्रपर पाम्पेका अधिकार था। पाम्पेने समुद्रके अधिकारका बन्दोबस्त एक मनुष्यको सौंपा था। वह बहुत ही सुस्त था। उसकी सुस्तीसे सीजरका काम बन गया। अपने छोटेसे बेड़ेकी सहायता से उसने अपनी सेनाका एक विभाग एड्रियाटिक समुद्रके उस पार सुरक्षित पहुँचा दिया। बाकी सेनाको लानेके लिए जहाज वापस भेजे गये परन्तु वे शत्रुके हाथ लग गये। अत कुछ दिनोंतक सीजर पाम्पेसे युद्ध न कर सका। अन्तमें अएटोनाइनसने नये जहाज बनवाकर भेजे। इन जहाजों द्वारा सीजरकी सेना उस पार पहुँच भी गयी। एक बार सीजर एक नावमें बैठकर कहीं जा रहा था। एकाएक नाव डगमगाने लगी। मल्लाहोंको भयभीत देखकर सीजरने कहा—"डरो नहीं, तुम्हारी नावमें सीजर बैठा है। डूबनेका डर नहीं।" अर्थात् उसके कहनेका यह मतलब था कि जिस नावपर सीज़र बैठा है उसे डुबानेका साहस समुद्र भी नहीं कर सकता।

पाम्पे पेट्रा स्थानपर ठहरा हुआ था। अपनी सेना एकत्र कर लेनेपर सीज़रने उसे घेर लिया। पाम्पेको घेर लेनेसे सीजरको विशेष लाभ नहीं था। परन्तु उसने ऐसा इसलिए किया था कि ग्रीस, मासिडोनिया एशिया माइनर आदि प्रान्तोंको मालूम हो जाय कि पाम्पे सरीखे अप्रतिम पराक्रमी पुरुषसे बिलकुल न डरनेवाला एक नया मनुष्य पैदा हो गया है और इससे वे उससे डरने लग जायँ। उसका उद्देश सिद्ध हो गया। इस घेरेमें सीजरकी जीत न हुई तो भी बहुतसे लोग उसके नामसे परिचित हो गये और उन प्रान्तोंके बहुत लोग उसके अनुकूल हो गये। यहाँतक कि बिना लड़े वह सेनासहित थेसली प्रान्तमें चला गया था। सीजरको उधर गया देख पाम्पेके सरदारोंने उसे इटलीपर चढ़ाई करनेकी सलाह दी। यह सूचना अधिक महत्त्वकी थी और यदि पाम्पेने यह मान ली होती, तो रोमके इतिहासको बिलकुल निराला स्वरूप प्राप्त हो जाता। परन्तु पाम्पेने उनकी बात न मानी और वह सीजरका पीछा करनेका हठ करने लगा। अन्तमें, उसने अपनी सेनाको उधर जानेका हुक्म दे ही दिया। इस सेनाके साथ सिनेटके कई सभासद थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि पाम्पेकी जीत होगी। इसलिए युद्ध होनेके पहले ही वे लूटका माल बाँट लेनेके लिए वाद विवाद करने लगे। केटो और सिसरोने तो बहाना बना पाम्पेसे, इपायरसमें रहनेकी परवानगी ले ली।

पाम्पे सेना लेकर थेसली प्रान्तमें घुसा। फर्सालिया गाँवके पास दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ हुई। इस समय उसके पास ४० हजार पैदल और ७ हजार सवार थे। इसके अलावा उसकी सहायताको आये हुए राजाओंकी भी पुष्कल सेना

थी। सीजरके पास केवल २५ हजार पैदल और एक हजार सवार थे। परन्तु सीजरकी सेना शिक्षित और युद्धविद्या विशारद थी। सीजरकी सेनाको युद्धका अच्छा अनुभव था।

विक्रमके ६ वें वर्षके १८ कर्क (श्रावण) को पाम्पे सेना सहित आगे बढ़ा। सीजर भी उसका सामना करनेके लिए छावनी से बाहर निकल आया। भयङ्कर युद्ध हुआ। पाम्पेकी सेनामें नामके सरदार और सिपाही थे। अत सीजरकी परा क्रमी सेनाके सामने न ठहर सके। पाम्पेके हजारों लोग मारे गये। अयतक सीजर पाम्पेसे ही लड़ रहा था। उसकी सहायताको आये हुए राजाओंकी सेनाकी ओर सीजरने ध्यान नहीं दिया। जीतकी आशा होते ही सीजर राजाओं-की सेनापर जा पड़ा। मार काट होने लगी। बहुत लोग मारे गये।

पाम्पे घबराकर रणक्षेत्रसे भाग गया। वह समुद्र किनारे जा पहुँचा और एक व्यापारी जहाजमें बैठकर वहाँसे चल दिया। वहाँसे पहले वह लेसवास गया और तदनन्तर मिश्र देशके पेलूसियस बन्दरगाहमें जा उतरा। इस समय उसके साथ २००० लोग थे।

इस समय मिश्रमें राजगद्दीके लिए झगड़ा हो रहा था। मृत राजाने अपने मृत्युपत्रमें लिखा था कि मेरी लड़की क्लिओपेत्रा मेरे लड़के टालमीको ब्याह दी जाय और तब ये दोनों मिलकर राज्य करें। परन्तु टालमी छोटा था और क्लिओपेत्रा सयानी हो चुकी थी। दरबारके लोगोंने षड्यन्त्र रचकर क्लिओपेत्राको राजधानीसे निकाल दिया। इसी कारण भाई बहिन या पति पत्नीमें युद्ध ठन गया। इसी समय पाम्पे मिश्र जा पहुँचा। दोनों पक्षके लोग उसे

अपनी अपनी ओर मिलानेका यत्न करने लगे। परन्तु दोनों पक्षोंको भय था कि वह कहीं अपने विरुद्धके पक्षका सहायक न बन जाय। अन्तमें टालमीके लोगोंने पाम्पेको मार डालनेका निश्चय किया और एक जहाजमें बैठाकर उसका खून कर डाला। कुछ ग्रन्थकार लिखते हैं कि टालमीके पक्षके लोग सीज़रका पराक्रम जानते थे। पाम्पेको आश्रय देनेसे सीजर रुष्ट हो जाता। अत सीजरको सन्तुष्ट करनेके लिए उन्होंने पाम्पेको मरवा डाला। पाम्पेका खून उसकी पत्नीके सामने किया गया था। मृत्युके समय पाम्पेकी अवस्था ५८ वर्ष की थी। पाम्पे बहुत ही महत्वाकाक्षी था। रोम राज्यका सब अधिकार अपने हाथमें लिया चाहता था। परन्तु उसका स्वभाव बहुत ही अच्छा था। उसका वर्ताव भी निर्दोष था।

पाम्पेको मार डालनेपर उसका सिर सीजरके पास भेज दिया गया और उसकी लाश समुद्रके किनारे रेतपर फेंक दी गयी। पाम्पेकी यह दुर्दशा देखकर उसके सरदार भाग गये। उसके गरीब नौकरोंने उसका शव जलाया और अस्थियाँ जमाकर पाम्पेकी पत्नी कार्नीलियाके पास भेज दीं।

फार्सीलियाके युद्धके बाद सीजर पाम्पेका पीछा करनेके लिए थल मार्गसे रवाना हुआ। वह अपने साथ थोडी सी सेना ले गया था। वह एशिया माइनरके पश्चिमी किनारेपरसे होता हुआ अलेक्जण्ड्रिया जा पहुँचा। यहाँ टालमीके पक्षके लोगोंने उसे पाम्पेका सिर दिखाया। सिर देखते ही उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। कुछ लेखकोंका मत है कि यह सब ढोंग था। परन्तु सीजरके स्वभावको देखते हुए कहना पडता है कि यह ढोंग न था। वस्तुत उसे दुःख हुआ था। सच्चे

शूर समझते हैं कि वैरी लड़ता रहे पर पड़े-मरे नहीं। सत्य है लड़ते हुए वैरीसे युद्ध करनेसे यश मिलता है, मरे वैरीसे क्या होता है? इसके अतिरिक्त सिर सीजरका शत्रु न था। शत्रु तो वह व्यक्ति था जिसका सिर था। इसलिए उस सिर को देखकर सीजरकेसे दयालु मनुष्यको शोक होना अस्वाभाविक नहीं। इस प्रकार पाम्पेका अन्त हो जानेसे सीजर ही रोमराज्यका एक मात्र सूत्रधार बन गया।

सीजरने पाम्पेकी सेनाको बिलकुल तकलीफ न दी। उसने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया। उसने बहुतसे सिपाही अपनी सेनामें नौकर रख लिये थे। जो लोग घर जाना चाहते थे उन्हें जानेकी आज्ञा दे दी। सीजरका यह कृत्य उसके लिए शोभाजनक है। वास्तवमें यही धर्म न्याय है। सीजरकी उन लोगोंसे शत्रुता न थी। पाम्पेके नौकर होनेके कारण ही वे सीजरसे लड़ते थे। अत उनसे द्वेष न रखना ही न्यायसंगत था और सीजरने भी यही किया। इससे सीजरकी उदारताका दिग्दर्शन होता है।

अलेक्जड्रिया आनेपर सीजर मिश्रकी राजगद्दीके झगड़ेमें पड़ा। वास्तवमें टालमीका स्वत्व ही उचित था। परन्तु यहाँ भी विजयका प्रादुर्भाव हो गया। अनगके तीक्ष्ण कुसुम शरोंने सीजरका हृदय वेध दिया। क्लिओपेत्राके चक्षु-भ्रू विलासने सीजरको पागल बना दिया। उसके रूपने सीजरपर जादू कर दिया। ऐसी दशामें बेचारा सीजर क्या कर सकता था! वह भी तो मनुष्य ही था। बड़े बड़े ऋषि मुनि और देवता भी कामिनियोंके जालमें फँस गये थे, तब बेचारा सीजर कैसे बच सकता था! लाचार उसे क्लिओपेत्राका पक्ष लेना पड़ा। धन्य है पुष्पधन्वा! न्यायोंसे अन्याय

धर्मात्मासे महापाप कराना और बड़े बड़े सन्यासियोंको नीचातिनीच रमणीके पीछे दर दर भटकाना तुम्हारा ही काम है!!

मिश्र दरबारके सब लोग टालमीके पक्षमें थे। सीजरके क्लिओपेत्राका सहायक होते ही लोग भी युद्धकी तय्यारी करने लगे। इस समय सीजरके पास बहुत थोड़ी सेना थी। वह क्लिओपेत्राके साथ ऐश आराममें मग्न रहने लगा। वह रात दिन उसीके महलमें रहता था। एक दिन टालमीकी सेना-ने क्लिओपेत्राका महल घेर लिया। यह सम्वाद सुन पहले तो सीजर घबरा उठा परन्तु बादमें उसे एक युक्ति सूझी और वह तैरकर बन्दरगाहमें लगर डाले हुए अपने जहाजमें जा पहुँचा। उसने उस निरुपयोगी जहाजमें आग लगा दी। वह आग फैलते फैलते पासके ग्रन्थालयमें जा लगी जिससे वह जलकर भस्म हो गया। इस ग्रन्थालयमें करीब ४ लाख हस्त लिखित ग्रन्थ थे। वे सबके सब जल गये। सीजरका यह भयकर कृत्य देखकर टालमीके पक्षवाले डर गये और उन्होंने उससे लड़ना छोड़ दिया। तदनन्तर सीजरने क्लिओपेत्राको मिश्रकी राजगद्दीपर बैठाया और आप उसके साथ ऐश आराममें मग्न रहने लगा। बेचारा टालमी भाग जानेके लिए एक जहाजमें जा चढ़ा किन्तु मार्गमें वह जहाज एकाएक डूब गया इस प्रकार विक्रमके १० वें वर्ष टालमीका अन्त हो गया।

इसी समय मिथ्रिडेट्सके लड़के फार्नासेसने थलवा किया। यह सम्बन्ध सुनते ही सीजर उधर गया और झेला स्थानपर उसे हरा दिया। फार्नासेसका पराभव करनेमें सीजरको कुछ भी देर न लगी। उसने यह युद्ध पाँच दिनमें

पूराकर डाला। उसने यह सम्बन्ध सिनेट सभाको लिख भेजा। समाचारमें केवल चार शब्द लिखे थे। "आया, देखा और जीता।" और वास्तवमें वहाँ हुआ भी वैसा ही था।

सीजरकी विजयका संम्वाद सुनकर रोमके लोग उससे दबने लगे। इससे सीजरके मित्र उसके लिए अधिक उत्साह से उद्योग करने लगे। अन्तमें, रोमके लोगोंने उसे दूसरी बार रोमका डिक्टेटर बनाया।

तदनन्तर १० वि० के भाद्र मासमें सीजर रोम लौट गया। वहाँ वह तीन मासतक रहा। लोगोंको भय होने लगा कि कहीं सुल्लाके समान यह भी अपने विरुद्ध पहलेके लोगोंके वधकी आज्ञा न देदें। परन्तु सीजर वैसा क्रूर नहीं था, दयालु व्यक्ति था। उसने अपने प्रतिपक्षियोंपर दया दिखायी। हाँ, कापुआकी सेनाने बलवा किया था। अत उन बलवाइयोंको अवश्य दण्ड दिया। अपने कृपा पात्र लोगोंको सीज़रने राज्यमें ऊँचे ऊँचे पद दिये। दसवीं पलटनपर सीजरकी विशेष कृपा थी। उसने सैनिकोंको कुछ इनाम देनेके लिए कहा था। वे लोग उसके लिए हठ करने लगे। निदान उसने उन सब सेनिकोंको रोमके एक बडे मैदानमें बुलाया। सीजर, अकेला, उनके पास जा बोला,—"भाइयो, तुम्हें क्या चाहिए?" ये शब्द सुन उन्होंने नम्रतासे कहा,—"महाराज, हमें केवल घर जानेकी आज्ञा दीजिए।" सीजरने कहा,—"बस, यही! तो बान्धवो, तुम्हें छुट्टी दी जाती है। खुशीसे घर जाओ।" बस, सब लोगोंने चुपचाप अपने अपने घरका रास्ता लिया। किसीने अपने मुँहसे एक शब्द भी न निकाला। उपर्युक्त विवेचनसे यही मालूम होता है कि लोग सीजरको बहुत चाहते थे। इसी

समय सीजरने, सिनेटसे, एक वर्षके लिए एक बार फिर डिक्टेटरके पदपर अपनी नियुक्ति करवाली।

तदनन्तर सीजर आफ्रिका गया। क्योंकि वहाँ पाम्पेके साथी फिर उत्पात मचाने लग गये थे। विक्रमके ११ वें वर्ष पहले थापसस स्थान पर बड़ी भारी लड़ाई हुई। सीजरने उन लोगोंको बिलकुल हरा दिया। पाम्पेके साथियोंका अधिपति सीपिया था। यह पाम्पेका ससुर था पर, उसके हाथके नीचे था। केटो विद्वान और रोमका पुरानी प्रजासत्तात्मक राज्य पद्धतिका अभिमानी था। उस पराभवसे उसे बहुत दुःख हुआ। वह वहाँसे भाग कर युटिका स्थानमें आ रहा। सीजरके आनेकी बात सुन कर केटोने अपने साथियोंसे कहा—"भाइयो, तुम अपने प्राण बचानेके लिए जहाँ जी चाहे चले जाओ। मैं तो कहीं न जाऊँगा।" यह सुन कर सब लोग उसी रातको जहाजमें बैठ कर चल दिये। केटो अपने पूज्य और कुछ दुःख सुखके साथी मित्रों सहित वहीं रहा। उसे बहुत दुःख हुआ। जीते जी सीजरके हाथ न लगनेका उसने निश्चय कर लिया और इसकी पूर्त्तिके लिए उसने आत्म हत्या कर लेना ही अच्छा समझा। आत्मघात करनेके पहले उसने प्लेटो "आत्माका अमरत्व" नामक ग्रन्थका एक घण्टे तक मनन किया। अपने साथियोंके जहाजमें बैठ कर रवाना हो जानेके बाद वह शान्त चित्तसे बिछौने पर आ लेटा। तनदन्तर उसने अपने हाथसे अपनी छातीमें छुरी भाक ली। उस वेदनासे व्याकुल हो, वह तड़पता हुआ पलँगसे नीचे आ गिरा। उसके गिरनेकी आवाज सुन कर नौकर लोग दौड़े और उसे सचेत करनेके लिए उपचार करने लगे। सचेत होनेपर सन्तप्त हो उसने अपने हाथसे

जखमको चीर डाला ! तदनन्तर शीघ्र ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

केटोके आत्महत्या कर लेनेकी खबर सुन सीजरने खिन्न होकर कहा था—"केटो, मैं तुझे प्राण दान दे, यश प्राप्त करना चाहता था, परन्तु तूने मुझे ऐसा न करने दिया। न मेरा यह काम अच्छा ही हुआ।" इस भाषणसे सीजरके अन्तःकरणकी थाह मिल जाती है। वह कितना उदार था ! शत्रु पर दया करना वह भूषण समझता था।

इस विजय सम्वादको सुन कर रोमके लोग सीजरसे बहुत दबने लगे। वह दस वर्षके लिए डिक्टेटर बनाया गया। उसके पक्षके लोगोंने उस विजयके उपलक्ष्यमें ४० दिन तक उत्सव मनाया। इसी समय सीजर राष्ट्रकी नीतिसत्तापर देख रेख करनेवाला अधिकारी बनाया गया। उसकी कई प्रतिमाएँ प्रस्थापितकी गयीं और उसके नाम पर कई मन्दिर बनवाये गये। पचाद्में एक महीनेका नाम क्विंटिलिस था। उसके बदले, उसके सम्मानार्थ, उस मासका नाम जुलाई रखा गया। राज्यका काम काज करते समय उसके बैठनेके लिए एक सोनेका सिंहासन बनाया गया और यह निश्चय हुआ कि सिनेट सभामें सीजर दोनों कॉसलके बीचमें बैठ कर सबसे पहले अपना मत दे। उसे कई ऐसे मान दिये गये, जो आज तक किसीको प्राप्त न थे। सिनेटने उसे "राष्ट्र पिता"-की उपाधिसे विभूषित किया। सीजर भी बहुत ही सन्तुष्ट था। उसने सब लोगोंको भोज दिया। इस भोजमें कितना खर्च हुआ, कुछ पता नहीं चलता। भिन्न भिन्न लेखकोंने भिन्न भिन्न रीतिसे इस भोजका वर्णन किया है। भोजके लिए २२ हजार मेज रखी गयीं थीं। मण्डपकी छतमें सुन्दर बहुमूल्य

रेशमी कपड़ा लगा था। इस भोजमें बहुत दूर दूरके लोग बुलाये गये थे। न्युमिडियन, गॉल, सैबेरियन, ब्रिटन आर्मियन, जर्मन और सीथियन, लोग इस भोजमें आये थे। इसके अतिरिक्त कई राजा महाराजा और प्रजासत्तात्मक राज्यके अध्यक्ष भी थे। सीजरने उन सबको जीता था। वे उससे भी भयभीत रहते थे। पाम्पे और क्रासस‌ने यहूदी लोगोंको बहुत तङ्ग किया था। परन्तु वे सीज़रके अनुकूल थे और इस उत्सवमें आये थे। मिश्र-देशकी रानी, सीजरकी प्रणय पात्री क्लिओपेत्रा भी इस समय रोममें मौजूद थी। उत्सवके अन्तमें सीजरने, उपस्थित लोगोंकी भाषाओंमें अलग अलग नाच तमाशे करवाये थे। उसने उन लोगोंको भिन्न भिन्न प्रकारके पशुओंके युद्ध भी दिखाये थे। लोग सीज़रको देवके समान मानने लगे। परन्तु इससे सीजर मदान्ध न हुआ। गर्व उसके पास फटकने तक नहीं पाया। बल, धन और अधिकार एकसे एक बढ कर नशीले हैं। जो मनुष्य इनमेंसे एकको भी पा लेता है वह मारे गर्वके फ़ूला नहीं समाता। उसकी आँखें चढ़ जाती हैं। वह मनुष्यको मनुष्य नहीं समझता। अपनी शक्तिका दुरुपयोग करता है। लोगोंको कष्ट देनेमें ही उसे मजा मिलता है। परन्तु सीज़रको वे तीनों ही प्राप्त थे। तथापि वह मदान्ध न हुआ। उसका नशा उसे न चढ़ा। उसके अन्त करणकी सरलता और रसिकता एक रत्तीभर भी कम न हुई थी। बहुतसे लोगोंको भय था कि सब अधिकार मिल जानेपर सीजर अपने प्रतिपक्षियोंका वध करवा डालेगा। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया उसने उन्हें अभय दान दिया। उसके पक्षके कुछ अदूरदर्शी लोगोंने उसे प्रसन्न करनेके लिए सुला और पाम्पेकी प्रतिमाएँ गिरा दी थीं। सीज़रने उन्हें

पुन स्थापित कराया और पूज्य व्यक्तिके समान उनका मान किया। इस तरह सब सत्ता हाथमें आ जाने पर भी सीजरने रोमके लोगोंके प्राचीन रीतिरसकी मर्यादाका उल्लघन न किया। लोक सभा और सिनेट सभा अबतक मोजूद थीं। परन्तु उनमें दम न रहा था। सीजरके हाथमें ही सब अधिकार थे। सिनेट सभामें ६०० सभासद थे। उनमेंसे ६०० सौसे अधिक सभासद सीजरने बनाये थे। वे सदैव सीजरके अनुकूल मत देते थे। इन्हीं लोगोंके मतके बलपर सीजर अपने प्रस्ताव स्वीकार करवा लेता था। इसके अतिरिक्त सीजरने अपने पासके साधारण स्थितिके लोगोंको ही सिनेटके सभासद बनाया था। इससे सभासद होनेकी योग्यताका सर्वनाश हो गया था। इसी कारणसे सीजरका महत्त्व बहुत बढ़ गया था और वह उसका मनमाना उपयोग करता था।

विजयोत्सवका समारम्भ पूरा होनेपर सीजर राज्य-व्यवस्थापर विचार करने लगा। वह ऐसा काम करना चाहता था जो लोगोंके लिए सुखदायक और अपने लिए यश प्रद भी हो। मन ही मनमें वह उन बातों पर घण्टों विचार किया करता था। अपने उद्देशको पूर्तिके लिए उसके पास काफी सामान मोजूद था। यदि वह अपने इच्छानुसार कर पाता तो ससारको बड़ा लाभ होता। परन्तु बीच बीचमें युद्ध छिड़ जाने और उसकी असामयिक मृत्युसे सब काम ज्योंके त्यों रह गये। उसका विचार था कि रोम राज्यमें रहने वाले अनेक जातिके लोगोंका एकीकरण किया जाय और स्वत्व सम्बन्धी झगड़ा बिलकुल तोड़ दिया जाय। सारे राज्यकी जमीन मापकर उसकी योग्य व्यवस्था की जाय।

रोमके विधि विधानोंको एकत्र कर एक ग्रन्थ बनाया जाय। सिसरो भी इस कामको अच्छा समझता था, परन्तु उसे यह दुष्कर मालूम होता था। राज्यमें उत्तम सड़कें बनायी जायँ। नदियों पर पुल बाँधे जायँ। स्थान स्थान पर कुएँ और धर्मशालायें बनायी जायं। यूनान देशमें कारिंथकी भूमि सुहानेकी है। उसे काट कर नहर निकाली जाय। किन्तु उस समय यह काम न हो सका। इधर कुछ वर्षों पहले यूनान सरकारने इसे पूरा किया। सीजर ज्योतिष शास्त्रमें भी प्रवीण था। उसने तत्कालीन पचाङ्गमें भी सुधार किये थे। ये सुधार यूरोपके बहुत काम आये।

न्यूमा पाम्पिलियसके जमानेसे ३५५ दिनका वर्ष माना जाता था। परन्तु इससे पृथ्वीकी प्रदक्षिणाके समयकी पूर्ति न होती थी। अतएव प्रति दूसरे वर्ष एक महीना २२ दिनका और एक २३ दिनका माना जाता था। इसके अतिरिक्त दिनों की संख्या शुभावह करनेके लिए उसमें एक दिन और मिलाया जाता था। इन्हीं कारणोंसे वर्षकी गणनामें बहुत गड़बड़ी होती थी। यह काम पांटिक नामक अधिकारीको दिया गया था। वह अपने इच्छानुसार हेर फेर किया करता था। किसी कौंसल या अन्य अधिकारको च्युत करनेके लिए वह दिनोंकी संख्या घटा बढ़ा दिया करता था। इससे ऐसा होता था कि जिस कौंसल को कोई काम जनवरी महीने की पहली तारीख को करना होता था, उसको वह काम आगामी अक्तूबरकी १३ तारीखको करना होता था। जूलियस सीजरके नवीन पचाङ्गकी गणनाके अनुसार एक वर्ष, ३६५ दिन ६ घंटे और कुछ मिनिटोंका होता था। यह काल करीब करीब बराबर था। इसमें सच्चे सौर वर्ष से ११ मिनिट १२ सेकण्ड

अधिक थे। इसी प्रकार पोप तेरहवें ग्रेगरीके जमाने तक १० दिन बढ गये। उसने ई० सन्के १५८२ वें वर्ष (विक्रम स० १६३६) में १० दिन घटा कर यह गलती सुधार दी। ग्रेगरीकी गणनानुसार सौर वर्ष में २४ सेकण्ड अधिक थे। अर्थात् ३६०० वर्षमें एक दिन का फर्क पडता था। अस्तु।

सीजर और भी कई देश जीतना चाहता था। पार्थियन लोग रोमके अधीन न थे। सीजर उनपर चढाई करना चाहता था परन्तु अभीतक पाम्पेके पक्षपातियोंने उसका पीछा न छोडा था। वे कहीं न कहीं उत्पात मचाये ही रहते थे। पाम्पेके पुत्र स्नीयसने स्पेनमें बलवा किया। उसको दबानेके लिए रोमके कई सरदार भेजे गये परन्तु किसीसे कुछ न बन सका। अन्तमें सीजरको स्वय जाना पडा। उसे स्पेन पहुँचनेमें ०७ दिन लगे। वहाँ उसके अनुमानसे अधिक कठिनाई उपस्थित हुई। तोभी सीजर हिम्मत हारनेवाला नहीं था। विक्रम सवत् १२ के ३ चैत्र (मीन) को जिब्राल्टरके पास मण्डा स्थानपर युद्ध हुआ। शत्रुकी हार हुई। उसके ३० हजार योद्धा खेत रहे। यद्यपि स्नीयस रणक्षेत्र छोडकर भाग गया था, परन्तु उसे रास्तेमें किसीने मार डाला। इस तरह युद्धमें विजयी होकर भी आगामी सितम्बरतक सीजर रोम वापस न जा सका था। क्योंकि उसे वहाँका बन्दोबस्त करना था।

वह सिंह मासमें रोम लौट गया। सिनेट और लोगोंने उसका बडा मान किया। वह आमरण रोमका डिक्टेटर बनाया गया। उसे राजाके समान मान दिया जाने लगा। सिनेट सभाने उसके साथ प्रधान धर्मसे वर्ताव करने और उसकी रक्षा करनेकी शपथ ली। इस समय सीजरने, स्पेन,

आफ्रिका, मिश्र और एशिया माइनरमें जय प्राप्त करनेके लिए एकके बाद एक कुछ दिनके अन्तरसे, चार उत्सव किये। उसने नगर-वासी और अन्य देशोंसे आये हुए राजे राजवाड़ों-को एक बड़ा भारी भोज दिया। और तदनन्तर उसने अपना जुलूस निकाला। यह जुलूस बहुत ही बड़ा था। चलते चलते रात हो गई थी इसलिए ४० हाथियोंकी सूँडमें मशालें पकड़ा दी गईं थीं। अन्य देशोंसे जीतकर लाये हुए कई पदार्थ भी जुलूसके साथ थे।

सीजरको यद्यपि राजाकी उपाधि न मिली थी तो भी वह एक प्रकारसे रोम राज्यका राजा था। अपनी सम्पादन की हुई प्रमुखताका अनुभव करनेसे उसे बहुत आनन्द हुआ परन्तु वह उस आनन्दका उपभोग करता हुआ स्वस्थ न बैठा रहा। वह रोम राज्यमें ऐक्य बढ़ानेकी कोशिश करने लगा। अबतक सिनेट सभामें केवल रोमके लोगोंको ही बैठनेकी आज्ञा थी। परन्तु सीजरने गाल आदि अन्य विदेशी लोगोंको भी सिनेटमें बैठनेका अधिकार दे दिया। उसने विदेशी विद्वान् लोगोंको राज्यमें ऊँचे ऊँचे पद दिये। कई उपयुक्त धन्धा करनेवाले लोगोंको मत देनेका अधिकार दिया गया। कार्थेज और कारिंथ फिरसे बसाये गये। उसने अपने सिपाहियोंको इनाम देकर सन्तुष्ट किया। परन्तु उसने सुल्ला और पाम्पेकी तरह लोगोंको जमीनें इनाम न दीं। कारण, उसकी समझसे ऐसा करनेसे अनिष्टोंका बीजारोपण होता था। वह अलेक्जेंड्रियाके जले हुए ग्रन्थालयके समान रोम-में एक ग्रन्थालय स्थापित किया चाहता था। परन्तु उसकी असामयिक मृत्युसे यह काम पूरा न हुआ।

बात यह थी कि, सीजर रोमका राजा होना चाहता था।

और उसकी यह इच्छा थी कि रोम-राज्यका स्वामित्व उसके वशमें ही रहे। उसने अपनी प्रतिमा रोमके राजाओंकी प्रतिमाओं में प्रमुख स्थानपर रखी। सिनेटमें बैठनेके लिए उसने अपने लिए राजाओंके सिंहासनके समान एक सिंहासन बनवाया। उसने यह भी ठहरा दिया कि उसके बाद उसका भतीजा आक्टोवियस राज्याधिकारी हो। परन्तु, रोमके लोगोंको यह बात पसन्द न थी। सीजर भी यह बात जानता था। निदान वह अपनी इच्छा पूरी करनेकी युक्ति ढूँढ़ने लगा। एक दिन सवेरे लोगोंने उठकर देखा कि सीजरकी प्रतिमा एक प्रसिद्ध स्थानपर रखी हुई है और उसका सिर राज चिह्नसे अङ्कित है। बहुतसे लोग वहाँ इकट्ठे हो गये और चर्चा होने लगी। इतने में दो ट्रिब्यून वहाँ आये। राज चिह्नविभूषित सीजरकी मूर्ति देखते ही वे सन्तप्त हो उठे और उनमेंसे एकने उस मूर्तिके सिरपरसे राज चिह्न उठाकर रास्तेमें फेंक दिया। लोगोंने इसके लिए उसे धन्यवाद दिया। सीजरने भी ऊपरके मनसे अपनी सम्मति दिखायी। तदनन्तर लोक मतकी थाह पानेके लिए, सीजरके साथियोंने, एक उत्सवसे लौटती बार रास्ते-में सधेसधे लोगोंसे "महाराज सीजर" का जयजयकार कराया। इससे अन्य लोगोंमें कानाफूसी होने लगी। यह देखकर सीजरने उन लोगोंका उद्देश कर कहा—"भाइयो, मैं महाराज नहीं हूँ, सीजर हूँ।" इसके बाद एक बार और यत्न किया गया। विक्रम स० १२ में सीजरको कॉसल हुए ५ वर्ष हो गये थे। इसलिए उसने एक उत्सव किया। अण्टोनियस से सीजरके लिए राज मुकुट बनवाया गया और इस उत्सव के समय यह मुकुट उसे भेंट किया गया। सीजरने वह मुकुट अस्वीकार करते हुए कहा "जबतक जनता मुझे मुकुट न देगी,

मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।" यह सब नाटक था। लोगोंके मनकी थाह पानेके लिए यह इन्द्र जाल रचा गया था। परन्तु सब प्रयत्न निष्फल हुए। सीजरको मालूम हो गया कि लोग राज सत्तात्मक राज्य नहीं चाहते। तब भी उसे सचेत हो जाना चाहिए था। परन्तु वह भी उससे न हो सका। राजा होनेकी इच्छा उसका पीछा न छोडती थी किन्तु लोग उसका राजतिलक करना नहीं चाहते थे। इससे वह उनसे चिढ गया। सिनेटने उसपर आदरसे पुष्प वृष्टिकी थी। यह सवाद सुनानेके लिए सब सभासद मिलकर उसके पास गये। परन्तु उसने उठकर उनका स्वागत न किया। यह देखकर वे सब सन्तप्त हो उठे। कारण, उस समयतक उन्हें बराबराके नातेसे रहनेकी आदत हो गई थी। इसके अलावा कासियस नामक एक व्यक्तिने नाना प्रकारकी बातें कहकर उनका मन मलिनकर दिया था। इससे वे सीजरसे बहुत ही द्वेष रखते थे। कासियस बडा तामसी, द्वेषी और साहसी था यह पाम्पेके साथियोंमेंसे था। पाम्पेका नाश हो जानेपर वह सीजरके हाथ लगा था। सीजरने उसे दयाकर, अपने साथ रख लिया था। सीजरने कई अच्छे अच्छे काम देकर उसे सन्तुष्ट किया था। परन्तु कासियसका मन साफ न हुआ था। वह सीजरसे भीतरी द्वेष रखता था। और उसका नाश करनेके लिए अवसर देख रहा था। उसने यह अवसर हाथसे नहीं जाने दिया। कुछ लोगोंने मिलकर सीजरको मारनेके लिए षड्यन्त्र रचा। कासियस इस षड्यन्त्रमें सम्मिलित था। मार्कस जुनियस ब्रूटस नामक व्यक्ति भी इस षड्यन्त्रमें था। इसकी बहिन कासियसको व्याही गयी थी। वह केटोका भतीजा और पाम्पेका मित्र था और फार्सा-

लियाके युद्धमें भी उसके साथ था। कुलीन घरानेमें उसका जन्म हुआ था। वह रोमका न्यायाधीश था। लोग उसे इस षड्यन्त्रमें इसलिए मिलाना चाहते थे कि सीजरके समान बड़े आदमीको मारनेके काममें ब्रूटसके समान न्यायाधीशका सहायक होना अच्छा है।

ब्रूटसको षड्यन्त्रमें मिलानेका एक कारण यह भी था उसका आचरण अच्छा था। वह 'स्टोइक' विरक्त सम्प्रदाय का था। उसमें गम्भीरता, विचारशीलता और स्थिरमति आदि गुण थे। उसका स्वभाव भी शान्त था। ऐसे व्यक्तिको षड्यन्त्रमें मिलाना इसलिए इष्ट था कि उनको शङ्का थी कि उसका धैर्य अन्ततक टिकेगा या नहीं और इसीलिए दृढ-निश्चयी मनुष्यकी बहुत जरूरत थी।

ब्रूटस प्रजासत्तात्मक राज्य पद्धतिका पक्षपाती था। फार्सालियाके युद्धमें वह पाम्पेकी ओरसे लड़ा था। तदनन्तर सीजरने उससे मित्रता कर ली थी। सीजरने उसे एक ऊँचा पद दिया था। इसलिए कासियस उसे अनेक प्रकारसे समझा कर अपनी ओर मिलाना चाहता था।

करीब पाँच सौ वर्ष पहले राज सत्ताको नष्ट करनेके लिए ल्यूशियस जूनियसने गूँगेका स्वाँग भरा था और इसीसे उसका ब्रूटस नाम रखा गया था। गत परिच्छेदोंमें इसकी चर्चा हो हो चुकी है। उस पुराने ब्रूटसका रोममें एक पुतला था। उसे देख देख रोमके लोगोंको उसकी कृति याद आ जाती थी। बार बार एक दूसरेसे कहा करते थे कि इस समय ब्रूटसकी जरूरत थी। इतना ही नहीं, लोग उस प्रतिमापर चिट्ठियाँ चढ़ाते थे जिनपर लिखा रहता था—"ब्रूटस तुझे इस समय होना चाहिए था।" इसके अतिरिक्त न्यायाधीश ब्रूटसको जो

पत्र भेजे जाते थे। उनमें लिखा होता था—"तुम केवल नाम-के ब्रूटस हो !!" यह उसे बहुत बुरा लगता था।

षड्यन्त्र रचने वाले लोगोंको शङ्का थी कि ब्रूटस उनके पक्षमें आएगा या नहीं। क्योंकि यद्यपि पहले वह पाम्पेकी ओर था, परन्तु फार्सालियाकी लड़ाईके बाद वह सीजरके हाथ आ गया था। सीजरने उसे अभय दान देकर अपना मित्र बना लिया था। उसे एक प्रान्तका सूबेदार बना दिया था और उधरसे लौट आनेपर उसको ऊँचा पद भी दे दिया था—वह रोमका प्रीटर बनाया गया था। ऐसे व्यक्तिका अपने मित्र-को—अपने उपकार कर्त्ताको, मारनेके लिए रचे हुए षड्यन्त्र में सम्मिलित होना असम्भव सा मालूम होता था। कासियसने कई लोगोंसे इस षड्यन्त्रमें सम्मिलित होनेके लिए कहा था। उन्होंने उसे यही उत्तर दिया था कि यदि ब्रूटस साथी हो तो हमें कोई उज्र नहीं, हम भी तैयार हैं।

कासियसकी स्त्री ब्रूटसकी बहन थी। प्रारम्भमें इनमें अधिक स्नेह था। परन्तु एक ही अधिकारके लिए दोनोंमें उम्मेदवार होनेसे और सीजरकी ब्रूटसपर विशेष कृपा होने से दोनोंमें मनोमालिन्य हो गया था। उन दोनोंकी चढा ऊपरीके सम्बन्धमें बात चीत करते करते एक बार सीजरने कहा था—"कासियसकी माँग सयौक्तिक और न्याय-सङ्गत है, किन्तु मैं ब्रूटसको 'नहीं' नहीं कह सकता।" अस्तु

अन्तमें, कासियसने ब्रूटससे मुलाकात कर उसका मन फिरानेकी कोशिश करनेका निश्चय किया। ब्रूटससे मुलाकात करनेके लिए उसके घर गया। इधर उधरकी बातें होने लगीं।

कासियस—१ म चैत्रको सीजरके मित्र उसे राजमुकुट अर्पण करनेवाले हैं। आप उस समारम्भमें जायँगे या नहीं ?"

ब्रूटस—"नहीं, मैं वहाँ न जाऊँगा।"

ब्रूटस—यदि सीज़रने आपको बुलाया तो?"

ब्रूटस—"तब तो मुझे जाना ही पड़ेगा। परन्तु यदि अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिए वहाँ, अपने प्राण न्योछावर करनेका अवसर आया तो मैं कभी पीछे न हटूँगा।"

यह बात सुन कर कासियसका चित्त कुछ स्थिर हुआ और तब उसने अपने षड्यन्त्रकी बात उसे कह सुनाई। उसने ब्रूटससे यह भी कहा कि इस कामको पूरा करनेके लिए, अपने प्राण न्योछावर करने और आपकी आज्ञामें चलनेके लिए बहुत से मनुष्य तैयार हैं।

इस समय ब्रूटसका मन दुविधामें पड़ गया। उसके अन्तःकरणमें कृतज्ञता और देशकी स्वतन्त्रताके संरक्षणकी उत्कट इच्छाका तुमुल युद्ध होने लगा। अन्तमें उसने सोचा कि सच्चा रोमन वही है जो अपने देशकी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए अपना सर्वस्व—अपने प्राण भी—अर्पण कर दे। तब बेचारी कृतज्ञताका क्या। इस प्रकार खूब सोच विचार कर ब्रूटसने कासियसके कहे अनुसार षड्यन्त्रका नेता बनना स्वीकार कर लिया। जो ब्रूटस एक क्षण पहले सीजरका हितैषी मित्र था वही अब उसका वैरी—उसको मारनेवाला—बन गया।

इस समय रोममें लिगूरियस नामक एक सरदार था। वह भी पाम्पेके सहायकोंमें से था। यद्यपि अब पाम्पेका पक्ष नष्ट सा हो गया था, तथापि वह सीज़रसे द्वेष रखता ही था। ब्रूटस उससे मिलनेके लिए गया। बीमार होनेके कारण वह बिस्तरपर पड़ा हुआ था। इस समय रोममें जगह जगह लोग सीज़रके बर्तावके सम्बन्धमें बात चीत किया करते थे। वे उससे नाराज़ हो गये थे, परन्तु प्रकटमें किसीको एक

पत्र भेजे जाते थे। उनमें लिखा होता था—"तुम केवल नाम के ब्रूटस हो!" यह उसे बहुत बुरा लगता था।

षड्यन्त्र रचने वाले लोगोंको शङ्का थी कि ब्रूटस उनके पक्षमें आएगा या नहीं। क्योंकि यद्यपि पहले वह पाम्पेकी ओर था, परन्तु फार्सालियाकी लड़ाईके बाद वह सीजरके हाथ आ गया था। सीजरने उसे अभय दान देकर अपना मित्र बना लिया था। उसे एक प्रान्तका सूबेदार बना दिया था और उधरसे लौट आनेपर उसको ऊँचा पद भी दे दिया था—वह रोमका प्रीटर बनाया गया था। ऐसे व्यक्तिका अपने मित्र-को—अपने उपकार कर्त्ताको, मारनेके लिए रचे हुए षड्यन्त्र में सम्मिलित होना असम्भव सा मालूम होता था। कासियसने कई लोगोंसे इस षड्यन्त्रमें सम्मिलित होनेके लिए कहा था। उन्होंने उसे यही उत्तर दिया था कि यदि ब्रूटस साथी हो तो हमें कोई उज्र नहीं, हम भी तैयार हैं।

कासियसकी स्त्री ब्रूटसकी बहन थी। प्रारम्भमें इनमें अधिक स्नेह था। परन्तु एक ही अधिकारके लिए दोनोंमें उम्मेदवार होनेसे और सीजरकी ब्रूटसपर विशेष कृपा होने से दोनोंमें मनोमालिन्य हो गया था। उन दोनोंकी चढ़ा ऊपरीके सम्बन्धमें बात चीत करते करते एक बार सीजरने कहा था—"कासियसकी माँग सयौक्तिक और न्याय सङ्गत है, किन्तु मैं ब्रूटसको 'नहीं' नहीं कह सकता।" अस्तु

अन्तमें, कासियसने ब्रूटससे मुलाकात कर उसका मन फिरानेकी कोशिश करनेका निश्चय किया। ब्रूटससे मुलाकात करनेके लिए उसके घर गया। इधर उधरकी बातें होने लगीं।

कासियस—१ म चैत्रको सीजरके मित्र उसे राजमुकुट अर्पण करनेवाले हैं। आप उस समारम्भमें जायँगे या नहीं?"

ब्रूटस—"नहीं, मैं वहाँ न जाऊँगा।"

ब्रूटस—यदि सीजरने आपको बुलाया तो?"

ब्रूटस—"तब तो मुझे जाना ही पड़ेगा। परन्तु यदि अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिए वहाँ, अपने प्राण न्योछावर करनेका अवसर आया तो मैं कभी पीछे न हटूँगा।"

यह बात सुन कर कासियसका चित्त कुछ स्थिर हुआ और तब उसने अपने षड्यन्त्रकी बात उसे कह सुनाई। उसने ब्रूटससे यह भी कहा कि इस कामको पूरा करनेके लिए, अपने प्राण न्योछावर करने और आपकी आज्ञामें चलनेके लिए बहुत से मनुष्य तैयार हैं।

इस समय ब्रूटसका मन दुविधामें पड़ गया। उसके अन्तःकरणमें कृतज्ञता और देशकी स्वतन्त्रताके संरक्षणकी उत्कट इच्छाका तुमुल युद्ध होने लगा। अन्तमें उसने सोचा कि सच्चा रोमन वही है जो अपने देशकी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए अपना सर्वस्व—अपने प्राण भी—अर्पण कर दे। तब बेचारी कृतज्ञताका क्या। इस प्रकार खूब सोच विचार कर ब्रूटसने कासियसके कहे अनुसार षड्यन्त्रका नेता बनना स्वीकार कर लिया। जो ब्रूटस एक क्षण पहले सीजरका हितैषी मित्र था वही अब उसका वैरी—उसको मारनेवाला—बन गया।

इस समय रोममें लिगूरियस नामक एक सरदार था। वह भी पाम्पेके सहायकोंमें से था। यद्यपि अब पाम्पेका पक्ष नष्ट सा हो गया था, तथापि वह सीजरसे द्वेष रखता ही था। ब्रूटस उससे मिलनेके लिए गया। बीमार होनेके कारण वह बिस्तरपर पड़ा हुआ था। इस समय रोममें जगह जगह लोग सीजरके बर्तावके सम्बन्धमें बात चीत किया करते थे। वे उससे नाराज हो गये थे, परन्तु प्रकटमें किसीको एक

और युक्तिसे टाल दिया करता था। वह अप्रतिम वक्ता था। वह अपने विषयको लोगोंके सामने इस ढगसे रखता था कि उसकी बात बहुत ही जल्दी उनके हृदयपर अंकित हो जाती थी। सिसरो भी सीजरकी वक्तृताकी खूब बड़ाई करता था। सीजर उत्तम ग्रन्थकार भी था। उसने अपने युद्धोंका वर्णन स्वय लिखा है। विद्वान् लोग अब भी सीजरके लिखे ग्रन्थों को विशेष मान देते और बड़े चावसे पढ़ते हैं। उसे राज्य सम्बन्धी बड़े काम करने पड़ते थे, तो भी वह समय बचाकर काव्य, गणित, खगोल और शिल्पशास्त्रका अध्ययन किया करता था। वह उत्तम मित्रोंको चाहता था। यद्यपि वह स्व पराक्रमसे ही इतने ऊँचे पदतक पहुँचा था, तो भी वह मित्र-मण्डलीमें बराबरीके नातेका व्यवहार रखता था। उसके धर्म सम्बधी मत विलक्षण थे। पुनर्जन्म और परलोक में उसका विश्वास न था। शकुन और मुहूर्तको वह बिलकुल न मानता था। सिनेट सभामें वह अपने देवताओंकी हँसी उड़ाया करता था। तथापि अपनी मनोकामना सिद्ध होनेके लिए वह वीनस देवताकी मूर्तिके आगे घुटनोंके बल चला करता था। फार्सालियाके युद्धमें जानेके पहले ईश्वरकी प्रार्थनाकर उसने मन्नत मानी थी। अस्तु।

खूनके दूसरे दिन ब्रूटसने सब लोगोंको फोरममें इकट्ठा कर सीजरके मारनेका हेतु स्पष्ट रीतिसे प्रकट किया। लोगोंने उसका भाषण चुपचाप सुन लिया। परन्तु उन्होंने अपना मत प्रकट न किया। तो भी यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी थी कि लोगोंको यह काम बहुत बुरा मालूम हुआ। कारण, वे सीज़रके अनन्यभक्त थे। वे उसे अपना हितकर्ता मानते थे। इसके अतिरिक्त सीजरको मार डालनेसे लोगोंको

स्वतन्त्रता या अधिक अधिकार नहीं मिल गये थे। और उन्हें विश्वास हो गया था कि जब किसीके अधीन ही रहना है, तो दूसरे किसीकी अधीनताकी अपेक्षा सीजरकी अधीनता अच्छी है। क्योंकि सीजरके कई उत्तम गुणोंपर वे लट्टू हो गये थे। लोग सिनेट-सभाकी अधीनतामें रहना नहीं चाहते थे।

इसके बाद कुछ शान्ति होजानेपर सिनेट-सभाकी बैठक हुई। सभामें यह निश्चय किया गया कि सीजरका खून करने वाले लोग अपराधी न माने जायँ और उन्हें सजा न दी जाय। लेकिन इसके साथही लोगोंके सन्तोषार्थ यह भी ठहराया गया कि सीजरका अन्तिम सस्कार सरकारी खर्चेसे, शान शौकतके साथ किया जाय। सीजरके बनाये हुए नियम और राज्यप्रणाली पूर्ववत् कायम रखी जाय। उसमें बिलकुल फेर फार न किया जाय।

सीजरने अपना मृत्युपत्र लिख रखा था, वह मिल गया। सीजरके ससुरके आग्रहसे अण्टोनियसके यहाँ लोगोंके सामने वह मृत्युपत्र खोलकर पढा गया। मृत्युपत्र सुनकर लोगोंको बडा दुःख हुआ और वे खूनियोंपर और क्रुद्ध हो उठे। क्योंकि उस मृत्युपत्रमें लिखा था कि "मेरी सब स्थावर जगम जायदाद मेरी बहनके लडकोंको बाँट दी जाय।" उस पत्रमें जायदादकी व्यवस्था करनेके लिए पच भी नियत किये थे। उनमें डेसिमस ब्रूटस—सीजरको आग्रहपूर्वक सिनेटमें लानेवाला दुष्टात्मा—ही मुख्य था। इस प्रकार जिनके शस्त्रोंसे सीजर मारा गया था, उनमेंसे बहुतोंको कुछ न कुछ देनेके लिए उस मृत्युपत्रमें लिखा हुआ था। निदान मृत्युपत्र पढ़े जानेके बाद

डिक्टेटरका पद माँग लेगा। परन्तु वह बडा धूर्त्त था। कब, किससे क्या माँगना चाहिये, यह बात वह अच्छी तरह जानता था। उसने लोगोंकी रुख पहचान ली और इसीलिए उसने डिक्टेटरका पद न माँगा। बल्कि, उसने सिनेटमें यह पेश किया कि डिक्टेटरका पद सदैवके लिए तोड दिया जाय। ऐसा करनेपर भी राज्यसूत्र उसीके हाथमें था, इससे उसने अपने संरक्षणार्थ सिनेटसे छ हजार फौज माँग ली। सिनेटने उसकी माँग पूरी की। तब वह राज्यका कारबार चलाने लगा। उसने स्थान स्थानपर न्यायाधीश नियत किये, देशसे निकाले हुए लोगोंको बाहरसे बुलवाया और कई कैदियोंको बन्धनमुक्त किया। अर्थात् वह सीजरके बताये हुए मार्गका अनुसरण करने लगा।

इस समय रोमकी स्थिति बडी खराब थी। सिसरोने कासियसको लिखा था,—"अत्याचारी मनुष्योंसे रोम राष्ट्रका छुटकारा हो गया, परन्तु अभी अत्याचारसे उसका छुटकारा न हुआ।" इसका तात्पर्य इतनाही है कि अण्टोनियस आगे क्या करेगा और उसका रोम राज्यपर क्या असर होगा, इसका अनुमान कोई नहीं कर सकता था। यह तो अच्छी तरह मालूम हो गया था कि प्रजातन्त्र शासन पद्धतिका अन्त हो जायगा, परन्तु आगे राष्ट्र किस ढाँचेमें ढलेगा और उसपर कौन कौनसे सङ्कट आयेंगे, इसका अनुमान कोई न कर सका था।

सीजरकी मृत्युसे रोम राज्यमें शान्ति न फैली। प्रत्युत एक नवीन युद्ध छिड गया, जिसमें लोगोंको बडे कष्ट उठाने पडे।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि जुलियस सीजरने अपने मरनेके बाद अपनी बहिनके दौहित्र आक्टेवियसको रोम-

राज्यका भार सौंपनेका निश्चय किया था। आक्टेवियस इस समय नाबालिग—केवल २० वर्षका—था। वह यूनानमें था। वहाँ वह सैनिकका काम सीख रहा था। उसे एक आदमीने सीजरकी मृत्युकी खबर सुनायी, जिससे उसके हृदयपर बड़ी चोट पहुँची। तदनन्तर उसने अपने मनमें सोचा कि बिना उद्योग किये अपना कार्य सिद्ध न होगा। यद्यपि उसके पास थोड़ी सी फौज थी, फिर भी पहले वह अकेला ही रोम जानेके लिए तय्यार हुआ। रास्तेमें वह ब्रुण्डुसियम स्थानपर ठहरा। वहाँ सीजरकी बहुत सी सेना थी। उन्होंने उसका अच्छा स्वागत किया और सीजरके पक्षके बहुतसे लोग उससे आ मिले। उन्होंने आक्टेवियसके पास जाकर कहा कि हम सीजर-का खून करनेवालोंसे बदला लेनेके लिए अपने प्राणतक अर्पण करनेको तय्यार हैं। परन्तु आक्टेवियस सब काम गुप्त रीतिसे करना चाहता था। इसलिए उसने उनसे पहले सहायता न माँगी। वह वहाँसे रवाना हो कर रोम पहुँचा और सीजरका उत्तराधिकारी होनेका दावा करने लगा। उसने लोगोंसे कहा कि मैं सीजरके मृत्युपत्रका अक्षरशः पालन करूँगा। वह अपनेको सीजर कहलवाने लगा। हम यहाँ यह भी कह देना उचित समझते हैं कि सीजर शब्दका अर्थ राजा है।

हम अण्टोनियसके सम्बन्धमें ऊपर लिख ही चुके हैं। वह इस समय रोममें प्रमुख मनुष्य बन बैठा था। और राज्यके सब सूत्र अपने हाथमें लिया चाहता था। इसीसे आक्टेवियस से कलह हो जानेकी बहुत कुछ सम्भावना थी। आक्टेवियस लक्ष्मीके सामर्थ्यको जानता था। इसीलिए यूनानसे आते समय रास्तेमें ब्रुण्डुसियम स्थानपर उसने बहुत सा धन अपने

अधिकारमें कर लिया था। रोममें उसकी माता रहती थी। उसने आक्टेवियसको रोमके षड्यन्त्रोंको बात कहते हुए राजनीतिके झगड़ोंमें न पड़नेके लिए बहुत समझाया। परन्तु, आक्टेवियस भी सीजरसे कम महत्वाकांक्षी न था। भला, उसे यह बात कैसे रुचती। उसने अपना प्रयत्न न छोड़ा। उसने सबसे पहले मार्कस विप्सेनियस आग्रिपासे परिचय किया। यह शूर और राजनीतिविशारद था। इसके अतिरिक्त आक्टेवियसने महान् वक्ता सिसरोसे भी मित्रता कर ली थी। यह भी कुटिलनीतिनिपुण था। यह कासियस, क्रासस, पाम्पे, अण्टोनियस और जुलियस सीजरका मित्र था अब आक्टेवियसका भी मित्र हो गया। परन्तु उसकी यह इच्छा थी कि ब्रूटस और अण्टोनियससे न बिगड़े। केवल अण्टोनियस ही आक्टेवियसके विरुद्ध न था। रोमका मुख्य सेनापति लेपिडस भी उसके प्रतिकूल था। आक्टेवियसको उसका भी सामना करना था।

जुलियस सीजरने अपने मृत्युपत्रमें लिखा था कि टाइबर नदीके तटका बड़ा बाग लोगोंके मनोरञ्जनार्थ छोड़ दिया जाय, और मेरी बचतमेंसे रोमके प्रत्येक मनुष्यको ५०।५० रुपये दिये जायँ। सीजरकी इस आज्ञाका पालन करनेके लिए आक्टेवियस धन सञ्चय कर रहा था। लोग इस बातको अच्छा समझते थे। परन्तु आक्टेवियसको अपना अभीष्ट सिद्ध करना था—अंटोनियस और लेपिडसकी बाधाको दूर करना था। इसलिए उसने बड़े परिश्रमसे बहुत सी सेना इकट्ठी कर ली, और भोज देकर और खेल तमाशे दिखाकर लोगोंके मन अपनी ओर आकर्षित कर लिये। इतना करनेपर भी वह लोगोंको यह दिखानेकी चेष्टा किया करता था कि मुझे

राज-पदकी लालसा नहीं। रोमराज्यकी रक्षा उत्तम प्रकारसे करनेके लिए ही मैं यह सब उद्योग कर रहा हूँ। परन्तु यह बात सच न थी।

आक्टेवियसको सिसरोकी बडी मदद थी। क्योंकि वह अपनी वक्तृताके बलसे लोगोंके मन आकर्षित कर सकता था। सिसरोने आक्टेवियसकी ओरसे अनेक भाषण किये। उसने लोगोंके हृदयपर यह बात अंकित कर दी कि आक्टेवियसका पक्ष सच्चा है। इससे अएटोनियस सिसरोसे नाराज हो गया। उसने सिसरोके विरुद्ध कई भाषण किये, परन्तु उसका तेज फीका पड गया। सिसरो के भाषणोंने लोगोंके मनपर अच्छा असर किया और वे अएटोनियसको रोमका शत्रु समझने लगे।

इस प्रकार सिनेटको अपनी ओर कर आक्टेवियस कॉसल हो गया। कॉसल होनेपर वह सिनेटकी परवा न करने लगा। तदनन्तर कुछ ही दिन बाद अएटोनियस और लेपिडसने सेना ले रोमपर चढाई की। आक्टेवियस उनका सामना करनेके लिए आगे बढा, परन्तु लडाई नहीं हुई। क्योंकि अपना पक्ष निर्बल जानकर लेपिडसने आक्टेवियसको पो नदीके टापूमें मिलनेके लिए बुलाया। विक्रम संवत् १४ के आश्विन (कन्या) मासमें लेपिडस, अएटोनियस और आक्टेवियस उस टापूमें मिले। कई दिनोंतक वादविवाद होनेपर यह निश्चित हुआ कि विक्रम संवत् १६ के मार्ग शीर्ष (वृश्चिक) से तीनों मिलकर रोमका राज्य चलायें। लेपिडस स्पेनका राज्य कार्य करे, आक्टेवियस सिसिली, सर्डीनिया और अफ्रिकाकी और अएटोनियस गाल देशकी व्यवस्था करे और इटलीके राजकाजमें तीनोंका समान स्वत्व रहे। और यह भी निर्णय हुआ कि इन तीनोंका अधिकार सिनेट, कौंसल और कानूनोंसे भी

श्रेष्ठ माना जाय। रोमके इतिहासका यह दूसरा त्रि गुट था। स्मरण रखना चाहिए कि सीजर, पाम्पे, और क्रासस-ने जो त्रि-गुट बनाया था वह तीनोंने आपसमें सलाह करके बनाया था। उसके इश्तिहार न लगे थे। परन्तु इस दूसरे त्रि-गुट का, विक्रम सवत् १४ मार्ग शीर्ष (वृश्चिक) १२ को, सारे नगरमें ढिंढोरा पिटवाया गया था। इस त्रि गुटने अपनी व्यवस्थामें यूनान और पूर्वकी ओरके अन्य प्रान्तों का समावेश नहीं किया था। क्योंकि ये प्रदेश इस समय ब्रूटस और कासियसके अधिकार में थे।

इस त्रि गुटके बनते ही तीनोंने अपने अपने विरोधियोंको मरवा डाला। सबसे पहले सिसरो मारा गया। वह आक्टेवियसके बडे काम आया था, परन्तु इसका कुछ भी उपयोग न हुआ। उसने अण्टोनियसके विरुद्ध भाषण किये थे। इसीलिए वह उससे शत्रुता रखता था। उसने उसे मार डालने का हुक्म दे दिया। और आक्टेवियसने भी सिसरोके बचाने-की कोशिश न की। सिसरो मार डाला गया। अण्टोनियसकी आज्ञासे उसका सिर सिनेटकी व्यास पीठपर रख दिया गया। अण्टोनियसने सिसरोका सिर काटनेवालोंको खूब इनाम दिया। कहा जाता है कि सिनेटकी व्यास-पीठपर सिसरोका सिर रखे जानेपर अण्टोनियसकी पत्नी फुल्विया वहाँ गयी और उसने उसकी जीभ बाहर खींचकर उसमें खूब सुई चुभायी। इतने बडे व्यक्तिका वृद्धावस्थामें इस प्रकार अन्त होना, शोचनीय है, "ईश्वरेच्छा बलीयसी"। मृत्युके समय सिसरोकी अवस्था ६४ वर्ष का थी। इसी तरह रोममें हजारों व्यक्ति मारे गये।

इधर रोममें तो दूसरा त्रि-गुट अपने शत्रुओंका नाश करने-

में लगा हुआ था और उधर ब्रूटस और कासियस यूनान और सीरियामें अपना अधिकार जमाते जा रहे थे। वे रोमके पूर्वीय प्रान्तोंके मालिक बन बैठे थे। दूसरे त्रिगुटकी बात मालूम होते ही वे रोमकी ओर रवाना हुए। आक्टेवियस भी उनका सामना करनेके लिए आगे बढ़ा। ईजियन समुद्रके तटसे नौ मीलकी दूरीपर फिलिपिके पास दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ हुई। ब्रूटसकी सेना आक्टेवियसकी सेनासे और कासियसकी सेना अण्टोनियसकी सेनासे लड़ने लगी। अण्टोनियसने कासियसको हरा दिया परन्तु उधर ब्रूटसकी जीत हुई थी। कासियसको ब्रूटसकी जीतका हाल समयपर मालूम नहीं हुआ। उसने अपनी हार हुई समझकर आत्महत्या कर ली। इसके २० दिन बाद इसी स्थानपर पुन. लड़ाई हुई, जिसमें ब्रूटसका भी पराभव हुआ। अत अपमानके भयसे उसने भी आत्महत्या कर ली। इस प्रकार विक्रम संवत् १५ में ब्रूटस और कासियसका अन्त हो गया। इनकी मृत्युके बाद रोम राज्यका स्वामित्व आक्टेवियस और अण्टोनियसने आपसमें बाँट लिया। बेचारे लेपिडसका किसीने नामतक न लिया। आक्टेवियसको इटलीका राजकाज सौंपा गया था और अण्टोनियसने रोमराज्यका पूर्वी भाग अपने अधीन रखा था। इटलीका राजकाज चलाना कठिन था, क्योंकि रोममें प्रतिदिन हजारों झगड़े हुआ करते थे और इसके अलावा हाल हीमें जो युद्ध हुआ था उसमें जिन जिन लोगोंने सिपाहीका काम किया था, उनको जमीनें इनाममें मिलती थीं।

यूनान देशमें जानेपर अण्टोनियसको पता लगा कि मिश्रकी रानी क्लिओपेत्राने युद्धके समय ब्रूटस और कासियसको रसद पहुँचाकर मददकी थी। यह वही क्लिओपेत्रा थी, जिस-

पर जुलियस सीजर जब कि वह अफ्रिका गया था, लट्टू हो गया था। इसलिए कैफियत तलब करनेके लिए अएटोनियस ने उसे अपने यहाँ बुलाया। अएटोनियसके आज्ञानुसार वह वहाँ गयी। इस समय उसकी उम्र २८ वर्षकी थी। टार्टस स्थानपर अएटोनियसने उससे भेंटकी। वह अपने निजके जहाजमें बैठकर सिडनस नदीसे आयी थी। उसके जहाज खेनेके डाँड सोने चाँदीसे मढे हुए थे। नाव खेनेवाले ताल सुरपर अपने डाँड चलाते थे। मल्लाह सुन्दर और मूल्यवान् वस्त्रोंसे सुसज्जित थे। स्वयं क्लिओपेट्रा भी कुछ कम सुन्दर न थी। सुन्दरतामें वह मेनका रम्भा आदि अप्सराओंको भी मात करती थी। पहले तो प्राकृतिक सौन्दर्य ही सर्वश्रेष्ठ था और तिसपर कृत्रिम साधनोंसे उसकी वृद्धि की गयी थी। फिर तो पूछना ही क्या। अएटोनियस उसे देखते ही अधीर हो गया। उसने अपना सर्वस्व उसे अर्पण कर दिया। उसे क्लिओपेट्राकी इतनी लगन लग गयी कि वह राजकाजको भी भूल गया। उसने अपनी विवाहिता पत्नी फुल्वियाको भी भुला दिया। वह आक्टेवियसपर भी दाँत पीसता था, क्योंकि उसकी लड़की क्लाडिया आक्टेवियसको व्याही गयी थी, उससे भी उसने अपना सम्बन्ध छोड़ दिया था। फुल्वियाने सोचा कि कुछ सेना इकट्ठीकर आक्टेवियसके विरुद्ध बलवा किया जाय, सम्भव है कि इस भयसे वह कुछ सम्भल जायगा। तदनुसार वह सेना एकत्र करने लगी। अपने सिपाहियोंको जमीनें देनेके लिए आक्टेवियसने उत्तर इटलीके हजारों लोगोंकी जमीन जबरदस्ती छीन ली थी। वे सब लोग फुल्वियासे जा मिले थे। उसने आक्टेवियससे लडाई छेड दी। परन्तु इससे कुछ भी लाभ न हुआ। आग्रिपा सरदारने, इट्रूरिया प्रान्तके

पेरुशिया नगरमें उस सेनाको घेर लिया और उसपर अधिकार कर लिया।

अटोनियस विषयविलासमें मग्न था। फुलवियाके उद्योगका उसपर कुछ भी असर न हुआ। पूर्वी प्रदेशोंमें उसका प्रभाव घटता जा रहा था। जब पार्थियन लोगोंने सीरियापर चढाई की, तब उसकी आँखे खुलीं। तब उसे मालूम हुआ कि उसके सिपाही आक्टेवियससे मिले जा रहे हैं, तब उसे अपनी सच्ची स्थिति मालूम हो गयी और उसने आक्टेवियसको निकाल देनेका विचार किया। उसने अपने सरदार वॅटिडियसको पार्थियन लोगोंका सामना करनेके लिए भेजा और आप स्वयं सेना सहित इटलीकी ओर रवाना हुआ। अथेंसमें उसे उसकी पत्नी फुलविया मिली। उसने उसे बुरी तरह फटकारा। उसके फटकारनेसे फुलवियाको बहुत दु ख हुआ और वह उसी दु खसे घुल घुल कर मर गयी। वहाँसे ब्रुडुसियम जाकर उसने उस नगरको घेर लिया। परन्तु अटोनियस और आक्टेवियसके मित्रोंने उन्हें समझाया कि इस कलहसे बिलकुल लाभ न होगा। अत उन लोगोंने दोनोंमें सुलह करवा दी। उन दोनोंने पुन रोमराज्य आधा आधा बाँट लिया। इससे कुछ ही समय पहले फुलविया मर गयी थी। इससे अटोनियसने आक्टेवियसकी बहिन आक्टेवियासे शादी करली। विवाह बडी धूमधामसे किया गया। यह विवाह विक्रम सम्वत् १७ में हुआ था।

पाम्पेके सेक्सटस नामका एक लडका था। उसपर यह आरोप लगाया गया कि सीजरके खूनमें उसका भी हाथ था। इसे भी, दूसरे हत्यारोंके साथ, प्राणदण्डकी आज्ञा दी गयी थी। इसलिए वह फौज और जहाजी बेडा जमाकर लूटपाट मचाने

लगा जिससे इटलीमें बाहरसे अनाज आना बन्द हो गया। अनाजकी कमीके कारण देशमें महँगी फैल गयी। तब तो देशमें हाहाकार मच गया। इसलिए उसे समझानेका निश्चय किया गया। त्रि-गुटने यह निश्चय किया कि सिसिली सार्डीनिया और कार्सिका द्वीप उसे दे दिये जायँ, और सामुद्रिक लुटेरोंको दबाकर इटलीमें अनाज मँगानेकी व्यवस्था की जाय जिससे कुछ सस्ती हो। यह निश्चय होनेपर कुछ दिनतक भोज और तमाशे होते रहे। इससे लोगोंके चित्त कुछ चिन्ता रहित हुए।

परन्तु यह व्यवस्था बहुत दिनोंतक नहीं टिकी। सेक्स्टस ने पूर्वी इटलीके कुछ प्रान्तोंपर अधिकार कर लिया था। वह उन्हें छोडना नहीं चाहता था। उधर अण्टोनियस अकाया प्रान्तके कुछ नगर दबा बैठा था। वह उन्हें छोडना नहीं चाहता था। आकृवियसने सेक्स्टसकी बहन स्क्रिबोनियासे शादी की थी। वह लिविया रमणीके प्रेम-जालमें फँस गया था। इससे वह अपनी पत्नीसे घृणा करने लगा था। लिविया गर्भवती थी, तो भी उसने, उसके पति टायबीरियस नीरोसे विवाह भङ्ग करवा कर, उससे शादी कर ली थी। इससे चिढ कर सेक्स्टस पुन लूट पाट करने लगा, जिससे पुन. अनाज महँगा हो गया। तब आकृवियसने लेपिडसको सहायताके लिए बुलाया। परन्तु उसके आनेमें देरी हो जानेसे उसने आग्रिपा नामक सरदारको उससे लडनेके लिए भेजा। इटलीके दक्षिण भागमें अच्छे बन्दरगाह न थे। इसलिए आग्रिपाने दो सरोवरोंको मिलाकर उन्हें समुद्रसे मिला दिया, और तब उत्तम मल्लाह तय्यार कर विक्रम संवत् २१ के भाद्रपद (सिंह) मासमें सेक्स्टसको बिलकुल हरा दिया।

, उपर्युक्त घटना हो ही रही थी, उसी समय विक्रम संवत् २० में अण्टोनियस और आक्टेवियसमें मन मोटाव हो गया। अण्टोनियसने ३०० जहाज़ोंकी बहुत बड़ी सेना लेकर इटली-पर चढ़ाई की। परन्तु युद्ध न हुआ। मित्रोंकी मध्यस्थताके कारण दोनोंमें मेल हो गया। उस समय आग्रिपा सेनापति, आक्टेविया और विख्यात कवि हारेस भी वहीं मौजूद थे।

इसके बाद पुनः पूर्ववत् दूसरा त्रि-गुट रोमका राजकाज देखने लगा। यह व्यवस्था और पाँच वर्षोंतक जारी रखने-का निश्चय किया गया था। अण्टोनियसने पाम्पेका पराभव करनेके लिए १२० जहाज देनेका प्रण किया था और आक्टे-वियसने पार्थियन लोगोंको हरानेके लिए अण्टोनियसकी सहायताको सेना भेजनेका वचन दिया था। तदनन्तर पाम्पे-के हारने पर लेपिडस मिसली माँगने लगा। परन्तु आक्टे-वियसने उसकी सेनामें बलवा करवा उसकी शक्ति कम कर दी। इससे निराश हो, उसने राजके कामोंसे अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। तदनन्तर वह रोम वापस लौट गया और वहाँ अपना शेष जीवन ईश्वरभजनमें बिताने लगा।

दूसरे त्रिगुटमेंसे अब दोही व्यक्ति रह गये थे। वे वाहरा एक दूसरेसे मिले हुए थे। तथापि वे एक दूसरेके आन्तरिक शत्रु थे। अण्टोनियस आक्टेवियससे बहुत डरता था, क्योंकि इटली उसके अधिकारमें था, और राज्यकी व्यवस्था उत्तम रखनेके कारण लोग उसे बहुत चाहते थे। सेनापर भी उसीका अधिकार था। परन्तु अण्टोनियसको इसकी कुछ परवा न थी। वह पुनः पूर्ववत् क्लिओपेत्राके साथ ऐश आराममें मस्त रहने लगा। खाते पीते, सोते जागते, चलते

फिरते उसे सिवा क्लिओपेत्राके और कुछ न सूझता था। दिन रात उसे यही धुन सवार रहती थी।

अएटोनियस पार्थियन लोगोंसे लडनेकी तय्यारी कर रहा था। उसने क्लिओपेत्राको भी सिरिया बुला लिया। उसने युद्धकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। दिनरात ऐशआराम में मग्न रहने लगा। अएटोनियसकी सेना हार गयी, तोभी वह सचेत न हुआ। तदनन्तर दोनों सिकन्द्रिया लौट गये। क्लिओपेत्राने अंटोनियसपर न जाने क्या जादू कर दिया था कि वह उसके पीछे पागल हो गया था। उसके बिना उसे एक घडी भी चैन न पडता था। उसने रोमके लोगोंके रीति रिवाज और रस्म छोड दिये थे। वह क्लिओपेत्राका आज्ञाकारी सेवक बन गया। अएटोनियस क्लिओपेत्रासे कहा करता था कि मैं आक्टेवियसको हराकर रोमराज्यपर अधिकार कर लूँगा, और तब सिकन्द्रियाको अपनी राजधानी बनाऊँगा। ये सब निरी गप्पें थीं। ये सब बातें रोम जा पहुँची। इससे लोग आक्टेवियसको अधिक चाहने लगे। आक्टेवियसने लोगोंके हृदयपर यह बात अंकितकर दी कि यदि अएटोनियस रोमपर कब्जा कर लेगा तो वह सारे राज्यको मट्टीमें मिला देगा। तब तो लोग भी उससे बिगड खड़े हुए। रोममें अएटोनियस के कुछ हितचिन्तक मित्र थे। उन्होंने उसे कहला भेजा कि क्लिओपेत्राको छोड देनेमें ही भला है। परन्तु वह ऐसी बात क्यों सुनने लगा? वह तो विषयसे अन्धा हो रहा था। मित्रोंको सीखने उसपर उलटा असर किया। क्रोधके आवेशमें आक्टेवियासे अपना सम्बन्ध तोड दिया। तदनन्तर वह आक्टेवियससे लड़नेकी तय्यारी करने लगा। उस समय उसके पास एक लाख पैदल और १२ हजार सवार थे।

आक्टेवियस भी उससे लडनेके लिए आगे बढा। उसने आग्रिपाको जहाजी सेनाका अधिपति बनाया। अपनी अनुपस्थितिमें उसने मेसीनाको रोमका राजकाज करनेके लिए नियुक्त किया। विक्रम सवत् २६ के भाद्रपद (सिंह) में ग्रीस देशके पश्चिमी तटके पास दोनों पक्षकी सामुद्रिक सेनामें युद्ध हुआ। अण्टोनियसके जहाज आग्रिपाके जहाजोंसे बडे थे, परन्तु उनकी व्यवस्था अच्छी न थी। जिससे गडबड फैल गयी और क्लिओपेत्रा, भयभीत हो, भाग गयी। अण्टोनियसने भी उसका अनुसरण किया। आग्रिपाकी जीत हुई। उधर आक्टेवियसने भी उसकी सेनाको मार भगाया था।

तदनन्तर आक्टेवियसने आग्रिपाको वापस रोम भेज दिया और आप यूनान और लघु एशियाका बन्दोबस्त करनेके लिए वहीं रहा। उसने जीते हुए प्रान्तोंके लोगोंपर अत्याचार नहीं किया। लोगोंके साथ वह अच्छी तरह पेश आया, जिससे वे उसे बहुत चाहने लगे। वह सामोस स्थानमें ही शीतकाल बिताना चाहता था, किन्तु रोममें बलवा होनेका समाचार सुनकर उधर चला गया। परन्तु २७ दिनोंमें उधरका प्रबन्ध कर वह पुन सामोस लौट आया।

अण्टोनियस और क्लिओपेत्राको मालूम हो गया कि अब दैव अनुकूल नहीं। इसलिए उन्होंने आक्टेवियससे सुलहके लिए प्रार्थना की। परन्तु वह सुलह करना नहीं चाहता था। आक्टेवियससे कोरा उत्तर पाकर क्लिओपेत्रा अरब भाग जानेकी तजवीज करने लगी। रास्तेमें जगली लोगोंने उसे खूब तङ्ग किया। लाचार वापस लौट आना पडा। तब उसने स्पेन जाकर बलवा करनेका निश्चय किया, परन्तु कई अपरिहार्य कारणोंसे वह भी छोडना पडा। तदनन्तर

अएटोनियस सेना इकट्ठी करनेकी धुनमें लगा। परन्तु इसका भी कुछ उपयोग न हुआ। दोनों किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गये। क्लिओपेत्राने अपने लिए एक समाधि बनवा रखी थी। वह अपने सब बहुमूल्य वस्त्रालङ्कार लेकर वहाँ जा बैठी। उसने अपने नौकरोंसे अपनी मृत्युकी बात प्रसिद्ध करवा दी। ऐसा करनेमें उसका मुख्य उद्देश यह था कि यह सम्वाद सुनकर आक्टेवियस मिश्रसे चला जायगा। परन्तु उसे निराश होना पड़ा। क्लिओपेत्राकी मृत्युकी झूठी खबर सुनकर अएटोनियस शोक विह्वल हो गया। उसे अपना जीवन भारवत् मालूम होने लगा। उसे अपने तनकी भी सुध न रही थी। वह अपने नौकरोंसे अपना सिर काट डालनेके लिए आग्रह करने लगा। परन्तु किसीने उसका कहा न माना। तब उसने अपने हाथसे अपनी छातीमें छुरी भोंक दी। यह खबर सुनते ही क्लिओपेत्रा पागलकी तरह भागती हुई उसके पास गयी। उसने अपने मरनेकी झूठी खबर उड़ानेका कारण उसे कह सुनाया। तब वह उसे अपने समाधिस्थलके पास ले गयी। वहाँ वह थोड़े ही समय बाद मर गया।

अटोनियसकी मृत्युके बाद क्लिओपेत्राने आक्टेवियसको कहला भेजा कि यदि तुम मुझपर निर्दयता न करो, तो मैं अपना राज्य तुम्हें सौंप दूँ। इस विषयमें विचार करनेके लिए [illegible] आक्टेवियस उसके पास गया। भेंटके समय क्लिओपेत्राने [illegible] पोषाक पहनी थी। उसने अपनी मुद्रा दीन कर ली [illegible]ना करके वह केवल आक्टेवियसको प्रणय जालमें फँसाना [illegible] परन्तु उसका हेतु पूरा नहीं हुआ। आक्टेवियसने [illegible]की ओर एक बार आँख उठाकर भी नहीं देखा। [illegible]र किये बैठा था। आक्टेवियसने उससे खजाने

की वस्तुओंकी एक तालिका माँगी। आक्टेवियसने उसे कुछ बहुमूल्य चीजें इस शर्तपर देनी स्वीकार कीं कि वह आत्महत्या करनेका प्रयत्न न करे। क्योंकि वह उसे विजय चिह्नकी तरह रोम ले आना चाहता था। क्लिओपेत्रा उसका अन्तरस्थ हेतु समझ गयी। इसलिए उसने आत्महत्या करनेका निश्चय कर लिया। आक्टेवियस भी उसके मनकी बात ताड़ गया था। इसलिए उसने उसे पकड़ लानेके लिए सिपाही भेजे। परन्तु सिपाहियोंके वहाँ पहुँचनेके पहले ही उसने आत्म हत्या कर ली थी। इस प्रकार अंटोनियस और क्लिओपेत्राका अन्त हो गया। यह घटना विक्रम संवत् २७ में हुई थी।

अब दूसरे त्रिगुटमेंसे आक्टेवियस ही बच रहा था। रोमके प्रजासत्तात्मक राज्यका वही एक सूत्रधार रह गया था। उसने सीज़रके पुत्रको—जोकि क्लिओपेत्रासे उत्पन्न हुआ था—मरवा डाला। उसने रोम लौट जानेपर अपनी विजयके उप लक्षमें उत्सव मनाया। लोगोंने उसका अच्छा सत्कार किया। सिनेट सभा अभी मौजूद ही थी। परन्तु आक्टेवियसपर उसका बिलकुल अधिकार न था। उलटे वह आक्टेवियसकी आज्ञा पालन करनेमें अपना गौरव समझती थी। उसने अपने प्रतिज्ञानुसार सीज़रका धन और जमीन लोगों में बाँट दी थी। वह परदेशसे बहुतसा सोना लाया था। वह भी उसने बाँट दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम में व्याजकी दर बहुत घट गयी, और जमीनकी कीमत दूनी बढ़ गयी। तदनन्तर कुछ महीने बाद उसने त्रिगुटके बनाये हुए सब विधान रद्द कर दिये। उसने लोगोंसे साफ कह दिया कि अब पहली राज्य पद्धतिका कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहा। अर्थात् रोमके प्रजातन्त्र शासनका अन्त हो गया।

यद्यपि उसका राज्याभिषेक नहीं हुआ था, तो भी कृति और अधिकारसे वह रोमका बादशाह बन गया।

यहाँ ही रोमके प्रजातन्त्र शासनका इतिहास पूरा हो जाता है। परन्तु आगेके राजाओंका संक्षिप्त इतिहास देना हम योग्य समझते हैं। अतः हम आगेका इतिहास संक्षेपमें लिखेंगे।

आश्चर्य इस बातका है कि हजारों वर्षोंसे प्रजातन्त्र-शासनका उपभोग लेनेवाले रोमके लोगोंने राजसत्ताको किस तरह अपनाया। परन्तु तत्कालीन परिस्थितिको देखते हुए यही कहना पड़ता है कि यह एक साधारण बात थी। इसके अतिरिक्त जिन जिन लोगोंने प्रजातन्त्र-शासनका अप्रतिम सुखोपभोग किया था वे इन ५० वर्षों में मर गये थे। इस समय लोगोंकी यही इच्छा थी कि कोई भी राज्याधिकारी क्यों न हो, पर देशमें शान्ति रहे। आक्टेवियसने किसीपर निर्दयता न की थी, उसने लोगोंपर बहुत उपकार किये थे। उसने किसीका मन नहीं दुखाया था। इसीसे लोग उसे चाहते थे। इसके सिवा रोममें ऐसा कोई भी प्रभावशाली मनुष्य नहीं था जो सिर ऊँचा कर सके। क्योंकि पाम्पे, सुल्ला, मारियस आदिके समान महत्वाकांक्षी लोग अस्त हो चुके थे। इस समयकी परिस्थिति ही ऐसी हो गयी थी कि राष्ट्रीय परिवर्त्तनका युग आगया था। इसके लिए अलग उद्योग नहीं करना पड़ा। इसीसे प्रजातन्त्र शासन नष्ट हो गया और उसके स्थानपर राजगद्दी स्थापित हो गयी।

विक्रम संवत् ३० में उसने अपना नाम 'आगस्टस' रख कर लोगोंसे "इम्परेटर" की उपाधि प्राप्त कर ली। इम्परेटर शब्दसे ही इम्परर (सम्राट्) शब्द बना है। परन्तु उस समय

'इम्परेटर' शब्दका अर्थ सेनापति किया गया था। यह पदवी अबतक सब सेनापति अपने अपने नामके साथ लगाया करते थे। परन्तु अब आगस्टस और उसके बादके रोम राज्यके धुरीण उसे अपने नामके साथ लगाने लगे। अब यह पदवी अधिकारका चिन्ह न मानी जाकर वंशपरम्परागत हो गयी थी। विक्रम संवत् ३३ में यह प्रस्ताव पास हुआ कि आगस्टसके लिए सिनेट सभाके बनाये हुए विधान लागू न समझे जायँ। दूसरे साल उसने अपनेको रोमके बाहरके प्रान्तोंका प्रोकॉसल अर्थात् गवर्नर नियुक्त करवा लिया। सिनेटसभाकी बैठक बैठाना या न बैठाना उसकी इच्छापर अवलम्बित रह गया। सब प्रकारके न्याय की अपीलें उसीके पास की जानेका प्रस्ताव पास हो गया। आगस्टस सदैव यह दिखानेका यत्न किया करता था कि मुझे ये अधिकार लोगोंने दिये हैं। लोग इतनेहीसे प्रसन्न थे। वह सर्वसाधारणसे मिल जुल कर रहता था। आडम्बर बिलकुल न करता था। इसीसे लोग उसे आदरकी दृष्टिसे देखने लग गये थे। साराशमें, उसने धीरे धीरे लोकप्रीति सम्पादन कर ली।

सीजरने सिनेट सभामें निकम्मोंकी भरती खूब कर दी थी, जिससे सभासदोंकी संख्या एक हजारके करीब हो गयी थी। आगस्टसने ऐसे वैसे सब लोगोंको निकाल दिया। उसने सिनेटमें केवल ६०० सभासद रहने दिये और यह नियम बना दिया कि वे ही लोग सिनेटके सभासद बनाये जायँ जिनके पास एक लाखकी जायदाद हो। सिनेटकी बैठक मासमें दो बार होनेका निश्चय किया गया। उसने प्रधान मण्डलकी स्थापना की। परन्तु बड़े बड़े कामोंमें वह

बुद्धिमान् मित्रोंकी सलाह ले लिया करता था। उसने सेना और युद्धका काम ही अपने पास रखा था। वाहरके प्रान्तोंपर सूबेदार भेजनेका काम सिनेटके सपुर्द किया गया। स्पेन-राइन और डेन्यूब नदीके तटके प्रदेश, जिनमें अकसर बलवा हुआ करता था, उसने अपने अधिकार में रखे। फ्रात नदीके किनारेका प्रदेश भी उसने अपने ही अधिकारमें रखा क्योंकि वहाँ भी बलवे हुआ करते थे।

आगस्टसने पुलिसका प्रबन्ध भी उत्तम कर रखा था। पहले, खुल्लमखुल्ला अपराध करनेवाले बेदाग छूट जाया करते थे। आगस्टसने यह अन्धेर बन्द कर दिया था। रोममें भी "जिसकी लाठी, उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ होती थी। राजमार्गोंपर दिन दहाडे यात्री लूट लिये जाते थे। आगस्टसने युक्तिसे धीरे धीरे सबका प्रबन्ध कर दिया। बदमाश लोग गरीबोंको बहुत तङ्ग किया करते थे। उन्हें भी अब अपनी दुष्टतासे मुख फेर लेना पडा। उसने रोम नगरको १४ मुहल्लोंमें बाँट दिया। प्रत्येक मुहल्लेमें पहरेके लिए सिपाही और न्यायाधीश अलग अलग नियुक्त थे। इससे धीरे धीरे गुण्डोंका प्रभाव कम हो गया। अपनी रक्षाके लिए उसने अलग सिपाही रखे थे। उन्हें वह सैनिक लोगोंसे दूनी तनख्वाह देता था। इससे लोगोंपर उसका प्रभाव बहुत पडने लगा। इसके बादके सब बादशाहोंने भी इस बातमें इसीका अनुकरण किया।

रोममें व्यभिचारकी मात्रा बहुत बढ गयी थी। उसने उसको कम करनेके लिए कडे नियम बनाये। विवाह करनेकी परिपाटीको उसने बहुत उत्तेजन दिया। विक्रम सं० ३८ में उसने एक नियम बनाया। तदनुसार व्यभिचार करनेवाले

और उसके सहायक दोनोंको ही कड़ी सजा दी जाती थी। उसने यह भी नियम बनाया था कि इतने वर्षकी उम्र हो जाने पर जो विवाह न करे उसे कठोर दण्ड दिया जाय। सरकारी कचहरियोंमें अकसर विवाहित, और बाल-बच्चेवाले लोगोंको ही सबसे पहले नौकरी दी जाती थी, क्योंकि व्यभिचार बहुत ही बढ़ गया था। तत्कालीन स्थितिके अनुसार आगस्टस भी विषयी था। अतएव उसका प्रयत्न सफल न हुआ।

आगस्टस सीजरको बहुत लड़ाइयाँ नहीं लड़नी पड़ीं। स्पेनके उत्तरमें बास्क जातिके लोग रहा करते थे। वे बिलकुल जंगली थे। आगस्टसने विक्रम सं० २० से ३३ तक युद्ध कर उन्हें हरा दिया। पार्थियन लोग इससे पहलेसे ही डर गये थे। उन्होंने उससे सन्धि कर ली। इसने द्रव्य लोभसे अरब लोगोंपर भी चढ़ाई की थी, क्योंकि अरब लोग व्यापारी थे। उन्होंने वाणिज्यसे बहुत सम्पत्ति पैदा की थी। उसने उन्हें जीतकर उनका धन हथियाना चाहा। परन्तु उसका प्रयत्न व्यर्थ हुआ। इतना ही नहीं बरन्, अरबकी खराब आबहवाके कारण रोमकी सेनाको बहुत कष्ट भोगने पड़े और हजारों सैनिक रोगी होकर मर गये। उसने नीरोको सेना सहित राइन नदीके तटके प्रदेशोंकी ओर भेजा था। परन्तु इस चढ़ाईसे विशेष लाभ नहीं हुआ।

आगस्टसने राज्यमें साफ सीधी उत्तम सड़कें बनवायीं। सड़कोंपर पहरा देनेके लिए नियमित अन्तरपर सिपाही रखे गये। डाक लाने ले जानेका काम भी इन्हीं सिपाहियोंको करना पड़ता था। अनेक सुन्दर इमारतें बनवाकर इसने रोमकी सुन्दरता बढ़ा दी। टाइबर नदीकी बाढ़से लोगोंके मकान सुरक्षित रखनेके लिए उसने सुदृढ़ बाँध बनवाया और

नदीका पाट भी अधिक चौडा करवाया था। उसने प्रजातन्त्र शासन कालके ८५ मन्दिरोंका जीर्णोद्धार करवाया था।

विद्यामें आगस्टस सीजरकी विशेष अभिरुचि थी। वह विद्वानोंका अच्छा सत्कार करता था। वर्जिल, हारेस आविड नामक विख्यात कवि उसके ही आश्रय में रहते थे।

आगस्टस सीजरका राज्य बहुत बडा था। आजतक रोमके किसी शासकको इतने बडे राज्यपर हुकूमत करनेका सौभाग्य प्राप्त न हुआ था। उसने जैसी उत्तम व्यवस्था रखी थी वैसी आजतक किसी रोमन सत्ताधारीने न रखी थी। इतना बडा राज्य होनेपर भी, उसकी सुव्यवस्था होनेके कारण, देशमें अटल शान्ति छायी हुई थी। इन्हीं सब कारणों से वह रोमराज्यका पिता कहलाता था।

यह सब तो ठीक था, किन्तु इस राजाको कुटुम्बका सुख बिलकुल न था। उसकी तीसरी स्त्री बडे दुष्ट स्वभाव की थी। वह आगस्टसको अपनी अँगुलियोंपर नचाया चाहती थी। उसकी लडकी भी राक्षसीसे किसी तरह कम न थी। उसने उसे किसी दूसरे देशमें भेज दिया था। यह सब व्यभिचार युगका प्रताप था। केवल धनसे ही आदमी सुखी नहीं हो सकता। धनके साथ ही साथ नीति भी होनी चाहिए। और सुख भी तभी मिलता है। नीतिमें लिखा है—

माता यस्य गृहे नास्ति, भार्या चाप्रिय वादिनी।
अरण्य तेन गन्तव्य, यथारण्य तथा गृहम्॥

जब आगस्टस मृत्युशय्यापर पडा हुआ था, तब उसने अपने इष्ट मित्रों और सगे सम्बन्धियोंको अपने पास बुला कर पूछा,—"क्या मैंने अपना कर्तव्य पालन उचित रीतिसे किया है?" उन्होंने उत्तर दिया कि इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। यह

उत्तर सुनकर उसका मन शान्त हुआ। तदनन्तर शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय उसकी अवस्था ७७ वर्ष की थी। इस प्रकार विक्रम स० ४२ में रोमके प्रजातन्त्र शासनको उखाड कर उसके स्थानपर राजतन्त्रकी पुन स्थापना करनेवाला, आगस्टस सीजर इस दुनियाँसे उठ गया।

इस बादशाहके जमानेमें रोमका राज्य बहुत फैल गया था। यूरोपके पश्चिमी और दक्षिणी भागके सब राष्ट्र रोमके अधीन थे। इङ्गलिस्तान, फ्रास, स्पेन, जर्मनीका कुछ भाग, इटलीके सब राज्य, यूनान और वह सब प्रान्त जिसे आजकल तुर्कस्थान कहते हैं, रोमराज्यमें शामिल थे। इनके अतिरिक्त एशियामाइनरके आसपासका सब प्रदेश और अफ्रिकाके उत्तर भागपर भी रोमका अधिकार था।

इस समय रोमराज्य उन्नतिके अत्युच्च शिखर पर पहुँच गया था। परन्तु ऐश आराम और दुराचारकी मात्रा बढ जानेसे धीरे धीरे उसका अपकर्ष होता जा रहा था। रोम राज्य रूपी वृक्ष खूब फैला था। उसकी शाखाएँ दूर दूरतक फैल गयीं थी। परन्तु ठीक इसी समय उसकी जडमें कीडा लग गया था।

आगस्टस सीजरकी मृत्युके बादके ३५० वर्षोंमें रोमके लगभग ५० बादशाह हो गये। वे ऐश आराममें ही निमग्न रहा करते थे। उनमेंसे कई बादशाह तो बहुत ही खराब थे। यदि वे जन्म ही न लेते तो बहुत अच्छा होता।

आगस्टसके बाद उसका लडका टाइबीरियस बादशाह हुआ। आगस्टसकी उपस्थितिमें ही इसने जर्मनीमें अच्छा नाम कमाया था। आगस्टसने इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। सिनेटने इसे इम्परेटर बनाया। इसी बादशाहके

शासन-कालमें क्राइस्ट फाँसीपर चढ़ाया गया था। यह बादशाह विक्रम संवत् ७४ में स्वर्गवासी हुआ।

टाइबीरियसके बाद उसका भतीजा कालिगुला रोमका बादशाह हुआ। उसने अपना निजका मन्दिर बनवाया था, और वह स्वयं अपनी पूजा किया करता था। उसने यह प्रसिद्ध किया था कि उसकी पत्नी और उसके प्यारे घोड़ेको भी देवताके समान ही मान दिया जाना चाहिए। वह कभी कभी उस घोड़ेको अपने साथ, एक ही पंक्ति में, खाना खिलाता था। उस समय घोड़ेको खानेके बर्तनमें चन्दी दी जाती थी। यह बहुत दुष्ट स्वभावका था। एक समय वह कुछ अपराधियोंको हिंसक पशुओंके पींजड़ेमें छोड़ कर, खड़ा तमाशा देख रहा था। जब अपराधी न रहे तब उसने तमाशा देखनेवालों को पींजड़ेमें छोड़नेका हुक्म दिया। इसे विक्रम संवत् ८ में इसके सिपाहियोंने ही मार डाला। इसके बाद क्राडियस बादशाह हुआ। इस समय इसकी अवस्था ५० वर्षकी थी।

रोमके इतिहास-लेखकोंने क्राडियसकी बड़ी निन्दाकी है। वह स्वभावतः गरीब और भीरु था। परन्तु उससे रोम राज्यका बिलकुल नुकसान न हुआ, प्रत्युत मानना पड़ेगा कि राज्यका भला ही हुआ, क्योंकि वह स्वयं काम करता था। जो काम वह स्वयं कर सकता था उसे कभी दूसरोंपर नहीं छोड़ता था। उसने चार विवाह किये थे। उसकी पहली दो स्त्रियोंके सम्बन्धमें विशेष कुछ मालूम नहीं। परन्तु उसकी तीसरी स्त्री मेसालिनाका चालचलन बहुत खराब था। उसकी चौथी स्त्री आग्रिपिना भी बहुत बदमाश थी। आग्रिपिनाके नीरो नामक एक पुत्र था। यह उसके पहले पतिसे

था। उसे राजगद्दी दिलवानेके लिए उसने बड़ा जाल रचा था। अन्तमें उसने क्लाडियसको मजबूर कर नीरोको ही उत्तराधिकारी नियत करवा लिया। मेसालिनाका पुत्र ब्रिटानिकस बेचारा कोरा रह गया। विक्रम सवत् १११ में आग्रिपिनाने विषका प्रयोग कर क्लाडियसको मार डाला इसी बादशाहके शासन कालमें इँग्लिस्तानपर भी अधिकार कर लिया गया था।

क्लाडियसके बाद नीरो रोमके सिंहासनपर बैठा। प्रारम्भमें वह बहुत ही अच्छे स्वभावका था। वह दया, क्षमा उदारता आदि गुणोंसे सम्पन्न था। परन्तु बादमें उसकी निर्दयता हद दरजेतक पहुँच गयी थी। उसने अपनी माता और पत्नीको भी मरवा डाला था। उसने एक बार अपने मनोरञ्जनार्थ रोम नगरमें आग लगा दी थी। उसने यह प्रसिद्ध कर दिया कि यह आग क्रिश्चियन लोगोंने लगायी है, और इसी बहानेसे उसने निरपराध क्रिश्चियन लोगोंका बध करवा डाला था। अन्तमें उससे तङ्ग आ सिनेटने उसे पदच्युत कर सूलीपर लटकानेकी आज्ञा दी। किन्तु सूलीपर लटकाये जानेके पहले ही वि० सवत् ११५ में उसने आत्महत्या कर ली।

नीरोकी मृत्युके बाद रोम अन्धेर नगरी बन गया। डेढ़ वर्षकी अवधिमें ४ बादशाह हुए। बादशाह चुननेका सब अधिकार सेनाके हाथमें चला गया। इस डेढ़ वर्षमें सर्जियस गाल्वा, साल्वियस ओथो और विटेलियस क्रमसे एकके बाद एक रोमके राजसिंहासनपर बैठे। अन्तमें, सवत् १२४ के ५ पौष (धनु) को वेस्पेशिआनस राजगद्दीपर बैठाया गया।

वेस्पेशिआनसने दस वर्षतक राज्य किया। उसके मा बाप बड़े गरीब थे। उसका पितामह, साधारण सि५०८।

उसका बाप छोटे पदका अधिकारी था। कई लोगोंने उसे मार डालनेके लिए षड्यन्त्र रचे परन्तु उसने एकको भी सजा न दी। इसने क्लाडियस बादशाहके जमानेमें यहूदी लोगोंको जीतकर जेरुसेलमपर अधिकार कर लिया था। वह वि० सं० १३६ मे मरा।

उसके बाद उसका लडका टायटस बादशाह हुआ। यह दिनरात प्रजाकी हितचिन्तामें लगा रहता था। इसके राज्य-कालमें वेसुवियस ज्वालामुखीने आग उगलनी शुरू की थी, जिससे बडी हानि हुई। उस समय टायटसने निराश्रित लोगोंके सहायतार्थ अपना सब धन खर्च कर डाला था। वह भी १४८ वि० में मर गया।

टायटसके बाद उसका भाई डॉमिशियन बादशाह हुआ। वह बडे नीच स्वभावका था। वह पक्का जुआरी था। तीरदा-जीका भी उसे बडा शौक था। उसका अधिकांश समय मछली मारनेमें ही बीतता था। वि० सं० १५३ में इसका खून किया गया। कुछ इतिहास लेखकोंका मत है कि इसकी पत्नी ने ही इसे मरवाया था।

इसके बाद जो बादशाह हुआ उसका नाम नर्वा था। यह स्पेन देशका रहने वाला था। इसका स्वभाव बहुत ही अच्छा था। ६४ वर्षकी अवस्थामें यह बादशाह बनाया गया था। यह सं० १५५ में मरगया। तब ट्रेजन राजगद्दी पर बैठा। यह समझदार, साहसी न्यायी और गुण ग्राहक था। वह शराब बहुत पीता था तो भी विचारवान् था। उसने लोगोंको कडी चेतावनी दे रखी थी कि शराबके नशेमें दिये हुए हुक्मको कोई तामील न करे। वि० सं० १७५ में ट्रेजन मरगया। इसके बाद उसका भानजा हेड्रियन बादशाह हुआ। उसने राज्यमें

शान्ति स्थापित की। उसे प्रवास करने का बड़ा शौक था। राजगद्दी होतेही उसने पहले अपने राज्य में दौरा किया। ग्रेटब्रिटन आदि देश भी उसने देखे। जहाँ जहाँ वह गया, वहाँ वहाँ उसने पुल, तालाब, मीनार आदि बनवाये। उसने २१ वर्षतक राज्य किया। बाद अपनी अवस्थाके ६३ वें वर्ष (सं० १९५) में वह भी देवलोक सिधारा। उसके बाद उसका-दत्तक लड़का आंटोनाइनस पायस गद्दीपर बैठा। उसने प्रजाको बड़ा सुख पहुँचाया। ऐश आरामकी ओर उसका बिलकुल ध्यान न था। उसने शिक्षाको उत्तेजन दिया लोगोंके सहायतार्थ बड़े बड़े नगरों और कसबोंमें वैद्य भेजे, और अनाथ बच्चोंके संरक्षणार्थ संस्थाएँ स्थापित की। वह संवत् २२४ में स्वर्गधाम सिधारा। उसके बाद उसका लड़का मार्कस आरीलियस बादशाह हुआ। यह प्रसिद्ध तत्ववेत्ता था। इसके शासन कालमें गाल देशमें क्रिश्चियन लोग बहुत सताये गये। वह सदैव अशक्त बना रहता था। उसे सन्यास वृत्ति अधिक पसन्द थी। एकान्तमें रहना उसे अधिक भाता था। परन्तु उसे बहुत कम समय मिलता था। उसके देशपर शत्रुने चढ़ाई की थी। उनका पराभव करनेके लिए वह सेना सहित उधर गया था। वहीं डेन्यूब नदीके तटपर बीमार हो (संवत् २३७) देह छोड़ गया।

इसके बाद कई बादशाह गद्दी पर बैठे। परन्तु उनमेंसे एक भी ऐसा न था, जिसके सम्बन्धमें कुछ भी लिखा जाय। उनमेंसे डिडियस ज्युलियानस विशेष प्रसिद्ध था। उसने सिपाहियोंको प्रचुर धन देकर रोम-राज्य मोल लिया था। हेलिओगेबालस बादशाह आलसी और क्रूर था। डिओक्लिशियन बादशाहने क्रिश्चियन लोगोंको बहुत तङ्ग किया था।

देवता हर घड़ी हर जगह याद आते थे। उनमें भी देवताओं-की भरमार थी। उन लोगोंकी यह भावना थी कि संसारमें अपनेको, भिन्न भिन्न देवताओंकी कृपासे ही सुख प्राप्त होते हैं। 'सेटर्नस ओपस' नामक देव वर्षा और फसलका ईश्वर माना जाता था। समझा जाता था कि 'फानस' देव जङ्गलोंमें गाय बकरी आदि पशुओंकी रक्षा करता है। 'वर्तुमनस' और 'पोमोना' देव फल फूल और नदियोंका राजा है। इन सब देवताओंकी वे बड़ी भक्ति करते थे।

इसके अतिरिक्त रोमके लोगोंमें त्योहारोंकी भी कमी नहीं थी। ३ कुम्भ (फाल्गुन) (फरवरीकी १५ तारीख)को एक त्योहार मनाया जाता था। उस रोज कुलीन कुलके तरुण लोग इकट्ठे होकर 'फानस' देवकी पूजा अर्चा किया करते थे। इस देवताको कुत्ते और बकरोंकी बलि दी जाती थी। तदनन्तर सब लोग बलिदान किये हुए पशुओंके चमड़ेसे मढ़े हुए बाजोंको हाथोंमें ले, ग्वालेका भेष बना नाचते हुए पाले टाइन पहाड़ीकी प्रदक्षिणा करते थे। उन लोगोंकी भावना थी कि उन बाजोंके स्पर्शसे सकल मनोकामनाएँ सिद्ध होती हैं। इसीलिए नवविवाहित दम्पति, तरुण और स्वकल्याणेच्छु अन्य व्यक्ति बड़ी भक्तिसे उनका स्पर्श करते थे। ११ कुम्भ (फाल्गुन) (२३ फरवरी)को एक और त्योहार मनाया जाता था। उस रोज किसान लोग अपने अपने खेतोंकी हद पर गाड़े हुए पत्थरोंकी पूजा अर्चा करते, उन्हें फूल चढ़ाते और मद्यादिका नैवेद्य लगाते थे। वे समझते थे कि सीमाके इन पत्थरोंकी पूजा करनेसे आपसमें मेल रहता है। वृश्चिक (दिसम्बर) मासमें उनका सबसे बड़ा त्योहार आता था। उस समय लोगोंका खेतीका काम भी पूरा हो जाता था। इसलिए

यह त्योहार एक सप्ताह तक मनाया जाता था। इस त्योहारके दिन लोग खूब आनन्द मनाते थे। इस सप्ताहमें गुलामोंका पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाती थी। गुलामोंके मालिक स्वयं उन्हें परोसते और खिलाते थे। गुलामोंको रेशमी वस्त्र और उत्तम भोजन दिया जाता था। सरकारी कचहरियाँ और पाठशालाएँ बन्द रहती थीं। उस सप्ताहमें कभी युद्ध शुरु नहीं किया जाता था। अपराधियोंको दण्ड भी नहीं दिया जाता था। यह सप्ताह ऐश आराम और आनन्दसे मनाया जाता था। इतिहास लेखकोंका मत है कि ईसाई लोग आज कल जो नातालका त्योहार मनाते हैं, वह रोम निवासियोंके त्योहारका अवशेष मात्र है।

रोम निवासियोंके मूल धर्ममें मूर्त्ति पूजा न थी। देवताके नामपर ही अनाज, नमक, शराब, शहद और सुगन्धित फूल फल आदि पदार्थ अर्पण किये जाते थे। परन्तु इट्रस्कन लोगोंके साथ मेल हो जानेके बाद उनमें इसका भाव विशेष रूपसे आ गया। उनके मन्दिरोंमें देवताओंकी मूर्त्तियाँ देख कर रोमके लोग भी मूर्त्ति स्थापन करने लग गये। पशुओंकी बलि देनेकी रीति भी उन्होंने उनसे ही सीखी थी। तभी से वे पशुओंका बलिदान भी करने लगे थे।

रोमके लोगोंके देवताओंमें जुपिटर मुख्य था। रोमके लोग उसकी बड़ी भक्ति करते थे। जुपिटरके लिए भिन्न भिन्न पुजारी रहा करते थे। मार्क्स और क्विरिनस देवताके पुजारी भी भिन्न भिन्न होते थे। वे 'फ्लामेन' कहाते थे। फ्लामेन पुजारी पेट्रिशियन लोगोंमें से ही चुने जाते थे। जुपिटरके पुजारीको सदैव मूर्त्तिके पास ही रहना पड़ता था। उसे वहाँसे हटनेकी बिलकुल आज्ञा न थी। शपथ लेने और घोड़ेपर बैठनेकी

देवता हर घडी हर जगह याद आते थे। उनमें भी देवताओं-की भरमार थी। उन लोगोंकी यह भावना थी कि संसारमें अपनेको, भिन्न भिन्न देवताओंकी कृपासे ही सुख प्राप्त होते हैं। 'सेटर्नस ओपस' नामक देव वर्षा और फसलका ईश्वर माना जाता था। समझा जाता था कि 'फानस' देव जङ्गलोंमें गाय बकरी आदि पशुओंकी रक्षा करता है। 'वर्तुमनस' और 'पोमोना' देव फल फूल और नदियोंका राजा है। इन सब देवताओंकी वे बडी भक्ति करते थे।

इसके अतिरिक्त रोमके लोगोंमें त्योहारोंकी भी कमी नहीं थी। ३ कुम्भ (फाल्गुन) (फरवरीकी १५ तारीख)को एक त्योहार मनाया जाता था। उस रोज कुलीन कुलके तरुण लोग इकट्ठे होकर 'फानस' देवकी पूजा अर्चा किया करते थे। इस देवताको कुत्ते और बकरोंकी बलि दी जाती थी। तदनन्तर सब लोग बलिदान किये हुए पशुओंके चमडेसे मढे हुए बाजोंको हाथोंमें ले, ग्वालेका भेष बना नाचते हुए पाले टाइन पहाडीकी प्रदक्षिणा करते थे। उन लोगोंकी भावना थी कि उन बाजोंके स्पर्शसे सकल मनोकामनायें सिद्ध होती हैं। इसीलिए नवविवाहित दम्पति, तरुण और सकलयोगेच्छु अन्य व्यक्ति बडी भक्तिसे उनका स्पर्श करते थे। ११ कुम्भ (फाल्गुन) (२३ फरवरी)को एक और त्योहार मनाया जाता था। उस रोज किसान लोग अपने अपने खेतोंकी हद पर गाडे हुए पत्थरोंकी पूजा अर्चा करते, उन्हें फूल चढ़ाते और मद्यादिका नैवेद्य लगाते थे। वे समझते थे कि सीमाके इन पत्थरोंकी पूजा करनेसे आपसमें मेल रहता है। वृश्चिक (दिसम्बर) मासमें उनका सबसे बड़ा त्योहार आता था। उस समय लोगोंका खेतीका काम भी पूरा हो जाता था। इसलिए

यह त्योहार एक सप्ताह तक मनाया जाता था। इस त्योहारके दिन लोग खूब आनन्द मनाते थे। इस सप्ताहमें गुलामोंको पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाती थी। गुलामोंके मालिक स्वयं उन्हें परोसते और खिलाते थे। गुलामोंको रेशमी वस्त्र और उत्तम भोजन दिया जाता था। सरकारी कचहरियाँ और पाठशालायें बन्द रहती थीं। उस सप्ताहमें कभी युद्ध शुरु नहीं किया जाता था। अपराधियोंको दण्ड भी नहीं दिया जाता था। यह सप्ताह ऐश आराम और आनन्दसे मनाया जाता था। इतिहास लेखकोंका मत है कि ईसाई लोग आज कल जो नाताल का त्योहार मनाते हैं, वह रोम निवासियोंके त्योहारका अवशेष मात्र है।

रोम निवासियोंके मूल धर्ममें मूर्त्ति पूजा न थी। देवता के नामपर ही अनाज, नमक, शराब, शहद और सुगन्धित फूल फल आदि पदार्थ अर्पण किये जाते थे। परन्तु इट्रस्कन लोगोंके साथ मेल हो जानेके बाद उनमें इसका भाव विशेष रूपसे आ गया। उनके मन्दिरोंमें देवताओंकी मूर्त्तियाँ देख कर रोमके लोग भी मूर्त्ति स्थापन करने लग गये। पशुओंकी बलि देनेकी रीति भी उन्होंने उनसे ही सीखी थी। तभी से वे पशुओंका बलिदान भी करने लगे थे।

रोमके लोगोंके देवताओंमें जुपिटर मुख्य था। रोमके लोग उसकी बड़ी भक्ति करते थे। जुपिटरके लिए भिन्न भिन्न पुजारी रहा करते थे। मार्स और क्विरिनस देवताके पुजारी भी भिन्न भिन्न होते थे। वे 'फ्लामेन' कहाते थे। फ्लामेन पुजारी पेट्रिशियन लोगोंमें से ही चुने जाते थे। जुपिटरके पुजारीको सदैव मूर्त्तिके पास ही रहना पड़ता था। उसे वहाँसे हटनेकी बिलकुल आज्ञा न थी। शपथ लेने और घोड़ेपर बैठनेकी

उसे बिलकुल मनाही थी। लड़ाईपर जानेकी तय्यारी करने वाली सेनाकी ओर आँख उठा कर देखनेका उसे बिलकुल निषेध था। यदि रास्तेमें किसी अपराधीकी फ़ामेनसे मुला-कात हो जाय तो उसकी बेड़ियाँ काट दी जाती थीं और उसके दण्डमें एक दिनकी कमी कर दी जाती थी। यदि कोई दण्ड पाया हुआ कैदी आश्रयके लिए उसके घरमें घुस जाय तो वह दोषमुक्त कर दिया जाता था। 'फ़ामेन'को विवाह करना ही पड़ता था। लोग उसका बहुत आदर सत्कार करते थे। उसे सिनेट सभामें बैठनेका अधिकार था। पत्नीकी मृत्युके बाद 'फ़ामेन'को अपना अधिकार त्याग देना पड़ता था।

रोमके लोगोंकी भावना थी कि जुपिटरको भूत भविष्य और वर्त्तमान मालूम रहता है। वह मेघगर्जना विद्युत् आदि द्वारा भविष्यकी सूचना दिया करता है। वे समझते थे कि पक्षी उसके सम्वाद दाता और सेवक हैं। कुछ पक्षियोंकी उड़ान दिशासे भी भविष्य मालूम होता है। गरुड़, क्रौंच आदि पक्षी सुवार्ता वाहक हैं और उल्लू, स्वालो आदि पक्षी अनिष्ट सूचक हैं। भोले निरक्षर भारत वासियोंकी भावना भी रोमके लोगोंकी उपर्युक्त भावनाओंसे कुछ कुछ मिलती जुलती है।

जूनो जुपिटरकी औरत थी। रोमके लोग उसकी भी वन्दना करते थे। अपोलो जुपिटरका लड़का था। वह काव्य और वाद्य-विद्याका देवता था। मिनर्वा ज्ञानकी देवी थी। जिस प्रकार हिन्दू सरस्वतीको विद्याकी देवी मानते हैं उसी प्रकार रोमके लोग मिनर्वाको मानते थे। रोमके लोग अपने देवी देवताकी पूजा तो करते ही थे, परन्तु वे यूनान आदि लोगोंके देवी देवताओंको भी पूजते थे। यही दशा हम हिन्दू लोगोंकी

भी है। जैसे अधिकांश हिन्दू लोग मुसलमानोंके पीर पैग म्बरोंकी पूजा करने और उनकी मन्नत मानते हैं।

रोमके लोगोंमें मुहूर्त्त और शकुनका प्रभाव भी बहुत माना जाता था, और बादमें रोमके धर्माधिकारियोंने उसे और भी बढ़ा दिया। प्राचीन कालमें वहाँकी यह परिपाटी थी कि जब आकाश बादलोंसे ढका हुआ हो और मेघ गरजते हों तो राजके कारबारके लिए भरी हुई सभा भी बरखास्त कर दी जाती थी। आगे चलकर धर्माधिकारियोंने धूर्त्ततासे इसको विलक्षण स्वरूप दिया था। यहाँ तक कि आकाशमें बादल देखनेके लिए किसी अधिकारीने आकाशकी ओर देखा कि सभा बरख़ास्त कर दी गयी।

रोमके लोगोंकी शव दाह-पद्धति भी विलक्षण थी। मनुष्य-के मरणासन्न होनेपर उसके निकटके सम्बन्धी उसके बिस्तरके पास जा बैठते थे। वे उसकी देहसे निकलनेवाले प्राणको अपने मुँहमें लेनेका प्रयत्न करते थे। प्राणोत्क्रमण होनेपर वे मृत-मनुष्यका नाम लेकर जोरसे चिल्लाकर कहते थे,—"तेरा कल्याण हो।" तदनन्तर शव नहलाया जाता था। वे उसे सुग न्धित तेल अंतर आदि लगा फूलोंकी मालाओंसे विभूषित भी करते थे। उसके बाद वहाघरके मुख्य दरवाजेकी ओर पाँवकर सुला दिया जाता था। शवको झगा पहनाया जाता था, और यदि मृत मनुष्यको मुकुट आदि मिला हो तो वह भी शवके पास रख दिया जाता था। रोमके लोग मानते थे कि इस लोक और परलोकके बीचमें एक गहरी नदी है। उस नदी (वैतरणी) को पार करनेके लिए नावपर सवार होना पड़ता है। इसके लिए मल्लाहको उतराई देनी पड़ती है। इसलिए उस उतराईके लिए मुर्देके मुखमें एक स्वर्णमुद्रा डाली जाती थी। यह रीति

हम लोगोंमें भी प्रचलित है। मुर्दा सात रोज़तक नहीं जलाय
जाता था। आठवें रोज शव-दाह किया जाता था। शवके
साथ बहुतसे लोग श्मशानतक जाते थे। यदि कोई विख्यात
मनुष्य मरता था, तो उसका शव फोरममें रखा जाता थ
और वहाँ उसके सम्बन्धमें भाषण होते थे। मृत मनुष्यका सबसे
निकटका सम्बन्धी चिताकी ओर पीठकर उसमें आग लगात
था। शवके जल जानेपर राख एक पात्रमें भरकर घरमें रख दं
जाती थी। मृत मनुष्यकी राखसे भरे हुए पात्र रखनेके लिए
घरोंमें अलग जगह बनायी जाती थी।

रोम नगर

रोमनगरका निर्माण होनेपर क़रीब सात सौ वर्षतक व
साधारण खेडेके समान था। वह झोपडोंसे भरा पडा था
हम पहले लिख चुके हैं कि गाल लोगोंने रोमनगरको जल
दिया था। तदनन्तर वह पुन: बनवाया गया था। शीघ्रताके
कारण घर बहुत पास पास बनाये गये थे जिससे रास्ते बहु
सँकरे और टेढे मेढे हो गये थे। घर बहुत छोटे और बहु
खराब थे। घरोंमें अस्वच्छताका पूर्ण साम्राज्य था। बादमें बस्ती
बढ जानेसे लोगोंको बडी तकलीफ होने लगी। एक ही दं
रास्ते ऐसे थे जिनपर गाडियाँ आ जा सकती थीं। दूसरे रास्ते
इतने तग थे कि उनपर गाडियोंका आना जाना असभव था
इससे लोगोंको बडी तकलीफ होती थी, परन्तु रास्तोंप
फर्शबन्दी की होती थी। नलों द्वारा गाँवमें पानी पहुँचाया जात
था। उनके अवशेष अब भी कहीं कहीं नज़र आते हैं। इन
प्राचीनकालमें भी उनका कलाकौशल खूब बढ़ा चढ़ा था।

रोम निवासियोंके घर

प्रारम्भमें रोमके लोगोंके घर प्राय एक ही कमरेके होते थे। इसी कमरेमें घरके सब काम काज किये जाते थे। रोमकी भाषामें घरको "आत्रियम" कहते हैं। इस शब्दका वास्तविक अभिप्राय 'काला कमरा' होता है। यह अर्थ बिलकुल सार्थक था। क्योंकि धुएँके कारण सारा घर बिलकुल काला हो जाता था। इसी कमरेमें भोजन बनाया जाता था। धुआँ कमरेसे बाहर नहीं निकल सकता था। क्योंकि धुआँ निकलनेके लिए छतमें रास्ता न होता था। बादमें छप्परके मध्य भागमें एक बडा छेद रखा जाता था। यह छेद घरमें प्रकाश आनेके लिए होता था। इस छेदमेंसे थोडा बहुत धुआँ भी निकल जाया करता था। बरसातका पानी उस छेदमें से घरमें आता था, इसलिए उस पानीके संचयार्थ नीचे एक गड्ढा बनाया जाता था। इस कमरेके सामनेकी ओर दरवाजा रखा जाता था। यहीं गृह स्वामी अपने कपडे रखता था। इस कमरेमें एक और दरवाजा होता था। इसी दरवाजेसे अतिथि घरमें आते जाते थे। दरवाजेकी देहलीपर बायाँ पाँव रखना अशुभ समझा जाता था। दरवाजा थपथपानेपर नौकर आकर किवाड खोलता था। दरवाजेके भीतर घुसते ही एक सूचनापत्र नजर आता था। उसपर लिखा रहता था, "कुत्तेसे सावधान।" या "स्वागतम्।" कुत्ता दरवाजेके पास ही जंजीरसे बँधा रहता था। कुत्तेके बैठनेके स्थानपर फर्शबन्दी की होती थी ताकि वह जमीन खोदकर गड्ढे न बनावे। मालिकके शुभ कार्यके समय दरवाजेपर वृक्षोंके पत्ते (बन्दनवार) बाँधे जाते थे। हम लोग भी आमके पत्ते बाँधते हैं। किसीके मर जानेपर एक बर्तनमें एक वृक्षके पत्ते रखकर वह दरवाजेके पास रखा

दिया जाता था। रोशनी जलाना, मशालें जलाना, फूलकी माला टाँगना आदि लक्षण आनन्दोत्सवके होते थे।

हम ऊपर जिस काले कमरेका वर्णन कर आये हैं, उसीमें घरके सब काम होते थे। भोजन बनाना, जीमना, घरके लोगोंका उठना बैठना, आये हुए लोगोंसे मिलना आदि सब काम इसी कमरेमें होते थे। धीरे धीरे सुधार होते गये। कुछ दिन बाद कमरेके सामनेकी ओर या एक बाजूमें चौसारें बनायी जाने लगीं। उनमें अलमारियाँ भी बनायी जाती थीं। इसके बाद कई वर्षोंतक कुछ भी सुधार नहीं हुआ। तथापि राजतन्त्र स्थापित होनेके कुछ समय पहले घरोंमें बहुत सुधार हो गये थे, जिससे बहुत सी सुविधाएँ हो गयीं थीं। मुख्य कमरेसे सटकर ही एक बड़ा दीवानखाना बनाया जाता था। वहाँ बैठनेके लिए उत्तम बैठकें बिछी रहती थीं। बादमें इसी दीवानखानेके पास और भी दीवानखाने बनाये जाने लगे थे जिनमें उत्तम उत्तम वस्तुएँ रखी जाती थीं। भोजके दिन इसी दीवानखानेमें भोजनके टेबुल रखे जाते थे। विदेशी लोगोंका संसर्ग बढजानेपर रोमके लोग बहुत शौकीन हो गये थे। उन लोगोंकी देखा देखी वे घरोंमें बडे बडे दर्पण और तसवीरें लगाने लगे थे। दूसरा प्यूनिक युद्ध खतम होनेपर रोमके लोग ग्रन्थालयके भक्त बन गये थे। हर एक घरमें ग्रन्थालयके लिए एक अलग कमरा रखा जाता था। प्रत्येक कुटुम्बमें ग्रन्थालयका होना आवश्यक समझा जाता था। प्रजातन्त्र शासनके अन्त होनेके पहले ग्रन्थालय रखनेकी चालने खूब जड पकड़ी थी। घरके मनुष्योंको पढना आता हो या न आता हो, परन्तु ग्रन्थ संग्रह अवश्य ही होना चाहिए। वे समझते थे कि ग्रन्थ संग्रहका होना कुटुम्बके

व्यक्तियोंकी विद्वत्ताका दर्शक है। पुस्तकें अलमारियोंमें सावधानीसे जमा कर रखी जाती थीं और पास ही विख्यात मनुष्योंकी मूर्त्तियाँ जमायी जाती थीं। कुटुम्बका पुरोहित पुस्तकें बाँचकर सुनाया करता था।

सम्पत्ति बढ़नेपर, लोग अपने अपने घरोंमें अलग स्नानागार बनवाने लगे। पहले ये लोग अठवाड़ेमें एक बार नहाया करते थे। वे शरीर स्वच्छ रखनेके लिए ही नहाते थे। गरम पानीसे नहाना वे बिलकुल नहीं जानते थे। परन्तु सम्पत्तिके साथ साथ उनमें विलासिताका भाव भी आ चला था। अब उष्णोदक स्नानागार और शीतोदक स्नानागार अलग अलग बनने लगे थे। रोमनगरमें सार्वजनिक स्नानागार भी बनाये गये थे। उन्हें उष्ण रखनेकी तजवीज भी की गयी थी। स्नान करना भी शौक बन गया था। यहाँतक कि प्रार्थना या सङ्कटके दिन स्नान करना बुरा—अशुभ-माना जाता। ऐसे अवसरोंपर सार्वजनिक स्नानागार खुले रखना अपराध समझा जाता था।

घरमें बड़े बड़े दीवानखाने बनाये जाते थे। उनमेंसे एक दीवानखाना भोजन करनेके लिए रखा जाता था। उस दीवानखानेके बीचमें एक बड़ा गोल टेबुल रखा जाता था। इस टेबुलके पास उससे भी ऊँचे तीन कोच रखे जाते थे। प्रत्येक कोचपर तीन व्यक्ति अच्छी तरह बैठ सकते थे। भोजन करनेवाले कोचपर बैठकर भोजन नहीं करते थे। वे अपनी बाँयीं करवटपर सोकर दहिने हाथसे टेबुलपरके पदार्थ उठाकर खाते थे।

ज्यों ज्यों सुखोंके साधन और उनकी कल्पनाएँ बढ़ने लगीं, त्यों त्यों रोमके लोगोंकी विलासिता भी बढ़ती गयी।

पहले भोजन पकानेके लिए लकडियाँ ही काममें लायी जाती थीं, परन्तु अब कोयलोंका उपयोग किया जाने लगा था। घरोंपर, खपरैल आदिकी जगह, अटारियाँ बनायी जाने लगीं थीं। पहले एक घरमें कभी कभी पचासतक कमरे होते थे, परन्तु लोक सख्या बढ जानेके कारण दो तीन मजिलके घर बनाये जाते थे।

घरमें, ईंट, लकडीके तख्ते, पत्थर आदिसे फर्शबन्दी की जाती थी। धनी लोगोंके घरोंकी फर्शबन्दी रगबिरगे पत्थरों से की जाती थी। दीवारोंके सामनेके भागपर सगमरमर लगाया जाता था, परन्तु कमरोंमें छत नहीं लगायी जाती थी। बाँस आदि दिखायी देते थे। घरमें प्रकाश आनेके लिए कुछ भी तजवीज न की गयी थी। घरमें एक बड़ा भारी छेद रखा जाताथा। उसीमेंसे थोड़ा बहुत प्रकाश घरमें आ जाता था। परन्तु बादमें रोशनदान और खिडकियाँ बनायी जाने लगीं थीं। खिडकियाँ अकसर दूसरे मजिलके कमरोंमें ही रखी जाती थीं। खिडकियोंमें काँचके बदले अभ्रक लगाया जाता था। दीपक छतसे लटकाये जाते थे।

कमरा गरम रखनेके लिए उसमें आगका विशेष स्थान रखा जाता था। दूसरे मंजिलके कमरे गरम रखनेके लिए नल द्वारा नीचेके कमरेसे गरमी पहुँचायी जाती थी। आज-कलकी तरह धुआँ निकालनेके लिए पक्की चिमनियाँ नहीं बनायी जाती थीं। इसके अतिरिक्त इटलीकी आबहवा साधा-रणत मध्यम होनेसे कृत्रिम उष्णता उत्पन्न करनेकी बहुत कम जरूरत होती थी।

शहरके आस पास धनवान लोग बँगले बनवाते थे। बँगले पहाड़ी या किसी ऊँचे स्थान पर ही बनाये जाते थे।

वे रास्तेसे बहुत दूरीपर बनाये जाते थे ताकि आने जाने वाले लोगोंसे—पाहुनों से—अधिक कष्ट न हो। वहाँ सब तरहकी सुविधाएँ होती थीं। पशु रहते थे, नौकर रहते थे, अंगूरी शराबके कारखाने भी होते थे। इनके अतिरिक्त गुलामोंको बन्दी कर रखनेके लिए जेलखानेकी तरह सुरंगे भी होती थीं।

एक लेखकने बँगलेका वर्णन करते हुए लिखा है—"मानियसका बँगला बड़ा सुन्दर था। वह सूर्योदय होते ही उठकर सब लोगोंको काम बताता था। बच्चे अपने सब काम स्वय करते थे, इससे उनकी प्रकृति अच्छी रहती थी। निर्मल झरनेका पानी पीनेके काममें आता था। घर साधारण प्रकारका था, पर था खूबसूरत। एक भी खेत बिना जोते न रखा जाता था। इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाता था कि आलस्यसे फसल खराब न होने पावे। अतिथिके लिए कोच पर भेड़का चमड़ा दुहरा बिछाया जाता था। अतिथियोंके खाने, पीने, सुख और सुभीतेका विशेष ध्यान रखा जाता था। उस घरमें किसीकी निन्दा न की जाती थी।" ऐसे स्थानोंमें रहना वास्तवमें आनन्ददायक था।

बँगले नगरके घरकी अपेक्षा अधिक सुन्दर और सुखावह होते थे। वे ऊँचे स्थानपर बनवाये जाते थे। उन मकानों तक जानेके लिए जो सड़क बनी होती थी उसके दोनों ओर ऊँचे ऊँचे वृक्ष होते थे। भोजन करनेके लिए एक अलग दीवानखाना होता था। इसमें हवा और प्रकाशका खूब सचार रहता था। सोनेका स्थान भी अलग होता था। सोनेके लिए दीवानखाना ऐसे स्थान पर बनाया जाता था कि उसमें दिन भर धूप रहे। उस मकानके आस पास जितने रास्ते होते थे

उनके दोनों ओर पुष्पवृक्ष लगाये लगाये जते थे। ये फूल झाड इस ढगसे काटे जाते थे कि भाँति भाँतिके पशु पक्षियों और मनुष्योंकी आकृतियाँ बन जाती थीं।

कुटुम्बव्यवस्था

हरएक कुटुम्बमें माँ बाप और बच्चे होते थे। घरके काम काजके लिए बहुतसे गुलाम भी होते थे। प्रारम्भकी स्थिति व्यतीत होजानेपर और रोमके लोगोंके धनवान् होनेपर अधिक सख्यामें गुलामोंका होना भूषणावह समझा जाता था। साधारण कुटुम्बमें कमसे कम १० गुलाम तो होने ही चाहियें थे। मनुष्यकी साम्पत्तिक स्थितिका अनुमान गुलामोंकी सख्यासे किया जाता था। जबतक पिता जिन्दा रहे पुत्रको उसकी आज्ञामें रहना पडता था। परन्तु लडकीके लिए यह बात न थी। विवाह होनेपर उसे अपने पतिकी आज्ञामें रहना पडता था। कुटुम्बके मुखियाकी सत्ता कुटुम्ब के प्रत्येक व्यक्तिपर होती थी। सबको उसकी आज्ञा माननी ही पडती थी।

माता पिता और इष्ट-मित्र ही विवाहका निश्चय करते थे। लडके या लडकीकी सम्मति बिलकुल न ली जाती थी। विवाह निश्चित हो जानेपर वर वधूके घर जाता था। वहाँ वे लग्नका निश्चय कागजपर लिखकर करते थे। कभी कभी वर वधूको अँगूठी भी देता था। यह सब हो जानेपर मुहूर्त्त दिखाया जाता था। रोमके लोगोंमें मुहूर्त्तका बडा ध्यान रखा जाता था क्योंकि प्रत्येक मासकी पहली, पाँचवी, सातवीं, तेरहवीं और पर्व तिथिको विवाह ही क्या, कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता था। माघ (फरवरी) और वैसाख (मई) मासमें

लग्न न होते थे। इसके अतिरिक्त त्योहारके दिन विवाह करना वर्जित था।

विवाहके समय वधू सफेद कपड़ा पहनती थी। उसपर उत्तम कसीदा काढ़ा हुआ होता था। इसके अतिरिक्त वह बहुमूल्य पीला कपड़ा भी ओढ़ती थी और एक विशेष रंगका उत्तम जूता पहनती थी। वर वधू एक दूसरेका हाथ पकड़कर वेदीकी परिक्रमा करते थे। यह संस्कार हो जानेपर बारात लौट आती थी। तब वर वधूको सूत कातनेका चरखा और कपड़ा बुननेका करघा देता था। इससे यह मालूम होता था कि रोमकी स्त्रियोंको घरमें आरम्भमें यह काम करना पड़ता था। रोममें वधूको पीठपर उठाकर ले आनेकी रीति थी। वर आनेपर वर उसका बहुत सत्कार करता था। वह उसे अपने घरकी चाबियाँ सौंप देता था। तदनन्तर वधूका पिता भोज देता था। इसके दूसरे दिन कभी कभी वरका बाप भी भोज देता था। इसके अतिरिक्त और भी कई विधियाँ होनेपर वधू गृह-स्वामिनी हो जाती थी।

रोमका स्त्री-समाज

स्त्रियाँ ही सब प्रकारके कपड़े सीती थीं। लड़कियाँ भी अपनी माताको इस काममें सहायता पहुँचाती थीं। इनके अतिरिक्त, पीसना, भोजन बनाना आदि काम नौकर करते थे, परन्तु तो भी उनपर देख रेखका काम गृह स्वामिनी को ही करना पड़ता था। बच्चोंका लालन पालन करनेका काम खासकर स्त्रियोंको ही करना पड़ता था। स्त्री घरकी मालकिन होती थी, परन्तु उसे पुरुषकी आज्ञामें ही रहना पड़ता था। फिर भी वह दूसरोंका कामकर द्रव्योपार्जन कर

सकती थी। इस प्रकारसे पैदा किये धनपर उसीका पूर्ण अधिकार होता था। यह सब व्यवस्था तभीतक अच्छी तरह चलती रही जबतक कि रोमके लोग निर्मल थे। परन्तु बादमें, धीरे धीरे दुर्गुणोंका प्रभाव बढते जानेसे स्त्रियोंका आचरण बहुत ही खराब हो गया था। वे अधोगतिको पहुँच गयी थीं। केटोने अपने ग्रन्थमें इस सम्बन्धमें बहुत लिखा है, जिसे पढ कर लज्जासे सिर झुक जाता है।

प्रारम्भमें रोमकी स्त्रियाँ मेहनती, और उत्तम चाल-चलन की थीं। परन्तु अन्य राष्ट्रोंका सहवास होते ही रोमके लोगों में दुर्गुण प्रवेश करने लगे थे। इसीसे धीरे धीरे रोमकी स्त्रियाँ ऐश-आरामको अधिक पसन्द करने लगीं। वे नखरेबाजीमें ही दिन रात मग्न रहने लगीं। जिससे उद्योग प्रियताका लोप हो गया और वे आलसी बन गयीं।

शिल्प

आरम्भमें रोमके लोग खेती करते थे। पशु पालते थे। तदनन्तर वे शिल्पकार हो गये। वे भाँति भाँति के कला-कौशलमें निपुण हो गये। सुनार, चमार, लुहार आदि लोग अपने अपने काममें बहुत चतुर हो गये। पीछे वे धीरे धीरे बौद्धिक विद्या और कला कौशलकी ओर झुकने लगे। रोमके लोगोंमें कई उत्तम वैद्य, प्रसिद्ध वकील और उत्तम शिक्षक पाये जाते थे। इसके अतिरिक्त अपने राष्ट्रके बडे बडे काम करनेमें भी वे समर्थ हो गये थे।

रोमके विधान और नियम

रोम निवासियोंके विधान बडे अच्छे थे। उनका मुख्य तत्त्व स्वतन्त्रता ही थी। प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्र है और कोई

भी अकारण उसकी स्वतन्त्रता न छीन सके—इसी तत्त्वपर रोमके विधान खड़े किये गये थे। ये तत्त्व आधुनिक यूरोपियन राष्ट्रोंके विधानोंमें अच्छी तरह देख पड़ते हैं।

रोमके लोगोंके विधानोंमें कड़ा दण्ड देनेका नियम था। एक दण्ड ऐसा था कि अपराधी विशेष अवधितक एक विशेष स्थानमें निवास करे। उसे निर्दिष्ट सीमाके बाहर जानेकी मनाई रहती थी। इस नियमका उल्लङ्घन करनेवालेको रोम राज्यकी सीमामें आग और पानीसे सुख भोग करनेका निषेध था, अर्थात् रोमके विधानसे उनकी रक्षा न की जाती थी। रोमके लोगोंमें आग और पानीका बड़ा महात्म्य था। हर एक काम इन दो तत्त्वोंको साक्षी रखकर ही किया जाता था।

शिक्षा

हम लोग बालकोंको पहले लिखना सिखाते हैं और तब पढ़ना। परन्तु यूरोपमें पहले पढ़ना सिखाया जाता है और तब लिखना। रोमके लोगोंकी भाषाको लैटिन भाषा कहते हैं।

प्रारम्भ कालमें रोमके लोग जंगली थे। नाचने और बाजा बजानेकी विद्या ही वे जानते थे। तदनन्तर वे खेती करने लगे। तब धीरे धीरे वे उस काममें निपुण हो गये। ये दोनों विद्याएँ बालकोंको पाठशालामें नहीं सिखायी जाती थीं। घरके ही वृद्ध मनुष्य नाच गान सिखाते थे। इसी तरह कुछ वर्ष बीत जाने पर वे लिखना पढ़ना, हिसाब किताब रखना आदि सीखने लगे। इस प्रकारकी शिक्षाने शीघ्र ही अच्छी उन्नति की। रोमके लोग अपने गुलामोंको भी लिखना पढ़ना और हिसाब किताब रखना सिखलाते थे।

यद्यपि रोमके लोगोंकी विद्याभिरुचि बढ़ती जा रही थी

तथापि उनकी बुद्धिका पूरा विकाश नहीं हो पाया था। ग्रीक लोगोंके समागमसे ही उनकी बुद्धिका पूरा विकाश हुआ था। प्रारम्भमें रोमके लोग दुराग्रही और अभिमानी थे। वे अन्य राष्ट्रोंको तुच्छ समझते थे। वे यही समझते थे कि रोम ही विद्याका भण्डार है। रोमके लोगोंको दूसरोंसे कुछ भी सीखनेकी आवश्यकता नहीं। जबतक रोमके लोगोंकी इस अदूरदर्शिताका अन्त नहीं हुआ, तबतक उनकी विद्या और बुद्धिमें वृद्धि न हो पायी। परन्तु ग्रीक लोगोंके सान्निध्यसे जब उन्हें मालूम हो गया कि ग्रीक लोग हमसे भी बढे चढे हैं और वे कई ऐसी विद्याएँ जानते हैं, जो हम लोगोंको बिलकुल मालूम नहीं, तब वे यूनानी लोगोंकी विद्याएँ सीखने लगे, और तब उन्हें ज्ञानकी महिमा मालूम हुई। हम ऊपर लिख ही चुके हैं कि रोमके लोग अपने नौकरों और गुलामोंको भी लिखना पढना और हिसाब किताब रखना सिखलाते थे। यह काम कुटुम्बके बच्चोंको ही करना पडता था, अर्थात् बालक ही उन्हें लिखना पढ़ना और गणित सिखलाते थे।

यूनानी भाषा अति प्राचीन और बहुत ही सुसंस्कृत थी। कई विषयों पर बडे बडे ग्रन्थ लिखे गये थे। ये ग्रन्थ ज्ञान सागर माने जाते थे। अत. बहुतसे लोग ग्रीक भाषा सीखने लग गये थे।

माँ बाप, आरम्भमें, बालकोंको धर्मशास्त्रके "द्वादशाध्याय" पढाते थे। उनमें रोमके धर्मके मूल तत्त्व भरे थे। बालक उनको कण्ठाग्र करते थे। इसके बाद वे लिखते थे। इससे दो काम होते थे—एक तो अक्षर पहचानना जल्द आ जाता था जिससे लिखना भी अच्छा आता था और दूसरे

धर्मके मूल तत्त्व भी बालकोंको मालूम हो जाते थे। उन द्वादशाध्यायोंमेंसे थोड़ेसे नियम यत्र तत्र उपलब्ध हैं। उनमेंसे कुछ नीचे दिये जाते हैं—

१—नवजात बालक अधिक कुरूप हो तो, पिताको उसे जन्मते ही मार डालनेका पूर्ण अधिकार है।

२—विधानके अनुसार पिताका पुत्र पर पूर्ण अधिकार है। वह उसे मार भी सकता है। पिता पुत्रको तीन बार बेच डाले तो उसपर पिताका स्वत्व नहीं रहता।

३—सर्वानुमतिसे जो बात निश्चित हो वही विधान माना जाय। व्यक्तिविशेषके मतको अलग अलग विधान न बनाया जाय।

४—यदि रातको कोई भी मनुष्य नगरमें सभा इकट्ठी करे तो उसे प्राण दण्ड दिया जाय।

५—पेत्रिशियन और प्लेबियनमें कभी शरीर सम्बन्ध न हो।

परराष्ट्रोंसे युद्ध शुरू होनेके कई वर्षों बाद रोमके लोगोंमें व्याकरण और ग्रन्थलेखनका प्रारम्भ हुआ। ज्येष्ठ केटोने बालकों को पढ़ानेके लिए एक ग्रन्थकी रचना की। उसके अनेक भाग थे। उनमें नीति, वक्तृता, वैद्यक, युद्ध, कृषि, इतिहास आदि अनेक विषयों का विवेचन किया गया था। इसके अतिरिक्त उस ग्रन्थमें रोमके राजा, रोमके नगर और रोम निवासियोंकी दन्तकथाओंका भी समावेश किया गया था। यह ग्रन्थ विद्वानोंने अपने लड़कोंको सिखानेके लिए तय्यार किया था। परन्तु इससे दूसरे भी हजारों लड़कोंने लाभ उठाया।

रोमके लोग वैद्यक शास्त्र नहीं जानते थे। उन्हें पहले यह विद्या इट्रुस्कन लोगोंसे प्राप्त हुई थी। तदनन्तर ग्रीक लोगों से भी उन्होंने इस सम्बन्धमें बहुत कुछ सीखा था। इससे

केटो दि सेन्सोर अर्थात् बडा केटो भी उत्तम ग्रन्थकार था उसे रोमकी पुरानी रीतिका बडा अभिमान था। यह राजनीतिक मामलोंमें बहुत पडा करता था। उसे दरबारमें बहुत काम रहता था, तो भी समय बचाकर वह पुस्तकें लिखा करता था। लोग इसके ग्रन्थोंको बहुत चाहते थे।

सिसरो प्रसिद्ध वक्ता था। वह उत्तम लेखक भी था। वक्तृता उसे बहुत प्रिय थी। इतिहास, अर्थशास्त्र आदि विषयोंमें भी उसकी अच्छी गति थी। उसने इन विषयोंपर कई ग्रन्थ लिखे थे। लोग उसके इन ग्रन्थोंको बहुत पसन्द करते थे। प्राचीन ग्रन्थोंमें इसके ग्रन्थ उत्तम माने जाते है।

व्यारो भी उत्तम ग्रन्थकार था। वह राजनीतिक पुरुष था। ग्रीक भाषाका वह अच्छा विद्वान् था। पाम्पेकी सेनामें इसने खूब नाम पैदा किया था। उसे उसकी शूरताके उपलक्ष्यमें एक सोनेका मुकुट मिला था। पाम्पेका नाश होनेपर उसे सीजरकी शरणमें जाना पडा था। उसके मत बदले नहीं थे, तो भी सीजरने उसे तकलीफ नही दी। सीजरने उसे माफी दे दी थी। सीजरने ऐसी व्यवस्थाकर दी थी कि वह विद्याभ्यास किया करे फार्सालियाकी लडाईके बाद उसने राजनीतिक झगडोंमें पडना छोड दिया। तदनन्तर उसने अपना शेष जीवन पुस्तकें लिखनेमें बिताया। वह वि० संवत् २८ में मर गया। कहा जाता है कि उसने छोटे बडे ५ सौ ग्रन्थ लिखे थे। आजकल उसका एक ही पूरा ग्रन्थ उपलब्ध है। यह ग्रन्थ कृषिपर लिखा गया है। दूसरा ग्रन्थ लाटिन भाषाका व्याकरण है। उसके कई परिच्छेद अब नहीं मिलते हैं। उसका एक ग्रन्थ "प्राचीन कालका वृत्तान्त" था, वह भी उपलब्ध

नहीं, परन्तु अन्य ग्रन्थोंमें उसका उल्लेख पाया जाता है। उस ग्रन्थमें मनुष्यकी उत्पत्ति, इटलीका प्राचीन इतिहास, रोमके लोगोंके रीतिरिवाज और उनके धर्म आदिका विस्तर विवेचन किया गया था।

जुलियस सीजर भी ग्रन्थकार था। उसने अपनी लड़ाइयोंके वर्णन बहुत अच्छे लिखे हैं। उसकी भाषा सरल और सरस है। वह भी राजनीतिक व्यक्ति था तो भी उसे विद्यापर विशेष अभिरुचि थी। वह पुस्तकें बहुत पढ़ता था। विद्वान् लोगोंकी सगति उसे बहुत प्रिय थी।

वालेरियस कटुलस कवि था। वह विक्रम सवत्‌से ३० वर्ष पहले पैदा हुआ था और करीब ४० वर्षकी उम्र होनेपर मर गया। उसका बाप सीजरका दोस्त था। उसकी कवितामें वीभत्स और श्रृङ्गार रसमें लगाकर अत्यन्त हृदयग्राहक करुणा रसतकके नमूने भरे पड़े हैं।

ल्युक्रेशियस भी कवि ही था। वह विक्रम सवत्‌से ३८ वर्ष पहले पैदा हुआ था और वि० सवत् ७ में आत्महत्या कर मर गया। उसने एक ग्रन्थ लिखा था जिसमें यूनानी एपिक्युरसके सिद्धान्त (लोकायत)का विवेचन किया गया था। यह ग्रन्थ ससारके अत्युत्तम ग्रन्थोंमें गिना जाता है। परन्तु रोमके लोग तत्त्वज्ञानके भक्त नहीं थे। इससे इस कविके परिश्रमका कम उपयोग हुआ।

सालस्टियस क्रिस्पस इतिहास लेखक था। विक्रम सवत्‌से २८ वर्ष पहले सेबियन घरानेमें उसका जन्म हुआ था। वह बढ़ते बढ़ते सिनेटका सभासद हो गया था। परन्तु उसका चालचलन बहुत खराब था। इसलिए वह सिनेट सभासे निकाल दिया गया था। तब वह सीजरके पक्षमें मिल

गया। उसने सीज़रको प्रसन्न कर लिया था। वि० संवत् ११ में वह सीज़रके साथ अफ्रिका गया था। सीज़रने उसे न्युमिडियाका सूबेदार बना दिया था। वहाँ उसने लोगोंसे बहुत धन लूटा। उधरसे लौट आनेपर वह ऐश आरामसे पढ़ने लिखनेमें अपना समय बिताने लगा। वह वि० संवत् २३ में मर गया। उसके दो ग्रन्थ मुख्य हैं। एकमें क्याटेलाइनके षड्यन्त्र और उसके भण्डाफोडका वर्णन है और दूसरेमें जुगर्थाके साथ जो युद्ध हुआ था उसका वर्णन है।

लिवी नामक इतिहास लेखक वि० संवत्से ५२ वर्ष पहले पैदा हुआ था। उसका चरित्र अधिक उपलब्ध नहीं, तो भी उसकी कीर्त्ति बहुत फैली हुई थी। प्लीनीने अपने ग्रन्थमें एक स्थानपर लिखा है कि लिवीको देखनेके लिए एक स्पेन देश निवासी स्पेनसे रोम आया था। लिवीने रोमका इतिहास १४२ भागोंमें लिखा है। उनमेंसे केवल ३५ भाग अबतक मौजूद हैं। उनके पढ़नेसे रोमके सच्चे इतिहासका स्वरूप मालूम हो जाता है। लिवीके इतिहासकी सहायता बिना कोई रोमका इतिहास नहीं लिख सकता।

हारेसका जन्म वि० संवत्से ८ वर्ष पहले हुआ था। वह एक साधारण श्रेणीके मनुष्यका लड़का था। उसका प्राथमिक शिक्षण वेनुसियाकी पाठशालामें हुआ था। तदनन्तर उसका पिता उसे रोम ले गया था। वहाँ उसने खूब ज्ञानार्जन किया। पीछे कठिन शास्त्रोंका अभ्यास करनेके लिए वह अथेन्स गया। सीज़रका खून होनेपर ब्रूटस वहाँ गया था। उसने ब्रूटसकी सेनामें नौकरी कर ली थी। परन्तु ब्रूटसकी हार होनेपर उसने वह नौकरी छोड़ दी और पुनः पूर्ववत् विद्याध्ययन करने लगा। खूब ज्ञानार्जन कर लेनेपर

वह रोम लौट गया। वहाँ उसने नयी कविताएँ रचकर प्रसिद्ध कीं। लोगोंको वे पसन्द आ गयीं, जिससे उसका अच्छा नाम हुआ। मिसीनाज नामक धनवान मनुष्यके आश्रयमें रहकर वह अपना जीवन विद्यानुशीलनमें बिताने लगा। उसकी कविता सरस और मधुर होती थी। ये कविताएँ पाठशालाओंमें पढ़ायी जाती थीं।

वर्जिल बहुत अच्छा कवि था। वह हारेसका मित्र था। यह भी मिसीनाजके आश्रयमें रहता था। उसने नेपल्समें यूनानी भाषाका अध्ययन किया था। मिसीनाजके कहनेसे उसने जिआर्जिक्स नामक एक सुन्दर काव्य लिखा था। ईनियड नामक उसका सबसे बड़ा काव्य था। उसने विक्रम संवत् २७ में यह काव्य लिखना शुरू किया और ११ वर्षमें पूरा हुआ। यह काव्य पूरा होते ही वह संवत ३८ में मर गया। इससे वह उस काव्यको दुहरा भी न सका, और यह अशुद्ध ही रह गया।

ऊपर हमने रोमके प्रसिद्ध लेखकों और कवियोंके सम्बन्ध में संक्षिप्त परिचय मात्र कराया है। काव्य माधुर्यका आस्वादन लिये बिना कविका यथार्थ परिचय नहीं हो सकता, किन्तु स्थानाभावसे हम ऐसा करनेमें असमर्थ हैं। अत हम अपनी लेखनीको यहीं विश्राम देते हैं।

* इति *



गया। उसने सीजरको प्रसन्न कर लिया था। वि० संवत् २१ में वह सीजरके साथ अफ्रिका गया था। सीजरने उसे न्युमिडियाका सूबेदार बना दिया था। वहाँ उसने लोगोंसे बहुत धन लूटा। उधरसे लौट आनेपर वह ऐश आरामसे पढ़ने लिखनेमें अपना समय बिताने लगा। वह वि० संवत् २३ में मर गया। उसके दो ग्रन्थ मुख्य हैं। एकमें क्याटे-लाइनके षड्यन्त्र और उसके भण्डाफोडका वर्णन है और दूसरेमें जुगर्थाके साथ जो युद्ध हुआ था उसका वर्णन है।

लिवी नामक इतिहास लेखक वि० संवत्से ५२ वर्ष पहले पैदा हुआ था। उसका चरित्र अधिक उपलब्ध नहीं, तो भी उसकी कीर्त्ति बहुत फैली हुई थी। प्लीनीने अपने ग्रन्थमें एक स्थानपर लिखा है कि लिवीको देखनेके लिए एक स्पेन देश निवासी स्पेनसे रोम आया था। लिवीने रोमका इतिहास १४२ भागोंमें लिखा है। उनमेंसे केवल ३५ भाग अबतक मौजूद हैं। उनके पढ़नेसे रोमके सच्चे इतिहासका स्वरूप मालूम हो जाता है। लिवीके इतिहासकी सहायता बिना कोई रोमका इतिहास नहीं लिख सकता।

हारेसका जन्म वि० संवत्से ८ वर्ष पहले हुआ था। वह एक साधारण श्रेणीके मनुष्यका लड़का था। उसका प्राथमिक शिक्षण वेनुसियाकी पाठशालामें हुआ था। तदनन्तर उसका पिता उसे रोम ले गया था। वहाँ उसने खूब ज्ञानार्जन किया। पीछे कठिन शास्त्रोंका अभ्यास करनेके लिए वह अथेन्स गया। सीज़रका खून होनेपर ब्रूटस वहाँ गया था। उसने ब्रूटसकी सेनामें नौकरी कर ली थी। परन्तु ब्रूटसकी हार होनेपर उसने वह नौकरी छोड़ दी और पुनः पूर्ववत् विद्याध्ययन करने लगा। खूब ज्ञानार्जन कर लेनेपर

वह रोम लौट गया। वहाँ उसने नयी कविताएँ रचकर प्रसिद्ध कीं। लोगोंको वे पसन्द आ गयीं, जिससे उसका अच्छा नाम हुआ। मिसीनाज नामक धनवान मनुष्यके आश्रयमें रहकर वह अपना जीवन विद्यानुशीलनमें बिताने लगा। उसकी कविता सरस और मधुर होती थी। ये कविताएँ पाठशालाओंमें पढायी जाती थीं।

वर्जिल बहुत अच्छा कवि था। वह हारेसका मित्र था। वह भी मिसीनाजके आश्रयमें रहता था। उसने नेपल्समें यूनानी भाषाका अध्ययन किया था। मिसीनाजके कहनेसे उसने जिआर्जिक्स नामक एक सुन्दर काव्य लिखा था। ईनियड नामक उसका सबसे बड़ा काव्य था। उसने विक्रम संवत् ७७ में यह काव्य लिखना शुरू किया और ११ वर्षमें पूरा हुआ। यह काव्य पूरा होते ही वह संवत ३८ में मर गया। इससे वह उस काव्यको दुहरा भी न सका, और वह अशुद्ध ही रह गया।

ऊपर हमने रोमके प्रसिद्ध लेखकों और कवियोंके सम्बन्धमें संक्षिप्त परिचय मात्र कराया है। काव्य माधुर्यका आस्वादन लिये बिना कविका यथार्थ परिचय नहीं हो सकता, किन्तु स्थानाभावसे हम ऐसा करनेमें असमर्थ हैं। अत हम अपनी लेखनीको यहीं विश्राम देते हैं।

* इति *



प

ल

ह

ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाकी पुस्तकें ।

१.	स्वराज्यका सरकारी मसविदा प्रथम भाग,	॥।=)
२	स्वराज्यका सरकारी मसविदा द्वितीय भाग,	॥।=)
३	अब्राहम लिंकन,	॥)
४	प्राचीन भारत,	३॥।-)
५	इटलीके विधायक महात्मागण,	२।)
६	यूरोपके प्रसिद्ध शिक्षण सुधारक,	१॥=)
७	बिहारीकी सतसई, प्रथम भाग	२)
८	बनारसके व्यवसायी	॥=)
९	गृह शिल्प	॥)
१०	वैज्ञानिक अद्वैतवाद,	१॥।=)
११.	जापानकी राजनीतिक प्रगति	३॥=)
१२	रूसका पुनर्जन्म	॥।=)

प्रचारित पुस्तकें—तेलकी पुस्तक १) रोशनाई ॥) साबुन १) हिन्दी केमिष्ट्री १) सरल रसायन १) वार्निश व पेण्ट १) साबुन साजी (उर्दू) १) रंगकी पुस्तक १) मानस मुक्तावली ।=) भारीभ्रम १॥) तिलकके व्याख्यान १।) सीनेकी कल ॥) देशी करघा ।॥=) हङ्गरी में असहयोग =)॥ गुलामीसे छूटनेका उपाय =) जातीय शिक्षा ॥)

Social Reconstrction, and the Meaning of Swaraj by Babu Bhagawan Das M A Price annas six and annas twelve respectively

व्यवस्थापक—ज्ञानमण्डल कार्यालय, काशी ।